ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः । शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ **!! श्री गणेशाय नमः !!** विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां । कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां । यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ **!!श्री कालिका विजयते!!** हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं, गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

राजा-शनि | वर्षा-१७

यशस्पति

मकरन्दानुसारि

सर्वमङ्गला महावीर पञ्चाङ्गम्

मंत्री-मंगल | धान्य-११

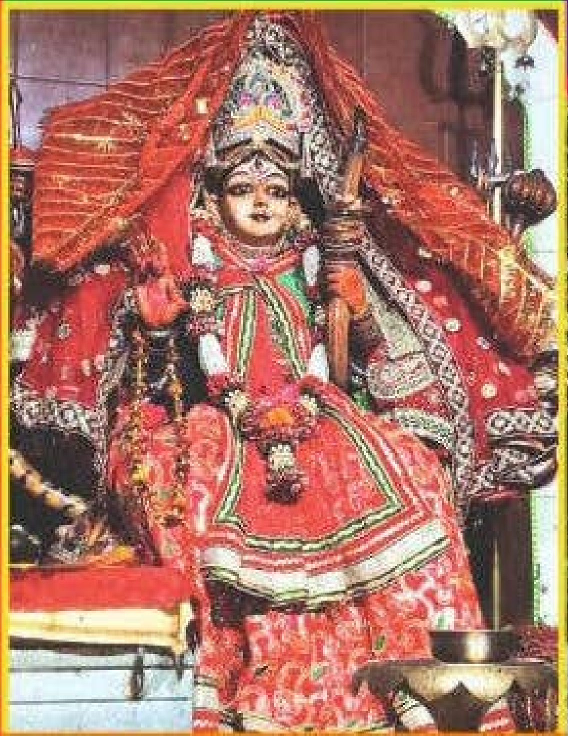

प्रवर्त्तक – स्व. जानकी देवी, स्व. विभा देवी ।
संरक्षक – संत शिरोमणि करपात्री अग्निहोत्री परमहंस
महर्षि चिदात्मन जी महाराज
सह संरक्षक – स्वामी रवीन्द्र जी ब्रह्मचारी

प्रकाशक सह वितरक

सर्वमङ्गला अध्यात्मयोग विद्यापीठ सह महर्षि चिदात्मन वेद विज्ञान अनुसंधान संस्थान

सिद्धाश्रम आदिकुम्भस्थली सिमरियाधाम मिथिलाञ्चल, बेगूसराय, बिहार

निदेशक : पं. डॉ. शिवेन्द्र झा, संपादक : डॉ. घनश्याम झा, सह संपादक : पं. श्री विजय कुमार झा, पं. बुद्धन ओझा, डॉ. व्रजेन्द्र मिश्र
मो. 8709636639
गणितकर्त्ता : पं.श्री दिगम्बर शास्त्री, श्री वरूण पाठक

विक्रमसंवत्: २०८३-२०८४
शालिवाहन शाके-१९४८-४९
सन् १४३४, लक्ष्मणसंवत् ९१७-१८
ई. सन् २०२६-२७
सहयोग राशि गुरुप्रसाद

॥ सर्वमङ्गला मिथिला विद्वत्परिषद् विभूति !!

अध्यक्ष
पं० श्री रामचन्द्र झा
पूर्व कुलपति का.सिं.सं. वि.वि., दरभंगा
राष्ट्रपति पुरस्कार पुरस्कृत

उपाध्यक्ष
पं. श्री देवनारायण झा
पूर्व कुलपति का. सिं०, सं. वि० वि०, दरभंगा

पं० श्री शिवाकान्त झा
पूर्व कुलपति
का.सि.सं.वि.वि., दरभंगा

पं० श्री विद्याधर मिश्र
पूर्व कुलपति
का.वि.सं.वि०वि०, दरभंगा

पं० श्री उपेन्द्र झा
पूर्वकुलपति

पं० श्री श्रीआनन्द झा
पूर्व अध्यक्ष
दर्शन विभाग

पं० श्री लक्ष्मीनाथ झा
साहित्य विभाग

पं० श्री सुरेश्वर झा
प्राचार्य व्याकरण विभाग

पं० श्री दयानाथ झा
व्याकरण विभागाध्यक्ष

पं० श्री दिलीप झा
धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष

पं० श्री श्रवण चौधरी
साहित्य विभाग

धर्माचार्य
पं० श्री सत्य नारायण मिश्र 'सत्य'
प्राधानाचार्य, विश्वनाथ
संस्कृत महाविद्यालय (समस्तीपुर)

१३. **पं० श्री राधाकान्त ठाकुर**, कुलपति केन्द्रीय वि.वि. तिरुपति
१४. **पं० श्री कमलेश झा**, अध्यक्ष निगमागम विभाग का.हि.वि.वि., वाराणसी
१५. **पं० श्री रामजीवन मिश्र**, ज्योतिष विभागाध्यक्ष, का.हि.वि.वि., वाराणसी
१६. **पं० श्री सुधाकर मिश्र**, वेदांग विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि.वि., वाराणसी
१७. **पं० श्री सुन्दरनारायण झा**, वेद विभाग, ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली
१८. **पं० श्री महेश झा**, न्याय विभागाध्यक्ष सदाशिव परिषद् जगन्नाथपुरी, उड़ीसा
१९. **पं० श्री सुरेन्द्र मोहन मिश्र**, कुरुक्षेत्र वि.वि., हरियाणा
२०. **पं० श्री विनय कुमार झा**, वेद विभागाध्यक्ष का.सि.सं.वि.वि., दरभंगा
२१. **पं० श्री मनोज कुमार झा**, प्राचार्य रा.सं.म.विद्यालय, पटना
२२. **पं० श्री परमानन्द झा**, प्राचार्य, नई दिल्ली
२३. **पं० श्री रूद्रानन्द झा**, व्याकरण विभागाध्यक्ष, वरौनी
२४. **पं० शशिधर झा**, ज्योतिष विभागाध्यक्ष, रोसड़ा
२५. **पं० श्री गंगाधर ठाकुर**, साहित्य विभागाध्यक्ष, खम्हार, बेगूसराय
२६. **पं० श्री सच्चिदानन्द पाठक**, पूर्व प्राचार्य, तिलथ
२७. **पं० श्री नित्यानन्द मिश्र**, प्रधानाध्यापक, भवानीपुर
२८. **पं० श्री अवधेश कुमार झा**, प्राध्यापक, समस्तीपुर
२९. **पं० श्री सत्यनारायण मिश्र सत्य**, समस्तीपुर
३०. **डॉ. जयशंकर झा**, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, ल.ना.मि.वि.वि., दरभंगा
३१. **पं० ध्रुव कुमार मिश्र**, वेद विभागाध्यक्ष
३२. **डॉ. चौधरी हेम चन्द्र राय**, पूर्व प्रबंधक श्रीश्याम माई मन्दिर, दरभंगा

॥ अथ सर्वतोभद्र मण्डलम् ॥

॥ अथ चतुर्लिंगतो भद्र मण्डलम् ॥

॥ अथ गौरीतिलक मण्डलम् ॥

॥ अथ गणेश मण्डलम् ॥

॥ अथ राम मण्डलम् ॥

॥ अथ क्षेत्रपाल मण्डलम् ॥

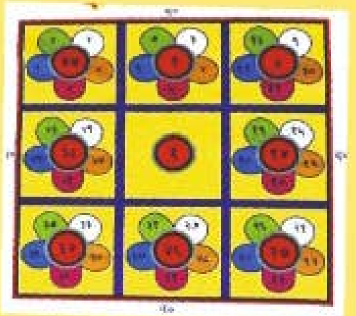

॥ अथ चतुः षष्ठियोगिनी मण्डलम् ॥

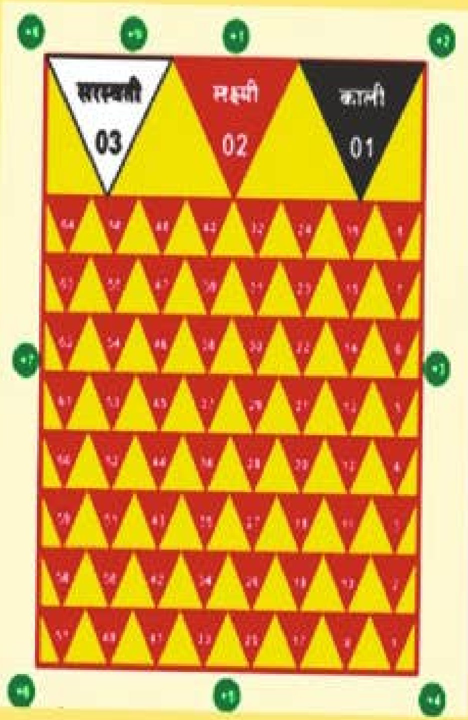

॥ अथ षोडशमातृका मण्डलम् ॥

॥ अथ नवग्रह मण्डलम् ॥

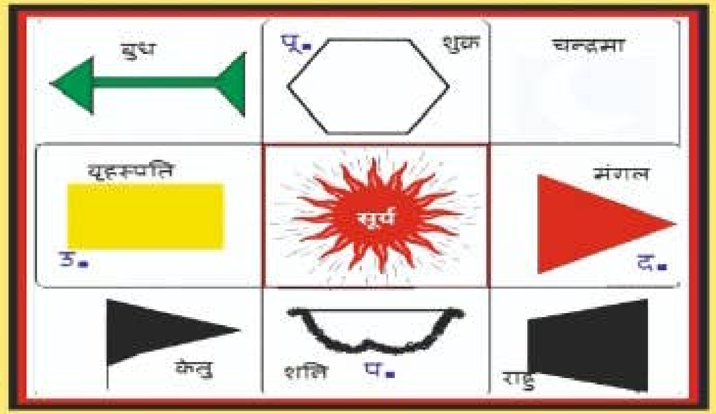

सर्वमङ्गला विद्वत्परिषद् सह पंचाङ्ग समर्थका:

★ पं. श्री देवकी नन्दन झा, सम्पादक, विद्यपति पंचांग
★ आचार्य श्री विजय कृष्ण झा कन्हैयाचक खगड़िया
★ पं. श्री कृष्ण मोहन झा महारथपुर बेगूसराय
★ पं. डॉ. प्रजापति झा शाम्हो बेगूसराय
★ डा. रमेश झा पूर्वप्राचार्य, समस्तीपुर
★ डा. गोपाल झा, सांयटिस्ट, शाम्हो, बेगूसराय
★ पं. श्री रामनारायण झा, रूदौली
★ पं. श्री दिनेश कुमार झा, अहियापुर, बेगूसराय
★ पं. श्री विकास मिश्र अहियापुर बेगूसराय
★ पं. श्री रंजन शास्त्री, मुजफ्फरपुर
★ पं. श्री नारायण झा, सिद्धाश्रम
★ पं. श्री रत्नेश्वर पाठक, मालीपुर
★ पं. श्री धीरेन्द्र झा, रूदौली
★ पं. श्री सनातन भारद्वाज, श्रीधाम बरौनी
★ पं. श्री राम भारद्वाज, सिद्धाश्रम
★ पं. श्री रमेश मिश्र, सिद्धाश्रम
★ पं. श्री लक्ष्मण भारद्वाज, गुरूधाम रूदौली
★ पं. श्री साकेत कुमार झा, रूदौली
★ विजय कु. झा, देसरी संजात
★ पं. श्री रंधीर झा, मंझौल
★ पं. श्री प्रकाश मिश्र, गढ़पुरा
★ पं. श्री गौरीशंकर पाठक, अहियापुर
★ पं. श्री राजेश कुमार झा, अहियापुर
★ पं. श्री राजकुमार झा, रसीदपुर
★ पं. श्री सुभाष कुमार पाठक, गौड़ा
★ पं. श्री सतीश पाठक,
★ पं. श्री अमरनाथ झा टभका समस्तीपुर
★ पं. श्री अनंत झा टभका समस्तीपुर
★ पं. श्री विद्यासागर झा खूटहा
★ पं. शशिधर झा सं. म.वि., रोसड़ा
★ पं. श्री शत्रुघ्न झा बनगांव सहरसा

★ पं. श्री चंद्रभूषण झा शाम्हो बेगूसराय
★ पं. श्री भूपेंद्र ठाकुर तेयाय बेगूसराय
★ पं. श्री विकास पाठक पपरौर बेगूसराय
★ पं. मिथिलेश झा आहो बेगूसराय
★ पं. श्री आशुतोष कु. झा, व्याकरण ज्यो. रहुआ, समस्तीपुर
★ पं. बाबु साहेब झा, बोरिया, समस्तीपुर
★ पं. अखिलेश्वर कु. पाण्डेय, ज्योतिषाचार्य शिवहर
★ पं. श्री योगेन्द्र झा, बलीपुर, लखीसराय
★ पं. श्री नीरस झा, शाम्हो, बेगूसराय
★ पं. श्री भूषण झा, शाम्हो, बेगूसराय
★ डा. कृष्ण कुमार झा, पटना
★ पं. श्री जगनारायण झा, जयरामपुर
★ पं. श्री बन्टी झा, जयरामपुर
★ पं. श्री चन्द्रभूषण झा, गौड़ा, बेगूसराय
★ पं. श्री इन्द्रभूषण झा, शाम्हो, बेगूसराय
★ डा. कुलानन्द झा, मधुबनी
★ पं. श्री वीरेन्द्र झा, मधुबनी
★ पं. श्री मुरलीधर पाठक, सं. महावि. मंदिरी, पटना
★ पं. श्री राम सजीवन झा, सं. महावि. मंदिरी, पटना
★ टुनटुन मिश्रा वासुदेवपुर, बेगूसराय
★ श्री अरुण किशोर ठाकुर आचार्य, पटना
★ पं. सच्चिदानन्द झा आचार्य, पटना
★ पं. श्री उमाकान्त झा, तिलरथ, बेगूसराय
★ श्री राजनीति चौधरी, कन्हैयाचक, खगड़िया
★ पं. श्री वैद्यनाथ झा, बरियारपुर, बेगूसराय
★ श्री विश्वम्भर पाठक, बरौनी, बेगूसराय
★ पं. श्री रामदेव झा
★ डा. अवधेश शर्मा, भागलपुर
★ पं. विद्यानंद झा, बेगूसराय
★ पं. देवेश मिश्र, अहियापुर
★ पं. दिनेश झा सं.म.वि., दरभंगा
★ पं. शिवलोचन झा, सं.म.वि., तरौनी

अखिल भारतीय सर्वमंगला परिवार

★ स्वामी सुलभानन्दजी, पटना
★ स्वामी नागेन्द्रानन्दजी, पटना
★ स्वामी अभयानन्दजी, पटना
★ स्वामी उमेशानन्दजी, पटना
★ स्वामी माधवानन्दजी, प्रयाग
★ स्वामी गंगानन्दजी, हरिद्वार
★ स्वामी प्रेमतीर्थजी, हरिद्वार
★ स्वामी विश्वनाथानंदजी, पुनौराधाम
★ स्वामी सत्यानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी दिनेशानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी संजयानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी सदानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी अखिलेश्वरानंदजी, सुपरमार्केट
★ स्वामी सुदर्शनानन्दजी, सहरसा
★ स्वामी प्रद्युम्नानंदजी, शिवहर
★ स्वामी निर्मलानन्दजी, शिवहर
★ स्वामी नंदकिशोरानंदजी, शिवहर
★ स्वामी ध्रुवानंदजी, राजगीर
★ स्वामी शिवकुमारानंदजी, राजगीर
★ स्वामी अमरेन्द्रानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी कौशलेन्द्रानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी रीतेश्वरानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी राधेश्वरानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी नृपेन्द्रानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी ज्ञानानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी नीरंजनानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी विजयानंदजी, आश्रम

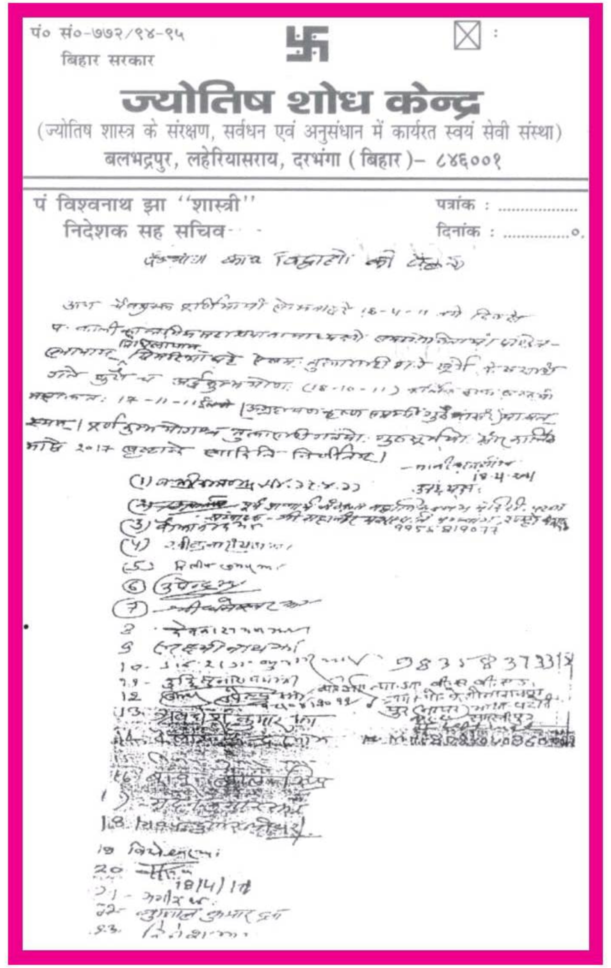

★ स्वामी उमेशानन्दजी, आश्रम
★ स्वामी रोचकानन्दजी, आश्रम
★ श्री सुरेन्द्र चौधरी, अध्यक्ष
★ श्री राजकिशोर प्रसाद सिंह, महासचिव
★ श्री दिनेशप्रसाद सिंह, सचिव
★ श्री नवीन प्रसाद सिंह, कोषाध्यक्ष
★ श्री राजीव कुमार सिंह

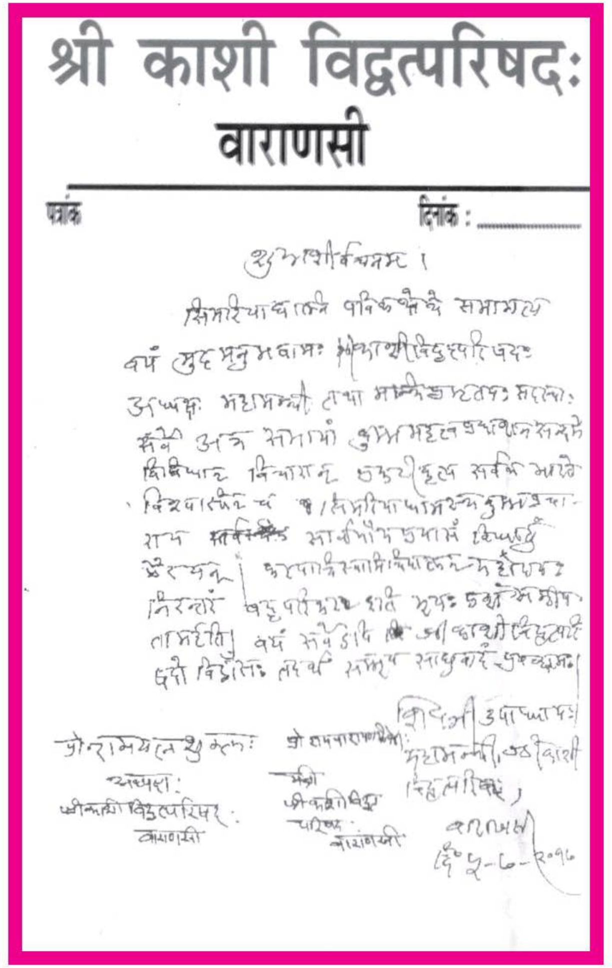

★ श्री सुशील चौधरी
★ श्री नीलमणि सिंह
★ डा. अंजनी प्रसाद सिंह
★ श्री इंदु भारती जी, अधिवक्ता (H.C. Patna)
★ श्री प्रवीन कुमार 'प्रेम'
★ श्री विजय कुमार सिंह

पंचांग सहयोगी सदस्यगण

१. श्री. सुरेन्द्र चौधरी अध्यक्ष सर्वमंगला आध्यात्मयोग विद्यापीठ, सिमरिया
२. श्री रामरतन साही मुजफ्फरपुर
३. श्री सुदर्शन सिंह सहरसा
४. श्रीमती किरण देवी सूरत, गुजरात
५. आचार्य श्री नारायण झा रसलपुर बेगूसराय
६. आचार्य श्री दिनेश कुमार झा अहियापुर बेगूसराय
७. श्री राजीव चौधरी (बबलू) जोड़पुरा समस्तीपुर
८. आचार्य श्री वरुण पाठक अहियापुर बेगूसराय
९. आचार्य श्री राजेश झा अहियापुर बेगूसराय
१०. आचार्य श्री रमेश मिश्र अहियापुर बेगूसराय
११. आचार्य श्री रंजन शास्त्री मुजफ्फरपुर
१२. पं. श्री संतोष पाठक अहियापुर बेगूसराय
१३. पं.श्री दीपक कुमार झा रानी बेगूसराय
१४. पं.श्री गौतम कुमार सुमन रानी बेगूसराय
१५. पं.श्री दुर्गेश झा सोरमार समस्तीपुर
१६. स्वामी श्री सुलभानन्द जी पटना
१७. श्री सुरेन्द्र प्रसाद सिंह हरिपुर कादरावाद, बेगूसराय
१८. श्री ब्रजेश (पत्रकार) शाहपुर जन्दाहा वैशाली
१९. श्री विश्वजीत कुमार गंगापुर समस्तीपुर
२०. श्री पंकज कुमार सिंह गढ़पुरा बेगूसराय
२१. स्वामी ज्ञानानन्द जी बरियारपुर बेगूसराय
२२. स्वामी नृपेन्द्रानन्द जी भैरवार बेगूसराय
२३. श्री पप्पू राय रूपसबाज बेगूसराय
२४. श्री गौरीशंकर सिंह निपनियाँ बेगूसराय
२५. पं. श्री बनवारीलाल तिवारी प्रयागराज उ.प्र.
२६. पं.श्री शुभम् तिवारी प्रयागराज उ.प्र.
२७. स्वामी श्री राधेश्वरानन्दजी अहियापुर बेगूसराय
२८. श्री सनातन कुमार (श्याम भारद्वाज) शोकहरा बेगूसराय
२९. पं.श्री पद्मनाभ झा रसलपुर बेगूसराय
३०. श्री संजय चौधरी नवटोल, बेगूसराय
३१. श्री संजीत कुमार (M. R.) बछौता खगड़िया
३२. श्री अरविंद यादव महेशपुरा डुमरी बेगूसराय
३३. डा. कल्पना कुमारी, दलसिंहसराय, समस्तीपुर
३४. श्री अमरेन्द्र कुमार सिंह डुमरी परोड़ा, बेगूसराय
३५. श्री कौलशेन्द्र कुमार सिंह डुमरी परोड़ा बेगूसराय
३६. श्री रीतेश कुमार गोखलेनगर विष्णुपुर, बलिया, बेगूसराय
३७. राजकुमार झा, रसीदपुर
३८. डॉ. उमेश जी, मनियप्पा
३९. पद्मनाभ झा, रसलपुर
४०. सुशील सिंह, तेयाय
४१. विजय सिंह, बेगूसराय
४२. राजकिशोर सिंह, पहसारा

मङ्गलाचरण

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।।
गुरुभ्यश्च ग्रहेभ्यश्च मया बद्धोऽसमंजलि:।
प्रसन्नमनसस्तेन सत्यां कुर्वन्तु भारतीम्।।

स जयति सिन्दुरवदनो देवी यत्पादकपंकजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्।।
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्।
संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया।।
यश्चैत्रशुक्लप्रतिपत्सु धीमान् श्रृणोति वर्षीयफलं पवित्रं।
भवेद्धनाढ्यो बहुसस्यभोगी जहयाच्चपीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।।
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्ध्वजारोपणं स्नानं,
मंगलामाचरेद्द्विजवरै: कुर्यान्मनोवाच्छितम्।
ग्राह्या रौप्यसुवर्णरत्नमणयो वृद्धादिभि: पूजयेच्छ्रोतव्यं
द्विजवर्यभाषितफलं श्रेयस्करं पुण्यदम्।।
शाकस्य श्रवणात् सुपुण्यजनंसंवत्सरस्यआद्यतां
राज्ञोराजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं बुद्धिदं।
धान्यं धान्यपते रसं रसपते: क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा,
सस्यं सर्वसुखं च वत्सफलं संश्रृण्वतां सिद्धिदं।।
धन्य ई मिथिला धाम, जतय ऐला राम भगवान।
धन्य अयाची-मंडन-ज्ञान, भन विद्यापति कवि महान।।
धन्य कुशेश्वर-विदेश्वर-सिंहेश्वर ओ अभिराम।
धन्य मछैता विषहरि धाम, धन्य भवानी उगनेश्वर गाम।।
धन्य मिथि आ मिथिलाधा, धन्य धन्य विदेहरजधाम।
धन्य धरा छथि सीताराम, रमण करै छथि नमन प्रणाम।।

श्री मङ्गलमूर्त्तये नम:, श्रीसरस्वत्यै नम:

कल्पादि सम्वत्-१९७२९४९१२७ सृष्टिसम्वत्- १९५५८८५१२७ राम सम्वत्-८८०१६८ कृष्ण सम्वत ५२६२ कलि सम्वत्-५१२७-२८ सप्तर्षि सम्वत्-५१०२, शकाब्द: १९४८-४९ विक्रमसम्वत्-२०८३-८४ सन् १४३४ साल लक्ष्मण सम्वत् ९१७-१८ क्रिस्ताब्द:-२०२६-२६ ई० तत्र प्रभवादि बार्हस्पत्य गताब्ददय:- ५३।१।२२।१६।१६ भोग्याब्ददय:-६।२८।०७।४६।३४ अत्र विद्यमाने अष्टवहनबेन्दु मितेशकाब्दे रुद्रविंशतिकायां नासत्यदैवत युगे चतु: पञ्चाशत

रौद्रनामक बार्हस्पत्य संवत्सर फलम्-

अल्पतोयास्तथा मेघा: कीटाश्च शलभा: शुक:। विकृता: पार्थिवा: देवि रौद्रवर्षे वरानने।।

वर्षेश (राजा) शनि फलम:-

सर्वोपद्रवतो नर: क्षतमना नशन्त्यथो जन्तवो राष्ट्रोपद्रव वाच्यता निगदिता विप्रेषु साधुष्वपि।
पीड्यन्ते च समीरणाद् वहुजना: प्रासादहर्म्यादयो नि:शब्दा वसुधा निहन्ति च जलं नस्यु:शनौ शालय:।।

सम्वाहक (मंत्री) भौमफलम:-

वायुर्वाति महीरुहस्यपतनं भूकम्पसंक्षोभिता पृथ्वी शैलमहतिश्रृंगपतनं लोकस्य नाश: सदा।
पीड़ा गोमहिषयाश्व कुंजर पशोर्घोरा महीभीतिदा-शस्यानां च विनाशदारुणतरा सम्वाहके भूमिजे।।

पालक (सूर्य) फलम्:-

सूर्ये लाघवतां व्रजन्ति जलदा मन्दान्नयुक्ता मही रोगै: पित्तज्वरातिसारसाहितै: शस्यै विनष्टाहठात्।
राजानो राष्ट्रवादा: पुरजनसहिता: यान्ति युद्धैकचित्ता। अर्कज्वालाभितप्ता चलति वसुमती पालके तीक्ष्णरश्मै।।

मेघाधिप शुक्रफलम्:-

शुक्रेशस्ययुता पृथ्वी जलदास्तोयवर्षिण:।।

तोयाधिप शनि फलम्:-

मन्देमन्दजला मेघा मन्द शस्य युता मही। तोयाधिपानामेतत्तु फलं वदति भागुरि:।।

शस्याधिप गुरुफलम्:-

अनेकधन सम्पन्ना नन्दन्ति नरपालका:। शस्य वृद्धि करीवृष्टिर्देवपूज्ये सदा भवेत्।।

लोकाधिप चन्द्र फलम्:-

स्वस्था: कीर्तियुता लोका धनाम्बर विभूषिता:। हर्षोत्सव क्रियायुक्ता: शीतांशौ च नराधिपे।।

पुष्कर नामक मेघ फलम्-

पुष्करे चिंत्रितं विश्वं चित्रिता: जलदा: सदा। चित्रिता तु भवेद्वृष्टि: शस्यवृद्धिस्तु चित्रिता।।

अथ वर्षादि विश्वा-२०८३-८४

वर्षा-१७ धान्यम्-११ शीतम्-५ तृणम्-१३ उष्णम्-१७ वायु:-११ प्रजावृद्धि:- १५ प्रजाक्षय:-१५ विग्रह:-११ क्षुधा:-३ तृष्णा:-१ निद्रा:-७ आलस्यम्-७ उद्यम:-५ शान्ति:- ७ क्रोध:-५ दण्ड:-१ मैत्री-३ उत्सव:-३ पापम्-१३ पुण्यम्-३ रसादि:-९ उग्रत्त्वम्-७ रसोत्पत्ति:- ३ फलोत्त्पत्ति:-९ रोग:- ७ रोगक्षय:-११ आचार-७ अनाचार-१३ मरणम्-१५ जननम्-५ चौरभयम्-९ चौरशान्ति:-५ अग्निभयम्-१३ अग्निशान्ति:-१३

आय-व्यय २०८३-२०८४

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८
फल	कलेश:	विजय:	विजय:	लाभ:	अपवाद:	विजय:	विजय:	कलेश:	लाभ:	सम्मानम्	सम्मानम्	लाभ:

फलम्:-

आय व्यय युति कृत्वा तत्र रूपं विशोधयेत्। अष्टभिश्च हरेदभागं शेषांके फल मादिशेत।।
लाभ: सौख्यं तथा क्लेशो रोगो लोकापवादनम्। सम्मान विजयो हानि: कथितं पूर्व सूरिभि:।।

सन् १४३४ साल वर्षीय शुध्द्यशुद्धी

श्रावण कृष्ण प्रतिपदादित: भाद्रशुक्ल षष्ठयां गुरौ ४४।५३ यावत् गुरुर्वास्त सिंह संक्रांति कारणादशुद्ध: ततो आश्विन कृष्ण अमावश्यायां शनौ ४६।५७ यावत् शुद्ध:। ततो शुक्र क्षैण्यास्त दोषकारणात् आश्विन शुक्ल त्रयोदश्यायां शनौ ४६।५७ यावदशुद्ध:। ततो मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तम्यां बुधे ३२।०८ यावत् शुद्ध:। ततो धनुरादित्य दोषाद् पौष शुक्ल षष्ठ्यां गुरौ ५१।२७ यावदशुद्ध:। ततो आषाढ़ शुक्ल नवम्यां सोमे ०।५२ यावत् शुद्ध:। ततो शुक्र क्षैण्यास्त दोषाद् आषाढ़ीं यावदशुद्ध:।

पञ्चाङ्ग देखने की विधि:

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डात्मक मान एवं तिथि घण्टा मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम एवं दण्डपल और घण्टा मिनटात्मक मान है, तत्पश्चात्, योग का नाम एवं दण्ड पल मान उसके बाद पूर्वार्ध करण का नाम एवं दण्डात्मक मान, पश्चात मेषादि राशि में चन्द्रमा के भुक्तकाल का घण्टात्मक मान, उसके बाद सूर्योदय एवं सूर्यास्त तथा मिश्रमान कालिक स्पष्टराश्यादि सूर्य का भोगकाल एवं राष्ट्रीय, नेपाली एवं अंग्रेजी दिनांक तत्पश्चात मुहूर्त पर्वादि दिये गये हैं।

उदाहरणार्थ- प्रथम श्रावण कृष्णपक्ष गुरुवार को प्रतिपदा तिथि का दण्डात्मक मान ३८।१७, रात्रि ८।४० तक, श्रवणनक्षत्र का दण्डपल ३२।२ सं. ६।१० तक, योग आयुष्मान् का दण्डात्मक मान ४६।५५, करण बालव का दण्डात्मक मान ६।५५, चन्द्र का भुक्त मकर राशि में, सूर्योदय ५ बजकर २१ मिनट पर तथा सूर्यास्त ६ बजकर ३६ मिनट पर, सूर्य कर्क राशि के १२ अंश ५२ कला ४५ विकला पर भोग कर रहा है, ऐसा समझना चाहिए। राष्ट्रीय १६, नेपाली आषाढ़मास के १४ गते तथा अंग्रेजी दिनांक ३० जुलाई समझना चाहिए। उसी पंक्ति में धर्मशास्त्र के द्वारा वर्णित पर्वादि दिया गया है। इस पञ्चाङ्ग के निचले भाग में मिश्रमानकालिक राश्यादि दैनिक स्पष्ट ग्रह एवं दण्डपालक मिश्रमान दिया गया है। तदनन्तर दैनिक लग्न सारणीय दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन सूर्योदयकालिक लग्न का समाप्ति काल मानक समय के अनुसार दिया गया है। पश्चात् ब्राह्मणों को सुलभता के लिए यामार्ध (अर्धप्रहरा) का घण्टात्मक मान दिया गया है। साथ ही उपयोगी विविध विषय भी दिये गये हैं।

वर्षफल २०८३-०८४

इस वर्ष के राजा शनि हैं जिसके कारण सर्पादि तथा कीटादि जीवों की वृद्धि, विश्व में तथा अपने राष्ट्र में भी उपद्रव, संतों एवं विप्रों का अपमान, वायुवेग के कारण जन धन की हानि, अग्नि के कारण भारी क्षति, आकाशीय दुर्घटनाओं में वृद्धि, भूस्खलन संक्रामक रोगों में वृद्धि के कारण सामान्य जनों में भय का वातावरण, पृथ्वी पर्वतों में विशेष रूप से हलचल रहेगा खण्डवृष्टि से अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि के कारण जन-धन विशेष रूप से प्रभावित रहेंगे। असामान्य वातावरण के कारण गौ, महिष, घोड़ा आदि जीव भी त्रस्त रहेंगे जिसके कारण दुग्धादि उत्पादन भी प्रभावित होंगे एवं इसके मूल्य में वृद्धि होगी। अन्नादि के उत्पादन में कमी आएगी और इसके मूल्य में भी वृद्धि होगा। सुवर्णादि धातु पदार्थ के मूल्य में भी वृद्धि होगी। शासन और शासक पुष्ट रहेंगे परंतु आपसी द्वेष के कारण जनाक्रोश में वृद्धि होगी। सूर्य की ज्वाला में वृद्धि होगी। कृषि कार्य में अनेक बधाओं के बावजूद कृषक अपने लाभ से आनंदित होंगे। ग्रह युति-दृष्टि के आलोक में वैमनस्य, विघ्न , विलंब की स्थिति के बावजूद कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण, शिक्षा, ऊर्जा तथा जल से संबद्ध क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य होंगे। उद्योग, व्यापार, शिक्षा, क्रीड़ा के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य संपादित होंगे। समय-समय पर भूकंप, ज्वालामुखी, हिमपात, भूस्खलन, संक्रामक रोगोपद्रव, अग्नि कोप, विद्युत्पात एवं ओला वृष्टि से जनधन प्रभावित होंगे।

सन् १४३४ साल वर्षीय

शनि की साढेसाती तथा ढैया- इस वर्ष ३० जुलाई २०२६ ई. से मई २०२७ तक शनि मीन राशि में रहेंगे।

अत: इस प्रभाव से कुंभ मीन मेष राशि वालों के लिए शनि की साढेसाती तथा धनु सिंह राशि वालों पर ढैया का प्रभाव पड़ेगा। मेष राशि वालों के सिर पर, मीन राशि वालों के हृदय पर तथा कुंभ राशि वालों के पैर पर साढेसाती का प्रभाव पड़ेगा। जून २०२७ से शनि के मेष राशि पर जाने से मीन मेष वृष राशि वाले व्यक्ति प्रभावित होंगे।

अत: प्रभावित राशि वाले व्यक्ति शनि का जप, शनि स्तोत्र का पाठ, हनुमान जी की आराधना, दर्शन, पूजन, शनिवार को पीपल वृक्ष में गुड़ मिश्रित जल दान, हनुमान चालीसा तथा सुंदरकांड का पाठ करना या कराना, काले घोड़े के नाल की अंगूठी धारण करना हितकर होगा ।

मासफल

सावन मास फल:- इस मास में पांच गुरुवार "चंद्र जीवों यदा पञ्च अन्नादिना महर्घता" तथा पांच शुक्रवार "प्रजा वृद्धिस्तु भार्गवे" एवं चन्द्रदर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्तों के आलोक में खाद्य पदार्थों के मूल्य में वृद्धि होगी। देश की बौद्धिक तथा वैज्ञानिक ज्ञान प्रतिभा के क्षेत्र में विकास होगा। देश का पूर्वोत्तर क्षेत्र आंदोलित रहेगा। देश का मध्य भाग भी अशान्त रहेगा। आतंकी गतिविधि में वृद्धि, अन्नादि-चावल, गेहूं, चना, मूंग आदि के भाव में वृद्धि होगी। पेय पदार्थ के भाव में वृद्धि संभावित है। अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि के कारण यत्र तत्र बाढ़ की स्थिति रहेगी जिससे कृषि कार्य प्रभावित होंगे। सांप्रदायिक तनाव की स्थिति बनेगी परंतु उसी तीव्रता से उसका समन भी होगा।

भाद्र मास फल:- इस मास में पाँच शनिवार का योग, चंद्र दर्शन तथा संक्रांति मुहूर्तों के आलोक में "दुर्भिक्षं पंच मंदेषु" के कारण वायु वेग अनावृष्टि तथा अतिवृष्टि के कारण अधिक क्षेत्र जलप्लावित रहेंगे और कृषि कार्य विशेष रूप से प्रभावित होंगे। विद्युत पात तथा भूकंप के कारण जनधन विशेष रूप से प्रभावित होंगे। तृणादि का अभाव रहेगा। दुग्धादि तथा अन्नादि के भाव में वृद्धि संभावित है। सुवर्णादि आभूषणों के भाव कम होंगे। भवन निर्माण संबंधी पदार्थ के भाव में वृद्धि होगी। श्रमिकों का आंदोलन लोगों को प्रभावित करेगा। सीमा संबंधी विवाद उपस्थित होने की संभावना है। यत्र तत्र सत्ता परिवर्तित होने का योग बनता है।

आश्विन-मास फल:- इस मास में पांच रविवार तथा पांच सोमवार-"पञ्चार्क वासरे रोगा:" तथा "चन्द्रे बहु जलं तोयं तृणानां बहुलोदय:" "चन्द्र जीवों यदा पञ्च अनादीनां महर्घता" तथा चन्द्रदर्शन, संक्रान्ति मुहूर्तों के आलोक में इस मास में अन्नादि के भाव महंगे रहेंगे। इस मास में यानादि आकाशीय दुर्घटना एवं प्राकृतिक प्रकोप से क्षति होनें की सम्भावना रहेगी। सीमा प्रान्त के देशों में भारी राजनैतिक एवं आर्थिक समस्यायों से त्रस्त होंगे। व्यापारिक संबंध में क्षति होगी। स्वर्णादि पदार्थों के मूल्य में वृद्धि होगी। अन्नादि के भाव साम्य होंगे। भवन निर्माण सामग्री के भाव बढ़ेंगे। देश के मैदानी भाग में वायुवेग से तापमान कम होंगे।

कार्तिक मास फल:- इसमास में पांच मंगल- "पंच भौमे भयंमहत्" चन्द्रदर्शन, संक्राति मुहूर्तों के आलोक में- खाद्य पदार्थों के मूल्य में वृद्धि संभावित हैं। सैन्य गतिविधियाँ तेज होगी। राष्ट्र के प्रांतों में आकाशादि तथा यानादि दुर्घटना युक्त होगा। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अनेक उपायों की आवश्यकता होगी। पर्वतीय भाग आन्दोलित रहेंगे। तैलीय पदार्थों के मूल्य में तेजी तथा गेहूं, चावल जौ मटर के मूल्य स्थिर रहेंगे। तापमान में कमी आयगी। हिमालयी क्षेत्र में शीत का प्रकोप बढ़ेगा। पीत पदार्थों के मूल्य में वृद्धि तथा भवन निर्माण सामग्री के मूल्य स्थिर रहेंगे।

मार्ग मास फल:- इस मास में ५ बुधवार-"बुधेरसक्षयोभूम्यां" तथा ५ गुरुवार- "चन्द्रजीवों यदा पञ्च अन्नादीनां महर्घता" चन्द्र दर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्तों के आलोक में-दुग्ध तथा रसादि पदार्थों के उत्पादन में कमी होने के कारण इसके मूल्य में वृद्धि होने की सम्भावना है। चावल, रूई एवं श्वेत पदार्थों के मूल्य में कमी आयेगी। गेहूँ, चना, जौ के भाव में वृद्धि होने की सम्भावना है। धार्मिक उन्माद एवं हिंसा में जन-धन की हानि होगी। स्त्रियों के प्रति अत्याचार में वृद्धि, प्राकृतिक प्रकोप से राष्ट्रिय सम्पत्तियों की हानि, शीतलहर से कृषि कार्य प्रभावित होंगे। लोहा, पीतल, ताँबा मेवादि के भाव में तेजी रहेगी। हिमपात से गाय, भैंस तथा अश्वादि जीवों की हानि होगी। हिमपात तथा उपल वृष्टि तथा शीतलहर का प्रकोप बढ़ेगा।

पौष मास फल:- इस मास में ५ शुक्रवार-"प्रजा वृद्धिस्तु भार्गवे" चन्द्रदर्शन तथा संक्रांति मुहूर्त के आलोक में चावल रूई तथा श्वेत पदार्थो के भाव स्थिर रहेंगे। जीरा, धनियाँ, मसालों तथा रसायनिक पदार्थों के भाव में मंदी आयेगी। प्राकृतिक प्रकोप वायुयान तथा आकाशीय दुर्घटना की सम्भावना। पूर्वार्द्ध भाग में शीताधिक्य, वायु वेग तथा हिमपात की संभावना है। राजनैतिक उथल-पुथल तथा आपसी वैमनस्य से जनाक्रोश तथा प्रदर्शनादि से राष्ट्रीय जन की हानि। सीमावर्ती देशों में अशांति से सीमा पर अशांति रहेगी। धार्मिक उन्माद के कारण अशांति तथा जन जन की हानि होने की संभावना तथा राजनैतिक अशांति रहेगी।

माघ मास फल:- इस मास में ५ शनिवार-"दुर्भिक्षं पञ्च-मन्देषु" चन्द्र दर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्तानुसार खाद्य पदार्थों के मूल्य में सामान्य वृद्धि। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। हिमपात तथा पालापात के कारण कृषि कार्य प्रभावित होंगे। यत्र तत्र वर्षा की संभावना। सफेद पदार्थों के मूल्य में वृद्धि के बाद मंदी आयेगी। सुवर्णादि पदार्थों के मूल्य में वृद्धि। लोहे के मूल्य में स्थिरता। गेहूँ, जौ, चना, मूंग के भाव में वृद्धि के बाद स्थिरता रहेगी। राजनैतिक प्रति द्वन्दिता के कारण उथल पुथल रहेगा। परोसी देश अव्यवस्थित होगा। तेल के मूल्य में वृद्धि के कारण मंहगाई में वृद्धि रहेगी।

फाल्गुन मास फल:- इस माह में ५ रवि-"पंचार्क वासरे रोगा:" ५ सोमवार-"चंन्द्रे बहु जलं तोयं तृणानां बहुलोदय:" चन्द्रदर्शन, तथा संक्रांति मुहूर्त के आलोक में रोग, चौर, अग्नि के भय से सामान्य जन प्रभावित रहेगा। वायु, वर्षा, तथा उपल वृष्टि वज्रपात से जन जन की हानि सम्भावित हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर विपरीत प्रभाव परनें की सम्भावना। ऋतु परिवर्तन से चेचक आदि रोगों में वृद्धि। सीमा पर हल चल। गेहूं, मूंग, चना आदि धान्य के भाव में मंदी रहेगी। सुवर्णादि धातु पदार्थ तथा लोहा ताँबा के भाव स्थिर रहेगे। सरसों, गुड़, कपास के भाव में तेजी रहेगी।

चैत्र मास फल:- इस मास में ५ मंगल-"पञ्चभौमेभयंमहत्" चन्द्रदर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्तानुसार-खाद्य पदार्थों के मूल्य में कमी। सोना, चांदी, ताँबा आदि धातु पदार्थ सस्ते होंगे। वायु वृष्टि उपलपात से कृषि कार्य प्रभावित होंगे। दूध एवं रसादि-पदार्थों के उत्पादन में वृद्धि से इनके मूल्य में साम्यता रहेगी। समुद्र के तटवर्ती क्षेत्र चक्रवात से प्रभावित होगा। पक्षान्त तक तापमान में वृद्धि से गर्मी के कारण अग्नि भय में वृद्धि होगी। रोग चौराग्नि से जनमानस प्रभावित होगा। राजनैतिक क्षेत्र में प्रतिद्वन्दिता के कारण जानान्दोलन की सम्भावना एवं उथल पुथल की सम्भावना है।

वैशाख मास फल:- इस मास में ५ बुध-"बुधेरसक्षयोभूम्यां।।" तथा ५ गुरूवार-''चन्द्र जीवो यदा पंच अन्नादीना महर्घता'' चन्द्रदर्शन तथा संक्रान्ति मुहूर्त के कारण खाद्य पदार्थ के मूल्य में तेजी का क्रम रहेगा। स्वेत पदार्थ तथा काष्ठोपकरण, वस्त्रादि एवं औषधि के भाव स्थिर रहेंगे। दूध रसादि पदार्थ के उत्पादन में कमी होगी। आकाशीय दुर्घटना, रोग, चौर, अग्नि, भय में वृद्धि होगी। राजनैतिक अस्थिरता, नेतृत्व परिवर्तन, तथा जनहित का कार्य सम्पादित होगा। सीमावर्ती क्षेत्र अशांत रहेगा। गर्मी, उपल परत तथा वायु वेग के कारण कृषकों को क्षति होनें की सम्भावना।

ज्येष्ठ मास फल:- इस मास में ५ शुक्रवार-"प्रजावृद्धिस्तु भार्गवे" चन्द्रदर्शन तथा सूर्य संक्रान्ति मुहूर्त के आलोक में वायु वेग, ग्रीष्माधिक्य, उपल वृष्टि के कारण कृषि कार्य प्रभावित होंगे। शाक सब्जी के उत्पादन में ह्रास होनें की सम्भावना। राजनैतिक अस्थिरता, जनान्दोलन, धार्मिक उन्माद के कारण जन जन की हानि होने की सम्भावना। खाद्य पदार्थ, गेहूं जौ, चना मूंग के मूल्य में सामान्य वृद्धि की सम्भावना। फलादि गृहोपकरण, रक्त पदार्थ आदि के भाव में साम्यता रहेगी। सीमावर्त्ती क्षेत्र अशान्त रहेगा।

आषाढ़ मास फल:- इस मास में ५ शनिवार-"दुर्भिक्षंपंचमन्देषु" चन्द्रदर्शन तथा संक्राति मुहूर्त के आलोक में तथा ५ रविवार-"पंचार्क वासरे रोगा:" के कारण रोग, चौराग्नि भय के कारण जनमानस व्यवस्थित रहेगा। अन्नादि -गेहूँ, जौ चना अरहर के भाव में साम्यता रहेगा। खण्डवृष्टि, वायुवेग तथा अधिक ग्रीष्मता के कारण कृषि कार्य प्रभावित होगा। आकाशीय उपद्रव, दुर्घटना तथा रोग में वृद्धि होनें की सम्भावना। राजनैतिक अस्थिरता के कारण जनमानस प्रभावित होगा। खनिज पदार्थ, गृहोपकरण, काष्ठोपकरण औषधि तथा रसादि पदार्थ के मूल्य में वृद्धि सम्भावित है। नूतन कार्यारम्भ जनोपयोगी कार्यक्रम केन्द्र सरकार की प्राथमिकता होगी।

राशि फल २०८३-०८४

मेष-(चु, चे, चो,ल, लि, लु, ले, लो, अ)-राशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की साढेसाती के प्रभाव में रहेगा। विशेष परिश्रम करने पर ही सफलता की प्राप्ति होगी ।पारिवारिक कलह बंधु विरोध की स्थिति भी पैदा होगी। जिसके कारण मानसिक अशांति, चिंता तथा व्यय भार भी बढ़ेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी। संतान पक्ष से अनुकूलता, दाम्पत्य जीवन में कटुता की वृद्धि। धार्मिक स्थल की यात्रा से उत्साह में वृद्धि तथा सुख की प्राप्ति घर में मांगलिक कार्य संपादित होंगे। नौकरी तथा अध्ययन अध्यापनादि कार्य में बाधायुक्त- सफलता की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में सफलता बाधित होंगे। शनि की साढेसाती का उपचार करना हितकर होगा।

वृष-(इ, उ, ए, ओ, व, वि, वु, वे, वो)-राशि वालों के लिए यह वर्ष विजय कारक हैं। नौकरी तथा व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होगी, अध्ययन अध्यापनादि कार्य सुचारु रूप से चलेंगे। न्यायालयीय कार्य प्रभावित होंगे। अपने तथा कुटुंबियों के यहां मांगलिक कार्य संपादित होंगे। पुत्र सुख की प्राप्ति होगी तथा दैनिक जीवन में व्यस्तता रहेगी, सैन्य तथा सुरक्षा कार्य में संलग्न व्यक्तियों के कार्य चुनौती पूर्ण होंगे। आजीविका में संलग्न व्यक्ति आपसी सहयोग में अपना कार्य संपादित करेंगे तथा दांपत्य जीवन में कटुता की स्थिति बनेगी। धार्मिक स्थलों की यात्रा हितकर तथा उत्साह जनक होगा। जून २०२७ से शनि की साढेसाती का प्रभाव होगा इस अवधि में शनि की साढेसाती का उपचार आवश्यक होगा, हनुमान जी तथा शिवजी की आराधना से लाभ होगा।

मिथुन-(क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)-राशि वालों के लिए यह वर्ष उन्नति दायक तथा लाभदायक रहेगा। सामाजिक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी, व्यापारिक कार्य में लाभ प्राप्त होगा। भूमि भवन संबंधी कार्य में सफलता मिलेगी। पारिवारिक असहयोग समाप्त होगा। अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में संलग्न व्यक्तियों को परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा, परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। वर्ष के उत्तरार्ध भाग में मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। संतान सुख के प्रति तथा व्यवसाय में अब अभ्युन्नति का योग बनता है। धार्मिक स्थलों का भ्रमण सुखकर होगा। पारिवारिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क-(हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे)-राशि वालों के लिए यह वर्ष लाभदायक हैं। घरेलू समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा। राजनैतिक कार्यों से मिथ्या आरोप लगेगा, सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवार तथा कुटुंबियों के यहां मांगलिक कार्य संपादित होंगे। न्यायालयीय कार्य में बाधा की स्थिति बनेगी, अध्ययन-अध्यापन तथा कृषि कार्य से लाभ संभावित हैं। दांपत्य जीवन में सुख सहयोग प्राप्त होगा पर्यटक स्थल का भ्रमण लाभदायक होगा। छात्रों तथा श्रमिकों को कठिन श्रम से सफलता की प्राप्ति होगी।

सिंह-(म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे)-राशि वालों के लिए यह वर्ष संघर्षपूर्ण तथा कठिन श्रम साध्य होगा। कार्य पूर्ति में बधायुक्त सफलता, स्थानांतरण तथा प्रोन्नति की प्राप्ति, परिवार में मांगलिक कार्य संपादित होंगे। अध्ययन-अध्यापन तथा कृषि संबंधी कार्य से लाभ की संभावना है। मानसिक कष्ट निरर्थक कार्यों पर व्यय भार बढ़ेगा, पारिवारिक कलह, व्यावसायिक कार्यों में हानि संभावित है। शनि की ढैया का समाधान आवश्यक है।

कन्या-(टो, प, पि, पु, ष, ण, ठ, पे, पो)-राशि वालों के लिए यह वर्ष लाभदायक तथा सुखैश्वर्य कारक हैं। आर्थिक राजनीतिक तथा सामाजिक कार्यों से लाभ प्राप्त होगा अध्ययन, अध्यापन तथा कृषि कार्यों में बधायुक्त सफलता की प्राप्ति तथा आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। मित्रों स्वजनों से सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा से सुख समृद्धि प्राप्त होगा। संतान सुख दांपत्य जीवन सुखकर होगा। माता-पिता के स्वास्थ्य में कमी तथा व्यय भार बढेगा। आर्थिक लेनदेन में सावधानी बरतें। चोरी और ठगी के कारण आर्थिक क्षति की संभावना है। भूमि भवन से संबंधित रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। अपने रक्तचाप का ध्यान रखना आवश्यक है। मिथ्या आरोप के कारण मानसिक अशांति और इससे कष्ट होगा।

तुला-(र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते)-राशि वालों के लिए यह वर्ष विजय कारक है। व्यापार अध्ययन अध्यापन तथा कृषि कार्य में संलग्न व्यक्ति लाभान्वित होंगे। स्वास्थ्य संबंधी चिंता रहेंगी। राजनैतिक व्यक्ति अपने निकटतम व्यक्ति से सावधान रहें। दाम्पत्य जीवन में कटुता आयेगी। संतान सुख की प्राप्ति। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। भूमि भवन संबंधी कार्य वर्जित होंगे। पारिवारिक समस्या में उलझना अहितकर होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा से लाभ होगा।

वृश्चिक-(तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु)-इस राशिवाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष क्लेशकारक हैं। सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति मजबूत होगा। भूमि, भवन तथा वाहनादि का लाभ होगा, गुप्त शत्रुओं की पहचान आवश्यक है। नौकरी पेशा के व्यक्तियों के लिए सचेत रहते हुए अथक परिश्रम की आवश्यकता होगी। न्यायालयी कार्य में प्रगति तथा सफलता भी मिलेगी। धन के लेन देन में विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। स्थायी सम्पत्ति के लिए पारिवारिक कलह की सम्भावना हैं।

धनु-(ये, यो, म, भि, भू, ध, फ, ढ भे)-राशि वालों, के लिए यह वर्ष शनि की ढैया के प्रभाव के कारण कष्ट कर है। मानसिक चिंता, शारीरिक कष्ट की सम्भावना है। नौकरी पेशा में लगे व्यक्तियों को अधिक काम तथा सतर्कता की आवश्यकता है। पैतृक सम्पत्ति के लिए पारिवारिक कलह सम्भावित है। माता पिता के लिए स्वास्थ्य की समस्या रहेगी। भूमि, भवन तथा कृषि कार्य प्रभावित होगा। कारोवार से लाभ होगा परन्तु आन्तरिक शत्रुओं से सावधान भी रहना होगा। अध्ययन अध्यापन से सम्बंधित व्यक्तियों को विशेष सावधानी की आवश्यकता है। शनिवार को पीपल वृक्ष में गुड़मिश्रित जल दें। हनुमत्पूजन तथा हनुमान चलीसा तथा सुन्दरकांड का पाठ, लोहे की अंगूठी धारण करना लाभदायक होगा। धार्मिक स्थान का भ्रमण तथा शिवपूजन हितकर होगा।

मकर-(भो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खू, ग, गि)-इस राशि वाले व्यक्ति के लिए यह वर्ष सम्मानदायक है। व्यावसायिक कार्य से लाभ प्राप्त होगा। सामाजिक तथा राजनैतिक कार्य से सम्मान प्राप्त होगा। अध्ययन, अध्यापन तथा कृषि कार्य में बाधायुक्त सफलता की प्राप्ति होगी। भूमि, भवन, वाहनादि, के लाभ होने की सम्भावना है। नौकरी पेशा से जुड़े व्यक्ति अपने अधिकारियों का अनुशरण आवश्यक है। पारिवारिक सुख-संतान सुख की प्राप्ति। वैवाहिक जीवन सुख शान्तिमय रहेगा। कार्यक्षेत्र में अधिक परिश्रम तथा सावधानी की आवश्यकता है। धार्मिक स्थान का भ्रमण सुखदायी होगा।

कुम्भ-(गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द)-राशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव में रहेगा। मानसिक परेशानी, पारिवारिक कलह तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याये उपस्थित होंगे। अध्ययन अध्यापन तथा कृषिकार्य में बाधा युक्त सफलता। सरकारी सेवकों को सावधानी पूर्वक कार्य सम्पादित करना होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पादित होगे। साढ़ेसाती शनि का परिहार आवश्यक है। जून २०२७ से शनि की साढ़े साती का प्रभाव समाप्त हो जायेगा। इसके पश्चात् सभी कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न होंगे।।

मीन-(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि)-राशि वाले व्यक्ति सम्पूर्ण वर्ष शनि की साढ़े साती के प्रभाव में रहेगा। आकस्मिक रूप से पारिवारिक समस्याये होंगी। अध्ययन अध्यापन तथा कृषि कार्य में बाधायुक्त सफलता प्राप्त होगी। राजनैतिक तथा सामाजिक कार्यों में अपयश प्राप्त हो सकता है। भूमि, भवन, तथा वाहनादि का लाभ सम्भावित है। दाम्पत्य सुख में कटुता सन्तान सुख की प्राप्ति तथा परिवार में मांगलिक कार्य सम्पादित होंगे। शनिवार को पीपल वृक्ष में गुड़ मिश्रित जल प्रदान करें हनुमत्पूजन, हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकांड का पाठ करना या कराना। धार्मिक स्थान की यात्रा तथा शिवपूजन करना हित कर होगा।।

॥ अथ कर्मकाण्ड विमर्श ॥

पंचोपचारपूजा–

गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च।
पंचोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः॥

षोडशोपचारपूजा–

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा।
मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च॥
गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा।

पंचगव्यम्–

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्॥

पंचामृतम्–

शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते॥

पंचरत्नानि–

वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम्।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्॥

पञ्चपल्लवाः–

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः।
पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः॥

सप्तमृत्तिका–

गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ध्रदगोकुलात्।
राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्॥

सर्वौषधिः–

मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।
शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः॥
सर्वौषधिनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्।

सप्तधान्यम्–

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च।
श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥

हवने शाकल्यनिर्णयः–

तिलार्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्धं यवा स्मृता।
यवार्द्धं शर्करां दद्यात् सर्वार्धं च घृतं स्मृतम्॥

प्रदक्षिणा विचारः–

एका चण्ड्या, रवेः सप्त, तिस्रः कार्याविनायके।
हरेश्चतस्रः, कर्तव्याः शिवस्यार्धप्रदक्षिणा॥
(आह्निकसूत्र)

नवग्रह–समिधा (लकड़ी)

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपत्यपामार्गोऽथ पिप्पलः।
औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात्॥
अर्क (मदार), पलाश, खदिर (खैर), अपामार्ग (चिड़चिड़ि), पीपल, औदुम्बर (गूलर), शमी, दूर्वा, और कुशा–ये नव ग्रहों की समिधाएँ कही गई हैं।

महिष्यादि प्रसव दोषः–

माघेबुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा।
सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः॥

बिल्वपत्र विचार–

अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनःपुनः।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यादि क्वचित्॥
(स्कन्दपुराण) बिल्वपत्र न मिलने पर चढ़ाये हुये बिल्वपत्र को धोकर चढ़ाना चाहिए।

दूर्वादि विचारः–

दूर्वाः स्वाभिमुखाग्राः स्युर्बिल्वपत्रमधोमुखम्।
दूर्वाको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहिये।

धूप विचारः–

पूजनस्थल में देवता के बायें भाग में धुपदानी (अगरबती) स्थापित करना चाहिये।

दीपविचारः–

घी का दीपक देवता के दायीं ओर और तेल का दीपक बायीं ओर स्थापित करना चाहिये।

जपस्थान विशेषः–

शुचिस्थाने स्वगृहे जलाशये देवालये वा शुचिर्भूत्वा विधिवज्जपं कुर्यात्कारयेद्वा तदुक्तं स्मृतौ।
गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां तु द्विगुणं स्मृतम्॥
गवां गोष्ठे दशगुणं अग्न्यागारे शताधिकम्॥
तीर्थादिषु सहस्रं स्यादनन्तं विष्णुसन्निधौ॥

• प्रतिमा के स्थापन में दिशाका निर्णय (देवतामूर्तिपकाण ३।२४-२७)

पूर्वापरास्यं देवानां, मुखं नो दक्षिणोत्तरम्। ब्रह्मा विष्णुः शिवाकेन्द्रा गुहः पूर्वपराङ्मुखः॥
शिवब्रह्मजिना विष्णुः सर्वाशाभिमुखाः शुभाः॥
गणेशो भैरवश्चण्डी नकुलीशो ग्रहास्तथा। भूताद्या धनदाश्चैव दक्षिणास्याः शुभाः स्मृताः॥
मातृणां सदनं कार्यं दक्षिणोत्तरदिङ्मुखम् हनुमान् वानरश्रेष्ठो नैर्ऋतारयो विदिङ्मुखः॥

• मन्दिर के लिये प्रतिमा का परिमाण (बृहत्संहिता ५७।४७)

सौम्या तु हस्तमात्रा वसुदा हस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा। क्षेमसुभिक्षाय भवेत् त्रि–चतुर्हस्तप्रमाण वा॥
मन्दिर के लिये एक हाथकी प्रतिमा सौम्याताको प्रदान करनेवाली, दो हाथकी प्रतिमा धनको देनेवाली, तीन हाथकी प्रतिमा कल्याणको देनेवाली और चार हाथकी प्रतिमा सुभिक्षको देनेवाली होती है।

• घर के लिये प्रतिमा का परिमाण (भविष्यपुराण)

अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेव तु। गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः॥
अंगुष्ठ पर्वसे लेकर वितस्ति(बित्ता) परिमाणतक की प्रतिमा घरों में रखनी चाहिये, इससे अधिक प्रमाण की प्रतिमा विद्वानों ने अप्रशस्त कही है।

• घर में प्रतिमा रखने का विचार–

गृहे लिंगद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयं तथा। द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा॥
शक्तित्रयं तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च। द्वौ शङ्खौ नार्चयेच्चैव भग्ना च प्रतिमा तथा॥
नार्च्येच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशकं तथा। गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्च नार्च्याः पूज्या वसुन्धरे॥
एतासां पूजनान्नित्यमुद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही। घर में दो लिंग, दो शालिग्राम, दो द्वारिकाचक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख, खण्डित प्रतिमा और मत्स्य, कूर्म आदि दशो अवतारों की एकसाथ प्रतिमाओं का तथा अग्निसे दग्ध (जली) एवं भग्न(खण्डित) मूर्ति का पूजन नहीं करना चाहिये। इस प्रकार की मूर्तियों के पूजन करने से गृहस्थ नित्य ही उद्वेग(संकट) को प्राप्त होता है।

• घर में शालिग्राम रखने का विचारः– (पद्मपुराण)

शालग्रामः समाः पूज्याःसमेशु द्वितीयं न हि। विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एव हि॥
शालग्रामशिला भग्ना पूजनीय सचक्रका। खण्डिता स्फुटिता वापि शालग्रामशिलाशुभा॥
शालिग्राम भगवान का सम चार छः आदि रूप से पूजन करना चाहिये। समरूप में भी दो शालिग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिये। विषम रूप में एक शालिग्राम का ही पूजन करना चाहिये(तीन शालिग्राम आदि का पूजन नहीं करना चाहिये।

खण्डित मूर्ति का विचार

१ खण्डित मूर्ति यदि काष्ठ की हो तो उसे अग्नि में समर्पित कर दें। २. यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और यदि रत्न या धातु की हो तो उसे आगाध जल में डुबो देना चाहिये। जो मूर्ति खण्डित हो गई हो उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर मूर्ति को सवारी में रखें। तत्पश्चात् उसे गाजे बाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबो दें। जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो उसी परिमाण की दूसरी मूर्ति तैयार करके पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

• यज्ञ में दशदान का विवरण–

गो–भू–तिल–हिरण्याज्य–वासो–धान्य–गुडानि च। रौप्यं लवणमित्येवं दशदानं प्रकीर्तितम्॥
गौ, भूमि, तिल, सुवर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी और नमक–ये दश वस्तु दान के लिये कही गई है।

• गोदान का महत्त्व–

गोप्रदानं तारयते सप्त पूर्वान् परांस्तथा। यथाकथञ्चिद्दत्त्वा गां धेनुं काऽधेनुमेव वा।
अरोगामपरिक्लिष्टां दाता स्वर्गे महीयते॥
गोदान से सात पीढ़ी के पूर्वजों तथा सात पीढ़ी के आगे होने वाले वंशेजो का निस्तार करती है।

(बृहस्पति) भूमिदान का महत्त्व

षष्टिं वर्षसहस्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः। उच्छेत्ता चानुमन्ता च तावन्ति नरके वसेत्॥
यात्किञ्चित्कुरुते पापं जन्मप्रभृति मानवः अपि गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन शुद्ध्यति॥
भूमिदान करनेवाला पुरुष साठ हजार वर्षो तक स्वर्ग में निवास करता है और जो दी हुई भूमि हरण करता है या हरण करने का सलाह देता है, वह उतने ही वर्ष नरक में रहता है। मनुष्य जन्म से लेकर जो कुछ भी पाप करता है उसकी निवृत्ति के लिये यदि वह गायके चामके बराबर भी भूमिदान करे, तो वह शुद्ध हो जाता है।

• अग्निको प्रज्वलित करने का विचारः (देवीभागवत ११।२२५-६)

न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत॥
पटकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम् पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु॥
यज्ञाग्नि को न तो हाथसे दहकावे, न सूपसे और न पवित्र मृगचर्म आदि से (आदि पदसे वस्त्र का ग्रहण है)। मुखसे ही यज्ञाग्निको धौंके, क्योंकि वह मुखसे उत्पन्न हुआ है। वस्त्र (चर्म आदि) से अग्निको धौंकने पर व्याधि(रोग) होती है, सूपसे धौंकने पर धन–नाश होता है, हाथसे धौंकने पर मरण होता है, किन्तु मुखसे धौकने पर कर्मसिद्धि होती है।

• विधिहीन अग्नि में हवन करने से हानि (वायुपु ७५।६२)

अप्रबद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने। यजमानो भवेदन्धः सोऽपुत्र इति नः श्रुतिः॥
जो यजमान अग्निके ठीक–ठीक न जलने पर और धूमके रहते हुए अग्नि में हवन करता है, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है।

• पूर्णाहुति खड़े होकर ही करना चाहिये

मूर्धानं दिवमन्त्रेण संस्रवेण च धारयेत्। दद्यादुत्थाय पूर्णां तु नोपविश्यकदाचन (अग्निपु)
मूर्धानंदिवः०, (शु.य. ७।२४) इस मन्त्र के द्वारा स्रुवसे घृतकी धाराको खड़े होकर पूर्णाहुति करना चाहिये, बैठकर नहीं।

• कर्म–विशेष में अग्नि के भिन्न–भिन्न नामः–

प्रत्येक कर्म लिये अग्नि के अलग अलग नाम हैं। अतः जिस कर्म के लिये जिस अग्नि का आचार्यो ने नाम–निर्देश किया है, उसी अग्नि का सविधि आवाहन एवं स्थापन कर हवन करना चाहिये– गर्भाधानमें– **भरत**, पुंसवनसंस्कारमें– **वर**, सीमन्तोन्नयन संस्कार में– **मंगल**, जातकर्ममें–**स्वभू** और नामकर्म में **बल**, अन्नप्राशन संस्कार में–**अंगिरा**, चूड़ाकरण में **समुद्रभव**, उपयन में **जय**, गोदान अर्थात् समावर्तन में **रुद्र**, विवाह में **संयुग** अग्नि कहा गया है। अग्निहोत्र में **व्यालिक**, गृहकर्म में **भव** और पितृकर्म में **विश्वदेव**, उदरकी अग्निका नाम **अनल** है, मृत(शव) का भक्षण करने में अग्निका नाम **कल्मष** है। महाहोम में **वह्निका**, जलमें प्रवाह करने में अग्निका नाम **जल** है। पूर्णिमा के होम में **शशांक**, प्रलयमें अग्निका नाम **संवर्तक** है। काठसे उत्पन्न अग्निका नाम **घोर** है। वाँसों से उठी अग्निका नाम **परान्त** है। समुद्रमें रहनेवाली अग्नि **वडवाग्नि** है। पाक (अन्नपाक) करनेमें **दक्ष**, वसोर्धारा में जिसमें हवन किया जाता है उस अग्निका नाम **निधीश** है। धूपसे निकली अग्निका नाम **कामदेव** है। धान आदिके तुष(भूषी) की अग्निका नाम **कामहा** है। चतुष्पथ(चत्वर चौराहो) में स्थित अग्निका नाम **कामहा** है। क्षुधा उत्पन्न करनेवाली अग्निका नाम **बिभत्सु** है, राजा के घरमें उत्पन्न अग्नि का नाम **विजय** है। वृक्षोंसे उत्पन्न अग्निका नाम **धूम्र** है। दीपक में स्थित अग्नि का नाम **कृष्णपथ** है। हेमन्त आदि की अग्नि का नाम **वाद्य** है। मातृ मन्दिर से उत्पन्न अग्निका नाम **अजित** है। म्लेछ लोगों में जो अग्नि रहती है उसका नाम **शंकर** है। ईंटों की भट्ठी की अग्नि नाम **संघ** है। प्रायश्चित्त में अथवा व्रत खण्डित होने पर **शुद्धि** नामक अग्नि और शुक्र के आधान में अर्थात् वीर्याधान में **जय** नामक अग्नि जानना चाहिये। (देवीपुराण)

• गुरु–शुक्र के अस्तादि में त्याज्य कर्म–

जब गुरु–शुक्र, वृद्ध अस्त और बाल हों तथा क्षय मास तथा अधिक मास में बावली, बगीचा, तलाब, कुआँ, मकान इनका आरंभ और प्रतिष्ठा व्रत का आरंभ और उद्यापन, वधु प्रवेश, महादान, सोमयज्ञ, अन्वष्टका श्राद्ध, गोदान (ब्रह्मचारी का केशान्त संस्कार), नवान्न, जलाशया प्रथम श्रावणी कर्म वेद व्रत नील वृषोत्सर्ग अतिपन संस्कार (बालकों का जातकर्मादि संस्कार जो समय पर नहीं हुआ है), देवप्रतिष्ठा, गुरु से दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, मुण्डन प्रथम बार तीर्थ दर्शन, संन्यास, अग्निहोत्र, राज्याभिषेक की यात्रा चतुर्मास यज्ञ समावर्तन कर्णवेध और किसी दिव्यान्तरिक्ष वस्तु की परीक्षा नहीं करनी चाहिए।

• रुद्राक्ष के एक–मुख आदिके नाम और उनका फल

एकवक्त्रः शिवः साक्षाद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति। अवध्यत्वं प्रतिस्रोतो बह्निस्तम्भं करोति च॥ द्विवक्त्रो हरगौरी स्याद् गोवधाद्यघनाशकृत्॥....................(शिवरहस्य के अनुसार)

'एक मुखवाला रुद्राक्ष साक्षात् '**शिव**' है, जो ब्रह्महत्याको दूर करता है और समस्त स्रोतोंको अवध्य तथा अग्नि को रोकता है। **दो मुखवाला रुद्राक्ष 'हरगौरी' (शिव. पार्वती)** है, जो गोहत्या आदि पापों को दूर करता है। **तीन मुखवाला रुद्राक्ष 'अग्निजन्मा'** है, जो पाप–समूहोंको दूर करता है। **चार मुखवाला रुद्राक्ष 'ब्रह्मा'** है, जो मनुष्य की हत्या के पाप को नष्ट करता है। **पाँच मुखवाला रुद्राक्ष 'गुह'** है, जो भ्रूण–हत्या के पाप को नष्ट करता है।

सात मुखवाला रुद्राक्ष 'अनन्त' है, जो सुवर्णकी चोरीके पापको नष्ट करता है। **आठ मुखवाला रुद्राक्ष 'विनायक'** है, जो समस्त प्रकार के असत्योंका नाश करता है। **नौ मुखवाला रुद्राक्ष 'भैरव'** है, जो शिवसायुज्य (मोक्ष) को देता है। **दश मुखवाला रुद्राक्ष 'विष्णु'** है, जो भूत एवं प्रेतके भयको हरण करता है। **ग्यारह मुखवाला रुद्राक्ष 'रुद्र'** है, जो अनेक प्रकारके यज्ञों के फलको देता है। **बारह मुखवाला रुद्राक्ष 'काम'** है, जो समस्त कर्मों में, सफलता देता है और **चौदह मुखवाला रुद्राक्ष 'श्रीकण्ठ'** है, जो वंशका उद्धार करता है।

॥ अथ यज्ञ विमर्शः ॥

• अनाधिकारी को यज्ञ करानेसे हानि (मनुस्मृति ३।६५)

अयाज्ययाजनैश्चैव नास्तिक्येन च कर्मणाम्। कुलान्याशु विनश्यन्ति यानि हीनानि मन्त्रतः॥

जिनको यज्ञ करानेका अधिकार अथवा योग्यता नहीं है, उसके द्वारा यज्ञ कराने से, कर्मों की नास्तिकता से और वेदमन्त्रोंसे रहित होने से कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

• पतित को यज्ञ कराने से हानि (महाभारत, अनुशा० १११।४६-५१)

पतितं याजयित्वा कु कृमियोनौ प्रजायते। तत्र जीवित वर्षाणि दश पञ्च वर्षाणि च भारत॥
कृमिभावाद् विमुक्तस्तु ततो जायति गर्दभः। गर्दभः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि सूकरः॥
कुक्कुटः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि जम्बुकः श्वा वर्षमेकं भवति ततो जायति मानवः॥

पतित पुरुष को यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण कीड़ा बनकर उत्पन्न होता है और हे भरतवंशी राजन्! वह पन्द्रह वर्ष तक कीड़े की योनिको भोगता है। कीड़ेकी योनिसे छुटकर वह गधा होता है, फिर वह पाँच वर्षमें गधेकी योनिसे छुटकर सूअर होकर उत्पन्न होता है और पाँच वर्ष तक मुर्गेकी, गीदड़की तथा एक वर्ष तक कुत्ते की योनिको भोग कर फिर वह मनुष्य योनि में जन्म लेता है।

• शूद्र को यज्ञ कराने से हानि (पाराशरस्मृति १३।३६)

दक्षिणार्थे तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्धविः। ब्राह्मणस्तु भवेच्छुद्रः शुद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत्॥

जो ब्राह्मण दक्षिणा के लोभ से शूद्रको यज्ञ कराता है, वह शूद्र हो जाता है।

• यज्ञ में ब्राह्मणों के पूजन से ही कर्म की पूर्णता होती है:- (यज्ञ-मीमांसा)

ब्राह्मणानां नित्यपूजा कार्या वित्तानुसारतः। यावद् विप्रो न पूज्यन्ते न तावत् पूर्णतां व्रजेत्॥
पूजितेषु तु विप्रेषु सर्वं सम्प्रर्णतां-व्रजेत् प्रतिमा तेऽधिकं पुण्य ब्राह्मणस्य तु पूजने॥

यज्ञ में प्रतिदिन अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये। क्योंकि जब तक ब्राह्मणों का पूजन नहीं किया जाता, तब तक यज्ञ पूर्ण नहीं होता। देवताओं से भी अधिक यज्ञकें ब्राह्मणों के पूजन करने का महत्त्व है, अतः ब्राह्मणों का पूजन होने पर ही यजमान के समस्त कार्य परिपूर्ण होते हैं।

• यज्ञादि में धर्मपत्नी की आवश्यकता:-

पत्नी धर्मार्थकामनां कारणं प्रवरं स्मृतम्। अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः॥ पत्नी धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धिका श्रेष्ठ साधन है। कोई भी पत्नी-रहित पुरुष चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो अथवा शूद्ध हो- धार्मिक कर्म करने के योग्य नहीं हो सकता। **"अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।"** (तैत्तिरीब्राह्मण २।२।२) जो पुरुष पत्नी से रहित हैं वह यज्ञ के अयोग्य है। **एकचक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु।** (भविष्यपुरा.)- जिस प्रकार एक पहियेवाला रथ और एक पाँखवाला पक्षी चलने या उड़ने में असमर्थ होता है उसी प्रकार भार्यारहित पुरुष समस्त कर्मो में अयोग्य हैं।

• पत्नी के अनुपस्थित में:- (वाधूलस्मृति)

यस्य भार्या विदूरस्था पतिता वा रजस्वला। अनिष्टा प्रतिकूला वा तस्याः प्रतिनिधौ क्रिया॥
अन्यां कुशमयीं पत्नीं कृत्वा तु प्रतिरूपिकाम्। क्वचिच्छरमयीं पत्नीं नित्यकर्मणि कारयेत्।

जिनकी पत्नी दूरी हो, पतित हो, रजस्वला हो, अनिष्ट करनेवाली हो अथवा अनुकूल न हो, ऐसी स्थिति में भी अपनी पत्नी के प्रतिनिधिरूप में कुशा की पत्नी का निर्माण कर नित्यकर्म करें।

• कर्म विशेष में पति के समीप पत्नी के बैठने का निर्णय

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणः शुभा।
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी-सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्ध पत्नी तिष्ठति दक्षिणे॥
वामे सिन्दुरदाने च वामे चैव द्विरागमे। वामेऽशनैक शय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी॥
आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्॥

समस्त धार्मिक कार्यों में पत्नी के लिये अपने पति के दक्षिण भाग में बैठना शुभ कहा गया है। व्रतबन्ध में विवाह में, चतुर्थी कर्म में, सहभोजन में, दान में, यज्ञ में, और श्राद्ध में पत्नी को पति के दक्षिण भाग में बैठना चाहिये।

विवाह के समय सिन्दुरदान में, द्विरागमन में, पति के साथ बैठकर भोजन करते समय और पति के साथ शयन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पति के वाम भाग में ही रहना चाहिये। ब्राह्मणों द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करते समय, ब्राह्मणों के पाद-पक्षालन के समय, अभिषेक के समय भी अपने पति से वामभाग में बैठना चाहिये।

• स्त्री को पति की आज्ञा के बिना यज्ञादि करने का निषेधः- (मनुस्मृति)

नास्ति स्त्रीणां पृथज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्। पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते॥

स्त्रियों को पति की आज्ञा के वगैर स्वतन्त्ररूपेण यज्ञ, व्रत तथा उपवास करने का अधिकार नहीं है। स्त्री तो केवल पति-सेवारूपी यज्ञ के प्रभाव से ही स्वर्ग में आदर प्राप्त करती है।

• यज्ञादि में संकल्प की आवश्यकता- (भविष्यपुराण में)

संकल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः। फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत्॥

मनुष्य संकल्प के बिना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्य का क्षय हो जात है। **संकलपमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः॥** मनु २।३।

• यज्ञादि में न्यास की आवश्यकता (शारदातिलक टीका ४ पटल)

पूजाजापार्चना होमाः सिद्धमन्त्रकृता अपि। अङ्गविन्यासवधुरा न दास्यन्ति फलान्यपि॥
न्यासं विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधाः। न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत्॥

सिद्ध मन्त्र करने पर भी पूजन, जप, अर्चन तथा होमकर्म अंगन्यासके बिना फलप्रद नहीं होते। न्यासके बिना किया हुआ जप आसुरी कहाता है, उसका कुछ फल नहीं होता। इसलिये न्यासादि कर्मद्वारा देवस्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिये- **देवो भूत्वा देवान् यजेत्। न्यासहीनं तु यत्कर्म गृहृणंत्यर्द्धे तु राक्षसाः।** न्यासके बिना जो कर्म किया जाता है, उसका आधा फल राक्षस ले लेते हैं।

• यज्ञादि में एक वस्त्र धारण निषेध

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्श्राद्धभोजनसत्क्रिया॥ (योगियाज्ञवल्क्यः)
एकवस्त्रो न भुञ्जीत श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। न कुर्याद्दिवकार्याणि दानं होमं जपं तथा। (गौतमः)

• प्रशस्त आसन

शमी काश्मरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा। पञ्चासनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा॥
कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्॥

शमी, गम्भार, शोणवृक्ष, कदंब और खैर, रेमश, कंबल, मृगचर्म, काष्ठ और तालपत्र इनका आसन श्राद्ध तथा देवार्चन में प्रशस्त कहे गये हैं।

• आसन के विभिन्न फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि-मोंक्षश्रीव्याघ्रचर्मण, वंशाजिने व्याधिनाशः, कम्बले दुःखमोचनम्॥
अभिचारे नीलवर्णे रक्तं वश्यादिकर्मणि। शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलम्॥
वंशासने तु दारिद्रयं पाषाणे व्याधिसम्भवः धरण्यां दुःखसमभूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे।
तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः॥ काले मृगचर्म पर ज्ञानसिद्धि, व्याघ्र चर्म पर मुक्ति, वंशवल्कल पर व्याधि से मुक्ति, कम्बल पर दुःखनिवृत्ति। अभिचार कर्म में(मारण, मोहन, उच्चाटन आदि में) नीला आसन, किसी को वश में करने के लिए लाल आसन पर, ग्रहपीड़ा, महामारी आदिकी शान्ति के निमित्त किये जा रहे कर्म में कम्बल का आसन कहा गया है। चित्र कम्बल समस्त कार्यों के लिये कहा गया है। बांस के आसन पर दरिद्रता, पत्थर पर व्याधि, भूमि पर दुःख, छिद्रवाले काठ पर दौर्भाग्य, तृणासन पर धन और यश का नाश तथा पल्लवासन पर चित्त-भ्रम होता है।

• पूजन के समय प्रौढपाद (जाँघ पर पैर रखकर) नहीं बैठना चाहिए।

स्नानं दानं जपं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्॥

स्नान, दान, जप, होम, भोजन, देवपूजन, वेदका स्वाध्याय और पितृतर्पण में जांघ पर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिये। **(अत्रिसंहिता)**

• दक्षिणा देने की आवश्यकता

यज्ञो दक्षिणा सार्धे पुत्रेण च फलेन च। कर्मिणा फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदुः॥
देवीभागवत् ६।४५।५०
कृत्वा कर्म च तस्यैव तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम्। तत्कर्म फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने॥
कर्ता कर्मणि पूर्णेऽपि तत्क्षणात् यदि दक्षिणाम्। न दद्यात् ब्राह्मणेभ्यश्च दैवेनाज्ञानातोऽथवा॥
मुहूर्ते समतीते च द्विगुणा सा भवेद् ध्रुवम्। एकरात्रे व्यतीते तु भवेद्रसगुणा च सा। **(ब्रह्मवैवर्त प्र.ख. ४२।५४)**

दक्षिणा से युक्त पुत्ररूप फल के साथ यजमानों को फल प्रदान करता है। तथा कर्म कराकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देने से यजमान को तत्काल फलकी प्राप्ति होती है। यज्ञादि कर्म के पूर्ण हो जाने पर भी दैववश अथवा अज्ञानवश ब्राह्मणों को दक्षिणा न देने से प्रतिक्षण वह दक्षिणा द्विगुणित हो जाती है। एक रात बीत जाने पर वह छः गुनी हो जाती है।

• तिलक (चन्दन) धारण की आवश्यकता-

स्नानं सन्ध्या पञ्चयज्ञान् पैत्र्यं होमादिकर्म यः। विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत्॥

जो स्नान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ कर्म तथा होम आदि कार्य तिलक और दर्भ(कुश) के बिना करता है, उसका फल निष्फल जाता है।

• यज्ञादि में धौत वस्त्र पहनना चाहियेः- वशिष्ठ

जपहोमोपचारेषु धौतवस्त्रपरो भवेत्। अलंकृत शुचिर्मौनी श्राद्धादौ विजितेन्द्रियः॥

जप, होम आदि शुभ कृत्यों में धोती पहन कर ही कर्म करना चाहिये और श्राद्ध आदि कृत्य में पवित्र वस्त्र को धारण कर तथा जितेन्द्रिय एवं मौनी बनकर श्रद्धापूर्वक कर्म करना चाहिये।

• कुशके पवित्री(अंगुठी) की महत्ताः-

जपहोमहरा ह्येते असुरा दैत्यरूपिणः। पवित्रकृत-हस्तस्य विद्रवन्ति दिशो दश॥
यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य ब्राह्मणस्य पवित्रकम्॥

जप और होम के फल को हरण करनेवाले दैत्यरूपी असुर हाथमें पवित्र धारण किये हुए ब्राह्मण को देखकर दशों दिशओं में भाग जाते हैं। जैसे इन्द्रका वज्र, विष्णुका चक्र और शिवका त्रिशूल शस्त्र कहा गया है, वैसे ही ब्राह्मण का शस्त्र पवित्री कहा गया है।

• पवित्री में कुश की संख्या विचार-

चतुर्भिर्दर्भपिञ्जूलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम्। एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्ण वर्णे यथाक्रमम्॥
सर्वेषां वा भवेद् द्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं नवम्। चतुर्भिः शान्तिके कार्यं पौष्टिके पञ्चभिस्तथा॥
पैतृके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि॥ **(मार्कण्डेयः)**

अर्थात् ब्राह्मण के लिये चार कुशाओं का पवित्री धारण करने के लिये कहा है। क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रके लिये क्रमसे एक-एक कुश कम कर देना चाहिये। अथवा सभी वर्णके लिये नूतन और ग्रन्थियुत दो कुशाओं का पवित्री होना चाहिए। शान्ति कर्म में चार कुशाओं का, पौष्टिक कर्म में पाँच कुशाओं का, पितृकर्म में तीन कुशाओं का और नित्यकर्म में दो कुशाओं का पवित्री बनाना चाहिये।

• जप करते समय हाथ से माला गिरने या टूट जाने पर प्रायश्चित

माला यदि पतेद्धस्तातत्तथा चैव विनश्यति। सहस्रं तत्र सञ्जप्यं ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः॥
भोजनं ब्राह्मणानां तु सर्वानिष्टस्य नाशनम्। गायत्रीं वा जपेत्साष्टशतं भक्त्या समाहितः॥
ततोऽपरां नवां मालां तज्जातीयां वरानने। गृहणीयात्तु कृते चैवं न विघ्नैरभिभूयते॥

यदि जप करते समय माला हाथ से गिर जाय या टूट जाय तो १००० बार मन्त्र का जप करे और ब्राह्मणभोजन करावे। ब्राह्मण को भोजन कराना सकल अरिष्टों का विनाशक है। अथवा एकाग्र होकर भक्ति से १०८ बार गायत्री का जप करें। तदनन्तर दूसरी वैसी ही नई माला ग्रहण करें। ऐसा करने से पुरुष को विघ्न क्लेश नहीं होते।

• जप गणनार्थ (गणना हेतु) विहित वस्तु-

लाक्षा कुसीदं (रक्तचन्दनम्) सिन्दूरं गोमयं च करीषकम् एभिर्न्निाय गुटिकां जपसंख्या तु कारयेत्। (यामल)
नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धानयैर्न च पुष्पकैः। न चन्दनैर्मृत्तिकया च जपसंख्यां तु कारयेत्॥

लाख, लालचन्दन, कमलगट्टा, सिन्दूर, गोबर के गुटिका बनाकर जपकी गणना करनी चाहिए। अक्षत् से, हाथ के पर्व से, धान्य से, पुष्प से, चन्दन से और मृत्तिका से जपकी गणना न करे।

• यज्ञादि में यज्ञोपवीत धारण की आवश्यकता-

द्विज को सर्वदा यज्ञोपवीती होकर और शिखा बाँधकर रहना चाहिये। शिखा और यज्ञोपवीत के बिना वह जो कुछ कर्म करता है, वह न किये हुए के सदृश ही होता है।

• यज्ञ में जलयात्रा की आवश्यकता-

शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्॥
तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमेऽयुतहोमे तथैव च॥
व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे। जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठ कर्म समाचरेत्॥

जो शान्तिक व पौष्टि यज्ञादि कर्म जलयात्रा के बिना करता है, तो उसका वह कर्म निष्फल जाता है। तडाग आदि की प्रतिष्ठा करनी हो, देवमन्दिर आदिकी स्थापना करनी हो, लक्षहोम, कोटिहोम तथा अयुत हवन करना हो, एकादशी आदि व्रत का उद्यापन करना हो, सुवर्णका दान तुलादान, भूमिदान आदि महादान करना हो एवं मंगलमय महायज्ञ करना हो, तो पहले जलयात्रा करके तदुपरान्त श्रेष्ठ शुभ कर्म का अनुष्ठान करना चाहिये। **(यज्ञमीमांसा४१३)**

गर्भाधान-मुहूर्त्तः-

अश्वि, रो., मृ., उ.३, ह, स्वा, अनु., श्र., ध., श., चि, पुन., पु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं,बु,वृ,शु वारेषु। रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत्। शुभैः केन्द्र त्रिकोणगौः, पापैस्त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

सीमन्त-पुंसवन-मुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीयेमासिक कार्यम्। सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमेमासे वा मासिक मासाधिपतौ सबले कार्यम्। मृ. पुष्य, श्र., मू., पुन., हस्त, रो., रे, उ. ३, (जन्मभंविना) नक्षत्रेषु । १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे,कृष्णे ५ यावत्। सू., मं., वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु., चं. अपि, पूर्वाह्ले, पुंभस्यांगे तदंशं शुभम्। पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।६।१०।११ स्थिति, ४।८।१० पापरहितैः शुभम्।

जातकर्म-मुहूर्त्तः-

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुः श्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि., अनु रे., उ. ३, रो, अश्वि, पुनः, पु., स्वा, श्र., ध., श., नक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभ तिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

शिशोर्दुग्धपान मुहूर्त्तः-

अश्वि., रो., मृ.,पुष्य, श्र., पुन., हस्त, रे, उ. ३, चि.,अनु.,धन.,शत. रे. नक्षत्रेषु। शुभतिथिषु।शुभदिनेषु, वृष-सिंह- वृश्चिक-कुम्भ लग्नेषु स्तनपानं शुभम्। अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम् भक्षणोक्ततिथिदिनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं स्यात्।

सूतिकास्नान मुहूर्त्तः

अश्वि., रो., मृ, स्वाती अनु., उ.३, रे, नक्षत्रेषु। रवि, मंगल, गुरु दिनेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम्। आश्लेषा पू.३, ज्ये, ध. शत. नक्षत्रेषु मध्यम्।

प्रसूति-नखच्छेदन-मुहूर्त्तः-

अश्वि.,रो., मृ., पुन. पु. उ.३,हस्त,चित्रा, स्वाती,वि. अनु.,ज्ये, श्र., ध., शतभिषा नक्षत्रेषु। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु, शुभदिनेषु पूर्वाह्ने शुभम्।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारण-मुहूर्त्तः

भ., आ., अश्ले., म., वि., शत. रहित नक्षत्रेषु। शनि मंगल रहित दिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरण (लहठी) धारणं शुभम्।

शिशु निष्क्रमण मुहूर्त्तः-

जन्मतः तृतीयेचतुर्थे वा मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात्।

शिशु-भूम्युपवेशन मुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पंचमे मासि अ. उतरा३, रो. मृ, ज्ये., अनु. हस्त, पुष्य. अभिजित् नक्षत्रेषु, रिक्तामारहिततिथिषु, शुभदिनेषु, वृषसिंह वृश्चिक कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।

शिशु के भूमि पर बैठाने का मन्त्र-

रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निःक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रम्, शस्त्रम्, लेखिनीम्, पुस्तकम् सुवर्णं रौप्यञ्च स्थाप्यम्। तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति।

शिशुदर्शन मुहूर्त्तः

तृतीये मासे शुभ-तिथिदिन-नक्षत्रेषु पुष्प-फल-वस्त्र-द्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम्।

नामकरण-मुहूर्त्तः

विप्राणां ११, १२, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वा., पुन.,श्र.,ध., अश्वि.,पु.,अभि.,उ.३,रो.,मृ.,रे., चि., अनु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं., बु., वृ., शु. दिनेषु पूर्वाह्ले शुभम्। मध्याह्ने मध्यमम् शुभलग्ने शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितै पापैः ३।६।६६ स्थितैः। ८।१२ गृहे शुद्धा चन्द्रे २।३।५।६।१० स्थिते। लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

अन्नप्राशन - मुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो, विषममासेषु बालकानां षष्ठात्सममासेषु। रो. उत्तरा.३,मृ., रे., चि., अनु., स्वा., पुन., श्र., ध., शत., ह., अश्वि., पु., नक्षत्रेषु। २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु। चं.बु., वृ., शु., दिनेषु। शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ले। २।३।४।५।६।७।६।१०।११ लग्नेषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशञ्च रहितेषु। शभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः। पापैः ३।६।११ गतैः। दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभदृग्युतलग्ने। ४।६।८।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम्।

कर्णवेध-मुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। चं., बु.,वृ.,शु. दिनेषु। जन्मतारां विहाय श्र., ध., पुन., ह., अश्वि, पु., अभि.,मृ.,रे, चि., अनु. नक्षत्रेषु। ६।७।८। मासे वा विषमवर्षे। चैत्र-पौष-हरिशयन-रिक्ता-समवर्षाणि त्यक्तवा। २।३।४ ।६।७।६।१२ लग्नेषु। शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः। पापैः३।६।११ गतैः। लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

चूडाकरण (मुण्डन-आद्यकेशकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमाघादिषण्मासे अग्रहायणे च। ज्येष्ठाग्रहणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना। विषमवर्षेषु अश्वि, मृ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., ज्ये., श्र., धन., शत, रे मतान्तरेण रोहिणी, उतरा३ नक्षत्रेशु। चं, बु., वृ., शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषुशुक्ल पक्षे, कृष्णे ५ यावत्। २।३।४।८।६।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धै। पापैः ३।६।११ गतैः। शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः। जनमराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने ।८।१२ रहित चन्द्रे शुभम्।

अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मी-नवग्रह-कुलदेव- ग्रामदेवान् विधिवत् सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भौ विधेयः। अश्वि., पुन., पु., ह., चि., स्वा., अनु., अभि., श्र., रे, नक्षत्रेषु। २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। चं., बु., वृ., शु., दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, लग्नेषु तन्नवांशे चोत्तमः। कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धै, गुरौ दशमे, बुधे सप्तमे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभम्।

विद्यारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सति। सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु। २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि,, मृ., आ., पुन., पु., आश्ले., ह., चि., स्वा., मू., पूर्वा., ३, श्र., ध., शत. नक्षत्रेषु। शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः। पापैः ३।६।११ गतैः। वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुभ समये, उत्तरायणे माघादिषण्मासेषु, सू. चं. बु. वृ. शु वारेषु (सामवेदीनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम् २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्ले च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्न मासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि., रो., मृ., आ., पुष्य, आश्ले., पूर्वा३,उत्तरा३, ह.,चि., स्वाति, अनु., मू., श्र., ध., शत., रे. नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियोगादिषु, अपराह्ले, सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदित्रगः। सौम्याः केन्द्र त्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेश-चन्द्र-शुक्र-गुरवः षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १।५।८ स्थाःपापा न शुभाः। ६।८।१२ गताःशुभाः न शुभप्रदाः।३।६।११ गताः पापाः शुभदाः। पूर्णचन्द्रो वृष-कर्क-लग्न-गतः शुभो नान्यथाः। लग्नेऽर्कः शुभः।

गुरुशुद्धि- जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।६।११ स्थानगतः गुरु शुभः। ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमते १।३।६।१० स्थान गतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडश वर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भ- कालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वम् उपनयनं कार्यम्।

- **प्रदोषनिर्णयः-** यदा तृतीयायां प्रहरात्रयभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्रयभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्रयभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निष्द्धिम्।
- **वर-वरण मुहूर्त्तः-** शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणंशुभम्।
- **वर वरण मन्त्र-** ओम् तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये, स्नातः स्नातेह्यरोगिणि अव्यंगे अपतिते क्लीवे(अमुक नाम्नीं)कन्यां पिता तुभ्यं प्रदास्यति।
- **कन्या वरण मुहूर्त्तः-** शुभतिथि दिन लग्नेषु कृषिका पूर्वात्रय विवाहेषु च पुष्प फल वस्त्रादिभिः कन्यावरणंशुभम्।
- **विवाह-उपनयनादौ मण्डपादि निर्माण मुहूर्त्तः**

विवाहोपनयनादिशुभकर्मसु चन्द्रतारानुकूले दिने विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादिकं सम्बद्धं मण्डपादि कार्यं विधेयम्।

विवाहः मुहूर्त्तः

मार्ग-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु सौरक्रमेण (देवोत्थानांत्परं हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। **सू. चं. बु. वृ. शु** वारेषु। **अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. धन. रे.** नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु। शुभग्रहेषु १।४।५।७।६।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रो १।४।५।७।६।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमाश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठ-कन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः, ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्, अवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्योर्विवाहः शुभः।

- **विवाहोपरान्त प्रथम नदी-तलावादि में स्नान-मुहूर्त्तः-**

विवाह दिनात्षोडशंदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं ।२।३।५।७।१०।१३ तिथिषु। चं.,बु.,गृ, शु., दिनेषु। आर्द्रा, पुनः, पु. आश्ले., म.,पूफ.,उफा.,ह.,चि.,स्वा.,नक्षत्रेषु। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, लग्नेषु शुभम्।

- **राहु (काल) वासः**

सौरक्रमेण मार्गपौषमाघेषु पूर्वस्यां, फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्यां, ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायां, भाद्राश्विनकार्त्तिकेषूत्तरस्यां कालवासो भवति।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभः	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।६।११
पुज्यः	१।२।५।७।६	१।२।५।६	१।३।६।१०
निन्द्यः	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

द्विरागमनमुहूर्त्तः- अश्वि. रो. मृ. उत्तरा ३. पुन. पुष्य, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. शत. रे, **नक्षत्रेषु।** १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ **तिथिषु। शुक्लपक्षे कृष्णपक्षे ५ यावत्।** सू.चं.बु.वृ.शु. **वारेषु** मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषुशुभयुतदृष्टिेषु, शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते। पापैः ३।६।११ स्थितैःशुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेण मार्गफाल्गुन वैशाखामासेषु, शुक्रबाल्यस्तवृद्धत्वभिन्नकाले, वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारकार्यः। तृतीयादिविषमावर्षे शुक्र विचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रे.अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रऽपि द्विरागमनम् शुभम् व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिनक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३. पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु। बु. वृ. श. वारेषु। शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु, लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

वधू-प्रवेश-मुहूर्त्तः-

विवाहादिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पंचम-सप्तम-नवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे। चैत्र-पौष-भाद्र-क्षयमास-मलमास- भिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्त। न अत्र शुक्रविचारः कालविचारो वा १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५। तिथिषु। चं.,गु.,शु.शं., वारेषु, मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि.,रो.मृ.,पु.,उत्तरा-३ह.,चि., स्वा.,अनु., मू.,श्र.,ध.,रे., नक्षत्रेषु २।३।५।६।७।८।६।११।१२। लग्नेषु। शुभैः ।१।२।५।७।१०।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

यात्रा मुहूर्त्तः

वामपृष्ठराहौ। मलमासक्षयमास सौरक्रमेण चैत्र,भाद्र,पौष, रहित मासेषु। **अ.,मृ.,पुन.,पु.,ह.,ज्ये.,अनु.,श्र.,रे.** नक्षत्रेषूत्तमः। **रो. पू.३, चि., स्वा., मू.,पूषा.,ध.** नक्षत्रेषु मध्यमः। मृत्युयोग, दग्धतिथि मासान्त-संक्रान्ति-मासादि प्रभृतिदोषरहिते। अमृतसिद्ध-सर्वार्थसिद्धादिशुभ योगेषु। अमाशुक्लप्रतिपच्च विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु। दिक्शूलरहितदिने २।४।६।८।६ तारषु १।२।३।५।६।७।६।१०।११ चन्द्रेषु। आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि। द्विरागमनान्तरं पितृगृहगतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिण-सम्मुख-कालौ त्याज्यौ। तदन्तरमावश्यके केवलं सम्मुख-कालस्यत्याज्यः। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रवशेन-यात्राकार्या

- **सर्व दिग्गमन नक्षत्राणि-** अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य- श्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।
- **दिशा शूल विचार-** सोमे शनौ च पूर्वस्यां, वृहस्पतौ दक्षिणस्यां, रवौ शुक्रे च पश्चिमायां,
  मंगले बुधे च उत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम्।

दिशा शूल-परिहारः- रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृत-पयो-गुड-तिल-दधि-यव-माषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत।

विदिक्(कोण) शूल विचार- शनौ पूर्वे, चन्द्रऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ॠत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे,
उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

कालशूलम्- उषाकाले पूर्वस्यां,मध्याह्ने दषिणस्यां, सायंकाले(गोधूल्यां)पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्,कालशूलदोषत्वात्।

लग्न-चन्द्रयोर्वासः- मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां,मिथिनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां,
कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्राशुभा।
परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभ।

- **द्वादशचन्द्रस्य विशेष-** अधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।
  अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्ध विवादे चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥
- **चन्द्र विचारः-** जन्मनामग्रामादिराशितोऽभिष्ट दिनस्य चन्द्रं यावत् गणनीयम्। तत्र १।२।३।५।६।७।६।१०।११ संख्याकश्चन्द्र शुभ प्रदः ८ चन्द्रः कष्टप्रदः। ४ कलहप्रदः।१२ हानिकारकः। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद् दोषशान्त्यर्थमामतण्डुशंख श्वेतवस्त्रादि दानं कार्यम्।

जन्मराशि-नामराशि वेशन-विचारणीयविषया:-

विवाहे सर्वमंङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्त्येत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामरशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकण्यिां वर्गशुद्धौ च वादे द्युते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।

जन्म नक्षत्रे त्याज्या:- जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्।

जन्ममासे त्याज्या:- क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

गृहारम्भ(वास्तु)मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्तिक, अग्रहण, माघ, फाल्गुन, श्रावण(सौरक्रमेण), मासेषु। माघ,ज्येष्ठ मासे मध्यम, सम्मुख-काल-वर्जित-समये। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। **अ.,रो.,मृ.,पुन, पु.,उ.३, ह.,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र., ध.,शत.,रे.** नक्षत्रेषु। **चं., बु, गु, शु, श,** वारेषु। दिवा, शुद्धसमये।। शुद्धवृष-चक्रे, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु २।३।५।६।८।६।११।१२। लग्नेषु। लग्ने शुभदृग्युते। शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः,पापैः ।३।६।११। स्थितैः, ।८।१२। ग्रहरहिते शुभः। तृण-काष्ठादि-गृहनिर्माणम् अशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माणं शुद्धसमये एव। देवालयमठादि-निर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुभम्।

गृहारम्भे वृषचक्रं अर्कभात्

स्थानम्	न०	फलानि
शीर्षे	३	अग्निभयम्
अ.पा.	४	शून्यम्
पृ.पा.	४	स्थैर्यम्
पृष्ठे	३	धनम्
द.कु.	४	लाभः
पृ.	३	नाशः
वा.कु.	३	धननाशः
मुखे	३	कष्टम्

गृहप्रवेश मुहूर्त्तः

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक, अग्रहण, माघ (सौरक्रमेण) फाल्गुन, मासेषु माघ, ज्येष्ठ मासे मध्यम,। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ **तिथिषु शुक्ल पक्षे। कृष्णपक्षे** ५ यावत्। अ., रो., मृ.,पुन, पु., उ.३, ह., चि., स्वा.,अनु. मूल.,श्र.,ध.,शत.,रे. **नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श.** वारेषु। दिवारात्रौ। शुद्ध समये। शुद्धे कुम्भचक्रे ।२।५।८।११ लग्नेषूत्तम्। ३।६।६।१२ लग्नेषु मध्यमः। जन्मराशि लग्नाभ्यामुपचय-३।६।१०।११ राश्यांशेः स्थिरराशौ, लग्नात् १।३।५।७।६।१०।११ स्थानेषु शुभाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः। ४।८ भवने ग्रहरहिते। सम्मुखकाल रहित समये शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्ध-समये तृण-काष्ठादिक-गृह-प्रवेशो-शुद्धसमयेऽपि। अग्निभय राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभ मुहूर्त्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रं अर्कभात्

स्थानम्	न०	फलानि
मु.	१	अग्निदाहः
पू.	४	उद्वसनम्
द.	४	लाभः
प.	४	धनम्
उ.	४	कलहः
म.	४	विनाशः
अ.	३	स्थिरताः
क	३	स्थिरता

• **त्रिविधप्रवेशः-** दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवरात्रौ च गृहप्रवेशः शुभदः प्रोक्तः।

पृथ्वीशननक्षत्राणि मुहूर्त्तः- सूर्यनक्षत्रात्। ५।७।६।१२।१६।२६ मिते चन्द्र नक्षत्रे पृथ्वी शेते एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृति कार्यं ट्युबेल, बोरिंग, प्रभृति स्थापनञ्च न कर्त्तव्यम्।

चरणिविचारः- स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुताम्। अष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते। तत्फलम्-पशुहानिःपशु रोगः पशुलाभः पशुक्षयः पशुनाश पशोर्वुद्धिः पशुभेदो बहुपशुः।

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तिथयः	१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वामवृष्ठगतायोगिनीशुभ, दक्षिण-सम्मुख अशुभ।								

देवालय-गृहारम्भ-जलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातदिक्	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयाम्	ऐशान्याम्	वायव्यम्
देवालयारम्भे	ध.म.कु. सूर्ये	मी.मे.वृ. सूर्ये	मि.क.सिं. सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध. सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सिं.क. सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क. सूर्ये	सिं.क.तु. सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे. सूर्ये

जलाशयवाटिका-देवादि-प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तः-

सौरक्रमेण-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु शुक्लपक्षे, **सू., चं., बु.,गु.,शु.,** वारेषु ।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५। तिथिषु। **मृ.रे. चि.अनु.ह.,अश्वि.पु.,स्वा.,पुन.,श्र.ध.,श.,रो., उत्तरा-३,** नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकथिति- दिननक्षेत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं, स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ।३।६।११। स्थितैः। शुभैः १२।८। भिन्नस्थानगतैः देवादि प्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये, बुद्धं श्रवणयां, गणेशादयो रेवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थनैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीमालिकायाञ्च, शंकरस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

ट्यूवबेल, वोरिंग, टंकी प्रभृति स्थापने शुभ मुहूर्त्तः-

कृ. आश्ले., म.,पू.३,भ.,वि.,मू., नक्षत्रेषु। २।४।५।६।७।६।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। चं.बु.वृ.शु. वारेषु। पूवाह्णेऽपराह्णे वा, २।३।४।६।७।६।१०।११।१२ लग्ने शुभयुग्दृष्टे शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः। पापैः ३।६।११ गतैः शुभम्।

वापी-कूप-तडागादिखनन-मुहूर्त्तः-

सौरक्रमेण-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु शुक्लपक्षे शुद्धसमये, **रो., मृ. पुष्य., म., उत्तरा-३, ह., अनु., ध., श., रे.,** नक्षत्रेषु। पृथ्वीशयन नक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ।४।१०।११।१२। लग्नेषु राशिषु च शुक्रे दशमस्थे, गुरुबुधयो- रन्यतरस्थ-लग्ने, पापैःनिर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः शुद्ध वापी-कूप-तडागादि-चक्रे शुभम

वापीचक्रंरोहिणीभात्

स्थानम्	न०	फलानि
पृष्ठे	४	शुभजलं
नाभै	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनागमः
पादायोः	८	दुःखम्

खलस्थापनमुहूर्त्तः- ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम।

धान्यस्थापन-मुहूर्त्तः- अश्वि.रो.,मृ.,पुन.,पुष्य,चि.,ह.,उ.,३,स्वा.,अनु.,मू.,र.,ध., श.,रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिन लग्नेषु, २।३।५।८।६।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम्।

हल प्रवहण मुहूर्त्तः-

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. म. उत्तरा३, ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. धन. श. रे. नक्षत्रेषु। चं. मं. बु. गु. शु. वारेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलै। शुभैः सुबलिभिः। चन्द्र जलचर-राशिस्थिते तत्रवांशे वा। गुरौ लग्नस्थे शुत्ते विधौ च पुष्टे शुभम्।

हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र-	३	८	६	८
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं

बीजवपन-मुहूर्त्तः

अश्वि., रो., मृ., पुष्य, म., चि., ह., उ.३, स्वा, अनु., श्र., मू. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, चं., बु., गु., शु. दिनेषु शुभलग्नेषु, लग्नेशुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रत्रिकोणे पापैः त्रिषडायगौः शुभम्।

बीजवपने फणिचक्र राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र-	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं

कूपचक्रंरोहिणीभात्

स्थानम्	न०	फलानि	
मध्य	३	शीर्घस्वादु	अथवा सूर्यक्षादिप्येवमेवय
पूर्व	३	निर्जलम्	
अग्नि	३	शीघ्रजलम	
दक्षिण	३	निर्जलम्	
नैर्ऋत्यं	३	निर्मलजनम्	
पश्चिम	३	शीतजलम्	
वायु	३	जलहानिः	
उत्तर	३	मधुरजलम्	
इशान	३	क्षारजलम्	

तडागचक्रंसूर्यभात्

स्थानम्	न०	फलानि
पूर्व	२	जलशोषः
अग्नि	३	बहुजलम्
दक्षिण	२	जलहानिः
नैर्ऋत्य	२	अमृतजलम्
पश्चिम	३	स्वादुजलम्
वायु	२	निर्जलम्
उत्तर	३	स्थिरजलम्
ईशान	३	नष्टजलम्
मध्य	५	पूर्णजलम्
वाह्य	३	अमृतजलम्

मतदानकर्मणि नामाङ्कनमुहूर्तः-

रिक्तामारहितातिथिषु, सुयोगघटितरव्यादिदिनेषु। अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वोत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु। जन्मराशीशलग्नेशमङ्गलसूर्यदशेशैः बलान्वितैः। पापैः ३, ६, ११ गतैः शुभैः केन्द्रत्रिकोणधनसहजायस्थितैः वृषमिथुनकर्कसिंहकन्यातुलावृश्चिकधनुकुम्भमीनलग्नेषु जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय (३,६,११) राशिगतलग्ने शुभग्रहयुतदृष्टे, पापहीनेऽष्टमे नामाङ्कन शुभम्।

राज्याभिषेक(राष्ट्र-राज्य-कार्यभारग्रहण)मुहूर्तः-

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवणा, रेवतीनक्षत्रेषु। रिक्तामा-मङ्गलरहिततिथिदिनेषु। दिवा। जन्मराशीलग्नेशमङ्गसूर्यदशेशैः बलान्वितैः। पापैः ३,६,११ गतैः शुभैः केन्द्रत्रिकोणधनसहजायस्थितैः मिथुनसिंहकन्यातुला-वृश्चिककुम्भलग्नेषु। जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय (३,६,११) राशिगतलग्ने शुभग्रहयुतदृष्टे, पापवर्जितेऽष्टमे शुभः।

धान्यरोपणमुहूत्तः-

रो. उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु। सू. चं. बु. गु. शु. दिनेषु। शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम्।

धान्यछेदनमुहूर्त्तः-

मू.ज्ये.आष्ले.आर्द्रा, पूभा.ह.कृ. ध.श्र.मृ.स्वा.म.उत्तरा३,पूषा, भ. चि. पुष्य नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.गु.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्। अन्यान्यपि यव-गोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि।

मेधिरोपणमुहूर्त्तः-

अ. रो. पुनः पु. उत्तरा३,ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपणं शुभम्।

वर्षेशवशेन मेधिविचारः-

वर्षेश सूर्य वंशस्य, चन्द्रे शिम्बरः, मंगले कदम्बकम्, बुधे उदुम्बकम्, गुरौ आम्रम, शुक्रे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम्।

कर्णमर्दनमुहूर्त्तः-

मघा.पूफ.उफ. रो ज्ये मू अनु श्र. रे नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः-

आ.रो.पुन.पु.उत्तरा३, स्वा.वि.ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

बीजस्थापनमुहूर्त्तः-

रो. मृ. मृ. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु, चं. बु. गु. शु. वारेषु। शक्लपक्षे, कृष्ण ५ यावत् २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्।

वृक्षादिरोपण-मुहूर्त्तः-

अश्वि.,रो.,मृ.,पुष्य,उ.३, ह चि., वि., अनु., मू., श., रे., नक्षत्रेषु, चं, वृ., शु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्-

पञ्चक (ध., श., पू.भा., उ.भा., रे) रहित नक्षेषु। १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्,।

नवान्न भक्षण मुहूर्त्त

अ., रो., मृ., पुन., पु., उ.३, ह., चि., स्वा., अनु., श्र., ध., श., रे., नक्षत्रेषु शुभम, मूले नवान्नपारवणं मध्यमम्। सू., च., बु., गु., वारेषु। शुक्ल पक्षे २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं, १३ अंशयावत् आवश्यके २३ अंश यावदपि। ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम् २।३।४।६।७।६।१२ लग्नेषु, लग्नेशुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य-कृष्ण पक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघा-भरण्याश्लेषाऽऽर्द्रा-नक्षत्र-सौर-क्रमेणकार्तिक-पाषै-चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशी-रिक्तामंगलशानि- शुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपञ्चमी यावत् ग्राह्यः।

पुराणािदि श्रवण मुहर्त्तः

अश्वि., रो., मृ., पुन., पु., ह., चि., स्वा, अनु., मू., श्र., नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे **२।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५** तिथिषु। कृष्णपक्षे५ यावत्। **सू.,च., बु., गु., शु.** दिनेषु। शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्दृष्टे वलाढ्ये, शुभैः ।१।४।५।७।६।१०। स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः उत्तरायणे, श्रावण., आश्वि., कार्तिक, अग्र. मासेषु। तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धि क्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तंविनाऽपि शुभम्।

दीक्षाग्रहण मुहूर्त्त-

चै. वै. श्रा. आ. का. मार्गशीर्ष, मा. फा. मासेषु, अश्वि. रो. उ.३, रे. अनु. पुन. पुष्य. स्वा. मू. श्र. ध. श. पू.३, चि. नक्षत्रेषु सू. च. बु. वृ. शु. एषमह्नि भद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्। २।३।५।७।१०।११।१२ एतासुतिथिषु श्रेष्ठः कृष्णपक्षे पंचमी यावत् २।३।४।५।६।७।६।१२। लग्नेषुचन्द्रतारानुकूलेसति शुभम्। लग्नात् ३।६।११ एषु पापैः १।४।५।७।६।१० एषु शुभैश्चोत्तमः। अष्टम्यां संक्रान्तौ रविचन्द्रोपरागे चोत्तमः। गुरुशुक्रोदये श्रेष्ठः।

व्रतोद्यापन-मुहूर्त्तः-

अश्वि,रो.,पुन.,मृ.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध.,श.,रे., नक्षत्रेषु। शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा। कार्तिक, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मासेषु। शुभलग्नेषु। कार्तिकवतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनञ्च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः ।१।४।५।७।६।१०। स्थितैः, पापैः ।३।६।११। स्थितैः, पंचमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्धयभावेऽपि परमावश्यक

कल्याणार्थशान्तिःमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पु. उ.३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र.ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु शुद्ध समये आवश्यकेऽशुद्धेऽपि चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षयमास रहिते शुभम्। शुभलग्ने लग्नस्थे गुरौ चतुर्थस्थे चन्द्रे दशमस्थे सूर्ये अष्टमे लग्ने च पाप रहिते शान्तिःशुभाः।

नवचण्डी-शतण्डी-सहस्रचण्डी यज्ञ मुहूर्त्तः-

वैशाख, फाल्गुन, माघ, श्रावण अग्रहण, आश्विन, कार्त्तिक मासेषु पूजायां तु शुभावहाः। ३।५।१५।७।१३।१०।१२।६ तिथिषु। सू.चं.बु.गु.शु. वारेषु। अश्वि. रो. स्वा. पु. ज्ये. उत्तरा३, पुन.।

होमाहुतिविचारः- सूर्यभात्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले।

आहुति दोष परिहारः-

विवाहयाग व्रतबन्ध दीक्षा सीमन्तचण्डी गृहवास्तुशान्तौ।
आदित्यसौरीकुजराहु केतवो न दोषदा यवविधायिनां खलु।

दुर्गाहोमे आहुतिचक्र विचारः-

ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराहीऐंद्री त्वथ चण्डिका च। मेघा च माहेश्वरीनारसिंही क्रमेण सूर्यादिनभं त्रिकं च। श्रीपुत्रदा शोक भयो धनाप्तिर्ह्यतस्तथा राजपदाप्तिरोगौ। विद्यासुखाप्तिनृपतेश्च लाभः फलानि दुर्गा हवने क्रमेण।।

रक्तमोक्षण(ऑपरेशन) मुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पृष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत. नक्षत्रेषु सू. मं. वृ. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु चन्द्र तारा अनुकूले सति शुभम्।

चिकित्सा मुहूर्त्तः-

अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत. नक्षत्रेषु सू. चं. मं. वृ. शु. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु शुभाः।

भैषज्य भक्षण मुहूर्त्तः

अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु ३।६।९।१२ लग्नेषु शुभैः। ३।६।९।१२ राशि स्थितैः लग्नात् ७।८।१२ ग्रह रहितेषु औषधिभक्षणं शुभम्। जन्म नक्षत्रे भैषज्यभक्षणं शुभम्।

विपणि मुहूर्त्तः-

मृग. रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तरा३, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. शं. वारेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे १० यावत् १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु। लग्ने चन्द्र शुक्रे। पापैः ८।१२ रहितैः शुभैः २।१०।११ स्थितैःशुभाः।

वस्तुनांविक्रयः मुहूर्त्तः-

भ., कृ., आश्ले.वि.पू. ३ नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु चं. बु.वृ.शु. दिनेषु शुभैः। १।२।४।५।७।९।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः कुम्भं विना लग्नेषु शुभः।

वस्तूनांक्रयमुहूर्त्तः-

शुभतिथिदिनलग्नेषु अ.चि.स्वा.श्र.शत.रे. नक्षत्रेषु शुभः।

स्वामिसेवा(नौकरी) मुहूर्त्तः-

अश्वि. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु। सू. बु. गु. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु। लग्ने शुभयुते। सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे। सेव्यसेककयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः- अश्वि. मृ. पुष्य., पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। सू. मं. बु. गु. शु. दिनेषु, शुद्धसमये ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु शुभग्रहयुक्तलग्नेषुशुभम्।

ऋणप्रदानमुहूर्त्त(द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्तः)- स्वा. पुन. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, ५।८।९ ग्रहरहिते। चं.गु.शु.शु. वारेषु शुभम्।

ऋणदाने निषिद्धसमयः- बुधवासरः, भरणी, कृ. आर्द्रा. आश्ले, मघा, पूर्वा३. चि. ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च।

ऋग्रहणेनिषिद्धसमयः- रविमंगल दिने। संक्रान्तिः। वृद्धियोगः। हस्तनक्षत्रञ्च। एषु ऋणर्पणं शुभम् कुंभ लग्नेषु, रविगुरुशनिदिनेषु शुभतिथिषु। चैत्रभादवपौषमलमासक्षयमासभिन्न समये शुभः।

मोटर-बस-साइकिल-यादानि-चालयन मुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु चं. मं. गु. शु. श. दिनेषु। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेश बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते। लग्नेशदशमेशसप्तमेश-नवमेशैरति १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः। पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम्।

इष्टिकारम्भ मुहूर्त्तः

अ., रो., मृ., पुष्य, उ.३, ह., ज्ये., श्र., रे. नक्षत्रेषु। वृषिसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु, रवि, गुरु, शनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्र, भाद्र, पौष, मलमास, क्षयमास भिन्नसमये शुभः।

मील चालन मुहूर्त्तः

शुभतिथिदिननक्षत्रेषु। १।४।७।१० लग्नेषु। शुभैः १।४।५।७।१० स्थितैः, लग्नेशधनेशसप्तमेशैकादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम्

उग्रकर्म मुहूर्त्तः-

पूर्वा३, भ, मघा, मू. ज्ये, आश्ले. आर्द्रा नक्षत्रेषु मं. श. दिनेषु। १।८।१०।११ लग्नेषु। १।३।४।८।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम्।

इन्धन स्थापन मुहूर्त्तः

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम्।

पञ्चक(भदवा)विचारः-

धनिष्ठा-शतभिषा पूर्वभाद्रोत्तरभाद्रे रेवतीनक्षत्राणि पंचकसंज्ञकानि। तत्र दक्षिणदिग्गमन-गृहाच्छादन- प्रेतदाहतृणकाष्ठादि- संग्रहशय्यावितान निर्माणदिकं च त्यजेत्। **तत्रापवादः**-वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत्।

दग्धतिथि-मासान्तादिविचार-

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्ये अष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्य निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकल शुभकार्येषु त्याज्यम्।

नक्षत्र संज्ञा-

चरसंज्ञक नक्षत्र- स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनि., शतभिषा ये नक्षत्र और सोमवार ये चर और चरसंज्ञक हैं, इनमें हाथी, घोड़ा पर चढ़ना, फूलवारी आदि लगाना और यात्रादि तथा लघुसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म करना भी शुभ है।

उग्रसंज्ञक नक्षत्र- पूर्वा३,भ.,म. और मंगलवार ये उग्र और क्रूरसंज्ञक हैं, इनमें घात अग्नि कार्य, विषादिक प्रयोग, शस्त्र बनाना तथा दारुण संज्ञक नक्षत्रों के कार्य शुभ होते हैं।

मिश्रसंज्ञक नक्षत्र- विशाखा, कृत्तिका और बुधवार ये मिश्र और साधारण संज्ञक हैं, इनमें अग्निकार्य और वृषोत्सर्ग, उग्रसंज्ञक नक्षत्र में भी कार्य करना शुभ होता है। **क्षिप्र और लघुसंज्ञक नक्षत्र-** हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् नक्षत्र और गुरुवार, क्षिप्र और लघुसंज्ञक हैं, इनमें दूकान लगाना, रति, शास्त्राध्ययन, आभूषण बनाना या बनवाना, चित्र रचना, ६४ कला सीखना।

मृदुसंज्ञक नक्षत्र- मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र संज्ञक हैं इनमें गीत, वस्त्र, खेल, मित्रकार्य, और आभूषण बनाना या धारण करना शुभ है।

चुल्हिकास्थापन मुहूर्त्तः

अ.,भ.,वि.,रो.,मृ.,उ.,३,कृ.,मू.,पू.षा.,ध.,आर्द्रा., नक्षत्रेषु। सू.मं.श. दिनेषु, शुभतिथि लग्नेषु शुभम्।

चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनभावधि

स्थान	नं०	फलम्	स्थान	नं०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृति

युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथियः	दिनानि	फलानि
कुल	पू.३,अश्वि.पुष्य.म. मृ.श्र.,कृ,ज्ये.,वि,चि	४।८।१२।१४	मं.शु.	स्थायिजयदः (मुद्दालय)
अकुल	भ.,स्वा.,आश्ले.,ध.,रे, ह,रो.,अनु.पुन.,उत्तरा.३	१।३।५।७।९ ११।१३।१५	सू.,च, वृ,श.	यायिजयदः (मुद्दई)
कुलाकुल	आर्द्रा,मू.,अभि.,श.	२।६।१०	बुधः	उभयोःसन्धिः

पल्लीपतनफलबोधकचक्रम

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	जंघयोः	शुभः
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	हस्तद्वये	लाभः
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	हस्तद्वये	लाभः
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	स्कन्धयो	विजयः
अधरोष्ठे	ऐश्वर्यप्राप्तिः	नाभौ	धनप्राप्तिः
नासाग्रे	रोगः	कटिभागे	पशुलाभः
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	द.मणिबंधे	हानिस्तापः
वामकर्णे	लाभः	वा.मणिबंधे	कीर्तिनाशः
नेत्रयोः	धनलाभः	हृदये	धनप्राप्तिः
द.भुजे	पराक्रमः	मुखे	मधुरभोजनम्
वामभुजे	राजभयम्	केशान्ते	कष्टम्
कण्ठे	शत्रुनाशः	गुल्फयोः	धनम्
स्तनयोः	सौभाग्यम्	द.चरणे	भ्रमणम्
उदरे	आभूषणप्राप्ति	वा.चरणे	बन्धुनिग्रहः
पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः	पादान्ते मध्ये	स्त्रीनाशः
जानुद्वये	शुभः		

वारतिथिविचार यदिपल्ली(छिपकली)

१।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक होता है। तथा सोम, बुध, गुरू, शुक्रवार में। पुष्य, अश्वि.,रो.मू.पुन.उ.फा.ह. चि.स्वा. ध.रे.अनु.शत. नक्षत्रों में गिरे तो शुभ फल देता है। उपरोक्त में निर्दिष्ट सभी फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वाम अंग में विचार करना चाहिए। पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ फल होता है। यदि छिपकिली या गिरगिट शरीर की दाहिनी तरफ से चढकर बांयीं तरफ से नीचे आ जाय तो दोष नहीं होता। **दोष की शान्ति-** शान्ति के लिए वस्त्र सहित स्नान कर पंचगव्य(गाय की गोबर, मूत्र,, दही, दुध, घी मिलाकर) ग्रहण करना चाहिए। शिव मन्दिर में दीपजलाना, महामृत्युञ्जय मन्त्र का कम से कम १०८ वार जप, **ॐ नमः शिवायै ॐ नमः शिवाय** का ११ माला जप कर यथा योग्य भोज्यप्रदार्थ, वस्त्रादि दान करने से दोष की शान्ति हो जाती है।

स्वप्नफल (सपना) विचार-

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
पत्रपढ़ना=	शुभसंदेश प्राप्ति	जहाज देखना=	परेशानी दूर हो।
कुएँ का पानी=	लाभ,विजय	अर्थीदेखना	रोगमुक्त,आय में वृद्धि।
आकाशदेखना=	ऐश्वर्यवृद्धि, पुत्रप्राप्ती	नदी का पानी पीना=	राज्य से लाभ।
रत्न-नगीना=	दुःख,व्यय।	लाल फूल देखना=	पुत्र सुख,भाग्योदय
अग्नि उठाना=	अनुचितधनलाभ	सफेद फूल देखना=	दुःख हरण।
आगजलाकरपकड़ना=	कष्ट,अपव्यय।	पत्थर देखना=	मित्र से कष्ट, दुःख
सुखा अन्न खाना=	अनेक कष्ट	बाजार=	शुभ
मेघदेखना=	दुःख,कष्ट	सुराही=	कुसंगति।
बादल देखना=	राज्यलाभ	चश्मा लगाना=	ज्ञान में वृद्धि
अँगूठी पहनना=	धनधान्य की वृद्धि	धनुष खींचना=	लाभ प्रद यात्रा।
सूखा बागदेखना=	आपत्ति आना	रोटी खाना=	धनवृद्धि,पदोन्नति।
बालदेखना=	धनलाभ	रस्सी=	कष्टकर यात्रा।
कटेबालदेखना=	सन्तानप्राप्ति	दाँत टुटना=	दुःख, झण्झट
मुर्दादेखना=	धनलाभ	दरवाजा=	मित्रता बढ़े।
जहाजदेखना=	यात्रा	कीचड़ में फँसना=	कष्ट अपव्यय।
समुद्रदेखना=	यश एवं धनकी प्राप्ति	घर बनाना=	प्रसिद्धि प्राप्त हो।
शराबपीना=	अपयश हो	लोहा=	धनलाभ।
बिल्ली,बन्दरकाटना=	रोगी होना।	घोड़ा=	संकट से छुटकारा।
कमलदेखना=	उन्नति हो।	घास का मैदान=	धन संग्रह।
कुत्ता देखना=	उत्तममित्र मिले।	घोड़ा पर चढ़ना=	पदोन्नति हो।
खाईदेखना=	धन एवं प्रसिद्धि मिले	मोती देखना=	लड़की पैदा हो।
टोपीदेखना=	दुःख दूर हो।	मुर्दे से बात करना=	मनोकामनापुरी हो
कैंचीदेखना=	घर में कल हो।	बड़ी दीवाल देखना=	सम्मान मिले।
पूजाकरना=	पदोन्नति,लाभ।	जमीन पर विस्तर लगाना=	आयु वृद्धि
दीपक जलतेदेखना=	आयुवृद्धि हो।	रूई देखना=	स्वस्थ रहना।
सुगन्धलगाना=	विद्वान एवं पण्डित हो।	भूकम्प देखना=	सन्तान से कष्ट
चादर देखना=	बदनामी हो।	खूँटा देखना=	धार्मिक कार्य में रुचि।
झरना देखना=	दुःख दुर हो।	दतुवन करना=	सुख शान्ति।
चाँदी देखना=	धन की वृद्धि हो।		
सिंहासन देखना=	सुखप्राप्त हो।		

स्वप्न फल कब मिले?- रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में द्वितीय प्रहर का ८ मास में तृतीय प्रहर का ३ मास में अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। बहुत बड़ा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। **अशुभ स्वप्नदोष शान्ति**-दुष्ट स्वप्नदोष दूर करने निमित्त मृत्युञ्जय का जप होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, इष्टदेव पूजन, विष्णु सहस्र नाम, गजेन्द्र मोक्ष, वा चण्डी पाठ, ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभव स्वप्नों को देख फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

अंगस्फुरणफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	कुक्षौ	प्रीतिः
ललाटे	पदलाभः	उदरे	धनम्
स्कन्धे	भोगः	लिंगे	स्त्रीसमागमः
भ्रूमध्ये	सुखम्	वृष्णौ	पुत्रलाभः
कपाले	शुभम्	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः
नेत्रयोः	धनाप्तिः	हनौ	भयम्
नेत्रकोणयोः	धनम्	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	ग्रीवाधः	शत्रुभयम्
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	पृष्ठे	पराजयः
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनं
नेत्रापांगे	स्त्रीलाभः	कपोलौ	व्यभिचारः
नासिकयोः	सुखम्	बाहौ	प्रियलाभः
हस्ते	धनलाभः	बाहुमध्ये	धनागमः
वक्षसि	सुखम्	बाहौः	प्रियलाभः
हृदये	इष्टसिद्धिः	उरसी	वस्त्रलाभः
कटिदेशे	प्रमोदः	जानुन्योः	भयम्
नाभौ	स्त्रीनाशः	जंघे	स्वामिप्राप्तिः
कटिपार्श्वे	प्रीतिः	पादयोरुपरि	स्थानलाभः
आन्त्रिके	कोषवृद्धिः	पादतले	पराक्रमः
भगे	पतिसमागमः	पादयोः	हानिः

स्वप्न नाशक यन्त्र-

गं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ढं	चं
नं	छं	जं	टं

शुभ मुहूर्त्त में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगन्ध की स्यायी से लिखकर सविधि पूजन कर गले में धारण करने से दुःस्वप्न दोष दूर होता है।

महेन्द्रादियोगचक्रम्

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि- मा२ अ८ व१० शू८ मा२ शू२ अ६ शू८ व६ मा२ व४ अ२
चन्द्र- मा४ शू६ व१२ मा२ अ२ शू४ व२ मा६ व२२
मंगल- व४ शू२ मा६ व४ शू२ अ४ शू४ अ६ व४ शू२ व८ अ६ शू४,अ४
बुध- व४ अ४ व६ अ४ शू२ व४ मा२ व४ शू४ अ६ शू६ व८ शू६
गुरु- अ६ शू४ व४ अ६ व६ अ४ व४ मा४ अ२ व८ अ४ शू४ अ४
शुक्र- शू२ अ१६ व८ अ२ शू२ व४ शू८ अ६ व८ अ२ शू२
शनि- शू४,व४,शू६,अ४,शू२अ४,शू२अ४,शू४,व४,अ४,व४,अ६,व४,अ२,शू२

ज्येष्ठ आषाढ़मासयो:

रवि- शू४ अ६ मा६ व६ शू२ व४ अ२ शू४ मा६ शू४ व६ शू२ मा४ व४
चन्द्र- व८ अ४ शू६ अ६ मा६ व६ अ८ व८ शू४ व४
मंगल- अ४ शू४ व४ शू२ अ४ व२ मा८ शू२ व६ अ४ व४ अ२ शू२ व२ अ६ व४
बुध- शू२ व४ अ८ व६ अ८ शू२ अ१० शू२ व८ अ६ शू२ अ२
गुरु- अ२ शू२ अ४ व८ अ६ शू२ अ६ शू४ अ४ शू२ व६ अ६ शू४ व४
शुक्र- शू४ अ१४ व८ अ२ शू२ व४ शू२ अ६ शू६ अ८ मा२ शू२
शनि- शू४ व६ अ६ शू२ व४ अ४ शू६ व४ अ६ व४ अ४ शू२ अ२ व६

आश्विन-कार्तिक-मार्ग-पौष-मासेषु

रवि- मा६ व८ अ८ शू२ मा४ शू६ व४ अ४ व४ अ६ शू२ अ४ शू२
चन्द्र- अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६
मंगल- मा२ व६ अ१० व६ शू२ व१२ अ२ शू२ अ६ व४ मा४ व४
बुध- शू४ अ४ मा६ शू४ व६ शू२ व८ अ४ व८ अ६ शू८
गुरु- अ४ व६ अ८ शू४ व६ शू६ अ८ व४ अ६ व६ मा२
शुक्र- अ२ व६ शू६ व६ अ८ व१४ शू४ मा२ अ६ मा६
शनि- मा४ शू४ अ८ शू८ अ४ शू२ अ१२ शू४ व६ मा२ शू६

माहेन्द्रादि योग फल-

न वार तिथि नक्षत्रं न योग: करणन्तथा। शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।।
माहेन्द्र विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाश: स्याच्छून्ये मरणं ध्रुवम्।।
ज्योतिशं ग्रह शास्त्राणां सारमुधृत्य यत्नत:। क्रियते मिहिरेणेदं नाराणां हितकाम्यया।।
अयं रव्यदिवारेषु महेन्द्रादियोग: प्रोक्तदण्डप्रमाण कालेन व्यतीतो भवतीति चक्रे विलोकनीयम्।।

माहेन्द्रादिचक्र के प्रयोग की विधि- चैत्र वैशाख श्रावण भाद्र माघ फाल्गुन मास हो तो रविवार को सूर्योदय के पश्चात् पहला २ घटी माहेन्द्रयोग है, फिर ८घटी अमृतयोग आगे १० घटी वक्रयोग आदि होगा। वक्रय एवं शून्य योग अशुभ है, जबकि माहेन्द्र एवं अमृतयोग शुभ है। यदि अति आवश्यक हो तो यात्रा मुहूर्त न होने पर भी महेन्द्र एवं अमृत योगों में यात्रा की जा सकती है।

यात्रा में चौघड़िया मुहूर्त्त

उद्वेगश्चामृतो रोगो लाभ: मृति:। सूर्य: शुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरामृत:।।
सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पच्चमगो ह्यषट्। सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्र: शुक्रो भौम: शनिर्बुध:।।

शीर्घता में कोई मुहूर्त न मिलता हो तथा अचानक यात्रा करनी पड़े, तो उस समय चौघड़िया मूहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर, अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे का रात्रि हो, तब एक चौघड़िया १.३०(डेढ़)घण्टा अर्थात् पौने चार घटी का होगा।

जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिनेट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जायें, तो क्रमश: उस दिन की आठों चौघड़ीयों का समय ज्ञात होंगे। उस आठों चौघड़ीयो में कौन सा ग्राह्य और कौन सा त्याज्य है, यह **दिन की चौघड़ीया** के चक्र में उस दिन के **वार**के सामने चक्र में देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो, तो उसदिन के रात्रि मान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनेट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमश: रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जायेगा। **शुभ, लाभ, अमृत एवं चंचल शुभ होते हैं। काल, रोग एवं उद्वेग अशुभ होते हैं।**

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त्त-

होरा वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
चन्द्र	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल

अर्धपहरा बोधक चक्रम्

दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिवा	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रि	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त्त- सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक हैं। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**- टेण्डर देन व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध या कर्ज लेने देने, सभा सोसायटी में आना जाना और मुकदमा कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**- में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन◆

नष्ट (खोई-हुई) वस्तु ज्ञान चक्र

संज्ञा	नक्षण	लाभालाभ	दिशा
अन्धाक्ष	रो,पुष्य,उ.फ.,वि.,पू.षा,ध.,रे.	शीघ्रलाभ	पूर्व में
मन्दाक्ष	मृ.,श्ले.,ह.,अनु.,उ.,षा.,श.,अश्वि.	प्रयत्न से लाभ	दक्षिण में
मध्याक्ष	आर्द्रा,म..,चि.,ज्ये.,अभि.,पू.,भा.,भा.,भ.,	दूर श्रवण मात्र	पश्चिम में
सुलोचन	पुन.,पू.,फा.,स्वाति,मू.श्र.उ.भा.,कृ,	अलाभ	उत्तर में

नष्टवस्तुज्ञानम्-

प्रश्नकालीन तिथि वार नक्षत्र और लग्नांक जोड़ में तीन और जोड़कर पाँच से भाग दें। १ शेष बचे तो भूमि पर प्राप्य, २ बचे तो जल में अप्राप्य, ३ बचे तो किसी ऊँचे स्थान पर अप्राप्य, ४ बचे तो नष्ट, ५ शेष में केवल शोक सन्ताप ही होगा।

सिद्धादियोगचक्र तिथि-नक्षत्र-वशेन

दिनानि	रवि:	सोम:	कुज:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:
सिद्धियोग:	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृतयोगा:	४।१०।१५	४।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थ-सिद्धियोग:	अश्वि. मू. पुष्य. हस्त.	रो.मृ.अनु. श्रवण.पुष्य	अश्विनी	रोहि.मृ. हस्त अनु.	अश्वि.पुन पु.अनु.रे.	अश्वि.पुन. अनु.श्र.रे.	रोहिणी स्वा. श्रवण
मृत्युयोग:	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोग:	००	०० ००	४।९।१४	०० ००	०० ००	०० ००	४।९।१४
मध्यमयोग:	१२	११	१०	३	६	२	७

ताराचक्रम्

तारा	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम:	वध:	साधक:	प्रत्यरी	मित्रम	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	७।१६।२५	६।१५।२४	५।१४।२३	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	००	गुडम्	००	तिला:	००	लवणम्	००	००

◆ व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**- विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ो से मिलना, कोष संग्रह, नविन काव्या लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**- यात्रा भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्य वर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**- भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं। प्रत्येक होरा एक घण्टे का होता है। जिस दिन जो **वार** होता है, उस वार के आरम्भ(अर्थात्) सूर्योदय के समय) से १ घण्टा उसी वार को होरा होता है इस के बाद एक घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता हैं। इसी प्रकार दूसरे होरे छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता हैं। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले बार के सूर्योदय समय उसी अगले वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए उपयुक्त होरा लिखि है, उस के अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा का **क्षणवार** कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गयी है। इसलिए यदि वार और क्षणवार दोनो अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो **क्षणवार** अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। जैसे- पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो, तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए समय सोम की होरा(क्षणवार) हो, उस समय

भद्रा वास:- कुंभ, मीन, कर्क, सिह- इन राशियों में चन्द्रमा रहें तो मृत्युलोक में, मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चन्द्रमा में स्वर्ग में, कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में पाताल में भद्रा रहती है। भद्रा जहाँ रहती है, वहाँ ही इसका फल भी होता हैं।

भद्रावास फल:-

स्वर्गे च लभते सौख्यं, पाताले च धनागमम्।
मर्त्यलोके भवेच्चिन्तां एवं भद्राफलोदितम्।।

स्वर्ग में भद्रा रहे तो शुभ कारक और पाताल में रहें तो धनागमन करने वाला होता है। यदि भद्रा मृत्युलोग में रहें तो सभी कार्यो को विनाश करने वाला होता है।

शिववास एवं फल

तिथिं च द्विगुणीं कृत्वा वाणै: संयोजयेत्तत:।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत्।।
एकेनवास: कैलाशे द्वितीये गौरी सन्निधौ।
तृतीये वृषभारूढ: सभायां च चतुष्टये।।
पंचमे भोजने चैव क्रिडायांषण्मिते तथा।
श्मशाने सप्तशेषे च शिववास: इतीरित:।।
फलम्- कैलाशेलभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पद:।
वृषभेऽभीष्ट सिद्धि: स्यात् सभा सन्तापकारिणी।।
भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीडायां कष्टमेव च।
श्मशाने मरणंज्ञेयं फलमेव विचारयेत्।।

शिववास तिथि

शुक्लपक्ष- २, ५, ६, ९, १२, १३
कृष्णपक्ष- १, ४, ५, ८, ११, १२, ३०
विधि-(शुक्लादितिथिसं. X२+५)÷७=१।२।३ शेष शुभ, अन्याशुभ।

अग्निवास चक्रम्

शुक्लपक्ष में				कृष्णपक्ष में				र.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.
३	७	११	१५	०	४	८	१२	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.
०	४	८	१२	१	५	९	१३	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.

अग्निवास:- सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ता: शेषे गुणेऽभ्रे भुविवह्निवास:।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च।।

शुक्लादि पक्ष से वह तिथि जिसमें कर्म हो उसकी संख्या ५ या १० जो भी हो उसमें वर्तमान रव्यादि वार की संख्या जोड़कर १ संख्या और जोड़ देनी चाहिये। फिर ४से भाग देने पर यदि ३ या ०(शून्य)शेष रहे तो अग्नि का वास भुमि में होता और वह सुखकारी होता है। यदि १ या २ शेष रहे तो अशुभ अर्थात् सुख का लेश भी नहीं होता।

अर्थात्-(शुक्लादितिथिसं.+सूर्यादिदिनसं.+१)÷४=३, ० शेष शुभ

अग्निवास की विशेषता:- विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चुड़ोपनीतिग्रहणेयुगादै:।
दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवग्निचक्रं परिचिंत नीयम्।।
विवाह, यात्रा, व्रत, यज्ञ, नित्यनैमित्तिककार्य, यज्ञोपवीत, ग्रहण, रोग, पीड़ा तथा दुर्गापूजन आदि में अग्निवास का विचार नहीं करें।

अथ वाजसनेयि सन्ध्या-वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिरि पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख (पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिना हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री, सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी

१. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३. ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः। विनियोग मन्त्र-जल लय- ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर के सिक्त करी- ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः।
अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु के सिक्त करी।

तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री (अंगुठी)धारण करी- ॐ पवित्रेस्थे वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥ पुनः जल लय आसन के सिक्त करी(आसन पर छींटी)-ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिना हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी-ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शिखा स्पर्श करो- चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

चन्दन करी- ॐ चन्दनं वन्दयते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक संकल्प करी-ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य उत्पात्तदुरितक्षयपूर्वक-श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थ संध्योपासनं करिष्ये।

जल लय- अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिर्नुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्व मेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ततोरात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥ एहि मन्त्रें जल कें अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तदुत्तर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह कें दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

• प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी - ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्वृहती-पङ्क्तिस्त्रिष्टुब्जगत्य-श्छन्दंस्याग्निवाय्वादित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्र-विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।
गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः।
शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्रणायाम करी-

• प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

१. दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिना पूड़ाके बन्दकय वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत **पूरक नामक** प्राणायाम करी।

२. द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा कँ दाबि दीर्घकालधरि वायुकँ धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत **कुम्भक नामक** प्राणायाम करी।

३. तृतीय दहिना पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत **रेचक नामक** प्राणायाम करी।

• प्रातः' कालीन सन्ध्याक समय-जल लय- सूर्य्यश्चमेति ब्रह्मऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्य्यो देवता प्रातराचमने विनियोगः।

सूर्य्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥ एहि मन्त्रें प्रातः कालमे आचमन करी।

तदुत्तर वाम हाथ मे जल लए विनियोग वाक्य पढ़ि दहिना हाथक अंगुष्ठ आ अनामिका आंगुर सँ एक-एक मन्त्र पढ़ैत कुल सात मन्त्र सँ सात बेर माथ पर जल प्रक्षेप करी- ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः। १. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महे रणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उशतीरिव मातरः। ७. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९. ॐ आपो जनयथा च नः

तदुत्तर दहिना हाथ में जल लए एक बेर विनियोग वाक्य आ तीन वेर "द्रुपदादिव" इत्यादि मन्त्र पढ़ि ओहि अभिमन्त्रित जल के देह पर सिक्त करी- द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवताः सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः। मन्त्रः-ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

तदुत्तर दहिना हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जलक स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल कँ अपन वाम भाग मे विना देखने नीचा खसा दी- ॐ अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः॥

तदुत्तर दहिना हाथ मे जल लिए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी- ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।
ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥

तदुत्तर पूर्वाभिमुख ठाढ़ भए अगिला मन्त्रे अर्घ्य दी-
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भार्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए

निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

• ॐ उद्वयमिति हिरण्यस्तूप ऋषिरनुटुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

• उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवँव्वहन्ति केतवः दृशे व्विश्वाय सूर्य्यम्॥ चित्रमिति कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

• ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ग्वं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

• ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीत-पुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

• ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं ग्वं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

• गायत्री जप विधिः-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत नीचा देल क्रमशः हृदयादि अंगक स्पर्श करी।

१. ॐ हृदयाय मनः। २. ॐ भूः शिरसे स्वाहा ३. ॐ भुवः शिखायै वषट्। ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

व्याहृति-त्रयस्य प्रजापति-ऋषिर्गायत्री उष्णिग् अनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वायव्यादित्या देवता जपे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता॥
आदित्यमण्डलास्था ब्रह्मलोकगताऽथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥

अगिला मन्त्रे गायत्रीक विनियोग तदुत्तर आवाहन करी- तेजीऽसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीच्छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य-मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥ आवाहन कऽ निम्नलिखित विनियोग पढ़ी अगिला मन्त्रे प्रणाम करी- परोरजस इति विमल ऋषिरनुष्टुप् छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थापने विनियोगः।
ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे।
नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदो मा प्रापत्
ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रीच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव।

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ बेर गायत्री मन्त्र जपी - ॐ भुर्भूवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ॥

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री के जप समर्पित करी-
ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी- ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि।
ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्॥

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रे सूर्य के अर्घ्य दए प्रणाम करी-
ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् । भास्वते विष्णुतेजसे॥
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥
एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य के प्रणाम करी-
ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

॥ इति सन्ध्या वन्दन विधि॥

नोट- तर्पणाधिकारी व्यक्ति तर्पण कय सूर्य के अर्घ्य देथि।

वाजसनेयि तर्पण विधि-

१. देवतर्पण- नदी वा पोखरि में तीतले वस्त्र पहिरि नाभि तक पानि मे ठाढ़ भय वा स्थल पर तर्पण करवाक हो तँ सुक्खल वस्त्र धारण कय आसन पर पूब मुँह बैसि दहिना हाथ मे तेकुशा लय वाम हाथ मे उपयमन अर्थात् जुट्टी सन गुहल कुश (बिरणी) लय दहिन हाथ मे यव ओ जल लय देव तीर्थ सँ नीचाँ मे राखल कुश पर जल खसबैत तर्पण करी-

ॐ तर्पणीया देवा आगच्छन्तु। ॐ ब्रह्मास्तृप्यताम्।
ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्।
ॐ देवाः यक्षास्तथा नागाः गन्धर्वाऽपसरसोऽसुराः।
क्रूराः सर्पाः सुपर्णाश्च तरवो जम्भकाः खगाः॥
विद्याधराः जलाधाराः तथैवाकाशगामिनः।
निराधाराश्च ये जीवाः पापे ऽधर्मेरताश्चये॥
तेषामाप्यायनायै तद् दीयते सलिलं मया॥

तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती(यज्ञोपवीत कँ कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ (कनिष्ठा आंगुलिका मूल भाग) सँ सनकादि ऋषि सभक तर्पण एक-एक बेर जल दए करी-ॐ सनकादय आगच्छन्तु (एहि मन्त्र सँ आवाहन् करी।)

ॐ सनकश्च सनन्दश्च तृतीयश्च सनातनः।
कपिलश्च आसुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा॥
सर्वे ते तृप्तिमायान्तु मद् दत्तेनाऽम्बुना सदा॥

ऋषि तर्पण-

पुनः पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय देव तीर्थ(अंगुली क अग्रभाग) सँ मरीचि आदि दस ऋषिक तर्पण एक-एक बेर जल दैत करी- ॐ मरीच्यादय आगच्छन्तु। आवहन करी। ॐ मरीचिः तृप्यताम्। ॐ अत्रिः तृप्यताम्। ॐ अङ्गिराः तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यः तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुः तृप्यताम्। ॐ प्रचेताः तृप्यताम्। ॐ वशिष्ठः तृप्यताम्। ॐ भृगुः तृप्यताम्। ॐ नारदः तृप्यताम्।

दिव्य-पितृ तर्पण-

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ (अंगुष्ठ आ तर्जनीक मध्यक मूल भाग)सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा विना तिलो के तीन-तीन बेर जल दैत अग्निष्वात आदिक तर्पण करी।

ॐ अग्निष्वात्तादय आगच्छन्तु। आवाहन करी।

ॐ अग्निष्वत्तास्तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ सौम्याः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ हविष्मन्तः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ उष्मपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ सुकालिनः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ वर्हिषदः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।
ॐ आज्यपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

यम तर्पण

ऊपर मे वर्णित विधि के अनुसार १४ यमक तर्पण करी।

ॐ यमादय आगच्छन्तु। आवहन करी।

ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः। ॐ औदुम्बराय नमः। ॐ दध्नाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। तकर बाद **ॐ चतुर्दशैते यमाः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिताः।** ई वाक्य पढ़ी।

पितृ-तर्पण-

(उपयुक्ते विधि सँ पितृ-तर्पण करी। पुरुष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे **''सतिलम्''** नहि पढ़ी।) अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।

पितर क आवाहन के अगिला मन्त्रे तर्पण वही

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (अपन गोत्र) **पिता अमुक** (पिताक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा** (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। **तस्मै स्वधा।** (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः **तस्मै स्वधा।** (ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः** (अपन गोत्र) **पितामहः अमुक** (बाबा का नाम) **शर्मा तृप्यतामिद सतिलं जलं तस्मै स्वधा।** ३ बेर ॥ **ॐ अद्य अमुक गोत्रः** (अपन गोत्र) **प्रपितामहः अमुक** (प्रपितामहक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।** ।३बेर।। अन्त मे- **"ॐ तृप्यध्वम्-३"** ई वाक्य३ बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नानाक गोत्र) **मातामहः अमुक** (नानाक नाम) **शर्मा' तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा** ३ बेर।। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः** (नाना क गोत्र) **प्रमातामहः अमुक** (परनानाक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा**३ बेर।। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः** (नानाक गोत्र) **वृद्धप्रमातामहः अमुक** (वृद्धप्रमातामहक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा-१।** अन्त मे **ॐ तृप्यध्वम्**- ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी।।

स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रा (अपन गोत्र) **माता अमुकी** (माताक नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा** १ बेर ॥ **ॐ अद्य अमुक** (अपन गोत्र) **गोत्रा पितामही अमुकी** (दादी क नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुक** (अपन गोत्र) **गोत्रा प्रपितामही अमुकी** (पर दादी क नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। अन्त मे ''ॐ तृप्यध्वम्''** ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) **गोत्रा मातामही अमुकी** (नानी क नाम)**देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी** (नानाक गोत्र) **गोत्रा प्रमातामही अमुकी** (पर नानी नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी** (नानाक गोत्र) **गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी** (वृद्ध परनानी कनाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१।**

अन्त मे **''ॐ तृप्यध्वम्''** ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।

एहि तर्पणक बाद अपन अन्य सम्बन्धी लोकनि कें गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में जल लय अपन बन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु कें जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति॥

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कायल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पितर कँ दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कँ तीन बेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।
एषो अर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ।।१।।
ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्प्य माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ।।२।।
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ।।३।।

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कँ प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः

छन्दोगक तर्पण विधि-

दहिना हाथ मे तेकुशा लए सव्य (वामस्कन्धस्थापित यज्ञोपवीती) भए वाम हाथ के दहिना हाथक नीचा भाग मे स्पर्श कयने भूमि पर रही तऽ पूब, उत्तर अथवा ईशानकोणाभिमुख बैसि दहिना जांघ के खसेने पवित्र भूमि पर राखल तेकुशा पर अथवा एक टा सराय मे राखल जल मे (ओहि जल मे विना तेकुशा राखने), यदि जल मे ठाढ़ रही तऽ पूर्वाभिमुख भए देवतीर्थ (अंगुलिसभक अग्रभाग) सँ पहिने देवतर्पण करी। यथा परिस्थिति तेकुशा पर अथवा जल मे तीन बेर जल दैत पढ़ी-

ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती (यज्ञोपवीत कँ कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ (कनिष्का आंगुलिक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ ऋषि तर्पण तीन बेर जल दैत करी-

ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। पुनः पूर्वाभिमुख भए प्रजापत्य तीर्थ (कनिष्ठा अंगुलीक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ प्रजापति तर्पण एक बेर जल दैत करी-

ॐ प्रजापतिस्तृप्यन्ताम्।

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ (अंगुष्ठ आ तर्जनीकक मध्य मूल भाग) सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा विना तिलो पुरूष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे **"सतिलम्"** नहि पढ़ी।)

अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी।

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।

पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (गोत्र) **पिता अमुक** (पिता का नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा** (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। **तस्मै स्वधा।** (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः **तस्मै स्वधा।** (ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः** (अपन गोत्र) **पितामहः अमुक** (बाबा क नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।** ३ बेर।। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः** (अपन गोत्र) **प्रपितामहः अमुक** (प्रपितामहक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।** ३ बेर।। अन्त मे- **''ॐ तृप्यध्वम्-३''** ई वाक्य३ बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नानाक गोत्र) **मातामह अमुक** (नानाक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा** ३ बेर।। **प्रमातामह अमुक** (नानाक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा** ३ बेर।। **ॐ अद्य अमुक गोत्रः** (नानाक गोत्र) **वृद्धप्रमातामहः अमुक** (वृद्धप्रमातामहक नाम) **शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।।** अन्त मे **ॐ तृप्यध्वम्**-ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी

स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुकी गोत्रा (अपन गोत्र) **माता अमुकी** (माताक नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा** १ बेर।। **ॐ अद्य अमुक** (गोत्र) **गोत्रा पितामही अमुकी** (दादी क नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुक** (गोत्र) **गोत्रा प्रपतामही अमुकी** (पर दादी के नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ ।** अन्त मे **''ॐ तृप्यध्वम्''** ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) **गोत्रा मातामही अमुकी** (नानी क नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी** (नानाक गोत्र) **गोत्रा प्रमातामही अमुकी** (पर नानी नाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुकी** (गोत्र) **गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी** (वृद्ध परनानी कनाम) **देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१।** अन्त मे **''ॐ तृप्यध्वम्''** ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।।

एहि तर्पणक बाद अपन अन्य समबन्धी लोकनि कँ गोत्र ओ नाम लय अपना रूचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में जल लय अपन बन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु कँ जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति॥

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कयल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पित्र कँ दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कँ तीन बेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥
एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ।।१।।
ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्प्य माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ।।२।।
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।
एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ।।३।।

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कँ प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः

छन्दोग सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिर पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख (पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिना हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री अथवा सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि अथवा हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए जा जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि अचामन करी

१. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। मार्जन विनियोग मन्त्र-जल लय-ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर कें सिक्त करी-ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु कें सिक्त करी। तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुठी) धारण करी-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।। पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी (आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिना हाथ **सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी-**

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरूष्व मे।।

चन्दन करी- ॐ चन्दनं वन्दयते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा। **तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक**

• **सकल्प करी-** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य... उपात्तदुरितक्षयपूर्वक-श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।

आचमन- अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यचाभीद्धत्तपसोध्यजायत। तत्तोरात्रजायत। ततः समुद्रोः अर्णवः।। समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथे स्वः।।

एहि मन्त्रें जल कें अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी। तकर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह कें दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

तदुत्तर • प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी- ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताः प्राणायामे विनियोगः।

शिरसः प्रजापतिर्ऋषिः ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्रणायाम करी-

• **प्राणायाम मन्त्रः-** **ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।**

१ दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिना पूड़ाकँ दाबि वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२. द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा कँ दाबि वायुकँ धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।

३. तृतीय दहिना पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।

प्राणायामक बाद तीन बेर आचमन कए वाम हाथ मे जल राखि तेकुशा लए चारि बेर मार्जन करी अर्थात् ओहि जल सँ माथ कें सिक्त करी-

• **पहिल बेर-** ॐ ई पढ़ी। • **दोसर बेर-** भूर्भुवःस्वः ई पढ़ी।

• **तेसर बेर-** ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ई पढ़ी।

• **चारिम बेर-** ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

१. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महेरणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उशतीरिव मातरः। ७. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ६. ॐ आपो जनयथा च नः ई पढ़ी। तदुत्तर दहिना हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जल के स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल कें अपन वाम भाग में बिना देखने नीचा खसा दी-

अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्- विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः।। **तदुत्तर दहिना हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी-** ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

तदुत्तर सूर्यसम्मुख ठाढ़ भए अगिला मन्त्रें अर्घ्य दी- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

• **प्रातः' कालीन सन्ध्याक समय में सूर्योपस्थापनः-**

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याऽग्नेः।

आप्रा द्यावपृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

ॐ उद्वयं तमसः परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

(नोट तर्पणाधिकरी व्यक्ति तर्पण कयलाक बाद गायत्री मन्त्रक जप करथि)

• गायत्री जप विधिः-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगू लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत नीचा देल क्रमश हृदयादि अंगक स्पर्श करी।

१. ॐ हृदय नमः २. ॐ भूः शिरसे स्वाहा। ३. ॐ भुवः शिखायै वषट्। ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट्। ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

• व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री उष्णिग्-नुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।

• गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता।।

आदित्यमण्डलास्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

कलजोड़ि अगिला मन्त्रें गायत्रीक आवाहन करी-

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि। गायत्रीच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव।। गायन्तं त्रायसे यस्माद् गायत्री त्वं ततः स्मृता।।

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथावा यथासाध्य १०८ अथवा १००० बेर गायत्री मन्त्र जपी- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।**

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री कें जप समर्पित करी-

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी-

ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्।।

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रें सूर्य कें अर्घ्य दए प्रणाम करी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।। एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य कें प्रणाम करी-ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

।। इति सन्ध्या वन्दना विधि।।

नित्य पार्थिव पूजन विधिः-

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करें। (सधवा विष्णु की जगह गौरी पूजा करें। गौरि इहा, गौर्यै नमः)

१. पञ्चदेवता पूजा- तेकुशा, अक्षत् लेकर आवाहन करी **ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवताः इहागच्छत इह तिष्ठत।** **जल लेकर-** **एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।** **चन्दन-** **इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।** **अक्षत्-** **इदमक्षतम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।** **पुष्प- एतानि पुष्पानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।** जल से प्रसाददि उत्सर्ग करें- **एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध-नैवेद्यानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।** **जल-** **इदमाचमनीयम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।** **फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।**

२. विष्णु पूजा: जौ तिल लेकर आवाहन करें- **ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्रीविष्णोः इहागच्छ इह तिष्ठ।** **जल-एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय- स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** **चन्दन-इदमनुलेपनम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** **यवतिल-एते यवतिलाः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** **पुष्प लय-इदं पुष्पम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** **तुलसी पत्र-इदं तुलसी पत्रम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** **जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें-** **एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप- ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध नैवेद्यानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** **जल-इदमाचमनीयं भगवते श्रीविष्णवे नमः।** **दुनू हाथ में फूल ले-एष पुष्पाञ्जलिः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** (मूर्ति या शालग्राम हो तो आवाहन-विसर्जन नहीं करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें।)

३. कीर्त्तिमुख पूजा: तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी- **ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ।** जल लेकर - **एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय- पुनराचमनीयानि ॐ भूर्भवः स्वः कीर्त्तिमुख नमः।** पुष्प-**एतानि पुष्पाणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।** विल्वपत्र-**एतानि विल्वपत्राणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।** **जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध-नैवेद्यानि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।** जल- **इदमाचमनीयम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नगः।** फूल लें पुष्पांजलि दें- **एष पुष्पाञ्जलिः ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः॥**

४. पार्थिव पूजन- **ॐ हराय नमः** इस मंत्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर **ॐ महेश्वराय नमः** इस मंत्र से महादेव बनाकर **शूलपाणये नमः ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव।** इस मन्त्र से अक्षत् लगाकर पात्र में शिव को सामने रख ध्यान करें-

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

पश्चात्-**ॐ पिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर। जल लेकर एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** चन्दन-**इदमनुलेपनम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः**, अक्षत्- **इदमक्षतम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** पुष्प-**एतानि पुष्पाणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** विल्वपत्र-**एतानि विल्वपत्राणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** जल से प्रसादादि उत्सर्ग करे- **एतानि गन्धपुष्प-धूपदीपताम्बूल-यथाभागनानाविधनैवेद्यानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः।** जल- **इदमाचमनीयम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः॥** इसके बाद पुष्पाक्षत चन्दन-जल से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर तथा अन्त में महादेव के उपर अष्टमूर्त्ति की पूजा करे-

१. **ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः** पूर्व मे। २. **ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः** ईशानकोण में। ३. **ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः** उत्तर दिशा में। ४. **ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः** वायव्यकोण में। ५. **ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः** पश्चिम में। ६. **ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः** नैऋत्यकोण में। ७. **ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः** दक्षिण में। ८. **ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः** अग्निकोण में। ६. **ॐ महादेवाय नमः** पार्थिव लिंग पर। अन्त में जलपुष्पाक्षतचन्दनादि से **ॐ ब्रह्मणे नमः** इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा भूमि पर करें। उसके यथा योग्य पाठ-जप स्तुत्यादि कर, पूजाक्रम से जल लेकर विसर्जन करें। **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थ: क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ साम्बसदाशिव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ।** तदुत्तर **ॐ विष्वक्सेनाय नमः** मन्त्र से भगवान पर से तथा **ॐ चण्डेश्वराय नमः** इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

अथ कलश-स्थापन

व्रती अर्थात् पूजन कर्त्ता नित्यकर्म (सन्ध्या-वन्दन आदि) कय पूजास्थान आबि शुद्धासन पर बैसि, तीन वेरि आचमन करथि १. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३. ॐ माधवाय नमः। **हाथ बोली** ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। **पुनः दहिन हाथ में जल लय** ॐ अवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः।

अपना ऊपर जल से सिक्त कय सभ वस्तु कें सिक्त करी।

'तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर मे कुशक पवित्री (अंकुठी) धारण की- ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाभ्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेय्।।

पुनः जल लब आसन के सिक्त करी(आसन पर छीटी)-ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।

आसन पवित्र करथि- ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।। तकर बाद चन्दन करी-ॐ चन्दनं वन्दयते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

कलश-स्थापन

सोन चाँनी वा माटिक छिद्र रहित चिक्कन कलश पखारि क५, २१ आंगुर वा ८ आंगुर चाकर ६ आंगुर ऊँच पीढ़ी (वेदी) वनाय पहिने अक्षत् पुष्प, चन्दन, जल लय ॐ आधारशक्तये नमः **एहि मन्त्र सँ वेदी क पूजन कय तदुत्तर मध्यमा आ अनामिका आंगुर सँ भूमि स्पर्श-** ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवी दृ ८ह पृथिवीं माहि गुं सी:॥

- **आगुक मन्त्र सँ गोवरसँ वेदी के नीपथि-** ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।
- **आगुक मन्त्रें गंगाजल सँ सिक्त करथि-** ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यायते प्रणीतो अग्निरग्निना।
- **आगुक मन्त्र सँ यव वा धान देथि। धान्यप्रक्षेपणः-** ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घमनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।

ॐ यव त्वं यवरूपोऽसि यज्ञार्थे निर्मितो विधेः देवानां तृप्तिकृद्यस्मात् तस्मात्त्वं वरदो भव।। तखन अगिला मन्त्र सँ सुन्दर अलंकृत सुदृढ़ कलश पीढ़ी (वेदी) पर मध्य मे राखथि-कलश स्थापन-ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः॥

- **कलश मे दही-अक्षत् मिलाक लगाबथि-** ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत् प्रणऽआयू ८षि तारिषत्।।
- **जलपूर्ण कलश मे वरूण के आवाहन करथि-कलशमें जल-** ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो व्वरुणस्य ऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।
- **कलश में गंगा जल देथि-** ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम(यजमानस्य) दुरितक्षयकारकः॥
- **सप्तमृत्तिका:-** ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥
- **सर्वोषधी:-** ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रुनावहा शतं धामानि सप्त च॥
- **पञ्चरत्न-** ॐ परिवाज पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।
- **सुपाड़ी और जायफल:-** ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ८ हसः॥
- **द्रव्य(पैसा)-** ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
- **दूभी(दूर्वा)देथि:-** ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।
- **पञ्चपल्लव या आम्रपल्लव दे-** ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वंसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्। ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषा गुं सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।।
- **पूर्णपात्र राखथि:-** ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनर पत। वस्नेव विक्रीणावहा ईषमूर्ज ८ शतक्रतो।।
- **नारियल:-** ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्न् विषाणा मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।
- **वस्त्रक स्पर्श करथि-** ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् सउश्रेयान् भवति। जायमानः। तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः
- **दुनु हाथ सँ कलश स्पर्शक स्थिर करथि-** ॐ स्थिरो भव वीडवङ्ग आशुर्भव वाज्र्यवन्। पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने: पुरीषवाहणः।
- **पुष्प अर्पण करथि-** ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणमुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।
- **चन्दन-** ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
- **पुन यवादि (सप्तधान्य) जयन्तीनिमित वपन करथि-** ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे प्रणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।
- **अल्ता अर्पण करथि-** ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

• **सिन्दुर**-ॐ सिन्धोरवि प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा आरूषोन वाजीकाष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।

कलश क स्पर्श क - **ॐ मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्यपतिर्यज्ञमिमन्तनो-त्वरिष्टं यज्ञ ७ँ समिमं दधातु विश्वे देवा स इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ॥**

प्राण-प्रतिष्ठा क शान्तिकलश के पूजन करथि- ॐ शान्तिकलश इहागच्छ

इह तिष्ठ आवाहन क **ॐ शान्तिकलशाय नमः**

सँ पञ्चोपचार पूजन क पुष्प सँ पुष्पाञ्जलि देथि-

ॐ शान्तिकुम्भ महाभाग सर्वकामफलप्रद।

पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते॥

कलश पर गणपति क आवाहन आ पूजन करथि -अक्षत् पुष्प लऽ-

गणानान्तवा गणपति ७ँ हवामहे व्वसो मम ऽआहम जानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। ॐ सर्वविघ्नहरो देव एकदन्त गजानन। पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवन् गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ सँ आवाहन क **ॐ गं गणपतये नमः** सँ पंचोपचार पूजन क पुष्पाञ्जली देथि- ॐ **एकदन्तं महाकायं लंबोदरगजाननम्। विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्॥ एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गंगणपतये नमः।**

॥ इति कलश स्थापनम्॥

आश्विनदुर्गा पूजनक संकल्प - **ॐ अद्य आश्विने मासि शुक्ले पक्षे प्रतिपत्तिथै एतद्** (गामक नाम) **ग्रामवासिनां नानानां गोत्राणां सकलजनानाम् एतत्पूजोप- कारकाणामन्यग्राम वासिनां च उपस्थि-शरीराविरोधेन** (व्यक्तिगत पूजन में- अमुक (गोत्र) गोत्रस्य अमुंक (नाम) शर्म्मणः ममसदारापत्यमित्रस्य सकलवाहनस्य च उपस्थितशरीराविरोधेन। **नवग्रहोपग्रह जनितसकलारिष्ट इटिति-प्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्ट्व बलपुष्टि-नैरूज्य-प्राप्तिपूर्वक-धनधान्याकण टक- राज्यभोग्य- सन्तति- सुखान्वितिनिखिल- मनोऽभिलषित-फलप्राप्तिपूर्वक- साङ्गसायुध सवाहन सपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन पूजाङ्गभूत कलशस्थापनमहं करिष्ये।**

हवन-विधि

बनायल हवन कुण्ड या हवन वेदी क कुश सँ बहारि ओहि कुश के ईशान कोन में फेकि गोबर जल सँ नीपि स्रुवक जड़ि सँ पहिने दक्षिण भाग प्रादेश मात्र पूर्वाग्र रेखा कय पुनः ताहि सँ उत्तर द्वितीय रेखा ताहि सँ उत्तर तृतीय रेखा कऽ तीनू रेखाक मध्य सँ दहिना हाथ क अनामिका अंगुष्ठा सँ माटि फेकि जल सँ सिक्त कऽ कासाक पात्र मे आगि लऽ अपना सम्मुख चूप्पहि रेखा पर अग्नि स्थापित करथि।

ब्रह्मास्थापन- अग्निक दक्षिण भाग कुश पर अक्षत-चन्दन-पुष्पादि लय-**ॐ अस्मिन्कर्मणि त्वम्मे ब्रह्मा भव।**

• **प्रणीता** पात्र आगाँ राखि जल सँ भरि कुश सँ झाँपि ब्रह्मादिश देखैत आगिक उत्तर कुश पर प्रणीता पात्र राखि देथि। • तखन ६४ कुश सँ अग्नि कँ परिस्तरण करी तदुत्तर सोलह कुा हाथ में लऽ अग्निकोन सँ ईशान कोन धरि कुश राखि पुनः ब्रह्मा सँ अग्नि पर्यन्त, नैऋत्य कोन सँ वायव्य कोन धरि, अग्नि सँ प्रणिता पर्यन्त कुश राखथि। • **तखन पैता** वनेवाक कुश दोसर कुश सँ लगाय तोड़ि प्रादेश मात्रक दू गोट पैता वनाय पैता सहित दहिना हाथें प्रणीताक जल तीनि वेरि प्रोक्षणीपात्र में दऽ दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ उतराग्र पैता धऽ प्रोक्षणीक जल तीनि वेरि अपना ऊपर छीटथि। • **तखन प्रोक्षणीपात्र** वाम हाथ से लऽ दहू पैता दहिन हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ धऽ पुनः तीनि वेरि प्रोक्षणीक जल अपना ऊपर छीटथि। • **तखन प्रणीताक** जल सँ प्रोक्षणी कँ सिक्त कँ प्रोक्षणीक जल सँ संघटित सभी वस्तु कँ सिक्त करथि। • **तखन अग्नि प्रणीताक** बीच प्रोक्षणी पात्र राशि देथि। • **घृतक पात्र** मे भी दऽ आगि पर चढ़ाय जरैत खढ़ घीक ऊपर प्रदक्षिणक क्रमे घुमाय आगि में छोड़ि देथि। तखन स्रुव कँ तपावथि • **कुश सँ स्रुव** के जडि सँ जडि बीच सँ बीच अन्त सँ अन्त भाग के झाड़ि स्रुव के पुनः तीन वेरि तपाय दहिन भाग स्रुव कँ राखि देथि। • **घी कँ तीन** वेरि आगि पर सँ उतारि दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ पैता लऽ प्रीक्षणी जेकाँ घी कँ तीन वेरि अपना ऊपर छीटि पुनः दुहू पैता दहिना हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ लऽ वाम हाथें घीक पात्र धयने पैता सँ तीनि वेरि अपना उपर छीटि पैता प्रोक्षणी मे दऽ • **घी कँ देखि** किछु अधलाह वस्तु होतँ बाहर कऽ विरनी कुश वाम हाथ में लऽ तीनि गोट आमक काठी पे घी लगाय ऊठि मन सँ प्रजापतिक ध्यान कऽ चुप्पहि आगि मे छोड़ि देथि। तखन वैसि पैता सहित प्रोक्षणीक जल सँ प्रदक्षिण क्रमँ आगि कँ कऽ प्रणीता पात्र मे पैता राखि • घी सँ बारह आहुति हवन करथि-

ॐ प्रजापतये स्वाहा इंद प्रजापतये॥ (एहि मंत्र क मन मे ही उच्चारण करी)

ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय। ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये॥

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय। ॐ भूः स्वाहा इदं सूर्याय।

ॐ भुवः स्वाहा इदं अग्नये। ॐ स्वः स्वाहा इदं वायवे।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्वितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ७ँसि प्रमुमुग्ध्य स्मत् स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम्। (प्रत्येक बेर स्रुवक अवशेष.... जल में त्यागिदी)

ॐ सत्त्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरूण७ँ रराणो व्वीहिमृडीक ७ँसुहवोनऽएधि स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम्।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभि शस्ति पाश्चसत्य मित्त्व मया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ७ँस्वाहा इदमग्नये।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञिताः पाशा वितता महान्तः तेभिर्न्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरूणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यः।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ७ँश्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा, इदं वरुणाय।

• **नवग्रह समिधा सँ हवन**- • **सूर्य-अर्क(आकन) लकड़ी लऽ**-**ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा,** इदं सूर्याय।

• **चन्द्रपलाशक लकड़ी लऽ**-**ॐ इमं देवा असपत्नग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाथ्ँराजा स्वाहा,** इदं चन्द्राय।

• **मंगल-खैरक लकड़ी लऽ**-**ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाथ्ँ रेताथ्ँ सि जिन्वति स्वाहा,** इदं कुजाय।

• **बुधु-चिरचिर लकड़ी लऽ**-**ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सथ्ँ सृजेथामयञ्च। असमिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा** इदं बुधाय।

• **बृहस्पति-पीपरक लकड़ी लऽ**-**ॐ वृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् स्वाहा,** इदं बृहस्पतये

• **शुक्र-गुलरकके लकड़ी लऽ**-**ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानथ्ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा,** इदं शुक्राय

• **शनि-समि लऽ**- **ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा,** इदं शनैश्चराय।

• **राहु-दूवि लऽ**- **ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा,** इदं राहवे

• **केतु-कुश लऽ**- **ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा** इदं केतवे

• शाकल्य सँ प्रधान देवता क हवन प्रारम्भ करी तदुपरान्त आवाहित पूजितादि देवता क हवनोपरान्त तर्पण, मार्जन कऽ

• तदुत्तर परिस्तरण वला कुश सभ समेटि घी लगाए आगुक मंत्र सँ हवन से देथि- ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पतऽइमं देव यज्ञथ्ँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा।

ब्रह्माा क दक्षिणा • **ब्रह्मदक्षिणा**- कुश, तिल, यव, द्रव्य लऽ- **ॐ अद्य अमुके मासे अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्न** (यजमानक गोत्र) **अमुकशर्मा** (यजमानक नाम), **कृतैतत् अमुक** (जप, पाठ) **होमकर्म प्रतिष्ठार्थम् इंद पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतम् अमुक- गोत्राय** (ब्राह्मण क गोत्र नाम) **अमुकशर्मणेब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणान्तुभ्यमहं सम्प्रददे।** इ कहि ब्रह्मा कँ देथि।

• **प्रणीता सँ दुहू पैता दुहू हाथक अनामिका अंगूष्ठा सँ उत्तराग्र धऽ**- ॐ सुमित्रियानऽ आप ओषधयः सन्तु। एहि मन्त्र सँ दुहू पैता सँ प्रणीताक जल अपना ऊपर छीटि शेष जल- ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः। कहि ईशान कोन में पलटि देथि।

• **पूर्णाहुति**- स्रुवा मे पान, नारियल दहिन हाथें लऽ ऊठि आगु क मंत्र सँ पूर्णाहुति करी-ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृतऽ आजातमग्निम्। कविथ्ँ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा।

• **तदुत्तर घी सँ अखण्ड धार सँ वसोधारा करी**- ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्त्वा कामधुक्षः स्वाहा। अग्नि में अखण्ड घीक धार देथि, आ स्रुवक अवशेष प्रोक्षणीक पात्र में त्यागी।

• **स्रवक पृष्ठ भाग सँ भस्म लऽ त्र्यायुष करथि**- ॐ त्रयायुषं जमदग्नेः इति ललाटे। लालट मे लगावथि।

सर्व कर्म उपयोगी शान्तिकलश अभिषेक मंत्र-

कलश हाथ में उठवैत- **ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्ये महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशुर्भवासवाः।** आमक पल्लव सँ कलशक जल में घुमवैत आगुक मंत्र पढ़ि-

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्न्तु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः।
वासुदेवी जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥
प्रद्युम्नश्चानिरूद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिश्च मातरः॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः सभागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥
ऋषियो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये॥
ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः।

॥ इति व्यास रचित अभिषेकम्॥

१४	३१	२	२८
२०	३०	१५	१४
२०	१५	१६	१९
४४	६	१९	१९

रोग भगाने का यंत्र-

इस यंत्र को भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में लिखकर काले धागे में बांधकर रोगी के गले में धारण कराने से रोग जल्द ठीक हो जाता है।

गर्भ संबंधि प्रश्नः-

नवद्वयं गर्भिणीनामयुक्तं तिथिप्रयुक्तं रसंसयुतञ्च।
एकेन उनं नवभागधेयं समे कुमारी विषमे कुमारः।।

स्त्री के नाम राशि को ७ से गुणाकर तत्कालिक तिथि का योगकर उसे ६ का भाग दे। भाग देने पर समराशि, २, ४, ६, ८ शेष रहे तो कन्याजन्म, विषम राशि १, ३, ५, ७ शेष रहे तो पुत्र जन्म और शून्य रहने पर गर्भस्य जातक की मृत्यु होगी ऐसा कहना चाहिये।

अपर विधिः- तिथिवारं च नक्षत्रं गर्भिणी नामसंयुतम्। सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत्।। समे च कन्या विषमे पुत्रो निःशेषभागं मरणाय नूनम्।

पुत्र पुत्री जन्म विचारः- प्रश्नवणीमात्रौतिथिवारर्क्ष च संयुतम्। सप्तभर्विशेषेण समेस्त्री विषमे पुमान्। सन्तानचिन्ता प्रश्नः- प्रश्न के दिन की संख्या को ३ से गुणा करके उसमें प्रश्नकाल की तिथि को भी जोड़ देवे और उसमें २ से भाग दे यदि १ शेष बचे तो सन्तान की सम्भावना होगी, किन्तु २ या ० शून्य बचे तो संतान की सम्भावना नहीं करनी चाहिये।

गर्भ स्थिर रहने का यंत्र-

जिस रविवार को मूल नक्षत्र पड़े, उसी दिन यह यंत्र बनाकर गर्भवती स्त्री को धारण कराने से गर्भ खण्डन (गर्भपात) नहीं होता है और गर्भ स्थिर रहता है। यंत्र, भोजपत्र पर अष्ट गनध की स्याही तथा अनार की कलम से लिखें।

ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	१
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	७

६२	६६	२	७
७	३	६२	६५
६८	६३	८	२
६४	५	६४	६७

गर्भवती स्त्री की पीड़ा (प्रसव पीड़ा) दूर करने का यंत्र-

कांसे की थाली में इस यंत्र को लिखें और उसमे जल भरकर पिलाने से गर्भवती स्त्री की पीड़ा या प्रसव पीड़ा दूर होती है।

कार्य भविष्यतिनवाः-

दिशा प्रहर संयुक्तम् तारकावारमिश्रिततम्।
अष्टाभिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्।।
पंचैके त्वरिता सिद्धिः षटतुर्ये च दिनत्रयम्।
त्रिसप्तके विलम्वं च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ।।

वरप्राप्ति हेतु उपायः-

प्रथमविधि- स्वयं कन्या स्नान करके दीपक व धूप जलाकर गन्धाक्षत पुष्प से श्री माँ पार्वती की अर्चना कर **वं पं क्लीं** का १०८ वार जप करें तदन्तर अधोलिखित मंत्र का प्रतिदिन प्रातः व सायं पाँच पाँच माला जप करें। यह प्रयोग ४५ दिन का है। रजस्वला समय में पाँच दिनों तक बन्द रखें। **मन्त्रः- ॐ क्लीं कात्यायनी महामाये महायोगिन्य धीश्वरी क्ली ॐ दं पं नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरूते नमः पं दं।** अन्त में ७ कन्याओं एवं २ बटुक को खीर व बेसन के बने पदार्थों का भोजन करावें।

८	३	१०	पं	लं	ह्रीं
६	७	५	ऐं	क्लीं	पं
४	११	६	दं	लं	पं

द्वितीय विधि- इस मंत्र को कन्या प्रारम्भ कर मृगशिरा नक्षत्र में केला के पत्ते पर प्रतिदिन नौ वार लिखें। यह प्रयोग ७२ दिन का है। ५ दिनरजस्वला काल के समय में बन्द रखें। अन्तमें ९ कन्या तथा ५ बटुक को दूध से बने पदार्थों का भोजन करावें एवं वस्त्र, श्रीफल, द्रव्यादि दक्षिणा दें। लिख मंत्र को **ॐ क्लीं पं दं लं** मंत्र का उच्चारण करते हुए देवी पार्वती के चरणों में अर्पित करें।

अथ विवाह प्रश्नः-

कर्क तौली वषाश्चन्द्रयुक्ताः शुभनिरीक्षिताः।
पृच्छाकाले तदा नृणां कन्या लाभो भवेद् ध्रुवम्।।
योषिद् ग्रहस्थिताः शेषाः पश्यन्ति स्त्रीनवांशकम्।
लग्ने च स्यात्तदा लाभः स्त्रियां पुंसोऽपि तादृशः।।

वशीकरणमंत्र-

ॐ नमो महायक्षिणी पतिं वश्यं आनय कुरू कुरू स्वाहा इस मंत्र को गुरू पुष्य योग में या शुभ मुहूर्त में ११ माला जप ११ दिन तक करें। तदनन्तर कपूर, चन्दन और तुलसीदल को गो दुध में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है।

तिल-विचारः-

मस्तकपर -	धनवान
दाहिने आँखपर-	स्त्री से प्रेम
बायी आँखपर-	स्त्री से कलह
दोनो भौहों के बीच-	अधिक यात्रा
ठुड्ढी में-	स्त्री से कटुता
दाहिने गाल पर-	धनवान
बाये गाल पर-	खर्चअधिक
ओष्ठ पर-	कामसक्ति
गर्दनपर-	आराम-मयजीवन।
कानपर-	अल्पायु
नाकपर-	अधिकयात्रा
नाक के अग्रभागपर-	काम मे सरलता
ओष्ठ के नीचे-	निरधनता
नाक के अग्रभाग पर-	कार्यसिद्धि
ओष्ठ के नीचे की भाग पर-	निरधनता
नाक के बाई तरफ-	धूर्त
दाहिने भुजा पर-	सम्मान व यशप्राप्ति
बायी भुजा पर-	झगड़ालू
दाहिनी छाती पर-	स्त्री से प्रेम।
बांयीछातीपर-	स्त्री से कलह।
दोनो छाती के बीच-	सुखमयजीवन।
कमर मे-	कष्टमय जीवन।
पेटपर-	उत्तमभोजनप्रिय
पीठपर-	यात्रामय जीवन
दाहिने हाथ के पृष्ठपर-	धनबान।
बायी हाथ के पृष्ठपर-	अल्पव्ययी।
दाहिने हथेलीपर-	शक्तिशाली
बायीं हथेलीपर-	अधिक खर्चालु
पेट के मध्य में-	डरपोक
दाहिने पैर पर-	बुद्धिमान
वाये पैरपर-	अधिकव्ययी।

ग्रहों का विशेष विवरण तथा यंत्र

ग्रह-सूर्य (Sun)

रत्न- माणिक्य (Ruby)
उपरत्न- लालड़ी, लाल तामड़ा, लाल हकीक
धातु- स्वर्ण, ताम्बा
अंगुली- तर्जनी, अनामिका
रत्ती में- ३, ५
दिन- रवि, सोम, गुरू
अंगुली- तर्जनी, अनामिका
दानवस्तु- गेहूँ, गुड़, कमल, पुष्प, लालचन्दन, लालवस्त्र, सोना, ताँबा, दक्षिणा

सूर्य-यंत्रम्		
६	१	८
७	५	३
२	८	४

दान समय - रविवार सूर्योदय समय।
जपसंख्या - ७०००। कलियुग में - २८०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-
सूर्य के अरिष्ट निवारण एवं कुष्टरोग, क्षयरोग, सिर दर्द, रक्तचाप, नेत्रदोष, रक्तविकार आदि रोगों में लाभ

चन्द्रमा (Moon)

रत्न - मोती (Pearl)
उपरत्न- शंखमूगा, दुधिया हकीक, सीप
लग्न से शुभ - १, ४, ८, १२
धातु- चाँदी
अँगुली- अनामिका
रत्ती - २, ४, ६, ११
दिन - सोम
दानवस्तु- घृत, चावल, श्वेतवस्त्र, श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, चाँदी, शंख, दक्षिणा

चन्द्र-यंत्रम्		
७	२	६
८	६	४
३	१०	५

जपसंख्या - ११००० कलियुग में ४४०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-
चन्द्रमाजन्य अरिष्ट, मानसिकरोग, मुर्च्छा, मिर्गी, उन्माद, दम्मा, श्वांस, कैंसर आदि।

मंगल (Mars)

रत्न- मूंगा (Coral)
उपरत्न- गारनेट, लाल हकीक लालगोमेद
धातु- स्वर्ण, ताम्बा
अंगुली- अनामिका,तर्जनी
रत्ती - ६, ८, १०, १२

८	३	१०
८	७	५
४	११	६

दानवस्तु - मूँगा, भूमि, मसूरदाल, लालवृष, गुड़, लालचन्दन वस्त्रपुष्प, सुवर्ण
जपसंख्या - १०००० कलियुग में ४०,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-
रक्तविकार, भूतप्रेतबाधा, हृदयरोग, वायु, कफ, विकार, पित्तादि, उदर, विकार आदि।

बुध (Mercury)

रत्न- पन्ना (Emerald)
उपरत्न- फिरोजा,हरा हकीक,मरगज, ओनेक्स
धातु - स्वर्ण या कांसा
अंगुली - कनिष्ठा
रत्ती - ३, ५, ७,
दिन - बुधवार

६	४	११
१०	८	६
५	१२	७

दानवस्तु - कांस्यपात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त घृत मूँग सुवर्ण, सर्वपुष्प, कपूर
जपसंख्या - ८००० कलियुग में- ३२,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- त्वचा विकार, पथरी, बहुमूत्र, दमा, गुर्दा रोग, पाण्डुरोग या मानसिक रोग में लाभ।

बृहस्पति (Jupiter)

रत्न- पुखराज (Sapphire)
उपरत्न-पीला मोती, सुनैला पीला, जिरकान
धातु-स्वर्ण
अंगुली-तर्जनी
रत्ती-८,७
दिन- गुरुवार

१०	५	१२
११	६	७
६	१३	८

दानवस्तु-चने की दाल, पीतवस्त्रपुष्प, हरदी, पुस्तक, मधु, लवणादि
जप संख्या १६००० कलियुग में - ६४,०००
ग्रहजन्य बाधा-मधुमेह, लीवर, पीलिया, प्रेत बाधा।

शुक्र (Venus)

रत्न- हीरा (Diamond)
उपरत्न- सफेद हकीक, स्फटिक, ओपल
धातु- प्लेटीनम
अंगुली- मध्यमा/कनिष्ठा
रत्ती- ३,५
दिन- शुक्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

दानवस्तु-तण्डुल, श्वेतचन्दनवस्त्र, घृत, दधि, श्वेतगौ
जप-संख्या ११००० कलि में - ४४,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -वीर्य विकार, दौर्बल्य, नपुंसकता, वायु प्रकोप, प्रमेह, श्वेदप्रदर, हृदय रोग, मानसिक कमजोरी आदि।

शनि (Saturn)

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

रत्न- नीलम (Sapphire)
उपरत्न-नीला जिरकान, कटैला पाइनल
धातु-पंचधातु धातु या स्टील।
अंगुली-मध्यमा। **रत्ती-**५,७, ६,१२। **दिन-** शनिवार
दानवस्तु-माष, तैल, तिल, कालवस्त्र गौ पुष्प कुरथी, लोहा, कस्तूरी। सुवर्णादि।
जप संख्या २३०००।**ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-** दमा, क्षय, ग्रन्थीय, अर्जीण, हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।

राहु (Rahu)

१३	८	८
१४	१२	१०
९	१६	११

रत्न- गोमेद (Zircon)
उपरत्न- गोमेद रंग का हकीक
धातु-अष्टधातु या चाँदी **अंगुली-**मध्यमा।
रत्ती-७, ६। **दिन-** शनि, **दानवस्तु-**माषान्न, कस्तूरी, हेमनाग, तिलतैल, लोहासूप, कम्बल।
जप संख्या १८००० **ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ** -लकवा, त्वचा रोग, मस्तिष्क दुर्बलता, वातजन्य रोग आदि।

केतु (Ketu)

८	३	१०	पं	लं	ह्रीं
६	७	५	ऐं	क्लीं	पं
४	११	६	दं	लं	पं

रत्न- लहसुनिया (Cats Eye)
धातु- पंचधातु या चांदी
अंगुली-मध्यमा। **रत्ती-**७,६ **दिन-** शनि-बुध,
दानवस्तु-माषान्न, कम्बल, कस्तूरी, तिल, लोहा, बकरा, शास्त्र, सप्तधानादि **जप संख्या** ७०००। **ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ** -वायु विकार, प्रमेह, हृदयरोग, श्वेदप्रदर, मानसिक दुर्बलता, आँत की बीमारी आदि।

व्यापार वृद्धि यंत्र-

इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर की स्याही एवं अनार की कलम से दीपावली को रात्रि में लिखकर सविधि पूजन कर- **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः** मंत्र का ११०० सौ जप करें। तदनन्तर यंत्र को दुकान में रखकर प्रतिदिन पूजन करें।

१६	६	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

कामना पूरक यन्त्रम्-

इस मंत्र को लाल चन्दन से बिल्व पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास के सोमवार को शिव लिंग पर चढ़ाने से इच्छा शक्ति एवं मनो कामना पूर्ति होती है।

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

सौभाग्य वृद्धि यंत्र-

इस यंत्र को गुरू पुष्य योग में अष्ट गन्ध की स्याही एवं अनार के कलम से भोजपत्र पर लिखकर तथा सविधि त्रिगुणात्मिका दुर्गा की पूजन कर स्त्री धारण करें तो सौभाग्य की वृद्धि होती है।

५	६	३	६
४	४	७	७
६	६	३	५
५	४	७	४

६२	६६	२	७
७	३	६२	६५
६६	६३	८	२
६४	५	६४	६७

गये हुए व्यक्ति को वापस बुलाने का यंत्र-

इस यंत्र को जमीन पर उंगली से लिखें, तो गया आदमी शीघ्र घर लौटा आता है। वापसी तक प्रतिदिन यंत्र लिखा करें।

महामृत्युञ्जय मन्त्र जपविधिः-

श्री गणेशादिस्मरणपूर्वकंशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रय तिलजलान्यादाय **संकल्पः**- **ॐ** अद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य श्री अमुक शर्मणः उपस्थित शरीरा-विरोधेन अखिलारिष्टझटिति प्रशमनपूर्वकं-दीर्घायुष्ट्व-बलपुष्टिनैरुज्य-प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनशाखीय **'ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ'** इति महामृत्युंजय मन्त्रस्य एतत्सहस्त्र-संख्यकजपमहं करिष्ये।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल-वशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायित्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रा देवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- वामदेव-कहोल-वशिष्ठऋषिभ्यो नमः **शिरसि**। पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः **मुखे**। सदाशिवमहामृत्युञ्जय- रुद्रदेवताभ्यो नमः **हृदि**। हौं बीजाय नमः **नाभौ**। जूं शक्तये नमः **पादयोः**। सः कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे**।

हृदयादिन्यासः- ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्ययम्बकं ॐ नमो भगवते रूद्राय शूलपाणये स्वाहा **हृदयाय नमः**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रूद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय **शिरसि स्वाहा**, ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरशि जटिने स्वाहा **शिखायै वषट्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रूद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्राँ ह्रीं ह्रौं **कवचाय हुम्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय **नेत्रत्रयाय वौषट्**। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रूद्राय अग्नित्रयाय उज्जवलज्वालनाय मां रक्ष रक्ष अघोराय **अस्त्राय फट्**। इति षडङ्गन्यासः

ध्यान-चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयुषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्

इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ शाकल्यादिभिः दशांशक्रमेण होम तर्पणमार्जनं ब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्।

लघुमृत्युंजयमन्त्रः ॐ जूं सः।

यजुर्वेदीय न्यास सहित नवग्रह मंत्र-

सूर्य मन्त्र- **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न-मृतम्मर्त्यञ्च।**
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

विनियोगः-ॐ आकृष्णेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ **देहाङ्गन्यास**- आकृष्णेन **शिरसि**। रजसा **ललाटे**। वर्तमानो **मुखे**। निवेशयन् **हृदये**। अमृतं **नाभौ**। मर्त्यं च **कट्याम्**। हिरण्ययेन सविता **ऊर्व्वोः**। रथेना **जान्वोः**। देवो याति **जंघयोः**। भुवनानि पश्यन् **पादयोः**।

❖ **करन्यासः**- आकृष्णेन रजसा **अंगुष्ठाभ्यां नमः**। वर्तमानो निवेशयन् **तर्जनीभ्यां नमः**। अमृतं मर्त्यं च **मध्यमाभ्यां नमः**। हिरण्ययेन **अनामिकाभ्यां नमः**। सविता रथेना **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। देवो यातिं भुवनानि पश्यन् **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**।

❖ **हृदयादिन्यासः**- आकृष्णेन रजसा **हृदयाय नमः**। वर्तमानो निवेशयन् **शिरसे स्वाहा**। अमृतं मर्त्यं च **शिखायै वषट्**। हिरण्ययेन **कवचाय हुँ**। सविता रथेना **नेत्रत्रयाय वौषट्**। देवो याति भुवनानि पश्यन् **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥

❖ चन्द्र का वैदिक मन्त्र-

ॐ इमन्देवा असपत्नᳬं सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाᳬं राजा।

❖ **विनियोगः**- इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ **देहाङ्गन्यास**- इमं देवा **शिरसि**। असपत्न ग्वं **ललाटे**। सुवध्वं **नासिकायाम्**। महते क्षत्राय **मुखे**। महते ज्येष्ठ्याय **हृदये**। महते जानराज्याय उदरे। इन्द्रस्येन्द्रियाय **नाभौ**। इममुष्य **कट्याम्**। पुत्रममुष्यै **मेढ्रे**। पुत्रमस्यै **ऊर्वोः**। विशऽएष वो **जान्वोः**। मीराजा **जंघयोः**। सोमोऽस्माकं **गुल्फयोः**। ब्रह्मणानां ग्वं राजा **पादयोः**।

❖ **करन्यास**- इमं देवा असपत्न ग्वं सुवध्वं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय **तर्जनीभ्यां नमः**। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय **मध्यमाभ्यां नमः**। इमममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै **अनामिकाभ्यां नमः**। विशऽएष वोऽमीराजा **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां ग्वं राजा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः- इमं देवा असपत्न ग्वं सुवध्वं **हृदयाय नमः**। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय **शिरसे स्वाहा**। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय **शिखायै वौषट्**। इमममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै **कवचाय हुम्**। विशऽएष वोऽमीराजा **नेत्रत्रयायवौषट्**। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां ग्वं राजा **अस्त्राय फट्**।

❖ **ध्यानम्**- **श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः**। चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥

❖ मंगल वैदिक मंत्र-

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या, अयमपाᳬं रेताᳬंसि जिन्वति।

❖ **विनियोगः**- ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ **देहांगन्यासः**- ॐ अग्निः **शिरसि**। मूर्द्धा **ललाटे**, दिवः **मुखे**, ककुत् **हृदये**, पतिः **उदरे**। पृथिव्या **नाभौ**, अयं कट्याम्, अपाग्वं **जान्वो**, रेताग्वंसि **गुल्फयोः**, जिन्वति **पादयोः**। ❖ **करन्यासः** ॐ अग्निः मूर्द्धा **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, दिवः ककुत् **तर्जनीभ्यां नमः** पतिः **मध्यमाभ्यां नमः**। पृथिव्या अयम् **अनामिकाभ्यां नमः**, अपाग्वं रेताग्वंसि **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, जिन्वति **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖ **हृदयादिन्यासः**- ॐ अग्निः मूर्द्धा **हृदयाय नमः**, दिवः ककुत् **शिरसे स्वाहा**, पतिः **शिखायै वषट्**। पृथिव्या अयं **कवचाय हुम्**। अपाग्वं रेताग्वंसि **नेत्रत्रयाय वौषट्**, जिन्वति **अस्त्राय फट्**। ध्यान- रक्तम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भजो **मेषगतो गदाभृत्। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः॥**

❖ बुध का वैदिक मंत्र-

ॐ उद्बुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वामिष्टापूर्त्ते सᳬं सृजेथामयञ्च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

❖ **विनियोगः**- ॐ उदुध्यस्वेति मन्त्रस्य परेमेष्ठी प्रजापति ऋषि, त्रिष्टुप्छन्दः बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

देहांगन्यासः- ॐ उद्बुध्स्वेति **शिरसि**, अग्नेः प्रति **ललाटे**, जागृहि त्वं **मुखे**, इष्टापूर्ते **हृदये**, सग्वं सृजेथामयञ्च **नाभौ**, अस्मिन्त्सधस्थे **कट्याम्**, अध्युत्तरस्मिन् **ऊर्वोः**, विश्वेदेवा **जान्वोः** यजमानश्च **गुल्फल्योः** सीदत पादयोः।

❖ **करन्यासः** ॐ उद्बुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वम् **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, इष्टापूर्ते **तर्जनीभ्यां नमः**, सग्वं सृजेथामयञ्च **मध्यमाभ्यां नमः**, अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् **अनामिकाभ्यां नमः**, विश्वेदेवा यजमानश्च **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, सीदत **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**।

❖ **हृदयादिन्यासः**- ॐ उद्बुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वम् **हृदयाय नमः**, इष्टापूर्ते **शिरसे स्वाहा**, सग्वं सृजेथामयञ्च **शिखायै वषट्** , अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् **कवचय हुम्**, विश्वेदेवा यजमानश्च **नेत्रत्रयाय वौषट्**, सीदत **अस्त्राय फट्**। **ध्यानम्** - **पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी। चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च॥**

❖ गुरु(बृहस्पति) वैदिक मंत्र-

ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्॥

❖ **विनियोग**-बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ **देहांगन्यासः**- ॐ वृहस्पते **शिरसि**, अतियदर्य्यो **ललाटे**, अर्हाद्युमत् **मुखे**, विभाति क्रतुमत् **हृदये**, जनेषु **नाभौ**, यद्दीदयत् कट्याम्, ऋतप्रजात ऊर्वो, तदस्मासु द्रविणं **जान्वोः**, धेहि **गुल्फयोः** चित्रं **पादयोः**।

❖ **करन्यासः**- ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो अंगुष्ठाभ्यां नमः, अर्हाद्युमत् **तर्जनीभ्यां नमः**, विभाति क्रतुमत् **मध्यमाभ्यां नमः**, जनेषु **अनामिकाभ्यां नमः**, यद्दीदयच्छ शवसऋतप्रजात-तदस्मासु **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, द्रविणं धेहि चित्रम् **करतल करपृष्ठाभ्यां** नमः ❖ **हृदयादिन्यासः**-ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो **हृदयाय नमः**, अर्हाद्युमत् **शिरसे स्वाहा**, विभाति क्रतुमत् **शिखायै वषट्**, जनेषु **कवचाय हुम्**, यद्दीदयत् ऋतप्रजात-तदस्मासु **नेत्रत्रयाय वौषट्**, द्रविणं धेहि चित्रम् **अस्त्राय** फट्।

ध्यानम्- **पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजोः देवगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्॥**

❖ शुक्र का वैदिक मन्त्र-

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳬं शुक्रमन्धस इन्द्रस्ये-न्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

❖ **विनियोगः** अन्नात्परिस्रुतेति मन्त्रस्य प्रजातिऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ **देहांगन्यासः**- ॐ अन्नात् परिस्रुतः **शिरसि**, रसं ब्रह्मणा **ललाटे**, व्यपिबत्क्षत्रं **मुखे**, पयःसोमं **हृदय**, प्रजापतिः **नाभौ**, **ऋतेन** सत्यं **कट्याम्**, इन्द्रियं विपान ग्वं **गुदे**, शुक्रमन्धस **ऊर्वो**, इन्द्रस्ये-न्द्रियं **जानुनोः**, इदं पयः **गुल्फयोः**, अमृतं मधु **पादयोः**। ❖ **करन्यासः**- ॐ अन्नात् परिस्रुतः रसं **अंगुठाभ्यां नमः**, ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं **तर्जनीभ्यां नमः**, पयःसोमं प्रजापतिः **मध्यमाभ्यां नमः**, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं **अनामिकाभ्यां नमः**, विपानग्वं शुक्रमन्धस **कनिष्ठिाभ्यां नमः**, इन्द्रस्योन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु **करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖ **हृदयादिन्यासः**- ॐ अन्नात् परिस्रुतः रसं **हृदयाय नमः**, ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं **शिरसे स्वाहा**, पयःसोमं प्रजापतिः **शिखायै वषट**, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं **कवचाय हुम्**, विपानग्वं शुक्रमन्धस **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ऋतेन सत्यमिन्द्रिंय **कवचाय हुम्**, विपानग्वं शुक्रमन्धस **नेत्रत्रयाय वौषट्**, इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु **अस्त्राय फट्**।

❖ **ध्यानम्**- श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम॥

❖ शनि का वैदिक मन्त्र-

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः।

❖ **विनियोगः**- शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः गायत्रीछन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖ **देहांगन्यासः**- शन्नो **शिरसि**, देवीः **ललाटे**, अभिष्टय **मुखे**, आपो **कण्ठे**, भवन्तु हृदये, पीतये **नाभौ**, शं **कट्याम्**। योः **ऊर्वो**, अभि **जान्वोः**, स्रवन्तु **गुल्फयोः** नः पादयोः।

❖ **करन्यासः**- शन्नो देवीः **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, रभिष्टये **तर्जनीभ्यां नमः**, आपो भवन्तु **मध्यमाभ्यां नमः**, पीतये **अनामिकाभ्यां नमः**, शंय्योरभि **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, स्रवन्तु नः **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖ **हृदयादिन्यासः**- शन्नो देवीः **हृदयाय नमः**, रभिष्टये **शिरसे स्वाहा**, आपो भवन्तु **शिखायै वषट्**, पीतये **कवचाय हुम्**, शंय्योरभि **नेत्रत्रयाय वौषट्**, स्रवन्तु नः **अस्त्राय फट्**।

❖ **ध्यानम्**:- नीलाम्बर शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्। चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी॥

❖ राहु का वैदिक मंत्र-

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता॥

❖ **विनियोगः**- **कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवताः, राहुप्रीत्यर्थे जप विनियोगः।** ❖ **देहांगन्यासः**- कया **शिरसि**, न ललाटे, चित्र **मुखे**, आ **कण्ठे**, भुव **हृदये**, दूती **नाभौ**, सदा कट्याम्। वृधः **मेढ्रे, सखा ऊर्व्वोः**। कया **जान्वोः**, शचिष्ठया **गुल्फयोः**, वृता **पादयोः**।

❖ **करन्यासः**- कया नः **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, चित्र आ **तर्जनीभ्यां नमः**, भुवदूती **मध्यमाभ्यां नमः**, सदावृधः सखा **अनामिकाभ्यां नमः**। कया **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, शचिष्ठया वृता **करतल करपृष्ठाभ्यां**।

❖ **हृदयादिन्यासः**- कया नः **हृदयाय नमः** चित्र आ **शिरसे स्वाहा**, भुवदूती **शिखायै वषट्**, सदावृधः सखा **कवचाय हुम्**। कया **नेत्रत्रयाय वौषट्**, शचिष्ठया वृता **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- **नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली।**
चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्॥

केतु का न्यास सहित वैदिक मंत्र-

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशा मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्‌भिरजायथाः।

❖ विनियोगः- केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, केतुर्देवता, केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यासः- केतुं **शिरसि**, कृण्वन् **ललाटे**, अकेतवे **मुखे**, पेशो **हृदये**, मर्या **नाभौ**, अपेशसे **कट्याम्**। सं ऊर्व्वोः। उषद्‌भिः **जान्वोः**, अजायथाः **पादयोः**।

❖ करन्यासः- केतुं कृण्वन् **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, अकेतवे **तर्जनीभ्यां नमः**, पेशो मर्या **मध्यमाभ्यां नमः**, अपेशसे **अनामिकाभ्यां नमः**, समुषद्‌भिः **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, अजायथाः **करतलकर पृष्ठाभ्यां**।

❖ हृदयादिन्यासः- केतुं कृण्वन् **हृदयाय नमः**, अकेतवे **शिरसे स्वाहा**, पेशो मर्या **शिखाये वषट्**, अपेशसे **कवचाय हुम्**, समुषद्‌भिः **नेत्रत्रयाय वौषट्**, अजायथाः **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- **धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रानस्थो विकृताननश्च। किरीट- केयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः।**

सूर्यादि ग्रहो का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र-

सूर्य का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ ह्राँ ह्रीं सः सूर्याय नमः

विनियोगः- ॐ श्रीसूर्यमन्त्रस्य अज ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता ह्रां बीजम्, ह्रीं शक्तिः, सः कीलकम् श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यास-ॐ अज ऋषये नमः **शिरसि**। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः **मुखे**। ॐ सूर्यदेवतायै नमः **हृदि**। ॐ ह्राँ बीजाय नमः **गुह्ये**। ॐ ह्रीं शक्तये नमः **पादयोः**। ॐ सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। अंगन्यास- ॐ आं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ईं ह्रीं तर्जनीभ्या नमः। ॐ ऊँ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ औं ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अः ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः- **ॐ आं ह्रीं हृदयाय नमः**। ॐ ई ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऊँ ह्रीं शिखायै वषट्। ॐ ऐं ह्रीं कवचाय हुम्। **ॐ औं ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्**। ॐ अः ह्रीं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- **ॐ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं, भानुं समस्त जगतामधिपं भजामि।**
पद्मद्वयाभय-वरान्द- धतं कराब्जैर्माणिक्य-मौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्॥

❖ चन्द्र का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ सों सोमाय नमः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीसोममन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दः सोमो देवता, सों बीजम् नमः शक्तिः, सोमप्रीतिये जपे विनियोगः।

❖ ऋष्यादिन्यासः- ॐ भृगुऋषये नमः **शिरसि**, ॐ पंक्तिः छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ सोमदेवतायै नमः **हृदि**, ॐ सों बीजाय नमः **गृह्ये**, ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः,॥

❖ करन्यासः- ॐ सां **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः, **ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ सैं **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ सौं **कनिष्ठकाभ्यां नमः**, **ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥** ❖ हृदयादिन्यासः- **ॐ सां हृदयाय नमः, ॐ सीं शिरसे स्वहा, ॐ सूं शिखायै वषट्, ॐ सैं कवचाय हुम्, ॐ सीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ सः अस्त्राय फट्।** ध्यानम्- ॐ कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दु-बिम्बाननं मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः। हस्ताभ्यां कुमुदं वरञ्च दधतं नीलालकोद्‌भासितं, स्वीयांकस्थमृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे॥

मंगल का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ अं अंगारकाय नमः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीभौममन्त्रस्य बह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, अंगारको देवता, अं बीजं, आपः शक्तिः, अंगारकप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यासः- ॐ ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**, ॐ गायत्री छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ अंगारक देवतायै नमः **हृदये**, ॐ अं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ आपः शक्तये नमः **पादयोः**। ❖ करन्यासः- ॐ आं **कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**, ❖ हृदयादिन्यास - ॐ आं **हृदयाय नमः**, ॐ ईं **शिरसे स्वाहा**, ॐ ऊं **शिखाये वषट्**, ॐ ऐं **कवचाय हुम्**, ॐ औं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ अः **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम् - **नमाम्यंगारकं देवं रक्ताम्बरविभूषणम्। जानुस्थवामहस्तांद्वयं साभयेतरपाणिकम्।**

बुध का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ बुं बुधाय नमः।

❖ विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबुधमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, पंक्तिश्छन्दः, बुधो देवता, बुं बीजं, आपः शक्तिः बुध प्रीतये जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यासः- ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**। ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः **मुखे**। ॐ बुधदेवतायै नमः **हृदये**। ॐ बुं बीजाय नमः **गुह्ये**। ॐ आपः शक्तये नमः **पादयोः**। ❖ करन्यासः- ॐ बुं **अगुष्ठाभ्यां नमः**। ॐ बुं **तर्जनीभ्यां नमः**। ॐ बुं **मध्यमाभ्यां नमः**। ॐ बुं **अनामिकाभ्यां नमः**। ॐ बुं **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। ॐ बुं **करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः**। ❖ हृदयादिन्यासः- ॐ बुं **हृदयाय नमः**। ॐ बुं **शिरसे स्वाहा**, ॐ बुं **शिखायै वषट्**, ॐ बुं **कवचाय हुम्**, ॐ बुं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ बुं **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्:- **ॐ वन्दे बुधं सदा देवं पीताम्बरसुभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताद्वयं साभयेतरापाणिकम्॥**

गुरु (बृहस्पति) का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ बृं बृहस्पते नमः।

विनियोगः- ॐ अस्यश्रीबृहस्पतिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्द, बृहस्पतिर्देवता, बृं बीजम्, नमः शक्तिः, श्रीबृहस्पतिप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ ऋष्यादिन्यासः- ॐ ब्रह्माऋषये नमः **शिरसि**, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ बृहस्पतिर्देवतायै नमः, **हृदये**, ॐ बृं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ नमः शक्तये नमः **पादयोः**, ❖ करन्यासः- ॐ ब्राँ **अगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ ब्रीं तर्जनीभ्यां नमः, **ॐ ब्रूँ मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ ब्रैं **अनामिकाभ्यां नमः**, ॐ **ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ ब्रः करतल **करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖ हृदयादिन्यासः- ॐ ब्राँ हृदयाय नमः, ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ब्रूँ शिखायै वषट्, ॐ ब्रौ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ **ब्रः अस्त्राय** फट्। ❖ ध्यानम्- तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रसंघस्तुतपादपंकजम्। मेधानिधिम् मत्स्यगतं द्विबाहुं गुरुं भजे मानस पंकजेऽहम्॥

शुक्र का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ शुं शुक्राय नमः।

❖विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशुक्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, शुक्रो देवता, शुं बीजं, स्वाहाम् शक्तिः, श्रीशुक्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖ ऋष्यादिन्यास- ॐ ब्रह्मऋषये नमः **शिरसि**, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः **मुखे**, ॐ शुक्रदेवतायै नमः, हृदये, ॐ शुं बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ स्वाहा शक्तये नमः **पादयोः**, ❖ करन्यासः- ॐ शुं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ शुं **तर्जनीभ्यां नमः**, ॐ शुं **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ शुं **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ शुं **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ शुं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ हृदयादिन्यासः- ॐ **शुं हृदयाय नमः**, ॐ शु **शिरसे स्वाहा**, ॐ शुं **शिखायै वषट्**, ॐ शुं, **कवचाय हुम्**, ॐ शुं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शुं **अस्त्राय फट्**। ❖ ध्यानम्- ॐ सन्तप्त- काञ्जननिभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं धृतसरोरुह-केशयुग्मम्। क्रौञ्चासनं असुरसेवितपादपदं शुक्र भजे द्विनयनं हृदि पंकजेऽहम्॥

शनि का मंत्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः।

❖ विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, आपः शक्तिः, श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः।

❖ हृदयादिन्यासः- ॐ शं हृदयाय नमः, ॐ शं शिरसे स्वाहा, ॐ शं **शिखायै वषट्**, ॐ शं **कवचाय हुम्** ॐ शं **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ शं **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- ॐ नीलांजनाभं मिहिरस्य पत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजंगपाणिम्। सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं भजे शनिं मानस पंकजेऽहम्॥

राहु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ रां राहवे नमः।

❖**विनियोगः**- ॐ अस्य श्रीराहु मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, राहुर्देवता, रां बीजम्, वेशः शक्तिः, श्रीराहुप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यासः-ॐ ब्रह्मऋषये नमः **शिरसि**, ॐ पंक्तिछन्दसे नमः **मुखे**, ओं राहुदेवतायै नमः **हृदय**, ओं रां बीजाय नमः **गुह्ये**, ओं वेशः शक्तये नमः **पादयोः**।

❖ करन्यासः-ॐ रां **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ रां **तर्जनीभ्यां नमः**, ॐ रां **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ रां **अनामिकाभ्या नमः**, ॐ रां **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ रां **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖ हृदयादिन्यासः-ॐ रां हृदयाय नमः, ॐ रां **शिरसे स्वाहा, ॐ रां शिखायै वषट्**, ॐ रां **कवचाय हुम्**, ॐ रां **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ रां **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्- **वन्दे राहुं धूम्रवर्णं अर्धकायं कृताञ्जलिम्।**
विकृतास्यं रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम्॥

केतु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ कें केतवे नमः

❖ विनियोगः- ॐ अस्य श्रीकेतुमन्त्रस्य श्रीब्रह्माऋषिः पंक्तिश्छन्दः, केतुर्देवता, कें बीजं, वेशः शक्तिः, श्रीकेतुप्रीतये जपे विनियोगः।

❖ ऋष्यादिन्यासः- ॐ ब्रह्मऋषये नमः **शिरसि**, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, ॐ केतुर्देवतायै नमः **हृदये**, ॐ कें बीजाय नमः **गुह्ये**, ॐ वेशः शक्तये नमः **पादयोः**

❖ करन्यासः- ॐ कें **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ कें **तर्जनीभ्यां नमः**, ॐ कें **मध्यमाभ्यां नमः**, ॐ कें अनामिकाभ्यां नमः, ॐ कें **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, ॐ कें करतल **करपृष्ठाभ्यां नमः**। ❖ हृदयादिन्यासः- ॐ कें **हृदयाय नमः**, ॐ कें **शिरसे स्वाहा**, ॐ कें **शिखायै वषट्**, ॐ कें **कवचाय हुम्**, ॐ कें नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ कें अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ॐ वन्दे केतुं कृष्णवर्णं कृष्णवस्त्रविभूषणम्।
वामोरुन्यस्ततद्धस्तं साभयेतरपाणिकम्।

ग्रहों का सामवेदीयशान्ति मन्त्र-

सूर्य-ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केवतः। दृशे विश्वायसूर्यम्।
चन्द्र- ॐ सन्ते पयांसि समयन्तुबाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व॥
कुजस्य- ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमअपा ग्वं रेतागुंसि जिन्वति
बुधः- ॐ अग्ने विवश्वदुषसश्चित्रां राह्नो अमर्त्य आदाशुषे।
जातवेदो वहात्वमद्या देवो उषर्बुधः॥
गुरोः- ॐ वृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपबाधमानः।
प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकंमेध्यविता रथानाम्॥
शुक्रस्यः- शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया।
अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।
शनेः- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय शन्नो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रवन्तु नः।
राहोः- ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता।
केतोः- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।

ग्रहों का बीज मन्त्र-

सूर्य- ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।
चन्द्र- ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।
मंगल-ॐ हुँ श्रीं भौमाय नमः।
बुध- ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।
गुरु- ॐ ह्रीं क्लीं हुँ बृहस्पतये नमः।
शुक्र- ॐ ह्रं श्रीं शुक्राय नमः।
शनि- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।
राहु- ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।
केतु- ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।

योगिनीशान्तिमन्त्रः-

मङ्गला- ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा। **पिङ्ला**- ॐ ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा।
धान्या- ॐ श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा। **भ्रामरी**- ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा।
भद्रिका- ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। **उल्का**- ॐ उल्के मम रोगं नाशय जृँभय स्वाहा।
सिद्धा-ॐ ह्रौं सिद्धे मे सर्व मानसं साधय स्वाहा। **सकंटा**- ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

शत्रुनाशक बगलामुखी प्रयोगः मन्त्र-

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिःत्रिष्टुप् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे च शत्रुणां स्तंभनार्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः- ॐ ह्लीं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, ॐ श्रीबगलामुखी **तर्जनीभ्यां नमः**, सर्वदुष्टानां मध्यामाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तंभय **अनामिकाभ्यां नमः**। जिह्वां कीलय **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः- ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ श्रीबगलामुखी **शिरसे स्वाहा**, सर्वदुष्टानां **शिखायै वषट्**, वाचं मुखं पदं स्तंभय कवचाय हुम्, जिह्वां कीलय **नेत्रत्रयाय वौषट्**, बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा **अस्त्राय फट्**।

ध्यानम्:- **सौवर्णासन संस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमाभाङ्गरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्‌गर पाश वज्र रसनाः संबिभ्रतीं भुषणै र्व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिंतयेत्॥**

बगलामुखी शाबर मंत्र- शाबर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते हैं- **ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली राजमुखबंधनं ग्राम मुखबंधनं ग्राम पुरुमुखबंधनं कालमुख बंधनं चौरमुखबंधनं व्याघ्रमुखबंधनं सर्वदुष्टग्रहबंधनं सर्वजनबंधनं वशीकुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।**

विष्णु द्वादश अक्षर मन्त्रजप प्रयोग

मन्त्र- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिर्गायत्रीछन्द:, श्रीविष्णु: परमात्मा देवता, मम सर्वपापविनाश-पूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

❖ **करन्यास:- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नम:**, नमो **तर्जनीभ्यां नम:**, ॐ भगवते **मध्यमाभ्यां नम:**, ॐ वासुदेवाय **अनांमिकाभ्यां नम:**, ॐ नमो भगवते कनिष्ठिकाभ्यां नम:, ॐ वासुदेवाय **करतल करपृष्ठाभ्यां नम:,।**

❖ **हृद्यादिन्यास:-** ॐ हृदयाय नम:, नमो **शिरसे स्वाहा**, ॐ भगवते **शिखायै वषट्**, ॐ वासुदेवाय **कवचाय हुम्**, ॐ नमो भगवते **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ वासुदेवाय **अस्त्राय फट्।**

❖ **ध्यानम्- ॐ विष्णु शरदचन्द्रकोटिसदृशं शंखं रथाङ्गदहारकुण्डलं- महामौलिं स्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदार-कौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रै: स्तुतम्॥**

शिवपञ्चाक्षर मन्त्र जप विधि:-

ॐ नम: शिवाय:।

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषि: पंक्तिश्छन्द:, सदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नम: शक्ति: शिवायेति कीलकं, चतुर्विधापुरुषार्थसिद्धयर्थे जपे विनियोग:।

❖ **ऋष्यादिन्यास:-** ॐ वामदेवऋषये नम: **शिरसि**, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नम: **मुखे**, ॐ श्रीसाम्बसदाशिवदेवतायै नम: **हृदये**, ॐ बीजाय नम: **गुह्ये**, ॐ नम: शक्तये नम: **पादयो:।** ॐ शिवाय कीलकाय नम: सर्वाङ्गे,

❖ **करादिन्यास:- ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नम:**, ॐ नं **तर्जनीभ्यां नम:**, ॐ मं **मध्यमाभ्यां नम:**, ॐ शिं **अनामिकाभ्यां नम:**, ॐ वां **कनिष्ठिकाभ्यां नम:**, ॐ यं **करतल करपृष्ठाभ्यां नम:।**

❖ **हृदयादिन्यास:- ॐ ॐ हृदयाय नम:**, ॐ नं **शिरसे स्वाहा**, ॐ मं **शिखायै वषट्**, ॐ शिं **कवचाय हुम्**, ॐ वां **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ यं **अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्- ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं, चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्जवलाङ्ग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्। ॐ नम: शिवाय।

न्यास सहित नवार्ण मन्त्र जप:- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरूद्रा ऋषय: गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्यों: देवता:, ऐं बीजम् ह्रीं शक्ति: क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

❖ **ऋष्यादिन्यास:-** ब्रह्माविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नम: **शिरसि**, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नम: **मुखे**, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीदेवताभ्यो नम: **हृदि**, ऐं बीजाय नम: **गुह्ये**, ह्रीं शक्तये नम: **पादयो:**, क्लीं कीलकाय नम: **नाभौ, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** इस मूल मन्त्र से हाथोंकी शुद्धि करके करन्यास करें।

❖ **करन्यास:-** ॐ ऐं **अंगुष्ठाभ्यां नम:**, ॐ ह्रीं **तर्जनीभ्यां नम:**, ॐ क्लीं **मध्यमाभ्यां नम:**, ॐ चामुण्डायै **अनामिकाभ्यां नम:**, ॐ विच्चे **कनिष्ठिकाभ्यां नम:**, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे **करतल करपृष्ठाभ्यां नम:।**

❖ **हृदयादिन्यास-** ॐ ऐं **हृदयाय नम:**, ॐ ह्रीं **शिरसे स्वाहा**, ॐ क्लीं **शिखायै वषट्**, ॐ चामुण्डायै **कवचाय हुम्**, ॐ विच्चे **नेत्रत्रयाय वौषट्**, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे **अस्त्राय फट्।**

❖ **अक्षरन्यास:-** ॐ ऐं नम: **शिखायाम्**, ॐ ह्रीं नम: **दक्षिणनेत्रे**, ॐ क्लीं नम: **वामनेत्रे**, ॐ चां नम: **दक्षिणकर्णे** ॐ मुं नम: **वामकर्णे**, ॐ डां नम: **दक्षिणनासापुटे** ॐ यैं नम: **वामनासापुटे**, ॐ विं **नम: मुखे**, ॐ च्चें नम: **गुह्ये।**

❖ **दिङ्न्यास:-** ॐ ऐं **प्राच्यै नम:।** ॐ ऐं **आग्नेय्यै नम:**, ॐ ह्रीं **दक्षिणायै नम:।** ॐ ह्रीं **नैर्ऋत्यै नम:।** ॐ क्लीं **प्रतीच्यै नम:।** ॐ क्लीं **वायव्यै नम:।** ॐ चामुण्डायै **उदीच्यै नम:।** ॐ चामुण्डायै **ऐशान्यै नम:।** ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे **ऊर्ध्वायै नम:।** ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे **भूम्यै नम:।**

ध्यानम्- खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिर:, शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तै: प्रसन्नाननां, सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनु: सायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥

मालापूजन- **ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नम:** इस मन्त्र से मालाकी पूजा करके प्रार्थना करे- **ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥ ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥ ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय मे स्वाहा।** इसके बाद **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** इस मन्त्र का जप करे। **गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥** इस श्लोक से भगवति को जप अर्पण करदें।

नवार्णमन्त्र के विविध कामना मन्त्रभेद (षट्कर्म प्रयोग)- मन्त्रों के स्वरूप:-

१. **वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (नाम) नामानं वषट् कुरुकुरु स्वाहा।** वीशकरण के लिए।
२. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं (व्यक्तिनाम) फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा।** उच्चाटन के लिए।
३. **क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं (नाम) क्लीं क्लीं मोहनं कुरुकुरु क्लीं क्लीं स्वाहा।** सम्मोहन के लिए।
४. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे** देवदत्तं रं रं **खे खे मारयमारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरुकुरु स्वाहा।** मारण के लिए।
५. ॐ ठं ठं **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभयस्तंभय ह्रीं जिह्वांकीलयकीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशयविनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा।** स्तम्भन के लिए।
६. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं यं यं शीघ्रमाकर्षय आकर्षय स्वाहा।** आकर्षण के लिए।
७. **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हुं अमुकामुकेन सह विद्वेषणं कुरुकुरु स्वाहा।** विद्वेषण के लिए।

नवार्ण महामन्त्र स्वरूप- यह महानवार्ण मन्त्र अचूक फल दायक है इसका न्यासादि पूर्ववत् ही होगा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डीमहामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुरमर्द्दिनि धूम्रलोचनसंहंत्रि चंडमुंडविनाशिनि रक्तबीजांतके निशुंभध्वंसिनि शुंभदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपाल-खट्वांग-शूलखड्ग-खेटकधारिणि छिन्नमस्तक धारिणि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूत प्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देव मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय नाशय ह्रीं फट् हूँ फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

संपुटित पाठ मे होम आहुति विचार-

संपुटित पाठ होम में किसी आचार्य का मत हैं

संपुटे हवनं नास्ति के अनुसार ७०० होम आहुति होगी तो किसी आचार्य के अनुसार संपुट होम आहुति संख्या २१०० होगी। कर्मठगुरू- **सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहेऽपि तथैव च। नानार्थसिद्धिवैकल्पे होमन्तु विपुलं चरेत्॥** अर्थात् संपुट का हवन नहीं करे परन्तु बहुधा करते हैं, **दुर्गाकल्पतरु एवं अनुष्ठान प्रकाश** मे आहुति संख्या २१०० स्पष्ट लिखी गई है। यथा- **होमकाले बीजसंयोगे दुर्गा मन्त्रेण पृथक् हुनेत्। कामना बीज संयोगो दुर्गा मन्त्रेण हुनेत्॥ दुर्गास्तवन मन्त्राणां संख्यां सप्तशतं भवेत्। कामना मन्त्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश॥ मध्ये मन्त्रान् सप्तशतं होमकाले तु योजयेत्। पाठे मन्त्रं पुटं वाच्यं होम मन्त्रा: पृथक् पृथक॥ होमसंख्या च मन्त्राणां शतं वै चैकविंशति:। पाठे बीजं पुटं वाच्यं होमे बीज पुटं हुनेत्।** दुर्गापाठ मन्त्र को अगर किसी **ऐं, ह्रीं, श्रीं,** या किसी बीज मन्त्र से संपुटित किया जाता हैं तो सम्पुटित कामना मन्त्र के अलग होम की आवश्यकता नहीं है। बीज मंत्र एकाक्षरी हो या ५-७ बीजाक्षर होवे तो भी एक ही आहुति होगी। अत: ७०० आहुति देवे। **अस्त संपुट**- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में आहुति देवे। **अस्त संपुट**- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में **कामना मंत्र** या बीजाक्षर विलोग होगा। व्याहृति व बीजाक्षरों का संपुट मंत्र के आदि व अंत में लोम विलोम ही लगता है अत: विलोमाक्षर का पृथक् होम नहीं करने पर केवल ७०० आहुति देवे। मरणादि मंत्रों में लोम कामना मंत्र फिर दुर्गा मंत्र फिर विलोमाक्षर कामना मन्त्र की आहुति देने पर २१०० आहुति देवे।

निष्कर्श- प्राय उदय संपुट पाठ ही करते हैं अर्थात् दुर्गा मन्त्र के आदि-अंत में कामना मंत्र लोम ही लगाते हैं अत: २१०० आहुति देवे।

संपुटित पाठ प्रकार एवं विधि- पाठ मंत्र से आगे पीछे कामना मंत्र लगाने से संपुटीकरण कहते है।

संपुट पाठ १. उदय संपुट, २. अस्त संपुट, ३. अर्द्धसंपुट

१. **उदय संपुट**- उदय संपुट में कामना मंत्र सप्तशतीपाठ मंत्र के आदि व अंत में लगाया जाता है।

२. **अस्त संपुट**- अस्तसंपुट बीजमंत्र या कामना मंत्र पाठ के आदि में पढे फिर दुर्गापाठ मंत्र पढे अंत में कामना मंत्र विलोम रूप से उच्चारण करे यथा- हौ जूं स: **ऐं मार्कण्डेय उवाच** स: जूं हौं। ३. **अर्द्धसंपुट**- कामनामंत्र दुर्गापाठ मंत्र के आदि या अन्त में केवल एक बार पढ़े। इसका फल न्यून हैं परन्तु विपरीत प्रभाव नहीं होता है। **प्राय सर्वत्र उदय संपुट का ही प्रचलन है। ४. तंत्र मार्ग के अनुसार** व्याहृति व बीजाक्षर का संपुट प्रारंभ में लोभ तथा कामना मंत्र इष्ट के बाद विलोम क्रम से होता है तथा इनकी आहुति भी एक ही होती है। ५. **भिन्नपाद प्रयोग** - मंत्र के चरण भेद मध्य में बीजमंत्र या अन्य मन्त्र के संयोजन से मंत्र उपासना या दुर्गा उपासना की जा सकती है।

कामनानुसार दुर्गा पाठ के द्वादश क्रमभेद- दुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र है, इनको अलग अलग क्रम से करने पर अलग-अलग कामना फल विशेष रूप से मिलता है। जो निम्न प्रकार हैं- (तन्त्रग्रन्थ एवं निर्णय सिन्धु),

१. **महाविद्या क्रम**- प्रथम, मध्यम उत्तर चरित्र- **सर्वकामना हेतु।** २. **महातन्त्री**- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- **शत्रुनाश, लक्ष्मीप्राप्ति हेतु।** ३. **चण्डी**- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र-**शत्रुनाश।** ४. **महाचण्डी**- उत्तर, प्रथम, मध्यम चरित्र-**शत्रुनाश, लक्ष्मीप्राप्ति हेतु।** ५. **सप्तशी**- मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र-**लक्ष्मी व ज्ञान प्राप्ति एवं उत्कीलन।** ६. **मृतसंजीवनी**- मध्यम, उत्तर, प्रथम चरित्र-**आरोग्यलाभ।** ७. **रूप दीपिका**- प्रथम, उत्तर, मध्यम चरित्र-विजय व आरोग्य। (**रूपं देहि जयं देहि से संपुटित**)। ८. **निकुंभला**- मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र-रक्षा हेतु, विजय हेतु (**शूलेन पाहि नो देवि से संपुटित**)। ९. **योगिनी**- बालोपद्रव शमन। (प्रत्येक चरित्र से पहले सम्बधित योगनियों का पाठ एवं प्रत्येक मंत्र को **वं शं षं** सम्पुटित। १०. **विलोम (संहार क्रम)**- ७०१ वें श्लोक से प्रथम श्लोक तक विलोम क्रम से। ११. **अक्षरश: विलोम पाठ**- १३ वें अध्याय से प्रथम अध्याय तक काशी के पुराने विद्वानों के पास मिल सकती है १०० वर्ष पहले छपी हुई है। इसी तरह प्रत्येक चरित्र के पहले भैरव नामावलि पाठ का विधान भी मिलता। गढ़वाल क्षेत्र व अन्य सम्प्रदायों में हर अध्याय पहले भैरव नामावलि का पाठ करने का क्रम भी मिलता है। कई विद्वान कहते है कि सप्तशती के बाहर के मंत्र का संपुट नहीं लग सकता, परन्तु योगिनी क्रम से यह साफ जाहिर है कि अन्य मंत्रों के संपुट लग सकते है। दुर्गा सप्तशती के सभी दशमहाविद्याओं के मंत्र, गायत्री मन्त्र, भागवत के मन्त्रों का, वैदिक मंत्रों का व अन्य कोई मंत्रों का संपुट लगाया जा सकता है दुर्गार्चनसृति:, अनुष्ठान प्रकाश में दुर्गा के बाहर के मत्रों के संपुट के विषय में लिखा है। स्वयं रावण भी निकुंभला का उपासक था वह भी सप्तशतीक्रम से पाठन **शूलेन पाहिनो...।** का संपुट लगाता था।

दुर्गापाठ मे निषिध आहुति विचार-

चण्डी स्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिहेष्यते। रक्षा कवचागैमन्त्रै तत्र न कारयेत्॥ अर्थात्-

१. कवच मंत्र एवं अस्त्र शस्त्र मंत्रों का हवन नहीं होता है। वैसे अगर कवच सिद्ध करना हो तो गुग्गुल व घृत से होम करे। क्यों कि घृत से अग्नि का आचमन होता है। २. सौभाग्य द्रव्य सिन्दुरादि का भी होम नहीं होता है मरण कर्म में सिन्दुरादि से हवन अवश्य होता हैं उसमें तो अग्नि का १६ वां मृतक संस्कार कुण्डानि का होता है पश्चात् विधि होम प्रारम्भ होता है। ३. चतुर्थ अध्याय के **शूलेन पाहिनो देवि** इत्यादि चार मन्त्रो का हवन नहीं होता, इसी तरह **खड्गिनी शूलिनी** मन्त्र का भी उच्चारण कर हवन नहीं करना चाहिए उक्त मन्त्र के स्थान पर **नवार्ण मन्त्र** अथवा **श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा** से हवन करें अथवा मन्त्र को मानसिक उच्चारण कर हवन करें। ४. पांचवे अध्याय में **दूत उवाच** दो बार आया हैं इस मन्त्र से आहुति देने से फल का भाग दूत को जाता हैं अत: कर्मफल में न्यूनता आती है। अत: मनसा पढकर **ऐं सरस्वत्यै नम:** से आहुति प्रदान करें।

वास्तु विचार

ग्रामवास. विचार- **मस्तक पञ्चलाभाय मुखे त्रीणि धनक्षयः। कुक्षी पञ्च धनं धान्यं षट्पादे स्त्री दरिद्रता॥ पृष्ठे चैक पादहानिर्नाभौ चत्वा रिसंपदः। गुह्ये चैक भयं पीडा हस्ते चैक तु क्रन्दनम्। वामे चैक करे भेदो ग्राम चक्रं नराकृतिः।**

गणयेज्जन्मनक्षत्रं ग्राम नक्षत्रतः सदा॥

-ग्राम के नक्षत्र से वास पुरुष के नक्षत्र तक गिने तदनन्तरं अधोलिखित चक्र में

ग.न.से. पु.ज.न.	५	३	५	५	६	१	४	१	१	१
अवयव	मस्तक	मुख	पेट	पेट	पैर	पीठ	नाभि	गुर्दा	दाय हाथ	वाया हाथ
फल	लाभ	धन हानि	धन धान्य	धन धान्य	स्त्री अभाव	पैर में पीड़ा	धन सम्पति	भय भीड़ा	युद्ध	मत भेद

भूमिपरीक्षणः-गृह निर्माण के पूर्व भूमि परीक्षण आवश्यक है। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि की बहुत सी विधियां दी गयी है। किन्तु लोकव्यवहार में ये विधियां अत्यधिक प्रचलित हैं जो अधोलिखित है।

मध्येगृहे हस्तमितं खनित्वा सम्पूरयेत्पांशुभिराश्रुतस्य।
सम्पूरयित्वा धिकतामुपेतः पांशुर्यदा तद्गृहमुत्तम स्यात॥
समे समं न्यूनतरे सदोषं न कारयेत्तत्र गृहं दाचित्।

जिस भूमि पर मकान बनाना हो तो उसके बीचों बीच एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा, एक हाथ गहरा गड्ढा खोदना फिर उसी निकली हुई मिटी से उस गड्ढे को भर देना चाहिये यदि गड्ढा भरने से मिट्टी बच जाय तो उत्तम, बराबर हो जाय तो सम और मिट्टी कम हो जाय तो निषिद्ध होता है। इस भूमि पर मकान नहीं बनवाना चाहिये।

तदा निशादौ तत्कृत्वा पानीयेन प्रपूरयेत्।
प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पौ व्रणे क्षयः।

पूर्व विधि से गढ्ढा खोदकर पानी से सायं काल मे पूर्णरूप से भरकर प्रातःकाल देखने पर यदि जल दिखाई पड़े तो शुभ, केवल कीचड़ बचा रहे तो सम और मिटी फट जाय तो भूमि हानिकारक होती है। वास्तुरत्नाकार के अनुसार जिस भूमि पर ओषधियाँ, वृक्ष, लतायें तथा हरी भरी घासें हों एवं भूमि समतल हो ऐसी भूमि निवास के लिये प्रशस्त मानी गयी है।

गजपृष्ठादि भूमि विचारः-गजपृष्ठ जिस स्थान में दक्षिण, पश्चिम, नैत्रऋत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ऊँची हो उसके गज पृष्ठ कहा गया है। उस भूमि पर घर बनाकर रहने से धन-धान्य, संतान, आयु की वृद्धि होती है।

कर्मपृष्ठः- जहां की भूमि मध्य में ऊँची हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो, वह कर्मपृष्ठ भूमि कहलाती है। उस स्थान पर वास करने से नित्य उत्साह, धन-धान्य, संतान, आयु, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठाः- ईशानकोण, पूर्व और अग्निकोण में भूमि उच्च हो और पश्चिम में नीच हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाती है। उसमें निवास करने से अशुभ फल मिलता है।

नागपृष्ठः- जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में भूमि उच्च हो, बीच में नीच हो तो वह भूमि नागपृष्ठ कहलाती है। यहाँ वास करने से सभी प्रकार की हानि होती है।

चारों वर्णों के आधार पर भूमि विवेचनः-

मधुरा दर्भसंयुक्ता घृतगन्धा च या मही। अन्तरप्रवणा ज्ञेया ब्राह्मणानां च सा शुभा। रक्तगान्धा कषाया च शरवीरेण संयुता। रक्ताप्राक्प्रावणज्ञेया क्षत्रियांणा च सा मही॥ दक्षिण प्रवणा भूमिर्याऽम्ला दूर्वाभिरन्विता। अन्नगन्धा च वैश्यानां पीत वर्णा प्रशस्यते॥ पश्चिमप्रवणा कृष्णा विकुण्ठा काश संयुता॥ मद्यगन्धा मही धन्या शूद्राणां कटुका तथा॥

स्पष्टार्थ चक्र

ब्रह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
उत्तरप्लव	पूर्वप्लव	दक्षिणप्लव	पश्चिमप्लव	प्लव
मधुर	कषाय	अम्ल	कटु	रस
घृतगन्ध	रक्तगन्ध	अन्नगन्ध	मद्यगन्ध	गन्ध
दर्भयुक्त	शपतयुत	बूवयुक्त	कशुयुक्त	
श्वेतवण	रक्तवर्ण	पीतवर्ण	कृष्णवर्ण	वर्ण

सूर्य-चन्द्र वेध विचारः- चन्द्र वेधी मकान एवं जलाशय सूर्य वेधी शुभ होता है। हद या वाटिका सूर्य एवं चन्द्र वेधी दानों से शुभ होता है। पूर्व पश्चिम लम्बा मकान सूर्य वेधी और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है- चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि एवं सूर्यवेधी मकान में धन-धान्य एवं संतति की क्षति होती है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनो प्रशस्त माना गया है। देवालय आदि के लिये सूर्यवेध और चन्द्रवेध का विचार नहीं होता। (वास्तुरत्नाकरे)

पिण्ड ज्ञान- मकान की लम्बाई X चौड़ाई = मकान का पिण्ड होता है।

भवन के आय आदि का विचारः-

गृहपिण्ड को नव स्थानों में रखकर क्रम से ६ ।६।६।८।३।८।८।४।८। इन अंको से अलग अलग दो २ का गुणा करके गुणनफल मे क्रमशः-८।७।६।१२।८।२७।१५।२७।१२०। इन अंको से भाग देने पर जो शेष बचे वह कम से आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और आयु होती है। कम आयु वाला मकान शुभ नहीं होत है।

१. आयः-ध्वज, धूम्, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज, उष्ट्र अथवा काक ये आठ प्रकार के होते है इसमें विषय आय १, ३, ५, ७ हो तो शुभ एवं सम हो २, ४, ६, ८ तो अशुभ होता है।

वार तथा अंश- सूर्य मंगल के वार राशियां और अंश मेषादिनवांश सर्वदा अग्नि भय करने वाले होते है। तथा शेष ग्रहो का वारादि अभीष्ट सिद्धि दायक होता है।

द्रव्य या धन- यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो गृह शुभ होता है। ऋण अधिक हो तो अशुभ होता है।

नक्षत्र- गृह और गृह स्वामी का नक्षत्र एक हो तो गृह स्वामी की मृत्यु होती है। **तिथिः-** शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके अमान्त तक ३० तिथियां होती है, उनमे ये ४, ६, १४, १६, १४, १७, १६, ३० तिथियां अशुभ होती हैं तथा शेष शुभ होती हैं। **योगः-** अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ एवं वैधृति ये योग गृह में वर्जित है। **आयुः-** दीर्घायु मकान शुभ होता है एवं अल्पायु अशुभ होता है। आयु विहीन गेहे तु दुर्भगत्वं प्रजायते। **राशिः-** वासकर्ता का नाम राशि से २, ६, ५, १०, ११ स्थानो में ग्राम की राशि हो तो वास कर्ता के लिये वह ग्राम, मुहल्ला शुभ एवं १, ३, ४, ७, ८ और १२ स्थानो में हो तो अशुभ होता है।

भवन के लाभ आदि का विचारः- अपनी २ वर्ग संख्या को द्वि गुणित कर उसमें ग्रामादि वर्ग संख्या को जोड़कर उसमें ८ का भाग देने से जिसका शेष अधिक हो वह ऋणि होता है। अतः वासकर्ता की काकणी से गाँव, मुहल्ला या शहर की काकणी हमेशा अधिक होनी चाहिये।

स्पष्टार्थ-चक्र

क्र.	वर्ग	नामाक्षर	वर्गेश	वर्ग संख्या	वर्ग की दिशा या कोण
१.	**अवर्ग**	अ,इ,उ,ए,ऐ,ओ,औ	गरूण	१	पूर्व दिशा
२.	**कवर्ग**	क,ख,ग,घ,ङ	मार्जार	२	आग्नेय कोण
३.	**चवर्ग**	च,छ,ज,झ,ञ	सिंह	३	दक्षिण
४.	**टवर्ग**	ट,ठ,ड,ढ,ण	श्वान	४	नैत्रर्ऋत्य कोण
५.	**तवर्ग**	त,थ,द,ध,न	सर्प	५	पश्चिम
६.	**पवर्ग**	प,फ,ब,भ,म	मूषक	६	वायव्य कोण
७.	**यवर्ग**	य,र,ल,व	मृग	७	उत्तर
८.	**शवर्ग**	श,ष,स,ह	मेष	८	ईशान कोण

मण्डलानयनः- पिण्ड की लम्बाई + चौड़ाई में नव से भाग देने पर क्रम से १. दाता २. भूपति ३. क्लीब ४. चोर ५. पण्डित ६. भोगी ७. धनाढ्य ८. दरिद्र ६. कुबेर ये नव प्रकार के मण्डल होते है। इनका फल नामके सदृश होता है।

मण्डलेशानयनः- स्वामिहस्तप्रमाणेन दीघाविस्ताररसंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्त मण्डलाधिप उच्यते॥ इन्द्रो विष्णुर्यमो वायुः कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधाता विघ्नराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः॥ इन्द्र सौख्यं यशो विष्णुर्यमो दुःखं निरन्तरम्। वायश्चोच्चाटनं कुर्यात् कुबेरो धनदो भवेत्। धूर्जटिः कलहो नित्यं धाता सौख्यप्रवृद्धिदम्। सर्वसिद्धिं गणाधीशः फलमुक्तं मनीषिभिः॥

स्पष्ट चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	**शेष**
इन्द्र	विष्णु	यम	वायु	धन	महादेव	विधाता	गणेश	देव
सुखद	यश	दुःख	उच्चाटन	कुबेर	कलह	सुखशान्ति	सर्वसिद्धि	फल

आँगन विचार- आँगन की लम्बाई चौड़ाई को आठ से गुणा करके नव से भाग देने पर क्रम से १. तस्कर २. भोगी ३. पण्डित ४. दाक्षा ५. नृपति ६. नपुंसक ७. कुबेर ८. दरिद्र ६.भयदाता ये नव प्रकार के आँगन होते हैं। इनका फल नाम के समान होता है। बीच में आँगन ऊँचा और चारो तरफ नीचा शुभ फल दायक होता है। इसके विपरीत होने पर सन्तान नाशक होता है।

राहु दिशा विचार- देवालय, जालशय और मकान के नींव खोदते समय राहु की दिशा का विचार आवश्यक होता है।

देवालये गेहे विधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः।
मीनार्कः सिंहार्कः मृगार्कतस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवेत्।

नींव या जलाशय आदि खोदते समय राहु के मुख भाग को छोड़कर पृष्ठ भाग से खोदना शुभ होता है।

कक्ष विवेचनं मुहूर्त चिन्तामणौः-

स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभांडारदैवतगृहाणि च पूर्वतःस्युः।
तन्मध्यतस्तुमथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासख्यरोदनरतौषध सर्वधाम्॥

स्नान कक्षः- वास्तुशास्त्र के अनुसार स्नान घर बाथरूम भवन के पूर्व मे होना चाहिये। स्नान घर में गिजर वाल सुखाने की मशीन आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये। कक्ष के फर्श की ढाल उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में रखनी चाहिये। शौचालय स्नान कक्ष के अन्दर नहीं होना चाहिये। किन्तु देशकाल के अनुसार स्नान कक्ष में शौचालय रखना हो तो नैत्रर्ऋत्य कोण व दक्षिणा दिशा के मध्य तथा नैत्रर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में बनवाना चाहिये। नल फव्वारा इत्यादि उत्तर पूर्वी क्षेत्र में साफ करने के लिये स्थान पश्चिम दिशा में होना चाहिये। यदि कपड़े धोने की मशीन स्नान घर में रखनी है तो केवल दक्षिण पूर्व कोने में रखनी चाहिये।

भोजनालयः- इसके लिये सबसे उत्तम स्थान भवन को अग्नेय कोण में होता है। यह सम्भव न हो सके तो दूसरा स्थान अग्नेय कोण या पूर्व के मध्य में रखना चाहिये। भोजनालय में शुद्धजल हेतु नल ईशान कोण में व पूर्व दिशा के मध्य में गैस सिलेण्डर व गैसचूल्हा अग्नेय कोण में, खाद्यान्य भण्डार पूर्व दिशा में बरतन आदि दक्षिण या पश्चिम दिशा में रखना चाहिये। भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में बनवाना चाहिये। अगर भोजनालय मे ही भोजन करना है तो पश्चिम दिशा में उत्तम स्थान माना जाता है। भण्डार रूम स्टोर रूम वायव्य मे उत्तम होता है।

शयन कक्षः- गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण व पश्चिम में होना चाहिये। सर्वदा पूर्व या दक्षिण की तरफ शिरा सोना चाहिये।

प्राकशिरः शयने विद्याद् धनमायुश्च दक्षिणे।
पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानि मृत्युर्त्तथोत्तरे॥

पूजाघरः- ईशान कोण में देवताओं का वास होता है। इसलिये ईशान में पूजा घर शुभ होता है। पूजा के समय उत्तर दिशा या पूर्वदिशा की तरफ मुख होना चाहिये। पूजा घर में शयन नहीं करना चाहिये। स्थानाभाव में यदि शयन करना हो तो पूजा स्थल पर लाल परदा डाल कर रखें। हवन आदि की व्यवस्था अग्नि कोण में करना चाहिये। पूजा की दीवार एवं फर्श सफेद या हल्के पीला रंग का होना चाहिये। नैत्रऋत्य कोण में अस्त्रशस्त्र कक्ष, अग्नि कोण में बिजली, जनरेटर अर्थात् ऊर्जा से संबंधित कक्ष, उत्तर दिशा में कोषघर, वायव्य में पशु गृह, अग्निकोण तथा पूर्व दिशा के मध्य मे घृत दधिमथन आदि का कक्ष उत्तर पश्चिम में अतिथि कक्ष या सामान्य कक्ष, नैत्रऋत्य पश्चिम में अध्ययन कक्ष, वायव्य उत्तर में रति कक्ष, ईशान कोण मे चिकित्सा कक्ष, एवं नैत्रऋत्य कोण में प्रसूति कक्ष बनवाना चाहिये।

द्वार विवेचनः- मकान की लम्बाई जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई बराबर-बराबर नव ८ भागो करके पाँच भाग दाहिने और तीन भाग वायें की तरफ छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये।

शिलान्यासः- पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अंदरपूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिये, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिये।

गृहारम्भे वास्तु पुरूष स्थिति ज्ञानम्- गृहारम्भ की तिथि संख्या में ४ जोड़कर दूना करके उसमे गृहपति के नामाक्षर संख्या को जोड़कर ३ का भाग देना, यदि १ शेष बचे तो स्वर्ग में, २ शेष बचे तो पाताल में एव ० शून्य शेष बचे तो मृत्युलोक में वास्तु पुरूष का निवासी होता है। स्वर्ग एवं पताल में वास्तु पुरूष का निवास होने पर लाभ एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा मृत्युलोक में निवास होने पर कष्टदायक एवं मृत्युदायक होता है।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का- ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मन्दिर के सामने, जैन-मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

वास्तुदोष निवारण के उपायः- १. घर में वास्तुदोष होने पर उचित यही है कि उसे यथा संभव वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक करके ध्यान रहे निर्मित मकान का अधिक तोड़ फोड़ करने से वास्तुभंग दोष लगता है, ऐसी स्थिति में उसे बेच कर दुसरा मकान बनाकर रहना उचित होता है। ऐसा संभव न हो सके तो वास्तुदोष के निवाराणार्थ वर्ष में कम से कम एक बार नवरात्रि में दुर्गासप्तशती का पाठ, श्रीरामचरितमानस का पाठ अखण्ड कीर्तन या भागवत यज्ञ आदि अवश्य करें। २. अमावश्या तिथि को गाय के उपले एवं समी की लकड़ी, तिल, चावल, जौ, शक्कर, गुग्गुल, जटामाशी तथा चन्दन चूर्ण मिलाकर मन्त्र द्वारा ११०० आहूति करने से वास्तुदोष दूर हो जाता है। यह वर्ष में एक बार करना चाहिये। घर में तुलसी का पौधा लगाने से गृह में सुखशान्ति रहती है।

श्रावण कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, सं.-२०८३, शाके १९४८, सौम्यगोल:, याम्यायनम्, वर्षर्तु: (राहु) पश्चिमेकाल: अशुद्धसमय:

दिनांक: ३० जुलाई से १२ अगस्त २०२६ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	गुरु	३८।१७	रा.८।४०	श्र.३२।०२	सं.६।१०	आ.४६।५५	बा.०६।५५	मकर	३।१२।५२।४५	३३।१६	५।२१	६।३९	१६	१४	३०
२	शुक्र	४०।९	रा.९।२४	ध.३५।३२	रा.७।३४	सौ.४८।४२	तै.९।१३	म.दि.६।५२	३।१३।४९।५७	३३।१३	५।२१	६।३९	१७	१५	३१
३	शनि	४०।३१	रा.९।३४	शत.३७।४५	रा.८।२६	शो.४६।२४	व.१०।२०	कुम्भ	३।१४।४७।०९	३३।१०	५।२२	६।३८	१८	१६	१ अग.
४	रवि	३९।३२	रा.९।१२	पू.भा.३८।४१	रा.८।५१	अ.४३।०७	बव.१०।०२	कु.दि.२।४६	३।१५।४४।२१	३३।०७	५।२३	६।३७	१९	१७	२
५	सोम	३७।३०	रा.८।२३	उ.भा.३८।२६	रा.८।४५	सु.३८।५०	कौ.८।३१	मीन	३।१६।४१।३३	३३।०४	५।२३	६।३७	२०	१८	३
६	मंगल	३४।२१	रा.७।८	रे.३७।०२	रा.८।१३	धृ.३३।४४	गर.५।५६	मी.रा.८।१३	३।१७।३८।४४	३३।०१	५।२४	६।३६	२१	१९	४
७	बुध	३०।१५	सं.५।३०	अ.३४।५६	रा.७।२२	शू.२७।५१	वि.२।१८	मेष	३।१८।३५।५५	३२।५८	५।२४	६।३६	२२	२०	५
८	गुरु	२५।२१	दि.३।३३	भ.३१।५४	सं.६।१०	गं.२१।१९	कौ.२५।२१	मे.रा.११।४९	३।१९।३३।०६	३२।५६	५।२५	६।३५	२३	२१	६
९	शुक्र	१९।४७	दि.१।२०	कृ.२८।१७	दि.४।४४	वृ.१४।१४	गर.१९।४७	वृष	३।२०।३०।२४	३२।५३	५।२५	६।३५	२४	२२	७
१०	शनि	१३।५२	दि.११।५९	रो.२४।१६	दि.३।८	ध्रु.६।५१	वि.१३।५२	वृ.रा.२।१८	३।२१।२७।४१	३२।५०	५।२६	६।३४	२५	२३	८
११	रवि	७।४२	दि.८।३२	मृ.२०।०५	दि.१।२९	ह.५१।३२	बा.७।४२	मिथुन	३।२२।२४।५८	३२।४७	५।२७	६।३३	२६	२४	९
१२	सोम	१।३१	प्रा.६।०३	आ.१५।५६	दि.११।४९	व.४३।५९	तै.१।२१	मि.रा.४।३९	३।२३।२२।१५	३२।४४	५।२७	६।३३	२७	२५	१०
१४	मंगल	४९।५१	रा.१।२४	पुन.१२।०१	दि.१०।१६	सि.३६।४०	वि.२३।१०	कर्क	३।२४।१९।३२	३२।४१	५।२८	६।३२	२८	२६	११
३०	बुध	४४।१४	रा.११।०९	पु.८।३०	दि.८।५२	व्य.२९।४८	च.१७।०३	कर्क	३।२५।१६।४९	३२।३८	५।२८	६।३२	२९	२७	१२

श्रावणेवर्जयेच्छाकम्, भदवारम्भ: सं. ६।१० उ., दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां, शिववास: रा. ८।४० या., विश्वमित्रता दिवस:

अशून्यशयन व्रतं, द्वितीयायां मृत्युयोग:, अग्निवास:

अगस्त मासारम्भ:, भद्रा-१०।२० उ. ४०।३१ या., सिद्धियोग: रा. ९।२४ उ.

श्रीगणेश ४ व्रतं, शिववास:, अग्निवास:, अमृतयोग: रा. ९।१२उ.

मौना-५ मनसादेव्युत्थानं, मधुश्रावणी पूजारम्भ:, श्लेषायां रवि: ४६।५८ पु. स्त्री. चं. चं. योगो अश्व वाहनं वह्नि नाड़ी तदीशो भौम: वायुवृष्टि योग:, दग्धतिथि: रा. ८।२३ उ.,❖

भद्रा-३४।२१ उ., भदवा समाप्ति रा. ८।१३ उ., दग्धतिथि: सं. ७।८ या., गंड दि. ३।२५ उ. रा. ९।२५ या., मृत्युयोग: सं. ७।८ या. तत: अमृतयोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: रा. ८।४५ उ.

भद्रा २।१८ या., उत्तरां विना यात्रा सप्तम्यां, शिववास: सं. ५।३० उ., अग्निवास:, सिद्धियोग: सं. ५।३० या. तत: मृत्युयोग:

मन्वन्तरादि:, शिववास: दि.३।३३ या., अमृतयोग: दि.३।०३ या. तत: मृत्युयोग:

भद्रा ४६।५० उ.,अग्निवास:, अमृतयोग: दि.१।२० या.

व्या. योग ५२।२३, भद्रा १३।५२ या., मृत्युयोग: दि.११।५९ या. तत: शिववास:-अमृतयोगश्च:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ३।०८ या.

कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, सूतीस्नानं, पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्यां मृगशिरसि, शिववास:, अग्निवास:-मृत्युयोगश्च दि. ८।३२ या. तत: मध्यमयोग:, भारत छोड़ो आन्दोलन

१३तिथि ५३।५८, प्रदोष- १३व्रतं, दूर्वादलेन पारणम्, भद्रा- ५३।२२ उ., सोमवारी व्रतं, शिववास:-मृत्युयोगश्च प्रा. ६।०३ या. तत: अग्निवास:

प्रदोष-१४व्रतं, भद्रा-२३।१० या., पश्चिम यात्रा पुनर्वसौ ततो उत्तरां विना यात्रा चतुर्दश्यां , राज्यप्रदयोग रा. १।२४ या.

श्रावणी-३० स्नानदानादि:, गंड दि. ६।२८ उ., शुभवारान्वितेदर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्, शिववास: रा. ११।०९ या., अग्निवास:

❖ सोमवारी व्रतं, शिववास:-अग्निवास:-अमृतयोगश्च रा. ८।२३ या. तत: सिद्धियोग:, विपणि

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क. अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. गुरु	१।२६।३०।१७	२।२६।२३।५४	३।१३।१५।१७	४।२८।५६।५०	११।२०।०९।१४	१०।०९।०१।२८	४६।३८	०।३७	२।१७	४।१८	६।३४	८।५२	११।०८	१३।२४	१५।४२	१७।५९	२०।००	२१।४०	२२।५८
२. शुक्र	१।२७।१०।४७	२।२७।४७।१४	३।१३।२८।४५	४।२९।५६।३३	११।२०।०७।२५	१०।०८।५८।१७	४६।३६	०।३३	२।१३	४।१४	६।३०	५।४८	११।०४	१३।२०	१५।३८	१७।५५	१९।५६	२१।३६	२२।५४
३. शनि	१।२७।५१।१७	२।२९।१०।३४	३।१३।४२।१३	५।००।५६।१६	११।२०।०५।३६	१०।०८।५५।०६	४६।३४	०।३०	२।१०	४।११	६।२७	८।४५	११।०१	१३।१७	१५।३५	१७।५२	१९।५३	२१।३३	२२।५१
४. रवि	१।२८।३१।४६	३।००।३३।५४	३।१३।५५।४१	५।०१।५५।५९	११।२०।०३।४७	१०।०८।५१।५५	४६।३२	०।२६	२।०६	४।०७	६।२३	८।४१	१०।५७	१३।१३	१५।३१	१७।४८	१९।४९	२१।२९	२२।४७
५. सोम	१।२९।१२।१५	३।०१।५७।१३	३।१४।०९।०९	५।०२।५५।४२	११।२०।०१।५८	१०।०८।४८।४४	४६।३१	०।२३	२।०३	४।०४	६।२०	८।३८	१०।५४	१३।१०	१५।२८	१७।४५	१९।४२	२१।२६	२२।४४
६. मंगल	१।२९।५२।४४	३।०३।२०।३२	३।१४।२२।३७	५।०३।५५।२५	११।२०।००।०९	१०।०८।४५।३३	४६।३०	०।१९	१।५९	४।००	६।१६	८।३४	१०।५०	१३।०६	१५।२४	१७।४२	१९।४३	२१।२२	२२।४०
७. बुध	२।००।३३।१३	३।०४।४३।५१	३।१४।३६।०५	५।।०४।५५।०७	११।१९।५८।२०	१०।०८।४२।२२	४६।२९	०।१६	१।५६	३।५७	६।१३	८।३१	१०।४७	१३।०३	१५।२१	१७।३९	१९।४०	२१।१९	२२।३७
८. गुरु	२।०१।१३।४२	३।०६।०७।१०	३।१४।४९।३२	५।०५।५४।४९	११।१९।५६।३०	१०।०८।३९।११	४६।२८	०।१३	१।५३	३।५४	६।१०	८।२८	१०।४४	१३।००	१५।१८	१७।३६	१९।३७	२१।१६	२२।३४
९. शुक्र	२।०१।५३।३१	३।०७।४३।३२	३।१५।०२।३६	५।०६।५२।१०	११।१९।५४।३३	१०।०८।३६।००	४६।२६	०।०९	१।४९	३।५०	६।०६	८।२४	१०।४०	१२।५६	१५।१४	१७।३२	१९।३३	२१।१२	२२।३०
१०. शनि	२।२।३३।२०	३।०९।१९।५४	३।१५।१५।४०	५।०७।४९।३१	११।१९।५२।३६	१०।०८।३२।४९	४६।२४	०।०३	१।४६	३।४७	६।०३	८।२१	१०।३७	१२।५३	१५।११	१७।२९	१९।३०	२१।०९	२२।२७
११. रवि	२।०३।१३।०८	३।१०।५६।१६	३।१५।२८।४४	५।०८।४६।५२	११।१९।५०।३९	१०।०८।२९।३८	४६।२२	२३।५९	१।४३	३।४४	६।००	८।१८	१०।३४	१२।५०	१५।०८	१७।२६	१९।२७	२१।०६	२२।२४
१२. सोम	२।०३।५२।५६	३।१२।३२।३८	३।१५।४१।४८	५।०९।४४।१३	११।१९।४८।४२	१०।०८।२६।२७	४६।२०	२३।५६	१।३९	३।४०	५।५६	८।१४	१०।३०	१२।४६	१५।०४	१७।२३	१९।२३	२१।०२	२२।२०
१४.मंगल	२।०४।३२।४४	३।१४।०९।००	३।१५।५४।५१	५।१०।४१।३४	११।१९।४६।४५	१०।०८।२३।१६	४६।१९	२३।५३	१।३६	३।३७	५।५३	८।११	१०।२७	१२।४३	१५।०१	१७।१९	१९।२०	२०।५९	२२।१७
३०. बुध	२।०५।१२।३२	३।१५।४५।२२	३।१६।०७।५४	५।११।३८।५५	११।१९।४४।४८	१०।०८।२०।०५	४६।१८	२३।४९	१।३२	३।३३	५।४९	८।०७	१०।२३	१२।३९	१४।५७	१७।१५	१९।१६	२०।५५	२२।१३

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.३।२१-६।३९	रा.१२।००-१।२०।रा.३।५९-५।२१
दि.८।४१-१२।००	रा.९।१९-१०।३९
प्रा.५।२२-७।१।दि.१।३७-३।१६।सं.४।५५-६।३८	सं.६।३८-७।५८।रा.१।१८-२।३८।रा.३।५८-५।२३
दि.१०।२०-१।३८	रा.१०।४०-१२।००।रा.१।२२-२।४३
दि.७।२-८।४१।दि.३।१७-४।५६	रा.९।१५-१०।४०।रा.२।४३-४।४
दि.७।३-८।४२।दि.१।३९-३।१८	रा.७।५७-९।१८
दि.८।४२-१०।२१।दि.१२।००-१।३९	रा.१२।००-१।२१।रा.२।४२-४।०३
दि.३।१९-६।३५	रा.१२।००-१।२०।रा.४।२-५।२५
दि.८।४३-१२।००	रा.९।१७-१०।३८
प्रा.५।२६-७।४।दि.१।३८-३।१७।दि.४।५५-६।३४	सं.६।३४-७।५५।रा.१।२१-२।४३।रा.४।४-५।२७
दि.१०।२१-०१।३७	रा.१०।३९-१२।००।रा.१।२३-२।४५
दि.७।५-८।४३।दि.३।१५-४।५३	रा.१०।३९-१२।००।रा.२।४५-४।०७
दि.७।६-८।४४।दि.१।३८-३।१६	रा.७।५४-९।१६
दि.८।४४-१०।२२।दि.१२।००-१।३८	रा.१२।००-१।२२।रा.२।४४-४।६

श्रा. कृ. १ गु. व. ८।४०।१३।०७
अयनांशा: २२।५४।३०

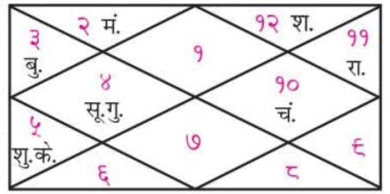

श्रा. कृ. ८ गु. व. ८।४०।१३।१४
अयनांशा: २२।५४।३१

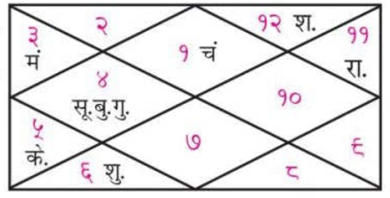

विविधविषया:- सोमव्रतं- सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्।। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता

नन्दिपुराणे- कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद् व्रतं निष्फलं भवेत्। श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्या: उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। अस्यामम्लतिक्त (निम्बपत्रबीजपूर) रससेवनं पुष्टिकरम्। सायंकाले च मूषकमृत्तिकादुग्धलाजान् सर्प्पमन्त्रेणाभिमन्त्र्य गृहेषु विकिरेत्।

सर्पमन्त्रस्तु- दू सर्प्पा चौसर्प्पा झाड़े सारे कारे विषा आस्तीक आस्तीक आस्तीक। आस्तीकेति वच: श्रुत्वा य: सर्पो न निवर्त्तते शतधा भिद्यते मूर्द्धा शिंशवृक्ष फलं यथा।

पञ्चम्यां नाग पूजनं- श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्यो गोमयेन विषोल्वणा:। पूजयेद्विधिवद्वीर दधि दूर्वांकुरै: कुशै:। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणै:। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सरा:। तेषा सर्पतो वीर भयं भवति न कुत्रचित्।

पञ्चम्यां-शकुनम्- श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। नभसि शुक्ल दलेऽचलेसंज्ञके रवितिथावुदयो। रविचन्द्रयो:। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदा:।

श्रावण शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संम्वत् २०८३, शाके -१९४८, सौम्यगोल:, याम्यायनम्, वर्षर्तु:, (राहु) पश्चिमेकाल: ता. १७ त: उत्तरेकाल:, अशुद्धसमय:

दिनांक: १३ अगस्त से २८ अगस्त २०२६ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	गुरु	४०।३१	रा.६।४१	श्ले.५।३५	दि.७।४३	व.२३।३२	किं.१२।२३	क.दि.७।४३	३।२६।१४।०६	३२।३४	५।२६	६।३१	३०	२८	१३	गंड दि. ९।१९ या., अग्निवास:
२	शुक्र	३७।०१	रा.८।१८	मघा.३।३५	प्रा.६।५६	प.१७।५७	बा.८।४६	सिंह	३।२७।२०।१८	३२।३०	५।३०	६।३०	१	२९	१४	चन्द्रदर्शनं, स्वामी करपात्री जयंती, शिववास: रा. ८।१८ या.
३	शनि	३४।४०	रा.७।२३	पू.फ.२।२६	प्रा.६।२९	शि.१३।१०	तै.५।५०	सि.दि.१२।२९	३।२८।२६।३०	३२।२६	५।३१	६।२९	२	३०	१५	मधुश्रावणी व्रतं, ७०तम: स्वतंत्रता दिवस:, राष्ट्रियध्वजोत्तोलनं, अग्निवास:, पूर्वोदितोगुरु: २४।४१
४	रवि	३३।३०	रा.६।५६	उ.फ.२।२६	प्रा.६।३०	सि.९।१८	व.४।०५	कन्या	३।२९।३२।४२	३२।२२	५।३२	६।२८	३	३१	१६	४।०५ उ. ३३।३० या., मासान्त:, पूर्वोदितो गुरु: २।०३
५	सोम	३३।३६	रा.६।५८	ह.३।३७	दि.६।५९	सा.६।२६	बव.३।३३	क.सं.७।२८	४।००।३८।५४	३२।१९	५।३२	६।२८	४	१	१७	नाग-५ लघुपद्मनामा नागराज: श्वेतवर्णो द्वारमुभयतो गोमयनिर्मिता नाग: सिन्दूर दुग्ध लाजादिभि: पूज्या:, मघायां सिंहेरवि: ४३।४० मु. ३० फलं सौम्यं विष्णुपदीसं. पु. कालो दि. घं. १२ उ.,❖
६	मंगल	३५।०३	रा.७।३४	चि.६।०५	दि.७।५९	शु.४।३३	कौ.४।१९	तुला	४।०१।४५।०५	३२।१६	५।३३	६।२७	५	२	१८	गवा षष्ठी, मासादि, शिववास: सं. ७।३४ या.
७	बुध	३७।३५	रा.८।३५	स्वा.९।४९	दि.९।२९	शु.३।४३	गर.६।१९	तु.रा.४।५५	४।०२।५१।१६	३२।१३	५।३३	६।२७	६	३	१९	भद्रा ३७।३५ उ., पुष्टो गुरु: २।०३, स्वात्यां दक्षिण पश्चिम यात्रा, श्री तुलसीदास जयंती, अग्निवास:, शीतला सप्तमी, शीतलापूजा
८	गुरु	४१।१८	रा.१०।५	वि.१४।३६	दि.११।२४	ब्र.३।३९	वि.९।२६	वृश्चिक	४।०३।५७।२७	३२।१०	५।३४	६।२६	७	४	२०	भद्रा ९ ।२६ या.
९	शुक्र	४५।४६	रा.११।५३	अनु.२०।१७	दि.१।४२	ऐं.४।२४	बा.१३।३२	वृश्चिक	४।०४।४६।३६	३२।०६	५।३५	६।२५	८	५	२१	दग्धतिथि: रा. ११।५३ उ., उत्तरयात्रा अनुराधायां, शिववास:, अग्निवास:
१०	शनि	५०।४८	रा.१।५४	ज्ये.२६।३५	दि.४।१३	वै५।४०	तै.१८।१७	वृ.दि.४।१३	४।०५।३५।४५	३२।०३	५।३५	६।२५	९	६	२२	दग्धतिथि: रा.१।५४ या., गंड दि. १।४९ उ. सं. ७।४९ या.
११	रवि	५५।५२	रा.३।५७	मूल.३३।०६	सं.६।५०	वि.७।११	वा.२३।२०	धनु	४।०६।२४।५४	३२।००	५।३६	६।२४	१०	७	२३	पुत्रदा ११व्रतं स्मार्ताणां, भद्रा २३।२० उ. ५५।५२ या., भाद्रमासीय रविव्रतारम्भ:
१२	सोम	६०।००	अहोरात्र	पूषा.३९।२५	रा.९।२३	प्री.८।४२	बव.२८।१२	ध.रा.३।५७	४।०७।१४।०३	३१।५७	५।३७	६।२३	११	८	२४	श्रीधर १२, दूर्वादलेनपारणं, वैष्णवानामेकादशीव्रतं, सोमवारी व्रतं, शिववास:, अग्निवास:
१२	मंगल	००।३३	प्रा.५।५०	उ.षा.४५।०९	रा.११।४१	आ.९।५०	बा.०।३३	मकर	४।०८।०३।१२	३१।५४	५।३७	६।२३	१२	९	२५	प्रदोष १३व्रतं, त्रयोदश्यां सूतीस्नानं, शिववास:, अग्निवास: प्रा. ५।५० या.
१३	बुध	०४।३७	दि.७।२९	श्र.५०।००	रा.१।३८	सौ.७।२८	तै.४।३७	मकर	४।०८।५२।२१	३१।५१	५।३८	६।२२	१३	१०	२६	प्रदोष १४ व्रतं, भदवारम्भ: रा. १।३८ उ. दक्षिणांविना यात्रा, शिववास: दि. ७।२६ या. ततो अग्निवास:
१४	गुरु	०७।३४	दि.८।४०	ध.५३।४५	रा.३।०८	शो.१०।१३	व.७।३४	म.दि.२।२३	४।०९।४१।३०	३१।४८	५।३८	६।२२	१४	११	२७	भद्रा-७।३४ उ. ३८।३१ या., अग्निवास: दि.८।४० या.
१५	शुक्र	०९।२८	दि.९।२६	शत.५६।१६	रा.४।०९	अ.९।०८	बव.९।२८	कुंभ	४।१०।३९।२७	३१।४४	५।३९	६।२१	१५	१२	२८	श्रावणी पूर्णिमा, वाजस्नेयीनामृषितर्पणं, रक्षिकावन्धनं प्रातरेव, शिववास:-अग्निवासश्च दि.९।२६ उ., संस्कृत दिवस, याज्ञवल्क्यजयन्ती

❖ सोमवारी व्रतं, शिववास:, अग्निवास: सं. ६।५८ या.

श्रा. शु. १४ गु. व. ८।४०।१३।३५
अयनांशा: २२।५४।३४

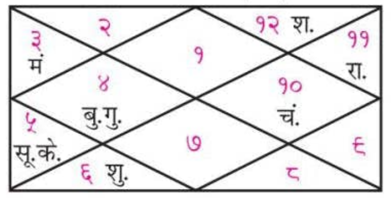

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क. अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. गुरु	२।०५।५२।२०	३।१७।२१।४४	३।१६।२०।५७	५।१२।३६।१६	११।१९।४२।५१	१०।०८।१६।५४	४६।१७	२३।४६	१।२६	३।३०	५।४६	८।०४	१०।२०	१२।३६	१४।५४	१७।१२	१९।१३	२०।५२	२२।१०
२. शुक्र	२।०६।३१।३३	३।१९।०५।२५	३।१६।३४।३५	५।१३।२९।३७	११।१९।४०।१७	१०।०८।१३।४३	४६।१५	२३।४३	१।२६	३।२७	५।४३	८।०१	१०।१७	१२।३३	१४।५१	१७।०९	१९।१०	२०।४९	२२।०७
३. शनि	२।०७।१०।४६	३।२०।४९।०६	३।१६।४८।१३	५।१४।२२।५८	११।१९।३७।४३	१०।०८।१०।३२	४६।१३	२३।३९	१।२२	३।२३	४।३९	७।५७	१०।१३	१२।२९	१४।५७	१७।०५	१९।०६	२०।४५	२२।०३
४. रवि	२।०७।४९।५९	३।२२।३२।४७	३।१७।०१।५१	५।१५।१६।१८	११।१९।३५।०९	१०।०८।०७।२१	४६।११	२३।३६	१।१८	३।१९	५।३५	७।५३	१०।०९	१२।२५	१४।५३	१७।०१	१९।०२	२०।४१	२२।००
५. सोम	२।०८।२९।१२	३।२४।१६।२८	३।१७।५५।२९	५।१६।०९।३८	११।१९।३२।३५	१०।०८।०४।१०	४६।०९	२३।३४	१।१४	३।१५	५।३२	७।५०	१०।०६	१२।२२	१४।४०	१६।५७	१८।५८	२०।३८	२२।०६
६. मंगल	२।०९।०८।२५	३।२६।००।०९	३।१७।२९।०७	५।१७।०२।५८	११।१९।३०।०१	१०।०८।००।५९	४६।०७	२३।३०	१।१०	३।११	५।२८	७।४६	१०।०२	१२।१८	१४।३६	१६।५३	१८।५४	२०।३४	२२।०२
७. बुध	२।०९।४७।३८	३।२७।४३।५०	३।१७।४२।४५	५।१७।५६।१८	११।१९।२७।२७	१०।०७।५७।४८	४६।०६	२३।२६	१।०६	३।०७	५।२४	७।४२	९।५८	१२।१४	१४।३२	१६।४९	१८।५०	२०।३०	२१।५८
८. गुरु	२।१०।२६।५१	३।२९।२७।३०	३।१७।५६।२३	५।१८।४९।३८	११।१९।२४।५३	१०।०७।५४।३७	४६।०५	२३।२२	१।०२	३।०३	५।२०	७।३८	९।५४	१२।१०	१४।२८	१६।४५	१८।४६	२०।२६	२१।५४
९. शुक्र	२।११।०५।४७	४।०१।१४।५८	३।१८।०९।५५	५।१९।३८।४०	११।१९।२१।०२	१०।०७।५१।२६	४६।०३	२३।१८	०।५८	२।५९	५।१६	७।३५	९।५१	१२।०६	१४।२५	१६।४२	१८।४३	२०।२३	२१।५१
१०. शनि	२।११।४४।४३	४।०३।०२।२६	३।१८।२३।२७	५।२०।२७।४२	११।१९।१७।११	१०।०७।४८।१५	४६।०१	२३।१५	०।५५	२।५६	५।१३	७।३१	९।४७	१२।०३	१४।२१	१६।३७	१८।३८	२०।१९	२१।४६
११. रवि	२।१२।२३।३९	४।०४।४९।५३	३।१८।३६।५९	५।२१।१६।४४	११।१९।१३।२०	१०।०७।४५।०४	४५।५९	२३।११	०।५०	२।५२	५।०८	७।२७	९।४३	११।५९	१४।१६	१६।३४	१८।३५	२०।१४	२१।४३
१२. सोम	२।१३।०२।३५	४।०६।३७।२०	३।१८।५०।३१	५।२२।०५।४६	११।१९।०९।२९	१०।०७।४१।५३	४५।५७	२३।०७	०।४६	२।४८	५।०५	७।२३	९।३९	११।५५	१४।१३	१६।३०	१८।३१	२०।१०	२१।३९
१२.मंगल	२।१३।४१।३१	४।०८।२४।४७	३।१९।०४।०३	५।२२।५४।४८	११।१९।०५।३९	१०।०७।३८।४२	४५।५६	२३।०३	०।४२	२।४४	५।०१	७।१९	९।३५	११।५१	१४।०९	१६।२६	१८।२७	२०।०६	२१।३५
१३. बुध	२।१४।२०।२७	४।१०।१२।१४	३।१९।१७।३५	५।२३।४३।५०	११।१९।०१।४९	१०।०७।३५।३१	४५।५५	२३।००	०।३९	२।४१	४।५८	७।१६	९।३२	११।४८	१४।०६	१६।२३	१८।२४	२०।०३	२१।३२
१४. गुरु	२।१४।५९।२२	४।११।५९।४१	३।१९।३१।०६	५।२४।३२।५२	११।१८।५७।५९	१०।०७।३२।२०	४५।५४	२२।५६	०।३५	२।३६	४।५४	७।१२	९।२८	११।४४	१४।०२	१६।१९	१८।२०	१९।५९	२१।२८
१५. शुक्र	२।१५।३७।३५	४।१३।४८।३०	३।१९।४४।२९	५।२५।१६।००	११।१८।५४।३९	१०।०७।२९।०९	४५।५२	२२।५२	०।३१	२।३३	४।५०	७।०८	९।२४	११।४०	१३।५८	१६।१५	१८।१६	१९।५५	२१।२४

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.३।१७-६।३१	रा.१२।००-१।२१।रा.४।०५-५।३०
दि.८।४६-१२।००	रा.९।१४-१०।३६
प्रा.५।३१-७।८।दि.१।३६-३।१३।दि.४।५१-६।२९	सं.६।२९-७।५२रा.१।२४-२।४७।रा.४।०९-५।३२
दि.१०।२३-१।३७	रा.१०।३७-१२।००।रा.१।२३-२।४६
दि.७।९-८।४६।दि.३।१४-४।५१	रा.१०।३७-१२।००।रा.२।४६-४।०९
दि.७।९-८।४६।दि.१।३७-३।१४	रा.७।५०-९।१३
दि.८।४६-१०।२३।दि.१२।००-१।३७	रा.१२।००-१।२३।रा.२।४५-४।९
दि.३।११-६।२६	रा.१२।००-१।२४।रा.४।१०-५।३५
दि.८।४७-१२।००	रा.९।१३-१०।३७
प्रा.५।३५-७।११।दि.१।३५-३।११।दि.४।४८-६।२५	सं.६।२५-७।४९।रा.१।२५-२।४९।रा.४।१४-५।३६
दि.१०।२४-१।३६	रा.१०।३६-१२।००।रा.१।२४-२।४८
दि.७।१३-८।५०।दि.३।१५-४।४८	रा.१०।३६-१२।००।रा.२।४८-४।१२
दि.७।१३-८।५०।दि.१।३७-३।१३	रा.७।४७-९।१२
दि.८।४८-१०।२४।दि.१२।००-१।३५	रा.१२।००-१।२५।रा.२।५२-४।१८
दि.३।८-६।२२	रा.१२।००-१।२५।रा.४।१८-५।३९
दि.८।४९-१२।००	रा.९।११-१०।३६

श्रा. शु. १ गु. व. ८।४०।१३।२१
अयनांशा: २२।५४।३२

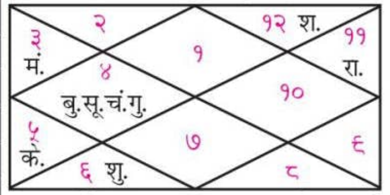

श्रा. शु. ८ गु. व. ८।४०।१३।२८
अयनांशा: २२।५४।३३

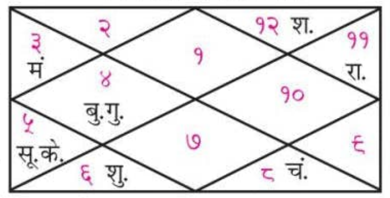

विविधविषया:- रक्षाबन्धनमन्त्र:- येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

प्रदक्षिणविधि:- एका चण्ड्या रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्।।

आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम्।।

रक्षाबन्धनम्- श्रावणपूर्णिमायां भद्राशून्यायां रक्षार्थ रक्षिकाबन्धनम्। भद्रायां तन्निषेध माह स्मृति:- भाद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति च फाल्गुनी। इयं तु पूर्वविद्धा ग्राह्या- श्रावणी दौर्गनवमी दूर्वा चैव हुताशनी। पूर्वविद्धास्तु कर्त्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्।। आद्या मधुश्रावणिका कज्जली हरितालिका चतुर्थीमिश्रिता स्त्रीभिर्द्दिवानक्ते विधीयते।।

गणेशचतुर्थीनिर्णय- श्रावणशुक्लचतुर्थीगणेशचतुर्थी। सा च पूर्वविद्धा ग्राह्य। तृतीयासंयुता या तु सा चतुर्थी फलप्रदा। कर्तव्या व्रतिभि: सा तु गणनाथसुतोषिणी।।

नागपञ्चमी- श्रावणशुक्लपञ्चमी नागपूजादौ षष्ठीयुता अन्य पञ्चम्यस्तु चतुर्थीयुता: कार्या:। पञ्चमी नागपूजादौ कार्या षष्ठीसमन्विता। तस्यान्तु तुषिता नागा इतरासु चतुर्थिका।

स्मृति- श्रावणे पञ्चमी शुक्ला सम्प्रोक्ता नगापञ्चमी। तां परित्यज्य पञ्चम्यश्चतुर्थीसहिता: स्मृता:।

भाद्र कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संम्वत् २०८३, शाके १९४८, सौम्यगोल:, याम्यायनम्, वर्षर्तु:, (राहु) उत्तरेकाल:, अशुद्धसमय:

दिनांक: २६ अगस्त से ११ सितंबर २०२६ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	शनि	१०।००	दि.६।४०	पू.भा.५७।२७	रा.४।३६	सु.०७।००	कौ.१०।००	कुं.रा.१०।३२	४।११।३७।२४	३१।४०	५।४०	६।२०	१६	१३	२९	दधिभाद्रपदेत्यजेत्, श्रीदुर्गा रथ यात्रा, पश्चिम दक्षिण यात्रा प्रतिपदि, शिववास:-अग्निवास:-अमृतयोगश्च दि.९।४० या., खेलदिवस:
२	रवि	०६।१३	दि.६।२२	उ.भा.५७।२८	रा.४।४०	धृ.३।११	गर.६।१३	मीन	४।१२।३५।२१	३१।३६	५।४१	६।१९	१७	१४	३०	शूल योग: ५५।५२, भद्रा ३८।११ उ., सूतीस्नानं, भाद्रमासीय रविव्रतं, अग्निवास:, सिद्धियोग दि.९।२२ उ.
३	सोम	०७।१४	दि.८।३५	रे.५६।२१	रा.४।१४	गं.५४।४४	वि.७।१४	मी.रा.४।१४	४।१३।३३।१८	३१।३२	५।४२	६।१८	१८	१५	३१	कज्जल तृतीया, विशालाक्षी पूजनं, श्री विनायक ४ व्रतं, रात्रौ वहुला पूजनं, भद्रा ७।१४ या., पूर्व फल्गुन्यां रवि:-३४।४४ पु. स्त्री. चं. सू. योगो खरवाहनं जलानाड़ी तदीशो बुध:❖
४	मंगल	०४।११	दि.७।२२	अ.५४।२०	रा.३।२६	वृ.४८।५६	बा.४।११	मेष	४।१४।३१।१५	३१।२८	५।४२	६।१८	१९	१६	१ सि.	सितम्बर मासारम्भ:, सूतीस्नानं दि. ७।२२ उ., पूर्व यात्रा चतुर्थ्यां, शिववास:, अग्निवास:, राज्यप्रदयोग दि. ७।२२ या., सर्वार्थसिद्धियोग: रा. ३।२६ या., अगस्त्योदय:
५	बुध	००।११	प्रा.५।४७	भ.५१।२९	रा.२।१९	ध्रु.४२।२७	तै.०।११	मेष	४।१५।२९।११	३१।२५	५।४३	६।१७	२०	१७	२	६ ति. ५५।०९, वेला ५, श्रीवरुण षष्ठी व्रतं, भद्रा ५५।२० उ., शिववास: प्रा. ५।४७ या. ततो अमृतयोग
७	गुरु	४९।५३	रा.१।४१	कृ.४७।५१	रा.१२।५६	व्या.३५।२६	वि.२३।०६	मे.दि.७।५८	४।१६।२७।०७	३१।२२	५।४४	६।१६	२१	१८	३	भद्रा २३।०६ या., अग्निवास:
८	शुक्र	४४।०२	रा.११।२१	रो.४४।०३	रा.११।२१	ह.२८।०३	बा.१६।५७	वृष	४।१७।२५।२०	३१।१८	५।४४	६।१६	२२	१९	४	श्रीकृष्ण जयंती व्रतं, श्री कृष्णाष्टमी व्रतं, अर्द्धरात्रौ श्रीकृष्ण पूजनम्, पूर्व दक्षिण यात्रा, शिववास:
९	शनि	३७।५५	रा.८।५५	मृ.३९।५३	रा.९।४२	व.२०।२६	तै.१०।५८	वृ.दि.१०।३२	४।१८।२३।३३	३१।१४	५।४५	६।१५	२३	२०	५	दग्धतिथि: रा. ८।५५ उ., पूर्व दक्षिण यात्रा वृषस्थे चन्द्रे ततौ पश्चिम दक्षिण यात्रा नवम्यां, शिक्षक दिवस:, अग्निवास:, राज्यप्रदयोग रा. ८।५५ या. तत: मृत्युयोग:
१०	रवि	३१।३८	रा.६।२५	आ.३५।४१	रा.८।०२	सि.१२।४१	व.४।४६	मिथुन	४।१९।२१।४६	३१।१०	५।४६	६।१४	२४	२१	६	भद्रा ४।४६ उ. ३१।३८ या., दग्धतिथि: सं. ६।२५ या., भाद्रमासीय रविव्रतं, अग्निवास:, अमृतयोग: सं.६।२५ या., तत: मृत्युयोग:
११	सोम	२५।४६	दि.४।०५	पुन.३१।३७	सं.६।२६	व्य.५।०४	बा.२५।४६	मि.दि.१२।५०	४।२०।१९।५९	३१।०६	५।४७	६।१३	२५	२२	७	वरीयान योग: ५२।३५, जया ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिम दक्षिण यात्रा एकादश्यां, शिववास:, सिद्धियोग: दि.४।०५ या. तत: मृत्युयोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: सं. ६।२६ उ.
१२	मंगल	२०।१०	दि.१।५२	पु.२८।००	दि.५।००	परि.५०।३५	तै.२०।१०	कर्क	४।२१।१८।१२	३१।०२	५।४८	६।१२	२६	२३	८	कुष्मांडेन पारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, उत्तरां विना यात्रा, शिववास:-अग्निवास:-अमृतयोगश्च दि. १।५२ या. तत: सिद्धियोग:, अंतर्राष्ट्रिय साक्षरता दिवस:, झलकी देवी स्मृति दिवस:
१३	बुध	१५।०५	दि.११।५०	श्ले.२४।५६	दि.३।४६	शि.४४।०८	व.१५।०५	क.दि.३।४६	४।२२।१६।२४	३०।५८	५।४८	६।१२	२७	२४	९	प्रदोष १४ व्रतं, द्वापर युगादि:, भद्रा १५।०५ उ. ४१।१४ या., गंड १३।५६ उ. २८।५६ या., मृत्युयोग: दि. ११।५० या.
१४	गुरु	१०।४८	दि.१०।०८	म.२२।४३	दि.२।५४	सि३८।२०	श.१०।४८	सिंह	४।२३।१४।३६	३०।५४	५।४९	६।११	२८	२५	१०	पार्वणं, शुभवारान्वितेदर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्, अग्निवास:, मृत्युयोग: दि. १०।०८ या. तत: शिववास:
३०	शुक्र	०७।२२	दि.८।४७	पू.फ.२१।१८	दि.२।२१	सा.३३।१९	ना.७।२२	सिं.रा.८।२०	४।२४।१३।०९	३०।५०	५।५०	६।१०	२९	२६	११	भाद्री-३० स्नानदानादि:, दुर्भरकुशी, कुशोत्पाटनं, शिववास: दि. ८।४७ या., अग्निवास:, सिद्धियोग:

❖ अतिवृष्टि योग:, भदवा समाप्ति: रा.४।१४ उ., गंड ४४।२१ उ. ००।२१ या., शिववास: दि.८।३५ उ.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क. अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. शनि	२।१६।१५।४८	४।१५।३७।१९	३।१६।५४।५२	५।२५।५६।०८	११।१८।५१।१९	१०।०७।२५।५८	४५।५०	२२।४८	०।२७	२।२९	४।४६	७।०४	९।२०	११।३६	१३।५४	१६।११	१८।१२	१९।५१	२१।२०
२. रवि	२।१६।५४।०९	४।१७।२६।०७	३।२०।११।१४	५।२६।४२।१६	११।१८।४७।५९	१०।०७।२२।४७	४५।४८	२२।४४	०।२३	२।२५	४।४२	७।००	९।१६	११।३२	१३।५०	१६।०७	१८।०८	१९।४७	२१।१६
३. सोम	२।१७।३२।१४	४।१९।१४।५५	३।२०।२४।३६	५।२७।२५।२४	११।१८।४४।३९	१०।०७।१९।३६	४५।४६	२२।४०	०।१९	२।२१	४।३८	६।५६	९।१२	११।२८	१३।४६	१६।०३	१८।०४	१९।४३	२१।१२
४. मंगल	२।१८।१०।२७	४।२१।०३।४३	३।२०।३७।५८	५।२८।०८।३२	११।१८।४१।१९	१०।०७।१६।२५	४५।४४	२२।३६	०।१५	२।१७	४।३४	६।५२	९।०८	११।२४	१३।४२	१५।५९	१८।००	१९।३९	२१।०८
५. बुध	२।१८।४८।३९	४।२२।५२।३१	३।२०।५१।२०	५।२८।५१।४०	११।१८।३७।५९	१०।०७।१३।१४	४५।४२	२२।३२	०।११	२।१३	४।३०	६।४८	९।०४	११।२०	१३।३८	१५।५६	१७।५६	१९।३५	२१।०४
७. गुरु	२।१९।५६।५१	४।२४।४१।१९	३।२१।०४।४२	५।२९।३४।४७	११।१८।३४।४०	१०।०७।१०।०३	४५।४१	२२।२८	०।०७	२।०९	४।२६	६।४४	९।००	११।१६	१३।३४	१५।५२	१७।५२	१९।३१	२१।००
८. शुक्र	२।२०।०४।२०	४।२६।२८।२१	३।२१।१७।१३	६।००।१०।०७	११।१८।३०।२०	१०।०७।०६।५२	४५।३९	२२।२४	०।०३	२।०५	४।२२	६।४०	८।५६	११।१२	१३।३०	१५।४८	१७।४८	१९।२७	२०।५६
९. शनि	२।२०।४१।४९	४।२८।१५।२३	३।२१।२९।४४	६।००।४५।२७	११।१८।२६।००	१०।०७।०३।४१	४५।३७	२२।२०	२३।५९	२।०१	४।१८	६।३६	८।५२	११।०८	१३।२६	१५।४४	१७।४४	१९।२३	२०।५२
१०. रवि	२।२१।१९।१७	५।१०।०२।२५	३।२१।४२।१५	६।०१।२०।४७	११।१८।२१।४०	१०।०७।००।३०	४५।३५	२२।१६	२३।५५	१।५७	४।१४	६।३२	८।४८	११।००	१३।२२	१५।४०	१७।४०	१९।१९	२०।४८
११. सोम	२।२१।५६।४५	५।०१।४९।२७	३।२१।५४।४६	६।०१।५६।०७	११।१८।१७।२१	१०।०६।५७।१९	४५।३३	२२।१३	२३।५२	१।५४	४।११	६।२९	८।४५	१०।५७	१३।१९	१५।३७	१७।३७	१९।१६	२०।४५
१२.मंगल	२।२२।३४।१३	५।०३।३६।२९	३।२२।०७।१७	६।०२।३१।२७	११।१८।१३।०२	१०।०६।५४।०८	४५।३१	२२।०९	२३।४८	१।५०	४।०७	६।२५	८।४१	१०।५३	१३।१५	१५।३३	१७।३३	१९।१२	२०।४१
१३. बुध	२।२३।११।४१	५।०५।२३।३१	३।२२।१९।४८	६।०३।०६।४७	११।१८।०८।४३	१०।०६।५०।५७	४५।२९	२२।०५	२३।४४	१।४६	४।०३	६।२१	८।३७	१०।४९	१३।११	१५।२९	१७।२९	१९।०८	२०।३७
१४. गुरु	२।२३।४९।०९	५।०७।१०।३३	३।२२।३२।१८	६।०३।४१।०५	११।१८।०४।२४	१०।०६।४७।४६	४५।२७	२२।०१	२३।४०	१।४२	३।५९	६।१७	८।३३	१०।४५	१३।०७	१५।२५	१७।२५	१९।०४	२०।३३
३०. शुक्र	२।२४।२५।५६	५।०८।५३।०९	३।२२।४४।३७	६।०४।०५।०७	११।१७।५९।३६	१०।०६।४४।३५	४५।२५	२१।५८	२३।३७	१।३९	३।५६	६।१४	८।३०	१०।४२	१३।०४	१५।२२	१७।२२	१९।०१	२०।३०

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
प्रा.५।४०-७।१५।दि.१।३५-३।१०।दि.४।४५-६।२०	सं.६।२०-७।४५।रा.१।२५-२।५०।रा.४।१५-५।४१
दि.१०।२७-१।३६	रा.१०।३६-१२।००।रा.१।२५-२।५०
दि.७।१६-८।५०।दि.३।६-४।४१	रा.१०।३५-१२।००।रा.२।५०-४।२०
दि.७।१६-८।५०।दि.१।३२-३।६	रा.७।४४-९।१०
दि.८।५१-१०।२५।दि.१२।००-१।३४	रा.१२।००-१।२६।रा.२।५३-४।२०
दि.३।००-६।१६	रा.१२।००-१।२६।रा.४।१९-५।४४
दि.८।५२-१२।००	रा.९।००-१०।३४
प्रा.५।४५-७।१९।दि.१।३५-३।९।दि.४।४३-६।१५	सं.६।१५-७।४१।रा.१।२५-२।५१।रा.४।१८-५।४६
दि.८।५३-१२।००	रा.१०।३३-१२।००।रा.१।२६-२।५३
दि.७।२०-८।५३।दि.३।६-४।३९	रा.१०।३३-१२।००।रा.२।५३-४।२०
दि.७।२१-८।५४।दि.१।३३-३।६	रा.७।३९-९।०६
दि.८।५४-१०।२७।दि.१२।००-१।३३	रा.१२।००-१।२७।रा.२।५४-४।२१
दि.३।५-६।११	रा.१२।००-१।२७।रा.४।२१-५।५०
दि.८।५५-१२।००	रा.९।५-१०।३२

भा. कृ. ७ गु. व. ८।४०।१३।४२
अयनांशा: २२।५४।३५

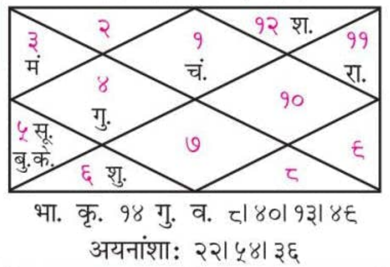

भा. कृ. १४ गु. व. ८।४०।१३।४६
अयनांशा: २२।५४।३६

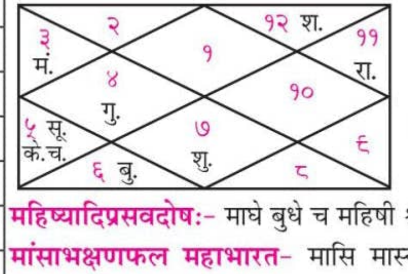

विविधविषया:- भाद्रकृष्णचतुर्थ्यां बहुलापूजा। सा च तृतीयायुता ग्राह्या, परयुक्ताया दोषश्रवणात्। भादो कृष्ण चौथ को बहुला पूजा होती है, यह तृतीया युक्तग्राह्य है। परयुक्त दोषावह कहा गया है।

भाद्रकृष्णाष्टम्यां कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्-तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतं उदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति।

भाद्रामायां कुशोत्पाटन-मन्त्र:- कुशाग्रे वसते रुद्र: कुशमध्ये तु केशव:। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।।

कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मित:पुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।।

वर्ज्यकुशा:- चितिदर्भा: पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।।

महिष्यादिप्रसवदोष:- माघे बुधे च महिषी श्रावणे बड़वा दिवौ। सिंह गाव: प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायका:। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति।।

मांसाभक्षणफल महाभारत- मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समा:। न खादति च यो मांस सममेतद्युधिष्ठिर।। यस्तु वर्षशंत पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशय:।। कस्यापित कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता,

नन्दिपुराणे- कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रत। निष्फलं भवेत्।।

श्रेष्ठव्रतानि- ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यामामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरियानीति निश्चय:।।

भादो मे गायप्रसव दोषकारक होता है- भानौ सिंहगते चैव यस्य गौसम्प्रसूयते। मरणान्तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्न संशय:।।

भाद्र शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, सम्वत् २०८३ शाके १९४८, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, वर्षर्तुः ता. १७ तः शरदर्तुः, अशुद्धसमयः ता. १७ तः शुद्धसमयः (राहु) उत्तरेकालः

दिनांकः १२ सितंबर से २६ सितंबर २०२६ ई०

तिथयः	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगः दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	शनि	५।००	दि.७।५१	उ.फ.२०।५६	दि.२।१५	शु.२६।१०	बव.५।००	कन्या	४।२५।११।२६	३०।४६	५।५१	६।०६	१	२७	१२
२	रवि	३।५२	दि.७।२५	ह.२१।५२	दि.२।३७	शु.२६।०१	कौ.३।५२	क.रा.३।०२	४।२६।०६।५१	३०।४२	५।५२	६।०८	२	२८	१३
३	सोम	३।५८	दि.७।२७	चि.२४।००	दि.३।२८	ब्र.२३।४७	गर.३।५८	तुला	४।२७।०८।१६	३०।३८	५।५२	६।०८	३	२९	१४
४	मंगल	५।२६	दि.८।०३	स्वा.२७।२६	दि.४।५१	ऐं.२२।३५	वि.५।२६	तुला	४।२८।०६।४१	३०।३४	५।५३	६।०७	४	३०	१५
५	बुध	७।५६	दि.९।०६	वि.३१।५७	रा.६।४१	वै.२२।१३	बा.७।५६	तु.दि.१२।१४	४।२९।०५।०५	३०।३१	५।५४	६।०६	५	३१	१६
६	गुरु	११।४५	दि.१०।३७	अनु.३७।२७	रा.८।५४	वि.२२।४४	तै.११।४५	वृश्चिक	५।००।०३।२९	३०।२८	५।५५	६।०५	६	१	१७
७	शुक्र	१६।१५	दि.१२।२५	ज्ये.४३।३५	रा.१०।२१	प्री.२३।४८	व.१६।१५	वृ.रा.१०।२१	५।०१।०२।११	३०।२४	५।५५	६।०५	७	२	१८
८	शनि	२१।२१	दि.२।२८	मूल.५०।०५	रा.१।५८	आ.२५।१२	बव.२१।२१	धनु	५।०२।००।५३	३०।२०	५।५६	६।०४	८	३	१९
९	रवि	२६।२८	दि.४।३२	पूषा.५६।३१	रा.४।३३	सौ.२६।४२	कौ.२६।२८	धनु	५।०२।५९।३५	३०।१६	५।५७	६।०३	९	४	२०
१०	सोम	३१।१६	सं.६।२८	उ.षा.६०।००	अहोरात्र	शो.२७।५३	गर.३१।१६	ध.दि.११।१०	५।०३।५८।१६	३०।१२	५।५८	६।०२	१०	५	२१
११	मंगल	३५।२३	रा.८।०७	उ.षा.२।२३	प्रा.६।५५	अ.२८।४५	व.३।१९	मकर	५।०४।५६।५७	३०।०८	५।५८	६।०२	११	६	२२
१२	बुध	३८।२८	रा.९।२२	श्र.७।२७	दि.८।५८	सु.२८।३१	बव.६।५५	म.रा.९।४५	५।०५।५५।३८	३०।०४	५।५९	६।०१	१२	७	२३
१३	गुरु	४०।३१	रा.१०।१२	धनि.११।२५	दि.१०।३४	धृ.२७।३४	कौ.९।२९	कुंभ	५।०६।५४।१९	३०।००	६।००	६।००	१३	८	२४
१४	शुक्र	४१।१०	रा.१०।२९	शत.१४।१३	दि.११।४२	शु.२५।३७	गर.१०।५०	कुंभ	५।०७।५३।१७	२९।५६	६।०१	५।५९	१४	९	२५
१५	शनि	४०।३०	रा.१०।१४	पू.भा.१५।४६	दि.१२।२०	गं.२२।४०	वि.१०।५०	कु.६।११	५।०८।५२।१५	२९।५२	६।०२	५।५८	१५	१०	२६

१२ चन्द्र दर्शनं, सुभिक्षकारकम्, द्वितीयायां त्रिपुष्कर योगः, अमृतयोगः दि. ७।५१ या. ततः शिववासः

१३ पूर्व दक्षिण यात्रा तृतीयायां, भाद्रमासीय रविव्रतं, वाराहावतारः, शिववास:-अग्निवासश्च दि. ७।२५ या. ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि. २।३७ या.

१४ हरितालिका (तीज) व्रतं, विनायक ४ चन्द्रदर्शनं, चौड़चण पूजा, भद्रा-३४।४२ उ., उत्तर फाल्गुन्यां रविः १९।५४ स्त्री. स्त्री. सू. सू. योगो मंडूकवाहनं वह्नि नाड़ी तदिशो भौमः वायुवृष्टिः, हिन्दी दिवसः

१५ भद्रा ५।२६ या., पश्चिम दक्षिण यात्रा, चतुर्थ्यां, अग्निवास:-राज्यप्रदयोगश्च दि. ८।०३ या. ततः शिववासः, श्री गणेशपूजा

१६ नागमैत्र ५, ऋषिपंचमी, मासान्तः, शिववासः, अग्निवास:-अमृतयोगश्च दि. ९।०६ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः सं. ६।४१ उ.

१७ पर्पट षष्ठी, कन्यायां रविः ४४।५३ मु. १५ फलंमहर्घं षडशीति सं. पु. कालः दि. १२ उ., विश्वकर्मा पूजा, शिववास:-अग्निवासश्च दि. १०।३७ या., सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ८।५४ या., दीक्षाग्रहणं

१८ भद्रा १६।१५ उ. ४८।४८ या., दग्धतिथिः दि. १२।२५ उ., गंड ८।५७ उ. रा. २।५७ या., मासादिः, मृत्युयोग दि. १२।२५ या. ततः अग्निवासः

१९ गोपाष्टमी, राधाष्टमी, श्री महालक्ष्मी कथारम्भः, दग्धतिथिः दि. २।२८ या. नवम्यां मूले उत्तर यात्रा, अग्निवासः दि. २।२८ या. ततः शिववासः

२० दशम्यां पूर्व दक्षिण यात्रा पूर्वाषाढ़े, महानन्दानवमी, शिववासः दि. ४।३२ या., ततः अमृतयोगः, अग्निवासः

२१ अच्युत दशमी, सुगंध दशमी, वृक्षादिरोपणं, अमृतयोगः रा. ६।२८ या. ततः सिद्धियोगः, विपणि, दीक्षाग्रहणं

२२ हरेः पार्श्वपरिवर्तनं कर्मा-धर्मा ११ व्रतं सर्वेषां, भद्रा ३।१९ उ. ३५।२३ या., सूतीस्नानं, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. ८।०७ या. ततः अमृतयोगः

२३ हृषिकेश १२ कुष्माण्डेन पारणम्, इन्द्रोत्थानं-इन्द्रपूजारम्भः, भदवारम्भः दि. ८।५८ उ., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां, हरिवासर योगः, शिववासः, सिद्धियोगः रा. ९।२२ या. ततः मृत्युयोगः, दीक्षाग्रहणं

२४ प्रदोष १३ व्रतं, प्रदोष शिव परिवर्तनोत्सवः, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा. १०।१२ या. ततः मृत्युयोगः

२५ अनन्त पूजा १४ व्रतंच तड्डोरक धारणंच, श्री गणेश विर्सजनं, प्रदोष-१४ व्रतं, अमृतयोगः रा. १०।२९ या., वक्री शुक्रः ५९।२२

२६ भाद्री पूर्णिमा पूर्णिमा व्रतंच, अगस्त्यार्घदानं, शिवार्चनं, भद्रा १०।५० या., अग्निवासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथियः दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. शनि	२।२५।०२।४३	५।१०।३५।४५	३।२२।५६।५६	६।०४।२९।०८	११।१७।५४।४८	१०।०६।४१।२४	४५।२३
२. रवि	२।२५।३९।३०	५।१२।१८।२१	३।२३।०९।१५	६।०४।५३।०९	११।१७।५०।००	१०।०६।३८।१३	४५।२१
३. सोम	२।२६।१६।१७	५।१४।००।५६	३।२३।२१।३३	६।०५।१७।१०	११।१७।४५।१३	१०।०६।३५।०२	४५।१९
४. मंगल	२।२६।५३।०४	५।१५।४३।३१	३।२३।३३।५१	६।०५।४१।११	११।१७।४०।२६	१०।०६।३१।५१	४५।१७
५. बुध	२।२७।२९।५१	५।१७।२६।०६	३।२३।४६।०९	६।०६।०५।१२	११।१७।३५।३९	१०।०६।२८।४०	४५।१५
६. गुरु	२।२८।०६।३८	५।१९।०८।४१	३।२३।५८।२७	६।०६।२९।१३	११।१७।३०।५२	१०।०६।२५।२९	४५।१४
७. शुक्र	२।२८।४२।४७	५।२०।४३।१६	३।२४।१०।२२	६।०६।४०।३५	११।१७।२५।५५	१०।०६।२२।१८	४५।१२
८. शनि	२।२९।१८।५६	५।२२।१७।५१	३।२४।२२।१७	६।०६।५१।५७	११।१७।२०।५८	१०।०६।१९।०७	४५।१०
९. रवि	२।२९।५५।०५	५।२३।५२।२६	३।२४।३४।१२	६।०७।०३।१९	११।१७।१६।०१	१०।०६।१५।५६	४५।०८
१०. सोम	३।००।३१।१३	५।२५।२७।००	३।२४।४६।०७	६।०७।१४।४१	११।१७।११।०४	१०।०६।१२।४५	४५।०६
११.मंगल	३।०१।०७।२१	५।२७।०१।३४	३।२४।५८।०२	६।०७।२६।०३	११।१७।०६।०७	१०।०६।०९।३८	४५।०४
१२. बुध	३।०१।४३।२९	५।२८।३६।०८	३।२५।०९।५७	६।०७।३७।२५	११।१७।०१।१०	१०।०६।०६।२३	४५।०२
१३. गुरु	३।०२।१९।३७	६।००।१०।४२	३।२५।२१।५१	६।०७।४८।४७	११।१६।५६।१३	१०।०६।०३।१२	४५।००
१४. शुक्र	३।०२।५४।४६	६।०१।३२।४३	३।२५।३३।१९	६।०७।४२।४२	११।१६।५१।००	१०।०६।००।०१	४४।५८
१५. शनि	३।०३।२९।५५	६।०२।५४।४४	३।२५।४४।४७	६।०७।३६।३७	११।१६।४५।४७	१०।०५।५६।५०	४४।५६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
४५।२३	२१।५४	२३।३३	१।३५	३।५२	६।१०	८।२६	१०।३८	१३।००	१५।१८	१७।१८	१८।५७	२०।२६
४५।२१	२१।५१	२३।३०	१।३२	३।४९	६।०७	८।२३	१०।३५	१२।५७	१५।१५	१७।१५	१८।५४	२०।२३
४५।१९	२१।४७	२३।२६	१।२८	३।४५	६।०३	८।१९	१०।३१	१२।५३	१५।११	१७।११	१८।५०	२०।१९
४५।१७	२१।४४	२३।२३	१।२५	३।४२	६।००	८।१६	१०।२८	१२।५०	१५।०८	१७।०८	१८।४७	२०।१६
४५।१५	२१।४१	२३।२०	१।२२	३।३९	५।५७	८।१३	१०।२५	१२।४७	१५।०५	१७।०६	१८।४४	२०।१३
४५।१४	२१।३८	२३।१६	१।१८	३।३५	५।५४	८।१०	१०।२२	१२।४४	१५।०२	१७।०३	१८।४१	२०।१०
४५।१२	२१।३४	२३।१२	१।१४	३।३१	५।५०	८।०६	१०।१८	१२।४०	१४।५८	१६।५९	१८।३७	२०।०६
४५।१०	२१।३१	२३।०९	१।११	३।२८	५।४७	८।०३	१०।१५	१२।३७	१४।५५	१६।५६	१८।३४	२०।०२
४५।०८	२१।२७	२३।०५	१।०७	३।२४	५।४३	७।५९	१०।११	१२।३३	१४।५१	१६।५२	१८।३०	१९।५८
४५।०६	२१।२३	२३।०१	१।०३	३।२०	५।३९	७।५५	१०।०७	१२।२९	१४।४७	१६।४८	१८।२६	१९।५४
४५।०४	२१।२०	२२।५८	१।००	३।१७	५।३६	७।५२	१०।०४	१२।२५	१४।४४	१६।४५	१८।२३	१९।५१
४५।०२	२१।१६	२२।५४	०।५६	३।१३	५।३२	७।४८	१०।००	१२।२१	१४।४०	१६।४१	१८।१९	१९।४७
४५।००	२१।१२	२२।५०	०।५२	३।०९	५।२८	७।४४	९।५६	१२।१७	१४।३६	१६।३७	१८।१५	१९।४३
४४।५८	२१।०९	२२।४७	०।४९	३।०६	५।२५	७।४१	९।५३	१२।१४	१४।३३	१६।३४	१८।१२	१९।४०
४४।५६	२१।०५	२२।४३	०।४५	३।०२	५।२१	७।३७	९।४९	१२।१०	१४।२९	१६।३०	१८।०८	१९।३६

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
प्रा.५।५१-७।२३।दि.१।३२-३।४।दि.४।३६-६।६	सं.६।६-७।३६।रा.१।२७-२।५५।रा.४।२३-५।५२
दि.१०।२८-१।३२	रा.१०।३२-१२।००।रा.१।२८-२।५६
दि.७।२४-८।५६।दि.३।४-४।३६	रा.१०।३२-१२।००।रा.२।५६-४।२४
दि.७।२४-८।५६।दि.१।३१-३।३	रा.७।३५-९।०२
दि.८।५७-१०।२८।दि.१२।००-१।३१	रा.१२।००-१।२८।रा.२।५७-४।२५
दि.३।२-६।५	रा.१२।००-१।२८।रा४।२६-५।२६
दि.८।५७-१२।००	रा.९।२-१०।३१
प्रा.५।५६-७।२७दि.१।३१-३।०२।दि.४।३३-६।०४	सं.६।०४-७।३३।रा.१।२९-२।५८।रा.४।२७-५।५७
दि.१०।२९-१।३०	रा.१०।३०-१२।००।रा.१।२९-२।५८
दि.७।२८-८।५९।दि.३।०१-४।३१	रा.१०।३०-१२।००।रा.२।५८-४।२७
दि.७।२८-८।५९।दि.१।३०-३।०१	रा.७।३१-९।०१
दि.८।५९-१०।२९।दि.१२।००-१।३०	रा.१२।००-१।२९।रा.२।५९-४।२९
दि.३।००-६।००	रा.१२।००-१।३०।रा.४।३०-६।०१
दि.९।००-१२।००	रा.८।५९-१०।२९
प्रा.६।२-७।३१।दि.१।२९-२।५९।दि.४।२८-५।५८	सं.६।५८-७।२८।रा.१।३०-३।०१।रा.४।३१-६।०३

भा. शु. ६ गु. व. ८।४०।१३।५६
अयनांशाः २२।५४।३७

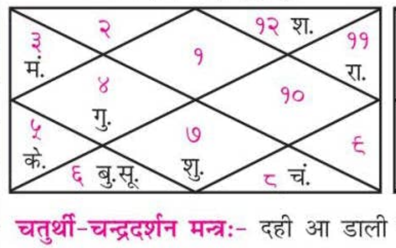

भा. शु. १३ गु. व. ८।४०।१४।०३
अयनांशाः २२।५४।३८

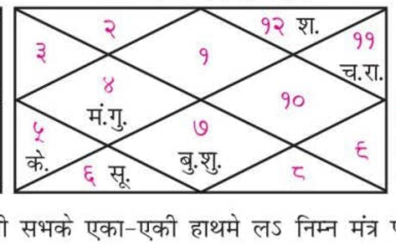

विविधविषयः- चतुर्थीचन्द्र- प्रदोष-व्यापिनीयं ग्राह्य उभयदिने प्रदोषव्याप्तौ पंचमी युक्ता "युगाग्निकृतुभूतानि" इत्यादि निगमात्।

अनन्त-धारणमन्त्र-अनन्तसंसार महासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धरवासुदेव। अनन्तरुपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपायनमोनमस्ते॥

चतुर्थी-चन्द्रदर्शन मन्त्रः- दही आ डाली सभके एका-एकी हाथमे लऽ निम्न मंत्र पढथि।

नमः सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यन्मतकः।

तदुत्तर आगुक मन्त्र सँ प्रणाम करी- नमः शुभ्रांशवे तुभ्यं द्विजराजाय ते नमः। रोहिणीपतये तुभ्यं लक्ष्मी भ्रात्रे नमोऽस्तु ते॥

दधिशंख-तुषाराभं क्षीरो-दार्णव-सम्भवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुट-भूषणम्॥

चतुर्थी चन्द्र के प्रार्थना मन्त्र- मृगांक-रोहिणीनाथ शम्भोः शिरसि भूषणं। व्रतं सम्पूर्णतां यातु सौभाग्यं च प्रयच्छ मे॥

रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवन् देहिमे। धर्मान् देहि, धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहिमे॥

अगस्त्य-अर्घ्यदान-मन्त्रः- ऋषि तर्पण के बाद शंख में जल अक्षत श्वेतपुष्प (काशपुष्प) फल द्रव्य आदि लय जनेउ सव्य ही क दक्षिण दिशा मे मुह कय आगुक मन्त्र सँ अर्घ्य दी-

कुम्भ्योनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानिविविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

काशपुष्पप्रतीकाशं वह्निमारुतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

अगस्त्य-प्रार्थनामन्त्रः- आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रःशोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु॥

धर्मशास्त्र-हरितालिका- चतुर्थीसहिता यातु सातृतीया फलप्रदा। अवैधव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी॥ तिथितत्त्वचिन्तामणि-कृतिसागराद्यवाधुनिक- निबन्थे साचतुर्थीयुताग्राह्या। हरितालिका व्रतस्यैव नामान्तर लोके तीज इति। कलाकाष्ठा मुहूर्त्ताऽपि द्वितीया यदि दृश्यते। सा तृतीया न कर्त्तव्या गणसंयुता॥ **भाद्रचतुर्थी अर्घ्य दान मन्त्र-** शंख मे फल-पुष्प-दुध लय चन्द्रार्घ्य दी-★

★ॐ अत्रि नेत्र समुद्रभूतं क्षीरोदाणवसम्भव। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितप्रभो॥ इदं दुग्धार्घ्यं नमो रोहिणीसहितभाद्रशुक्लचतुर्थीचन्द्राय नमः।

आश्विन कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३ शाके १९४८, सौम्यगोल:, याम्यायनम्, शरदर्तु: (राहु) उत्तरेकाल:, अशुद्धसमय: ता. २४ त: शुद्धसमय:

दिनांक: २७ सितंबर से १० अक्टूबर २०२६ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	रवि	३८।३६	रा.६।३०	उ.भा.१६।५	दि.१२।२८	वृ.१८।४४	बा.६।३४	मीन	५।०६।५१।१३	२६।४८	६।०२	५।५८	१६	११	२७	महालयारम्भ:, पितृपक्षीय पार्वणारम्भ:, दुग्धंत्यजेदाश्विने, हस्तेरवि: ५७।५६, स्त्री चं. सूं. योगो मूषकवाहनं वह्नि नाड़ी तदीशो भौम: वायुवृष्टि:, शिववास:-मृत्युयोगश्च रा. ९।३० या., विपणि
२	सोम	३५।४२	रा.८।२०	रे.१५।१७	दि.१२।१०	ध्रु.१३।५४	तै.७।१०	मी.दि.१२।१०	५।१०।५०।१०	२६।४४	६।०३	५।५७	१७	१२	२८	सूतीस्नानं, भदवा समाप्ति: दि. १२।१० उ., गंड दि. ७।२२ उ. दि. १।२२ या., अग्निवास:, मृत्युयोग: रा. ८।२० या., विपणि, दीक्षाग्रहणं
३	मंगल	३१।४७	रा.६।४७	अ.१३।२७	दि.११।२७	व्या.८।१५	व.३।४७	मेष	५।११।४६।०७	२६।४०	६।०४	५।५६	१८	१६	२९	भद्रा ३।४७ उ. ३१।४७ या., सूतीस्नानं, उत्तरां विना यात्रा अश्विन्यां, श्रीगणेश चतुर्थी व्रतं, सिद्धियोग: रा. ६।४७ या. तत: राज्यप्रदयोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ११।२७ या.
४	बुध	२७।०३	दि.४।५४	भ.१३।५३	दि.११।३६	ह.१।५४	बा.२७।०३	मे.दि.४।५८	५।१२।४८।०४	२६।३७	६।०५	५।५५	१९	१४	३०	वज्रयोग: ५३।०४, एकदन्त ४ व्रतं, शिववास:, अग्निवास: दि. ४।५४ या.
५	गुरु	२१।३९	दि.२।४५	कृ.७।०८	दि.८।३२	सि.४७।३६	तै.२१।३९	वृष	५।१३।४७।०१	२६।३४	६।०५	५।५५	२०	१५	१ अक्टू.	अक्टूबर मासारम्भ:, पूर्व यात्रा रोहिन्यां, शिववास: दि. २।४५ या., सिद्धियोग: दि. २।४५ या. तत: मध्यमयोग:-अग्निवासश्च
६	शुक्र	१५।५३	दि.१२।२७	रो.३।३६	दि.७।३१	व्य.३९।५७	व.१५।५३	वृ.सं.६।४४	५।१४।४६।१४	२६।३०	६।०६	५।५४	२१	१६	२	मृ० न० ५५।५५, रात्रयन्ते स्त्रीनां विशिष्ट भोजनं (ओठगन), गान्धीशास्त्रीजयन्ती, भ.१४।५३ उ. ४२।५१ या., षष्ठ्यां मृगशिरसि पश्चिमां विना यात्रा, अग्निवास:-सिद्धियोगश्च दि.१२।२७ या. तत: मृत्युयोग:
७	शनि	९।४८	दि.१०।०२	आर्द्रा.५५।१८	रा.४।१४	वरी.३२।०९	बव.९।४८	मिथुन	५।१५।४५।२७	२६।२६	६।०७	५।५३	२२	१७	३	श्री जीमूतवाहन व्रतं (जितिया) श्री जीमूतवाहन पूजनं प्रदोषे, दग्धतिथि: दि. १०। ०२ उ., शिववास:, अग्निवास: दि. १०।०२ उ.
८	रवि	३।४५	दि.७।३८	पुन.५१।११	रा.२।३६	प.२४।२६	कौ.३।४५	मि.रा.९।१	५।१६।४४।४०	२६।२२	६।०८	५।५२	२३	१८	४	९ तिथि ५४।०२ नवम्यां जीमूतवाहन व्रत पारणं दि. ७।३८ उपरि, मातृ नवमी कृत्यं, दग्धतिथि: दि. ७।३८ या., शिववास:-सिद्धियोगश्च दि. ७।३८ या.
१०	सोम	५२।१७	रा.३।०३	पु.४७।२६	रा.१।०६	शि.१६।५३	व.२५।०२	कर्क	५।१७।४३।५३	२६।१८	६।०८	५।५२	२४	१९	५	भद्रा-२५।०२ उ. ५२।१७ या., पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, अग्निवास:, अमृतयोग, सर्वार्थसिद्धियोग:, विपणि
११	मंगल	४७।१४	रा.१।०२	श्ले.४४।१२	रा.११।५०	सि.९।३९	बव.१९।४५	क.रा.११।५०	५।१८।४६।०६	२६।१४	६।०९	५।५१	२५	२०	६	इन्दिरा ११ व्रतं सर्वेषां, गंड रा. ७।२६ उ. रा.१।२६ या., शिववास:, मृत्युयोग रा. १।०२ या. तत: अमृतयोग:
१२	बुध	४३।०१	रा.११।२२	मघा.४१।४६	रा.१०।५२	सा.२।५६	कौ.१४।३७	सिंह	५।१९।४२।१८	२६।१०	६।१०	५।५०	२६	२१	७	शुभयोग: ५३।५९, गुड़ेन पारणम्, शिववास:, अग्निवास:, सिद्धियोग: रा. ११।२२ या. तत: मृत्युयोग:
१३	गुरु	३९।३९	रा.१०।०३	पू.फ.४०।०७	रा.१०।१४	शु.५१।३६	गर.११।२०	सिं.रा.४।१०	५।२०।४१।३०	२६।०६	६।११	५।४९	२७	२२	८	प्रदोष १३ व्रतं, भद्रा ३९।३९ उ. पूर्वोत्तर यात्रा त्र्योदश्यां, अमृतयोग: रा. १०।०३ या., तत: मृत्युयोग:, वायुसेना दिवस:
१४	शुक्र	३७।२०	रा.९।०८	उ.फ.३९।३१	रा.१०।००	ब्र.४७।०३	वि.८।२९	कन्या	५।२१।४०।५९	२६।०२	६।१२	५।४८	२८	२३	९	प्रदोष १४ व्रतं, भद्रा ८।२९ या., अग्निवास:, अमृतयोग: रा. ९।०८ या.
३०	शनि	३६।१६	रा.८।४२	ह.४०।०८	रा.१०।१५	ऐं.४३।२९	च.६।४८	कन्या	५।२२।४०।२८	२८।५८	६।१२	५।४८	२९	२४	१०	आश्विनी-३० स्नानदानादि:, महालया ३०, पितृपक्षीय पार्वणान्त: क्षीण: शुक्र:-४९।५७ (अशुद्धारम्भ:) शिववास:, आश्विनस्यमावस्यां शनिवारो यदा भवेत्। मध्यमं वर्षमथवा दुष्काल: खंड:, राष्ट्रिय डाक दिवस:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. रवि	३।०४।०५।०४	६।०४।१६।४५	३।२५।५६।१५	६।०७।३०।३२	११।१६।४०।३५	१०।०५।५३।३६	४४।५४
२. सोम	३।०४।४०।१३	६।०५।३८।४६	३।२६।०७।४३	६।०७।२४।२७	११।१६।३५।२३	१०।०५।५०।२८	४४।५२
३. मंगल	३।०५।१५।२२	६।०७।००।४६	३।२६।१९।११	६।०७।१८।२२	११।१६।३०।११	१०।०५।४७।१७	४४।५०
४. बुध	३।०५।५०।३१	६।०८।२२।४६	३।२६।३०।३८	६।०७।१२।१७	११।१६।२४।५९	१०।०५।४४।०६	४४।४८
५. गुरु	३।०६।२५।४०	६।०९।४४।४६	३।२६।४२।०५	६।०७।०६।१३	११।१६।१९।४७	१०।०५।४०।५५	४४।४७
६. शुक्र	३।०७।००।०७	६।१०।४६।०९	३।२६।५२।५२	६।०६।४४।०३	११।१६।१४।५१	१०।०५।३७।४४	४४।४५
७. शनि	३।०७।३४।३४	६।११।४७।३१	३।२७।०३।३९	६।०६।२१।५३	११।१६।०९।५५	१०।०५।३४।३३	४४।४३
८. रवि	३।०८।०९।०१	६।१२।४८।५३	३।२७।१४।२६	६।०५।५९।४३	११।१६।०५।००	१०।०५।३१।२२	४४।४१
१०. सोम	३।०८।४३।२८	६।१३।५०।१५	३।२७।२५।१३	६।०५।३७।३३	११।१६।००।०५	१०।०५।२८।११	४४।३९
११.मंगल	३।०९।१७।५५	६।१४।५१।३७	३।२७।३५।५९	६।०५।१५।२३	११।१५।५५।१०	१०।०५।२५।००	४४।३७
१२. बुध	३।०९।५२।२२	६।१५।५२।५९	३।२७।४६।४५	६।०४।५३।१३	११।१५।५०।१५	१०।०५।२१।४९	४४।३५
१३. गुरु	३।१०।२६।४८	६।१६।५४।२१	३।२७।५७।३१	६।०४।३१।०३	११।१५।४५।२०	१०।०५।१८।३८	४४।३३
१४. शुक्र	३।११।००।१८	६।१६।२४।१४	३।२८।०७।३३	६।०३।५५।२२	११।१५।४०।०८	१०।०५।१५।२७	४४।३१
३०. शनि	३।११।३३।४८	६।१७।५४।०७	३।२८।१७।३५	६।०३।१९।४२	११।१५।३४।५६	१०।०५।१२।१६	४४।२९

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. रवि	२१।०१	२२।३६	०।४१	३।०२	५।१७	७।३३	९।४५	१२।०६	१४।२५	१६।२६	१८।०४	१९।३२
२. सोम	२०।५७	२२।३५	०।३७	२।५८	५।१३	७।२९	९।४१	१२।०२	१४।२१	१६।२२	१८।००	१९।२८
३. मंगल	२०।५४	२२।३२	०।३४	२।५५	५।१०	७।२६	९।३८	११।५९	१४।१८	१६।१९	१७।५७	१९।२५
४. बुध	२०।५०	२२।२८	०।३०	२।५१	५।०६	७।२२	३।३४	११।५५	१४।१४	१६।१५	१७।५३	१९।२१
५. गुरु	२०।४६	२२।२४	०।२६	२।४७	५।०२	७।१८	९।३०	११।५१	१४।१०	१६।११	१७।४९	१९।१७
६. शुक्र	२०।४२	२२।२०	०।२२	२।४३	४।५८	७।१४	९।२६	११।४७	१४।०६	१६।०७	१७।४५	१९।१३
७. शनि	२०।३९	२२।१७	०।१९	२।४०	४।५५	७।११	९।२३	११।४४	१४।०३	१६।०४	१७।४१	१९।०९
८. रवि	२०।३५	२२।१३	०।१५	२।३६	४।५१	७।०७	९।१९	११।४०	१३।५९	१६।००	१७।३७	१९।०५
१०. सोम	२०।३१	२२।०९	०।११	२।३२	४।४७	७।०३	९।१५	११।३६	१३।५५	१५।५६	१७।३३	१९।०१
११.मंगल	२०।२८	२२।०६	०।०८	२।२८	४।४३	७।००	९।१२	११।३३	१३।५२	१५।५३	१७।३०	१८।५८
१२. बुध	२०।२४	२२।०२	०।०४	२।२४	४।३९	६।५६	९।०८	११।२९	१३।४८	१५।४९	१७।२६	१८।५४
१३. गुरु	२०।२०	२१।५८	००।००	२।२०	४।३५	६।५२	९।०४	११।२५	१३।४४	१५।४५	१७।२२	१८।५०
१४. शुक्र	२०।१६	२१।२४	२३।५६	२।१६	४।३१	६।४८	९।००	११।२१	१३।४०	१५।४१	१७।१८	१८।४६
३०. शनि	२०।१२	२१।२०	२३।५२	२।१२	४।२७	६।४४	८।५६	११।१७	१३।३६	१५।३७	१७।१४	१८।४२

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथिय: दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. रवि	दि.१०।३०-१।२६	रा.१०।२६-१२।००।रा.१।३०-३।०१
२. सोम	दि.७।३२-९।०१।दि.२।५८-४।२६	रा.१०।२६-१२।००।रा.३।०१-४।३२
३. मंगल	दि.७।३३-९।०२।दि.१।२६-२।५८	रा.७।२७-८।५८
४. बुध	दि.९।०२-१०।३१।दि.१२।००-१।२८	रा.१२।००-१।३१।रा.३।०२-४।३३
५. गुरु	दि.२।५७-५।५५	रा.१२।००-१।३१।रा.४।३३-६।०६
६. शुक्र	दि.९।३-१२।००	रा.८।५७-१०।२८
७. शनि	प्रा.६।७-७।३५।दि.१।२८-२।५६।दि.४।२४-५।५३	सं.५।५३-७।२४।रा.१।३१-३।३।रा.४।३५-६।८
८. रवि	दि.१०।३२-१।२८	रा.१०।२८-१२।००।रा.१।३२-३।०४
१०. सोम	दि.७।३६-९।०४।दि.२।५६-४।२४	रा.१०।२८-१२।००।रा.३।०४-४।३६
११.मंगल	दि.७।३६-९।०४।दि.१।२७-२।५५	रा.७।२३-८।५५
१२. बुध	दि.९।५-१०।३२।दि.१२।००-१।२७	रा.१२।००-१।३२।रा.३।०५-४।३७
१३. गुरु	दि.२।५४-५।४६	रा.१२।००-१।३२।रा.४।३८-६।१२
१४. शुक्र	दि.९।६-१२।००	रा.८।५४-१०।२७
३०. शनि	प्रा.६।१२-७।३९।दि.१।२७-२।५४।दि.४।२१-५।४८	सं.६।४८-७।२१।रा.१।३३-३।०६।रा.४।३६-६।१३

आ. कृ. ५ गु. व. ८।४०।१४।१०
अयनांशा: २२।५४।३६

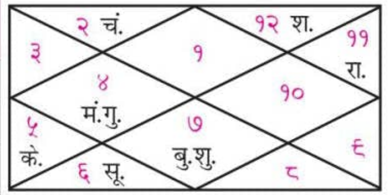

आ. कृ. १३ गु. व. ८।४०।१४।१७
अयनांशा: २२।५४।४०

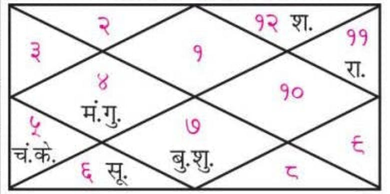

विविधविषय:- धर्मशास्त्रम्-आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्प:। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्प:। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्प:। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थ: कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्येमेव। **हेमाद्रौ:-** आषाढ्या: पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे सूर्ये यो वै श्राद्धं नर: कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्सन्तृप्ता: पितरो ध्रुवम्। **श्राद्धकाल:-** पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमपराह्ने तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। **श्राद्धसमय-कुतुपकाल-** द्वौ यामौ घटिकान्यूनौ द्वौ यामौ घटिकाधिकौ। स काल: कुतुपो ज्ञेय: पितृणां दत्तमक्षयम्।। **श्राद्धेनिषिद्धवस्तुनि (मत्स्य-पुराणे)-** कूष्माण्डं, महिषीक्षीरं, बिल्वपत्रमगद्विजा:। श्राद्धकालेसमुत्पन्ने-पितरो यान्त्यनाश्रिता:। **श्राद्धेप्रशस्तानि-** उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्र: कुतुपस्तिला:। **जीमूतवाहनव्रतं-** इसे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका।। शालिवाहन राजस्य पुत्रो जीमूतवाहन:। तस्यां पूज्य: स नारिभि: पुत्रसौभाग्यलिप्सया।।

ग्रहयोगेनवृष्टिविचार:- बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकरशिगा:। नि:संशय: तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयो:। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टि: स्यान्नात्र संशय:।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहा: पृष्ठावलम्बिन:। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।।

आश्विन शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संम्वत् २०८३, शाके १९४८, सौम्यगोल: ता. १८ त: याम्यगोल:, याम्यायनम्, (राहु) उत्तरेकाल: अशुद्धसमय: ता. २४ त: शुद्धसमय:

दिनांक: ११ अक्टूबर से २६ अक्टूबर २०२६ ई०

तिथयः	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगः दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	रवि	३६।२७	रा.८।४८	चि.४१।५९	रा.११।०१	वै.४०।५४	किं.६।२१	क.दि.१०।३८	५।२३।३९।५७	२८।५४	६।१३	५।४७	३०	२५	११
२	सोम	३७।५८	रा.९।१७	स्वा.४५।०७	रा.१२।१७	वि.३९।२१	बा.७।१२	तुला	५।२४।३९।२६	२५।५०	६।१४	५।४६	१	२६	१२
३	मंगल	४०।३७	रा.१०।३०	वि.४९।२१	रा.१।५९	प्री.३८।४०	तै.९।१७	तु.७।३४	५।२५।३८।५५	२८।४६	६।१५	५।४५	२	२७	१३
४	बुध	४४।२८	रा.१२।०३	अनु.५४।३९	रा.४।०८	आ.३८।५३	व.१२।३२	वृश्चिक	५।२६।३८।२४	२८।४२	६।१६	५।४४	३	२८	१४
५	गुरु	४९।०२	रा.१।५४	ज्ये.६०।००	अहोरात्र	सौ.३९।४४	बव.१६।४५	वृश्चिक	५।२७।३७।५२	२८।३८	६।१७	५।४३	४	२९	१५
६	शुक्र	५४।१३	रा.३।५८	ज्ये.०।४०	प्रा.६।३३	शो.४०।५८	कौ.२१।३७	वृ.दि.६।३३	५।२८।३७।३७	२८।३४	६।१७	५।४३	५	३०	१६
७	शनि	५९।२५	रा.६।०४	मूल.७।०९	दि.९।१०	अ.४२।२५	गर.२६।४१	धनु	५।२९।३७।२२	२८।३०	६।१८	५।४२	६	३१	१७
८	रवि	६०।००	अहोरात्र	पू.षा.१३।३७	दि.११।४६	सु.४३।३९	वि.३१।१५	ध.सं.६।२४	६।००।३७।०७	२८।२६	६।१९	५।४१	७	१	१८
८	सोम	४।१८	दि.८।०२	उ.षा.२०।०१	दि.२।१९	धृ.४४।२६	बव.४।१८	मकर	६।०१।३६।५१	२८।२२	६।१९	५।४१	८	२	१९
९	मंगल	८।३३	दि.९।४५	श्र.२४।५८	सं.४।१९	शू.४४।३३	कौ.८।३३	म.रा.५।१०	६।०२।३६।३५	२८।१८	६।२०	५।४०	९	३	२०
१०	बुध	११।४१	दि.११।०१	धनि.२९।१३	सं.६।०२	गं.४३।४७	गर.११।४१	कुम्भ	६।०३।३६।१९	२८।१४	६।२१	५।३९	१०	४	२१
११	गुरु	१३।४७	दि.११।५३	शत.३२।२२	सं.७।१७	वृ.४२।०६	वि.१३।४७	कुम्भ	६।०४।३६।०३	२८।१०	६।२२	५।३८	११	५	२२
१२	शुक्र	१४।३२	दि.१२।१२	पू.भा.३४।१४	रा.८।०५	ध्रु.३९।२५	बा.१४।३२	कु.दि.१।५३	६।०५।३६।०३	२८।०६	६।२३	५।३७	१२	६	२३
१३	शनि	१३।५७	दि.११।५९	उ.भा.३४।५०	रा.८।२०	व्या.३५।४२	तै.१३।५७	मीन	६।०६।३६।०३	२८।०२	६।२४	५।३६	१३	७	२४
१४	रवि	१२।१०	दि.११।१६	रे.३४।१५	रा.८।०६	ह.३१।०३	व.१२।१०	मी.रा.८।०६	६।०७।३६।०३	२७।५८	६।२४	५।३६	१४	८	२५
१५	सोम	९।१७	दि.१०।०८	अ.३२।३८	रा.७।२८	व.२५।३४	बव.९।१७	मेष	६।०८।३६।०३	२७।५५	६।२५	५।३५	१५	९	२६

शारदीयनवरात्र शुभारम्भ:, कलशस्थापनं, गजारूढायां दुर्गाया आगमनफलं सुवृष्टि:, चित्रायां रवि: २८।४४, स्त्री. पु. योग: वायुवृष्टि:, अग्निवास:, मृत्युयोग: रा. ८।४८ या. केशसंस्कार द्रव्याणिप्रदद्यात्प्रतिपद्दिने
रेमन्त पूजा, चंद्रदर्शनं, पट्टडोर द्वितीयायां केशसंयम हेतवे, शिववास:, मृत्युयोग: रा. ९।१७ या.
पाश्चिमास्त: शुक्र: ४२।५९, दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा, अग्निवास:, सिद्धियोग: रा. १०।३० या. तत: राज्यप्रदयोग:
श्री गणेश ४ व्रतं, भद्रा १२।३२ उ. ४४।२८ या., मधुपर्कं चतुर्थ्यांतु तिलकं नेत्रमंडनम्, सर्वार्थसिद्धियोग:
गंड रा. ४।०९ उ., पश्चिमोत्तर यात्रा पंचम्यां, पंचम्यांमंगरागंच शक्त्यालंकरणनिच, शिववास:, अग्निवास:, सिद्धियोग:
गज पूजा, विल्वाभिमंत्रणं, गंड दि. १०।०९ या., पूर्वोत्तर यात्रा दि. ६।०३ उ., शिववास:, सिद्धियोग:
पत्रिका प्रवेश:, सरस्वतीपूजारम्भ:, भद्रा ५९।२५ उ., मासान्त:, अग्निवास:
महाष्टमी व्रतं, निशापूजा, जागरण, भद्रा ३१।१५ या., तुलायां रवि: ११।४४ मु. ३० फलं साम्यं धान्यविषुव सं. पु. काल दि. १२ या., सिमरियाधाम्नि कल्पवासारम्भ:
मासादि:, सन्धि पूजा, भवानी अन्नपूर्णा परिक्रमा, शिववास:-अग्निवास: दि. ८।०२ उ., सिद्धियोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. २।१९ उ.
महानवमी व्रतं, त्रिशूलिनीपूजा, हवनादि:, वलिदानादि:, मन्वादि:, भदवारम्भ: सं. ४।१९ उ., उत्तरां विना यात्रा, श्रवणायां, शिववास:-राज्यप्रदयोग: दि. ९।४५ या. तत: मध्यमयोग:
विजयादशमी, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, देवीगमनं गजवाहना शुभवृष्टिकरा, जयंतीधारणं, नवरात्रपारणं, दीक्षाग्रहणं, खंजन नीलकंठ दर्शनं, एकादश्यां घनिष्ठायां पश्चिम दक्षिण यात्रा, अग्निवास:,❖
पाशांकुशा ११ व्रतं सर्वेषां, भद्रा १३।४७ या., दग्धतिथि: दि. ११।५३ उ., शिववास: दि. ११।५३ उ.
पद्मनाभ १२, प्रदोष १३ व्रतं, गुडेण पारणम्, दग्धतिथि: दि. १२।१२ या., शिववास:, मृत्युयोग: दि. १२।१२ या. तत: अग्निवास:
प्रदोष १४ व्रतं, स्वात्यां रवि:- ५१।१३ पु. स्त्री चं. सं. योगो अतिवृष्टि योग:, शिववास:-गृहारम्भ:-गृहप्रवेशश्च दि. ११।५९ या. तत: राज्यप्रदयोग:-विपणि च
पूर्णिमा व्रतं, कौमुदी कोजागरा महोत्सव:, प्रदोषे लक्ष्मी पूजनं, दीक्षाग्रहणं, भद्रा १२।१६ उ. ४०।४४ या., भदवा समाप्ति: रा. ८।०३ उ., गंड दि. ३।२८ उ. रा. ९।२८ या.,★
आश्विनी पूर्णिमा स्नानदानादि:, पूर्वां विना यात्रा आश्विन्यां, अमृतयोग:-गृहारम्भश्च दि. १०।०८ या. तत: सिद्धियोग:-शिववास:-अग्निवास:

★ अग्निवास: दि.११।१६ या. तत: अमृतयोग-विपणि च सर्वार्थसिद्धियोग: रा. ८।०६ उ.

❖ पूर्वोदित: शुक्र: ३।२४, अमृतयोग: दि. ११।०१ उ.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथियः दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. रवि	३।१२।०७।१८	६।१८।२३।५९	३।२८।२७।३६	६।०२।४४।०२	११।१५।२९।४४	१०।०५।०९।०५	४४।२७
२. सोम	३।१२।४०।४८	६।१८।५३।५१	३।२८।३७।३७	६।०२।०८।२२	११।१५।२४।३२	१०।०५।०५।५४	४४।२५
३. मंगल	३।१३।१४।१८	६।१९।२३।४३	३।२८।४७।३८	६।०१।३२।४२	११।१५।१९।२०	१०।०५।०२।४३	४४।२३
४. बुध	३।१३।४७।४७	६।१९।५३।३५	३।२८।५७।३९	६।००।५७।०२	११।१५।१४।०८	१०।०४।५९।३२	४४।२१
५. गुरु	३।१४।२१।१६	६।२०।२३।२७	३।२९।०७।४०	६।००।२१।२२	११।१५।०८।५६	१०।०४।५६।२१	४४।१९
६. शुक्र	३।१४।५३।४०	६।२०।११।०९	३।२९।१६।५९	५।२९।४२।४७	११।१५।०४।१९	१०।०४।५३।१०	४४।१७
७. शनि	३।१५।२६।०३	६।१९।५८।५१	३।२९।२६।१७	५।२९।०४।१३	११।१४।५९।४२	१०।०४।४९।५९	४४।१५
८. रवि	३।१५।५८।२६	६।१९।४५।३३	३।२९।३५।३५	५।२८।२५।३९	११।१४।५५।०५	१०।०४।४६।४८	४४।१३
८. सोम	३।१६।३०।४९	६।१९।३३।१५	३।२९।४४।५३	५।२७।४७।०५	११।१४।५०।२८	१०।०४।४३।३७	४४।११
९. मंगल	३।१७।०३।१२	६।१९।२१।५७	३।२९।५४।११	५।२७।०८।३१	११।१४।४५।५३	१०।०४।४०।२६	४४।०९
१०. बुध	३।१७।३५।३५	६।१९।०९।३९	४।००।०३।२९	५।२६।२९।५७	११।१४।४१।१७	१०।०४।३७।१५	४४।०७
११. गुरु	३।१८।०७।५८	६।१८।५४।११	४।००।१२।४७	५।२५।५१।२३	११।१४।३६।१५	१०।०४।३४।०४	४४।०५
१२. शुक्र	३।१८।३९।१३	६।१८।११।३२	४।००।२१।१६	५।२५।२२।१२	११।१४।३२।२४	१०।०४।३०।५३	४४।०३
१३. शनि	३।१९।१०।२८	६।१७।२५।४३	४।००।२९।४५	५।२४।५३।०१	११।१४।२८।३३	१०।०४।२७।४२	४४।०१
१४. रवि	३।१९।१०।२८	६।१६।३९।५४	४।००।३८।१४	५।२३।२३।५०	११।१४।२४।४२	१०।०४।२४।३१	४३।५९
१५. सोम	३।२०।१२।५७	६।१५।५४।०५	४।००।४६।३३	५।२२।५४।३९	११।१४।२०।५१	१०।०४।२१।२०	४३।५७

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथियः दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. रवि	२०।०८	२१।१६	२३।४८	२।०८	४।२३	६।४०	८।५२	११।१३	१३।३२	१५।३३	१७।१०	१८।३८
२. सोम	२०।०५	२१।१३	२३।४५	२।०५	४।२०	६।३७	८।४९	११।१०	१३।२९	१५।३०	१७।०७	१८।३५
३. मंगल	२०।०२	२१।१०	२३।४२	२।०२	४।१७	६।३४	८।४६	११।०७	१३।२६	१५।२७	१७।०४	१८।३२
४. बुध	१९।५९	२१।०७	२३।३९	१।५९	४।१४	६।३१	८।४३	११।०४	१३।२३	१५।२४	१७।०१	१८।२९
५. गुरु	१९।५६	२१।०४	२३।३६	१।५६	४।११	६।२८	८।४०	११।०१	१३।२०	१५।२१	१६।५८	१८।२६
६. शुक्र	१९।५३	२१।०१	२३।३३	१।५३	४।०८	६।२५	४।३७	१०।५८	१३।१७	१५।१८	१६।५५	१८।२३
७. शनि	१९।४६	२०।५७	२३।२९	१।४६	४।०४	६।२१	८।३३	१०।५४	१३।१५	१५।१४	१६।५१	१८।१९
८. रवि	१९।५१	२०।५१	२३।३१	१।४८	४।०६	६।२३	८।३५	१०।५६	१३।१३	१५।१६	१६।५३	१८।२१
८. सोम	१९।४७	२०।५५	२३।२७	१।४७	४।०२	६।१९	८।३१	१०।५२	१३।११	१५।१२	१६।४९	१८।१७
९. मंगल	१९।४४	२०।५२	२३।२४	१।४४	३।५९	६।१६	८।२८	१०।४८	१३।०८	१५।०९	१६।४६	१८।१४
१०. बुध	१९।४०	२०।४८	२३।२०	१।४०	३।५५	६।१२	८।२४	१०।४५	१३।०४	१५।०५	१६।४२	१८।१०
११. गुरु	१९।३६	२०।४४	२३।१६	१।३६	३।५१	६।०८	८।२०	१०।४१	१३।००	१५।०१	१६।३८	१८।०६
१२. शुक्र	१९।३०	२०।४०	२३।११	१।२८	३।४६	६।०२	८।१७	१०।३८	१२।५७	१४।५८	१६।३५	१८।०३
१३. शनि	१९।२६	२०।३६	२३।०७	१।२४	३।४२	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५३	१४।५४	१६।३१	१७।५९
१४. रवि	१९।२२	२०।३२	२३।०३	१।२०	३।३८	५।५४	८।०९	१०।३०	१२।४९	१४।५०	१६।२७	१७।५५
१५. सोम	१९।१९	२०।२८	२३।००	१।१७	३।३५	५।५१	८।०६	१०।२६	१२।४६	१४।४७	१६।२४	१७।५२

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथियः दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. रवि	दि.१०।३३-१।२६	रा.१०।२६-१२।००।रा.१।३३-३।०६
२. सोम	दि.७।४०-९।०७।दि.२।५३-४।१९	रा.१०।२६-१२।००।रा.३।७-४।४०
३. मंगल	दि.७।४१-९।०७।दि.१।२६-२।५२	रा.७।१८-८।५२
४. बुध	दि.९।८-१०।३४।दि.१२।००-१।२६	रा.१२।००-१।३४।रा.३।०८-४।४२
५. गुरु	दि.२।५१-५।४३	रा.१२।००-१।३४।रा.४।४२-६।१८
६. शुक्र	दि.९।८-१२।००	रा.८।५१-१०।२५
७. शनि	प्रा.६।१८-७।४३।दि.१।२५-२।५१।दि.४।१६-५।४२	रा.५।४२-७।१६।रा.१।३४-३।०९।रा.४।४३-६।१९
८. रवि	दि.१०।३४-१।२५	रा.१०।२५-१२००।रा.१।३४-३।९
८. सोम	दि.७।४४-९।९।दि.२।५०-४।१५	रा.१०।२५-१२।००।रा.३।९-४।४४
९. मंगल	दि.७।४५-९।१०।दि.१।२५-२।५०	रा.७।१५-८।५०
१०. बुध	दि.९।१०-१०।३५।दि.१२।००-१।२४	रा.१२।००-१।३५।रा.३।१०-४।४५
११. गुरु	दि.२।४९-५।३८	रा.१२।००-१।३५।रा.४।४६-६।२३
१२. शुक्र	दि.९।११-१२।००	रा.८।४८-१०।२४
१३. शनि	प्रा.६।२४-७।४८।दि.१।३४-२।४८।दि.४।१२-५।३६	सं.५।३६-७।१२।रा.१।३६-३।१२।रा.४।४८-६।२५
१४. रवि	दि.१०।३६-१।२४	रा.१०।२४-१२।००।रा.१।३६-३।१२
१५. सोम	दि.७।४८-९।१२।दि.२।४७-४।११	रा.१०।२३-१२।००।रा.३।१२-४।४८

आ. शु. ५ गु. व. ८।४०।१४।२४
अयनांशा: २२।५४।४१

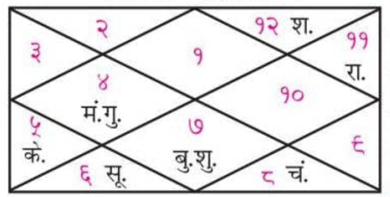

आ. शु. ११ गु. व. ८।४०।१४।३१
अयनांशा: २२।५४।४२

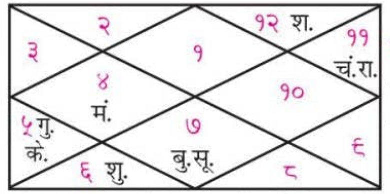

दुर्गा-आगमन- शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौशुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्तिता। **फल-** गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धि: स्योद्दोलायां मरणं ध्रुवम्। **दुर्गा-गमनफल-**शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुध यानकारी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा। **अपराजिता पूजन निर्णय:**-आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेत्तत:। एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितम्। **अपराजिता धारण मन्त्र**-ॐ जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते। धारयामि भुजे दक्षे जयलाभाभिवृद्धये।। **शमी की पूजाकर यात्रा करनी चाहिए। मन्त्र-** शमी शमतये पापं शमी लोहितकण्टका। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियदायिनी। करिष्यमाणा या यात्रा यथाकालं सुखं मया। तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते।। **कोजागरा-कौमुदी** निशीथे वरदा लक्ष्मी: को जागर्त्तीति भाषिणी। तस्मै प्रदास्यामि अक्षै: क्रीडां करोति य:।।

खञ्जन- दर्शनमन्त्र- नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकाफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।।
फलम्- तद्दर्शनमाकाशदपूर्व- पश्चिमोत्तर-वायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्व शुभम्।
पुनश्च- अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रद: कुशलद: शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दु:खं ददाति बहुश: खलु खञ्जरीट:।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोलायनम् (राहु) उत्तरेकाल: अशुद्धसमय:, २७ त: शुद्धारम्भ:

दिनांक: २७ अक्टूबर से ६ नवम्बर २०२६ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	मंगल	५।०८	दि.८।२६	भरणी.३०।१२	सं.६।३५	सि.१६।२२	कौ.५।०८	मे.रा.१२।१२	६।०६।३६।०३	२७।५२	६।२६	५।३४	१६	१०	२७
२	बुध	००।४८	प्रा.६।४५	कृ.२७।००	सं.५।१४	व्य.१२।३३	गर.०।४८	वृष	६।१०।३६।०२	२७।४६	६।२६	५।३४	१७	११	२८
४	गुरु	४६।४७	रा.२।२२	रो.२३।१६	दि.३।४५	वरी.५।१३	बव.२२।०३	वृ.रा.२।५६	६।११।३६।०१	२७।४६	६।२७	५।३३	१८	१२	२९
५	शुक्र	४३।४६	रा.१२।००	मृ.१६।१०	दि.२।०८	शि.४६।४५	कौ.१६।४८	मिथुन	६।१२।३६।१७	२७।४२	६।२८	५।३२	१९	१३	३०
६	शनि	३७।४८	रा.६।३५	आर्द्रा.१४।५५	दि.१२।२६	सि.४१।५५	गर.१०।४८	मि.रा.५।१२	६।१३।३६।३३	२७।३८	६।२८	५।३२	२०	१४	३१
७	रवि	३१।५६	रा.७।१५	पुन.१०।४७	दि.१०।४८	सा.३४।१४	वि.४।५२	कर्क	६।१४।३६।४९	२७।३४	६।२९	५।३१	२१	१५	१ न.
८	सोम	२६।३१	दि.५।०६	पु.६।५७	दि.९।१७	शु.२६।४९	कौ.२६।३१	कर्क	६।१५।३७।०५	२७।३१	६।३०	५।३०	२२	१६	२
९	मंगल	२१।३३	दि.३।०७	श्ले.३।३५	दि.७।५६	शु१९।५५	गर.२१।३३	क.दि.७।५६	६।१६।३७।२१	२७।२८	६।३०	५।३०	२३	१७	३
१०	बुध	१७।२५	दि.१।२९	मघा.०।५३	प्रा.६।५२	ब्र.१३।३१	वि.१७।२५	सिंह	६।१७।३७।३७	२७।२५	६।३१	५।२९	२४	१८	४
११	गुरु	१४।०७	दि.१२।११	उ.फ.५८।११	रा.५।४८	ऐं.७।४९	बा.१४।०७	सिं.दि.१२।१६	६।१८।३७।५३	२७।२२	६।३२	५।२८	२५	१९	५
१२	शुक्र	११।५४	दि.११।१८	हस्त.५८।३०	रा.५।५६	वै.२।५६	तै.११।५४	कन्या	६।१९।३३।०९	२७।१९	६।३२	५।२८	२६	२०	६
१३	शनि	१०।५५	दि.१०।५५	चित्रा.६०।००	अहोरात्र	प्री.५६।०४	व.१०।५५	क.सं.६।१५	६।२०।२८।२५	२७।१६	६।३३	५।२७	२७	२१	७
१४	रवि	११।१२	दि.११।०२	चित्रा.०।०२	प्रा.६।३४	आ.५४।०७	श.११।१२	तुला	६।२१।२३।४१	२७।१३	६।३३	५।२७	२८	२२	८
३०	सोम	१३।५२	दि.१२।०७	स्वा.२।५१	दि.७।४२	सौ.५३।१०	ना.१३।५२	तु.रा.२।५४	६।२२।१८।५७	२७।१०	६।३४	५।२६	२९	२३	९

"कार्तिके द्विदलंत्यजेत्" तुलसीदलक्षेण कार्तिकयोऽर्चयेद्धरिम्, शिववास:-अग्निवास:-मृत्युयोगश्च दि. ८।२९ या. तत: अमृतयोग:, पुष्ट: शुक्र: ३।२४

३ तिथि ५४।४०, भद्रा २८।३२ उ. ५५।२८ या., सिद्धियोग: प्रा.६।४५ या. तत: अग्निवास:-मृत्युयोगश्च सर्वार्थसिद्धियोग: सं. ५।१४ उ.

परिघ योग: ५२।२२, दशमहुली-४, कृष्णपिङ्गाक्ष ४ व्रतं, करवाचौथ, शिववास:, मृत्युयोग रा. २।२२ या. तत: सिद्धियोग:

मृगशिरसि पश्चिमां विना यात्रा, जातकर्म नामकरणं, शिववास:, अग्निवास:, गृहारम्भ: दि. २।८ या.

अशोक चन्दन षष्ठी, भद्रा ३७।४८ उ., पुनर्वसौ दक्षिण पश्चिम यात्रा, श्रीस्कन्दषष्ठी, अमृतयोग: रा. ९।३५ या. तत: मध्यमयोग:

नवम्बर मासारम्भ:, भद्रा ४।५२ या., पश्चिमां विना यात्रा अष्टम्यां, अग्निवास:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. १०।४८ उ., विपणि दि. १०।४८ उ. रा. ७।१५या. तत: सिद्धियोग:

पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, शिववास: सं. ५।०६ या., सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ९।१७ या.

गंड दि. ९।३२ या., अग्निवास:-राज्यप्रदयोगश्च दि. ३।०७ या. तत: मध्यमयोग:

पू.फ. न. ५८।१०, भद्रा १७।२५ या., एकादश्यां पूर्व यात्रा, विपणि प्रा. ६।५२ उ. दि. १।२९ या. तत: शिववास:-अग्निवास:-अमृतयोगश्च

रम्भा ११ व्रतं सर्वेषां, दग्धतिथि: दि. १२।११ उ., सूतीस्नानं, शिववास:, अग्निवास: दि. १२।११ या. ❖ तत: अग्निवास:

वि. योग: ५६।०४, गोवत्स १२, तुलसीदलेन पारणम्, प्रदोष-१३ व्रतं, सिमरियाधाम्नि अमृतप्राप्तयुत्सव:, धन्वंतरि जयंती, धनतेरस, दग्धतिथि: दि. १४।१८ या., शिववास:-मृत्युयोगश्च दि. ११।१८ या.❖

प्रदोष १४ व्रतं, शिवादीना दीपदानं, प्रदोषे हनुमत्जन्मोत्सव:, हनुमदध्वज दानंच, यमदीप दानं, विशाखायां रवि: ८।५८ उ., चतुर्दश्यां दक्षिण यात्रा, अग्निवास: दि. १०।५५ या. तत: राज्यप्रदयोग:, मार्गीशुक्र: २५।५६

दीपावली, सुखरात्रि: प्रदोषे लक्ष्मी पूजनं, उल्काभ्रमणं, पितृविसर्जनं, निशीथे कालीतारादि पूजनं, हरिमुखी स्मृति दिवस:, शिववास: दि.११।०२ उ., अग्निवास:

कार्तिकी-३० स्नानदानादि:, सोमवती अमावस्या व्रतंच अश्वत्थमूले अष्टोतरशत प्रदक्षिणं, प्रतिपदि अन्नकूट:, गोपूजा, गोवर्धनपूजा स्वात्यां, शिववास: दि. १२।०७ या., अग्निवास:, सिद्धियोग:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. मंगल	३।२०।४४।११	६।१५।०८।१६	४।००।५५।११	५।२१।२५।२८	११।१४।१७।००	१०।०४।१८।०६	४३।५५	१६।१५	२०।५६	२२।५६	१।१३	३।३१	५।४७	८।०२	१०।२३	१२।४२	१४।४३	१६।२०	१७।४८
२. बुध	३।२१।१५।२५	६।१४।२३।२७	४।०१।०३।३६	५।२०।५६।१७	११।१४।१३।०६	१०।०४।१४।५८	४३।५४	१६।११	२०।५५	२२।५२	१।०६	३।२७	५।४३	७।५८	१०।१६	१२।३८	१४।३६	१६।१६	१७।४४
४. गुरु	३।२१।४६।३६	६।१३।३८।३८	४।०१।१२।०७	५।२२।२७।०७	११।१४।०६।१६	१०।०४।११।४७	४३।५३	१६।०७	२०।५१	२२।४८	१।०५	३।२३	५।३६	७।५४	१०।१५	१२।३४	१४।३५	१६।१२	१७।४०
५. शुक्र	३।२२।१६।३६	६।१३।००।४२	४।०१।१६।२६	५।२२।१४।२१	११।१४।०४।४३	१०।०४।०८।३६	४३।५१	१६।०३	२०।४७	२२।४४	१।०१	३।१९	५।३५	७।५०	१०।११	१२।३०	१४।३१	१६।०८	१७।३६
६. शनि	३।२२।४६।३३	६।१२।२२।४६	४।०१।२६।४५	५।२२।०१।३५	११।१४।००।०७	१०।०४।०५।२५	४३।४९	१८।५९	२०।४३	२२।४०	०।५७	३।१५	५।३१	७।४६	१०।०७	१२।२६	१४।२७	१६।०४	१७।३२
७. रवि	३।२३।१६।३०	६।११।४४।५०	४।०१।३४।०४	५।२१।४८।४९	११।१३।५५।३२	१०।०४।०२।१४	४३।४७	१८।५५	२०।३९	२२।३६	०।५३	३।११	५।२७	७।४२	१०।०३	१२।२३	१४।२३	१६।००	१७।२८
८. सोम	३।२३।४६।२७	६।११।०६।५४	४।०१।४१।२२	५।२१।३६।०३	११।१३।५०।५७	१०।०३।५९।०३	४३।४५	१८।५१	२०।३५	२२।३२	०।४९	३।०७	५।२३	७।३८	९।५९	१२।१९	१४।२०	१५।५६	१७।२४
९. मंगल	३।२४।१६।२४	६।१०।२८।५८	४।०१।४८।४०	५।२१।२३।१७	११।१३।४६।२२	१०।०३।५२।५२	४३।४३	१८।४७	२०।३१	२२।२८	०।४५	३।०३	५।१९	७।३४	९।५५	१२।१५	१४।१५	१५।५२	१७।२०
१०. बुध	३।२४।४६।२०	६।०९।५१।०२	४।०१।५५।५८	५।२१।१०।३१	११।१३।४१।४७	१०।०३।५२।४१	४३।४२	१८।४३	२०।२७	२२।२४	०।४१	२।५९	५।१५	७।३०	९।५१	१२।११	१४।१२	१५।४८	१७।१६
११. गुरु	३।२५।१६।१६	६।०९।१३।०५	४।०२।०३।१६	५।२०।५७।४५	११।१३।३७।१२	१०।०३।४९।३०	४३।४१	१८।४०	२०।२४	२२।२१	०।३८	२।५६	५।१२	७।२७	९।४७	१२।०८	१४।०९	१५।४५	१७।१३
१२. शुक्र	३।२५।४४।४२	६।०९।१४।०५	४।०२।०८।४०	५।२०।५४।४९	११।१३।३३।४७	१०।०३।४६।१९	४३।३९	१८।३६	२०।२०	२२।१७	०।३४	२।५२	५।०८	७।२३	९।४४	१२।०४	१४।०५	१५।४१	१७।०९
१३. शनि	३।२६।१३।०८	६।०९।१५।०५	४।०२।१४।०४	५।२१।०१।५३	११।१३।३०।२२	१०।०३।४३।०८	४३।३७	१८।३२	२०।१६	२२।१३	०।३०	२।४८	५।०४	७।१९	९।४०	१२।००	१४।०१	१५।३७	१७।०५
१४. रवि	३।२६।४१।३४	६।०९।१६।०५	४।०२।१९।२७	५।२१।०८।५६	११।१३।२६।५७	१०।०३।३९।५७	४३।३५	१८।२८	२०।१२	२२।०९	०।२६	२।४४	५।००	७।१५	९।३६	११।५६	१३।५७	१५।३३	१७।०१
३०.सोम	३।२७।१०।००	६।०९।१७।०५	४।०२।२४।५०	५।२१।१५।५९	११।१३।२३।३३	१०।०३।३६।४६	४३।३४	१८।२४	२०।०८	२२।०५	०।२२	२।४०	४।५६	७।१३	९।३२	११।५२	१३।५३	१५।२९	१६।५७

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.७।४६-९।१३। दि.१।२३-२।४७	रा.७।१०-८।४७
दि.९।१३-१०।३६। दि.१२।००-१।२३	रा.१२।००-१।३६। रा.३।१३-४।४६
दि.२।४६-५।३३	रा.१२।००-१।३६। रा.४।५०-६।२८
दि.९।१४-१२।००	रा.८।४६-१०।२३
प्रा.६।२८-७।५१। दि.१।२३-२।४६। दि.४।९-५।३२	रा.५।३२-७।९। रा.१।३७-३।१४। रा.४।५१-६।२६
दि.१०।३७-१।१२	रा.१०।२२-१२।००। रा.१।३७-३।१४
दि.७।५२-९।१५। दि.२।४५-४।७	रा.१०।२२-१२।००। रा.३।१५-४।५२
दि.७।५२-९।१५। दि.१।२२-२।४५	रा.७।७-८।४५
दि.९।१५-१०।३७। दि.१२।००-१।२२	रा.१२।००-१।३७। रा.३।१५-४।५३
दि.२।४४-५।२८	रा.१२।००-१।३८। रा.४।५४-६।३३
दि.९।१६-१२।००	रा.८।४४-१०।२२
प्रा.६।३३-७।५४। दि.१।२१-२।४३। दि.४।५-५।२७	सं.५।२७-७।०५। रा.१।३८-३।१६। रा.४।५४-६।३४
दि.१०।३८-१।२१	रा.१०।२१-१२।००। रा.१।३८-३।१६
दि.७।५५-९।१७। दि.२।४३-४।०४	रा.१०।२१-१२।००। रा.३।१७-४।५५

का. कृ. ४ गु. व. ८।४०।१४।३८

अयनांशा: २२।५४।४३

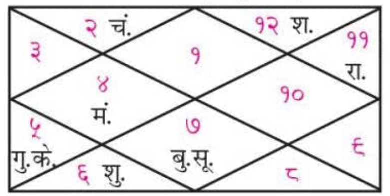

का. कृ. ११ गु. व. ८।४०।१४।४३

अयनांशा: २२।५४।४४

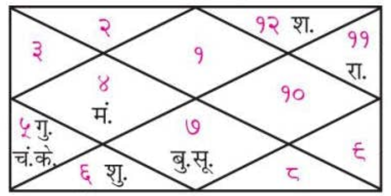

• **कार्त्तिकविशेष**- कात्तिके वर्जयेत्तैलं कार्त्तिके वर्जयेन्मधु:। कार्त्तिके वर्जयेन्मासं कार्त्तिके शुक्तसन्धितम्।

धातृ छाया में ब्राह्मणभोजन फल- धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुङ्क्ते योऽन्नं हि मानव:। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिक किल्विषं हरेत्।।

• **आकाशदीपदानफलम्**- तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकशदीपं यो दद्यात् मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसंपद:।।

• **कार्तिकस्नान:**- कार्तिके सकलं मासं प्रात:स्नायी जितेन्द्रिय:। जपन् हविष्यभुक् शान्त:सर्वपापै: प्रमुच्यते।।

• **स्नानमन्त्र:**- कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रात: स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमा सह।।

• **अमायां लक्ष्मीपूजा**- देशकालौ संकृत्य मम गृहेऽचललक्ष्मी निवासाय लक्ष्मी पूजनम् अहं करिष्ये। विहितोपचारै: संपूज्यान्ते

• **प्रार्थना:**- नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।। • **लक्ष्मी-अर्घ्यमंत्र**- व्रतिन: कार्तिके मासि स्नातस्य विधि सम्मतम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं दनुजेन्द्रनिषूदन।। नित्यनैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशिने। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरे:।। • **दीपदानमन्त्र:**- दामोदराद्य नभसि तुलायां लीलयां सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।।

• **उल्काभ्रमणमन्त्र:- शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयो:। उज्जवलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।। अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धा: कुले मम। उज्जवलज्योतिषा दग्धास्ते वान्तु परमाङ्गतिम्।।**

विसर्जनक मन्त्र- ॐ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्जवलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, सम्वत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोलः याम्यायनम्, शरदऋतुः, ता. १७ तः हेमन्तऋतुः (राहु) उत्तरेकालः ता. १७ तः पूर्वकालः शुद्धसमयः

दिनांकः १० नवम्बर से २४ नवम्बर २०२६ ई०

तिथयः	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगः दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	मंगल	१६।३५	दि.१।१३	वि.६।४८	दि.६।१८	शो.५३।०२	बव.१६।३५	वृश्चिक	६।२३।१४।१३	२७।०६	६।३५	५।२५	१	२४	१०
२	बुध	१६।३२	दि.२।२४	अनु.११।५३	दि.११।२०	अ.५३।४१	कौ.१६।३२	वृश्चिक	६।२४।०६।२८	२७।०४	६।३५	५।२५	२	२५	११
३	गुरु	२४।१६	दि.४।१८	ज्ये.१७।४५	दि.१।४२	सु.५४।४८	गर.२४।१६	वृ.दि.१।४२	६।२५।०४।५३	२७।०२	६।३६	५।२४	३	२६	१२
४	शुक्र	२६।३१	सं.६।२४	मूल.२४।०८	दि.४।१५	ध्रु.५६।१०	वि.२६।३१	धनु	६।२६।०६।५७	२६।५८	६।३६	५।२४	४	२७	१३
५	शनि	३४।५२	रा.८।३४	पू.षा.३०।३६	सं.६।५३	शू.५७।२६	बव.२।११	ध.रा.१।३०	६।२७।१५।११	२६।५५	६।३७	५।२३	५	२८	१४
६	रवि	३८।४७	रा.१०।०६	उ.षा.३६।५२	रा.६।२३	गं.५८।२०	कौ.६।४६	मकर	६।२८।२०।२५	२६।५२	६।३८	५।२२	६	२९	१५
७	सोम	४४।०४	रा.१२।१६	श्रवण.४२।२०	रा.११।३४	वृ.५८।४१	गर.११।२५	मकर	६।२९।२५।३८	२६।४६	६।३८	५।२२	७	३०	१६
८	मंगल	४७।१६	रा.१।२३	ध.४६।५३	रा.१।२४	ध्रु.५८।०५	वि.१५।४०	म.दि.१२।२९	७।००।३०।५१	२६।४६	६।३९	५।२१	८	१	१७
९	बुध	४९।२४	रा.२।२५	शत.५०।१८	रा.२।४६	व्या.५६।४३	बा.१८।२०	कुंभ	७।०१।३६।०४	२६।४३	६।३९	५।२१	९	२	१८
१०	गुरु	५०।०८	रा.२।४३	पू.भा.५२।२९	रा.३।४०	ह.५४।१७	तै.१९।४६	कुं.रा.९।२६	७।०२।४१।१७	२६।४०	६।४०	५।२०	१०	३	१९
११	शुक्र	४९।३४	रा.२।३०	उ.भा.५३।२२	रा.४।०१	व.५०।५१	व.१९।४१	मीन	७।०३।४२।४४	२६।३७	६।४०	५।२०	११	४	२०
१२	शनि	४७।३९	रा.१।४५	रे.५३।०३	रा.३।५४	सि.४६।२५	बव.१८।३६	मी.रा.३।५४	७।०४।४४।१०	२६।३४	६।४१	५।१९	१२	५	२१
१३	रवि	४४।५९	रा.१२।४२	अ.५१।३९	रा.३।२२	व्य.४१।११	कौ.१६।१९	मेष	७।०५।४५।३६	२६।३१	६।४२	५।१८	१३	६	२२
१४	सोम	४१।१२	रा.११।११	भरणी४९।२६	रा.२।२८	व.२५।०८	गर.१३।५	मेष	७।०६।४७।०२	२६।२८	६।४२	५।१८	१४	७	२३
१५	मंगल	३६।३४	रा.९।२१	कृ.४६।२३	रा.१।१६	प.२८।२६	वि.८।५३	मे.दि.८।२१	७।०७।४८।२८	२६।२६	६।४३	५।१७	१५	८	२४

१० चन्द्रदर्शनं द्वितीयायां, पश्चिम यात्रा सुभिक्षकरं, मृत्युयोगः दि. १।१३ या. ततः अमृतयोगः-शिववासश्च, कालिदासः जयन्ती

११ यमद्वितीया, भ्रातृद्वितीया, भगिनी गृहेभोजनं, श्रीचित्रगुप्तपूजा, अनुराधायां पश्चिम यात्रा, शिक्षा दिवसः, शिववासः सिद्धियोगश्च दि. २।२४ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः विपणि-दीक्षाग्रहणं च★

१२ प्रतिहार षष्ठी व्रतीनां निरामिष भोजनं, गंड दि. ११।१८ उ. ५।१८ या., अमृतयोगः दि. ४।१८ या. ततः मृत्युयोगः ★ दि. ११।२० या., अग्निवासः

१३ श्री गणेश ४ व्रतं, प्रतिहार षष्ठी व्रतीनां संयमः (नहाय-खाय), भद्रा २९।३१ या., पूर्वोत्तर यात्रा, अग्निवासः, अमृतयोगः सं. ६।२४ या.

१४ प्रतिहार षष्ठी व्रतीनां एकभुक्तं (खरना), शिववासः, मृत्युयोगः रा. ८।३४ या. ततः अमृतयोगः, गृहप्रवेशः सं. ६।५३ तः रा. ८।३४ या.

१५ प्रतिहार षष्ठीव्रतं, सायंकालिकार्घदानं, जातकर्म, नामकरणं, सूतीस्नानं, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. १०।०६ या., विपणि रा. ९।२३ या., दीक्षाग्रहणं

१६ प्रातःकालिकार्घदानं पारणंच, सामापूजारम्भः, जगद्धात्री पूजारम्भः, भदवारम्भः रा. ११।३४ उ., मासान्तः, मृत्युयोगः रा. १२।१६ या., सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ११।३४ या., दीक्षाग्रहणं

१७ गोपाष्टमी, गौ पूजा, भद्रा- १५।४० या., वृश्चिके रविः- २।२४ मु. ३० फलं साम्यं विष्णुपदी सं. पु. कालो दि.१२ या., सिमरियाधाम्नि कल्पवास समाप्तिः, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा. १।२३ या. ततः राजप्रदयोगः

१८ अक्षय नवमी, गंगास्नानदानादिः, धात्री छायायां भोजनं, दीक्षाग्रहणं, त्रेतायुगादिः, दग्धतिथिः रा. २।२५ उ., मासादिः, रत्नगर्भ कुष्माण्डादिदानं धात्रीमूले भोजनं, अहिल्याजयन्ती, शिववासः

१९ जगद्धात्री विसर्जनं, दग्धतिथिः रा. २।४३ या., अग्निवासः, सिद्धियोगः, गृहप्रवेशः रा. ३।४० उ., दीक्षाग्रहणं

२० देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां, भीष्मपंचक व्रतारम्भः, गृहारम्भः-गृहप्रवेशश्च, भद्राः ४९।३४ या., अनुराधायां रविः २१। १४, पूर्वोदितः शुक्रः २६।४२, सिद्धियोगः रा. २।३० या. ततः मृत्युयोगः, दीक्षाग्रहणं

२१ दामोदर-१२, तुलसी दलेनपारणाम्, भदवा समाप्तिः रा. ३।५४ उ., गंड रा. ११।०६ उ. रा. ५।६ या., गृहारम्भः-गृप्रवेशश्च, तुलसीविवाहः, अग्निवासः, शिववासः, विपणि

२२ प्रदोष-१३ व्रतं, विद्यापति स्मृतिदिवसः, सूतीस्नानं-विवाहः-द्विरागमनश्च त्रयोदश्यां, पश्चिमां विना यात्रा, सर्वार्थसिद्धियोगः, रविव्रतारम्भः, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः, विपणि रा. १२।४२ या.,❖

२३ प्रदोष-१४ व्रतं, भद्रा ४१।१२ उ., पुष्टौ शुक्रः २६।४२ ❖ बाबासाहेब-रामकृष्णपरमहंस स्मृति दिवसः

२४ कार्तिकी पूर्णिमा, गंगा स्नानदानादिः, सामाविसर्जनं, भीष्मपंचक व्रतं समाप्तिः, कार्तिकेयावतारः, सर्वदेव्युत्थानं, औत्तम मन्वादिः, निम्बार्क नानकदेव जयन्तीम्, अग्निवासः, सोनपुर मेला

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथियः दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. मंगल	३।२७।३८।२५	६।०६।१८।०६	४।०२।३०।१३	५।२१।२३।०२	११।१३।२०।०९	१०।०३।३३।३५	४३।३३	१८।२०	२०।०४	२२।०१	०।१८	२।३६	४।५२	७।०७	९।२८	११।४८	१३।४९	१५।२५	१६।५३
२. बुध	३।२८।०६।५०	६।१९।१९।०७	४।०२।३५।३६	५।२१।३०।०५	११।१३।१६।४५	१०।०३।३०।२४	४३।३२	१८।१५	१९।५९	२१।५६	०।१३	२।३१	४।४७	७।०२	९।२३	११।४३	१३।४४	१५।२०	१६।४८
३. गुरु	३।२८।३५।१५	६।०९।२०।०८	४।०२।४७।५९	५।२१।३७।०८	११।१३।१३।२१	१०।०३।२७।१३	४३।३१	१८।१०	१९।५४	२१।५१	०।०८	२।२६	४।४२	७।००	९।१८	११।३८	१३।३९	१५।१५	१६।४३
४. शुक्र	३।२९।०२।१३	६।१०।००।३३	४।०२।५३।०१	५।२१।५५।४८	११।१३।१०।३२	१०।०३।२४।०२	४३।२९	१८।०६	१९।५०	२१।४७	०।०४	२।२२	४।३८	६।५३	९।१४	११।३४	१३।३५	१५।११	१६।३९
५. शनि	३।२९।२९।११	६।१०।४०।५८	४।०२।५८।०३	५।२२।१४।२८	११।१३।०७।४३	१०।०३।२०।५१	४३।२७	१८।०२	१९।४६	२१।४३	०।००	२।१८	४।३४	६।४९	९।१०	११।३०	१३।३१	१५।०७	१६।३५
६. रवि	३।२९।५६।०९	६।११।२१।२३	४।०३।०३।०४	५।२२।३३।०८	११।१३।०४।५४	१०।०३।१७।४०	४३।२५	१७।५८	१९।४२	२१।३९	२३।५६	२।१४	४।३०	६।४५	९।०६	११।२६	१३।२७	१५।०३	१६।३१
७. सोम	४।००।२३।०७	६।१२।०९।४८	४।०३।०८।०५	५।२२।५१।४७	११।१३।०२।०५	१०।०३।१४।२९	४३।२३	१७।५४	१९।३८	२१।३५	२३।५२	२।१०	४।२६	६।४१	९।०२	११।२२	१३।२३	१४।५९	१६।२७
८. मंगल	४।००।५०।०५	६।१२।४२।१३	४।०३।१३।०६	५।२३।१०।२६	११।१२।५९।१६	१०।०३।११।१८	४३।२२	१७।५०	१९।३४	२१।३१	२३।४८	२।०६	४।२२	६।३७	८।५८	११।१८	१३।१९	१४।५५	१६।२३
९. बुध	४।०१।१७।०२	६।१३।२२।३८	४।०३।१८।०७	५।२३।२९।०५	११।१२।५६।२७	१०।०३।०८।०७	४३।२१	१७।४५	१९।२९	२१।२६	२३।४३	२।०१	४।१७	६।३२	८।५३	११।१३	१३।१४	१४।५०	१६।१८
१०. गुरु	४।०१।४३।५९	६।१४।०३।०३	४।०३।२३।०८	५।२३।४७।४४	११।१२।५३।३८	१०।०३।०४।५६	४३।२०	१७।४१	१९।२५	२१।२२	२३।३९	१।५७	४।१३	६।२८	८।४९	११।०९	१३।१०	१४।४६	१६।१४
११. शुक्र	४।०२।०८।३१	६।१५।११।०४	४।०३।२७।१९	५।२४।२१।२०	११।१२।५१।२४	१०।०३।०१।४५	४३।१८	१७।३६	१९।२०	२१।१७	२३।३४	१।५२	४।०८	६।२३	८।४४	११।०४	१३।०५	१४।४१	१६।०९
१२. शनि	४।०२।३३।०३	६।१६।१९।०४	४।०३।३१।३०	५।२४।५४।५६	११।१२।४९।१०	१०।०२।५८।३४	४३।१६	१७।३२	१९।१६	२१।१३	२३।३०	१।४८	४।०४	६।१९	८।४०	११।००	१३।०१	१४।३७	१६।०५
१३. रवि	४।०२।५७।३५	६।१७।२७।०४	४।०३।३५।४१	५।२५।२८।३२	११।१२।४६।५६	१०।०२।५५।२३	४३।१५	१७।२७	१९।११	२१।०८	२३।२५	१।४३	३।५९	६।१४	८।३५	१०।५५	१२।५६	१४।३२	१६।००
१४. सोम	४।०३।२२।०७	६।१८।३५।०४	४।०३।३९।५१	५।२६।०२।०८	११।१२।४४।४२	१०।०२।५२।१२	४३।१४	१७।२२	१९।०६	२१।०३	२३।२०	१।३८	३।५४	६।०९	८।३०	१०।५०	१२।५१	१४।२७	१५।५५
१५.मंगल	४।०३।४६।३९	६।१९।४३।०४	४।०३।४४।०१	५।२६।३५।४४	११।१२।४२।२८	१०।०२।४९।०१	४३।१३	१७।१८	१९।०२	२०।५९	२३।१६	१।३४	३।५०	६।०५	८।२६	१०।४६	१२।४७	१४।२३	१५।५१

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.७।५६-९।१७।दि.१।२१-२।४२	रा.७।३-८।४२
दि.९।१७-१०।३८।दि.१२।००-१।२१	रा.१२।००-१।३८।रा.३।१७-४।५६
दि.२।४२-५।२४	रा.१२।००-१।३९।रा.४।५७-६।३७
दि.९।१८-१२।००	रा.८।४२-१०।२१
प्रा.६।३७-७।५७।दि.१।२०-२।४१।दि.४।२-५।२३	रा.५।२३-७।२।रा.१।३९-३।१८।रा.४।५७-६।३८
दि.१०।३९-१।२०	रा.१०।२०-१२।००।रा.१।३९-३।१८
दि.७।५८-९।१९।दि.२।४१-४।०१	रा.१०।२०-१२।००।रा.३।१८-४।५८
दि.७।५९-९।१९।दि.१।२०-२।४०	रा.७।००-८।४०
दि.९।१९-१०।३९।दि.१२।००-१।२०	रा.१२।००-१।३९।रा.३।१९-४।५९
दि.२।४०-५।२०	रा.१२।००-१।४०।रा.५।२०-६।४१
दि.९।२०-१२।००	रा.८।४०-१०।२०
प्रा.६।४१-८।००।दि.१।१९-२।३९।दि.३।५९-५।१९	सं.५।१९-६।५९।रा.१।४०-३।२०।रा.५।००-६।४२
दि.१०।४०-१।१९	रा.१०।१९-१२।००।रा.१।४०-३।२१
दि.८।१-९।२१।दि.२।३९-३।५८	रा.१०।१९-१२।००।रा.३।२१-५।०१
दि.८।२-९।२१।दि.१।१९-२।३८	रा.६।५७-८।३८

का. शु. ३ गु. व. ८।४०।१४।५२
अयनांशाः २२।५४।४५

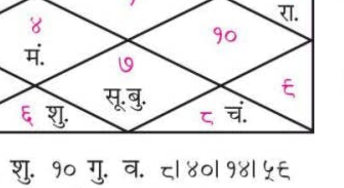

का. शु. १० गु. व. ८।४०।१४।५६
अयनांशाः २२।५४।४६

विविधविषयाः- कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गाश्च पूजयेत्।

गोवर्द्धन पूजन मन्त्रः- गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णवाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव।।

गोपूजनमन्त्रः- लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु।। अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

भातृद्वितीयायां भागेनीपठनीयमन्त्रः- भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभं। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।।

ज्येष्ठभ्रातरि सति - भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।। **एकादश्यां विष्णुत्थापनमन्त्रः-** ब्रह्मेन्द्ररुरैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। मेघागता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहरणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्।।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके - १९४८, याम्यगोल:, याम्यायनम्, हेमन्तर्तु: (राहु) पूर्वेकाल:, शुद्धसमय:

दिनांक: २५ नवम्बर से ८ दिसम्बर २०२६ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	बुध	३१।१८	रा.७।१४	रो.४२।४७	रा.११।५०	शि.२१।१३	बा.३।५६	वृष	७।०८।४६।५४	२६।२४	६।४३	५।१७	१६	९	२५	पूर्व दक्षिण यात्रा, सर्वार्थसिद्धियोग:, शिववास: अमृतयोगश्च रा. ७।१४ या. तत: सिद्धियोग:, विवाह:, द्विरागमनं
२	गुरु	२५।३७	सं.४।५६	मृग.३८।४५	रा.१०।१४	सि.१३।३७	गर.२५।३७	वृ.दि.११।०२	७।०९।५१।२०	२६।२२	६।४४	५।१६	१७	१०	२६	भद्रा-५२।४० उ., सूतीस्नानं, दक्षिणां विना यात्रा-मुण्डनं-विवाह:-द्विरागमनश्च मृगशिरसि, गृहारम्भ:, धान्यछेदनं, नवान्नपार्वण, अग्निवास:, अमृतयोग: सं. ४।४६ उ.
३	शुक्र	१९।४३	दि.२।३७	आ.३४।३३	रा.८।३३	सा.५।४८	वि.१९।४३	मिथुन	७।१०।५२।२२	२६।२०	६।४४	५।१६	१८	११	२७	शुभ योग: ५२।०६, श्री गजानन-४ व्रतं, भद्रा- १९।४३ या., शिववास: अमृतयोगश्च दि. २।३७ उ., सर्वार्थसिद्धियोग: रा. ८।३३ उ.
४	शनि	१३।४९	दि.१२।१६	पुन.३०।२३	रा.६।५३	शु.५०।०७	बा.१३।४९	मि.दि.१।१८	७।११।५३।२४	२६।१८	६।४४	५।१६	१९	१२	२८	पश्चिम दक्षिण यात्रा चतुर्थ्यां, गृहारम्भ: पञ्चम्यां, रविपुष्ययोग:-दीक्षाग्रहणं, शिववास:, अग्निवास:, राज्यप्रदयोग: दि. १२।१६ या. तत: मृत्युयोग:
५	रवि	०८।०३	दि.९।५८	पु.२६।२५	सं.५।१९	ब्र.४२।३१	तै.८।०३	कर्क	७।१२।५४।२६	२६।१६	६।४५	५।१५	२०	१३	२९	वीड-५ मनसादेवी शयनं, सूतीस्नानं, पश्चिमां विना यात्रा-द्विरागमनश्च पुष्ये, नवान्नपार्वण, शिववास: अमृतयोगश्च दि. ९।५८ या. तत: मृत्युयोग:, अग्निवास:, सर्वार्थसिद्धियोग: विपणि च सं. ५।१९ या.
६	सोम	०२।४०	दि.७।४९	श्ले.२२।५४	दि.३।५९	ऐं.३५।२१	व.२।४०	क.दि.३।५९	७।१३।५५।२८	२६।१५	६।४५	५।१५	२१	१४	३०	सप्तमी तिथि ५५।०७, भद्रा २।४० उ. ३०।१४ या., गंड दि. ११।३१ उ. सं. ५।३१ या., अग्निवास:-सिद्धियोगश्च दि. ७।४९ या. तत: मृत्युयोग:, विवाहो मघायां
८	मंगल	५३।४८	रा.४।१६	मघा.२०।०२	दि.२।४६	वै.२८।४२	बा.२५।४७	सिंह	७।१४।५६।३०	२६।१४	६।४५	५।१५	२२	१५	१ दि.	दिसम्बर मासारम्भ:, श्रीकालभैरवाष्टमी, कालभैरव व्रतं पूजनंच, पूर्व फाल्गुन्यां पूर्वयात्रा, कामेश्वरसिंह जयन्ती, शिववास:, अग्निवास:, सिद्धियोग:
९	बुध	५१।३५	रा.३।२३	पू.फ.१८।०१	दि.१।५७	वि.२२।४५	तै.२२।४१	सिं.सं.७।५१	७।१५।५७।३१	२६।१३	६।४५	५।१५	२३	१६	२	अन्वाष्टका श्राद्धम्, दग्धतिथि: रा. ३।२३ उ.
१०	गुरु	४८।३१	रा.२।१०	उ.फ.१६।५२	दि.१।३१	प्री.१७।३५	व.२०।०३	कन्या	७।१६।५८।३२	२६।१२	६।४६	५।१४	२४	१७	३	भद्रा २०।३ उ. ४८।३१ या., ज्येष्ठायां रवि: १०।०६, दग्धतिथि: रा.२।१० या., सूतीस्नानं, अग्निवास:, सिद्धियोग:, विपणि
११	शुक्र	४९।३९	रा.२।३८	ह.१६।५३	दि.१।३१	आ.१३।१९	बव.१९।०५	क.रा.१।४६	७।१७।५९।४२	२६।१०	६।४६	५।१४	२५	१८	४	उत्पन्ना-११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वदक्षिण यात्रा एकादश्यां, शिववास:, सिद्धियोग: रा. २।३८ या. तत: मृत्युयोग:, विवाहो दिवारात्रौ, नौसेना दिवस:
१२	शनि	४८।०५	रा.२।००	चित्रा.१८।०४	दि.२।००	सौ.१०।०१	कौ.१८।५२	तुला	७।१९।००।५२	२६।०८	६।४६	५।१४	२६	१९	५	गो मूत्रेण पारणम्, कृष्ण वस्त्र नीलमादि रत्न धारणम्, शिववास:, अग्निवास:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. २।०० उ.
१३	रवि	४९।५५	रा.२।४५	स्वा.२०।३३	दि.३।००	शो.७।४३	गर.१९।००	तुला	७।२०।०२।०२	२६।०६	६।४७	५।१३	२७	२०	६	प्रदोष-१३ व्रतं, भद्रा ४९।५५ उ., विवाह:-दक्षिण यात्राश्च स्वात्यां, सिद्धियोग:
१४	सोम	५२।४८	रा.३।५४	वि.२४।१८	दि.४।३०	अ.६।२७	वि.२१।२१	तु.दि.१०।०८	७।२१।०३।११	२६।०५	६।४७	५।१३	२८	२१	७	प्रदोष-१४ व्रतं, भद्रा २१।२१ या., अग्निवास:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ४।३० उ.
३०	मंगल	५६।५२	रा.५।३२	अनु.२९।०७	सं.६।२६	सु.६।००	च.२४।५०	वृश्चिक	७।२२।०४।२०	२६।०४	६।४७	५।१३	२९	२२	८	मार्गी-३० स्नानदानादि:, पार्वणं, अशुभवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्, शिववास:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. बुध	४।०४।११।११	६।२०।५१।०४	४।०३।४८।११	५।२७।०६।२३	११।१२।४०।१४	१०।०२।४५।५०	४३।१२
२. गुरु	४।०४।३५।४३	६।२१।५६।०४	४।०३।५२।२१	५।२७।४२।५४	११।१२।३८।०१	१०।०२।४२।३६	४३।११
३. शुक्र	४।०४।५८।२३	६।२३।२४।०६	४।०३।५४।४५	५।२८।२६।२७	११।१२।३७।०३	१०।०२।३९।२८	४३।१०
४. शनि	४।०५।२१।०३	६।२४।४९।०८	४।०३।५७।०९	५।२९।०९।५९	११।१२।३६।०५	१०।०२।३६।१७	४३।०९
५. रवि	४।०५।४३।४३	६।२६।१४।१०	४।०३।५९।३३	५।२९।५३।३१	११।१२।३५।०७	१०।०२।३३।०६	४३।०८
६. सोम	४।०६।०६।२३	६।२७।३९।१२	४।०४।०१।५७	६।००।३७।०३	११।१२।३४।१०	१०।०२।२९।५५	४३।०७
८. मंगल	४।०६।२९।०३	६।२९।०४।१३	४।०४।०४।२१	६।०१।२०।३५	११।१२।३३।१३	१०।०२।२६।४४	४३।०६
९. बुध	४।०६।५१।४३	७।००।२९।१४	४।०४।०६।४४	६।०२।०४।०७	११।१२।३२।१६	१०।०२।२३।३३	४३।०५
१०. गुरु	४।०७।१४।२३	७।०१।५४।१५	४।०४।०९।०७	६।०२।४७।३९	११।१२।३१।१९	१०।०२।२०।२२	४३।०४
११. शुक्र	४।०७।३२।४०	७।०३।२९।३४	४।०४।१०।१६	६।०३।३३।३६	११।१२।३२।०४	१०।।०२।१७।११	४३।०३
१२. शनि	४।०७।५०।५७	७।०५।०४।५२	४।०४।११।२५	६।०४।१९।३७	११।१२।३२।४९	१०।०२।१४।००	४३।०२
१३. रवि	४।०८।०९।१४	७।०६।४०।१०	४।०४।१२।३४	६।०५।०५।३६	११।१२।३३।३४	१०।०२।१०।४९	४३।०१
१४. सोम	४।०८।२७।३१	७।०८।१५।२८	४।०४।१३।४३	६।०५।५१।३४	११।१२।३४।०९	१०।०२।०७।३८	४३।००
३०.मंगल	४।०८।४५।४८	७।०९।५०।४६	४।०४।१४।५२	६।०६।३७।३२	११।१२।३५।०४	१०।०२।०४।२७	४२।५९

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. बुध	१७।१४	१८।५८	२०।५५	२१।१२	१।३४	३।४६	६।०१	८।२२	१०।४२	१२।४३	१४।१९	१५।४७
२. गुरु	१७।०९	१८।५३	२०।५०	२१।०७	१।२९	३।४१	५।५६	८।१७	१०।३७	१२।३८	१४।१४	१५।४२
३. शुक्र	१७।०४	१८।४८	२०।४५	२१।०२	१।२४	३।३६	५।५१	८।१२	१०।३२	१२।३३	१४।०९	१५।३७
४. शनि	१७।००	१८।४४	२०।४१	२१।५८	१।२०	३।३२	५।४७	८।०८	१०।२८	१२।२९	१४।०५	१५।३३
५. रवि	१६।५६	१८।४०	२०।३७	२१।५४	१।१६	३।२८	५।४३	८।०४	१०।२४	१२।२५	१४।०१	१५।२९
६. सोम	१६।५२	१८।३६	२०।३३	२१।५०	१।१२	३।२४	५।३९	८।००	१०।२०	१२।२१	१३।५७	१५।२५
८. मंगल	१६।४७	१८।३१	२०।२८	२२।४५	१।०७	३।१९	५।३४	७।५५	१०।१५	१२।१६	१३।५२	१५।२०
९. बुध	१६।४३	१८।२७	२०।२४	२२।४१	१।०२	३।१४	५।२९	७।५१	१०।११	१२।१२	१३।४८	१५।१६
१०. गुरु	१६।३८	१८।२२	२०।१९	२२।३६	०।५७	३।०९	५।२४	७।४६	१०।०६	१२।०७	१३।४३	१५।११
११. शुक्र	१६।३४	१८।१८	२०।१५	२२।३२	०।५३	३।०५	५।२०	७।४२	१०।०२	१२।०३	१३।३९	१५।०७
१२. शनि	१६।२९	१८।१३	२०।१०	२२।२७	०।४८	३।००	५।१५	७।३७	९।५७	११।५८	१३।३४	१५।०२
१३. रवि	१६।२४	१८।०८	२०।०५	२२।२२	०।४३	२।५५	५।१०	७।३२	९।५२	११।५३	१३।२९	१४।५७
१४. सोम	१६।१९	१८।०३	२०।००	२२।१७	०।३८	२।५०	५।०५	७।२७	९।४७	११।४८	१३।२४	१४।५२
३०.मंगल	१६।१४	१७।५८	१९।५५	२२।१२	०।३३	२।४५	५।००	७।२२	९।४२	११।४३	१३।१९	१४।४७

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथिय: दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. बुध	दि.९।२१-१०।४०।दि.१२।००-१।१९	रा.१२।००-१।४०।रा.३।२१-५।०२
२. गुरु	दि.२।३८-५।१६	रा.१२।००-१।४१।रा.५।०३-६।४५
३. शुक्र	दि.९।२२-१२।००	रा.८।३८-१०।१९
४. शनि	प्रा.६।४४-८।०३।दि.१।१९-२।३८।दि.३।५७-५।१६	सं.५।१६-६।५७।रा.१।४१-३।२२।रा.५।०३-६।४५
५. रवि	दि.१०।४१-१।१८	रा.१०।१८-१२।००।रा.१।४१-३।२२
६. सोम	दि.८।३-९।२२।दि.२।३७-३।५६	रा.१०।१८-१२।००।रा.३।२२-५।०३
८. मंगल	दि.८।३-९।२२।दि.१।२८-२।३७	रा.६।५६-८।३७
९. बुध	दि.९।२२-१०।४१।दि.१२।००-१।३८	रा.१२।००-१।४१।रा.३।२२-५।०३
१०. गुरु	दि.२।३७-५।१४	रा.१२।००-१।४१।रा.५।४-६।४७
११. शुक्र	दि.९।२३-१२।००	रा.८।३७-१०।१८
१२. शनि	प्रा.६।४६-८।०४।दि.१।१८-२।३७।दि.३।५५-५।१४	सं.५।१४-६।५५।रा.१।४१-३।२३।रा.५।०४-६।४७
१३. रवि	दि.१०।४१-१।१८	रा.१०।१८-१२।००।रा.१।४१-३।२३
१४. सोम	दि.८।०५-९।२३।दि.२।३६-३।५४	रा.१०।१८-१२।००रा.०३।२३-५।०५
३०.मंगल	दि.८।०५-९।२३।दि.१।१८-२।३६	रा.६।५४-८।३६

मा. कृ. २ गु. व. ८।४०।१५।०६
अयनांशा: २२।५४।४७

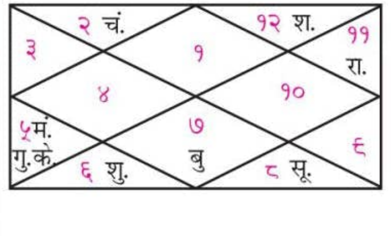

मा. कृ. १० गु. व. ८।४०।१५।१३
अयनांशा: २२।५४।४८

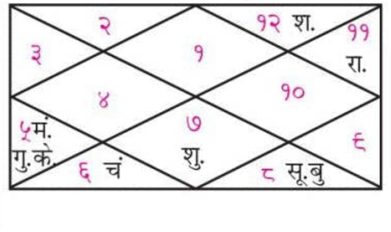

विविध विषय:-रविव्रतं- आदौ वृश्चिकमेषान्ते रविवारो यदा भवेत्। तदा रविव्रतारम्भविसर्गौ शास्त्रसम्मतौ। शुक्लपक्षे व्रतं कुर्यात् सम्यग्देवस्य भास्वत:।। **मार्गशीर्ष काल भौरवाष्टमी-** सा च रात्रिव्यापिनी ग्राह्या। मार्गशीर्षसिताष्टम्यां कालभैरवसन्निधौ। उपोष्य जागरणं कुर्वन् सर्व पापै: प्रमुच्यते। इतिकाशी-खण्डाद्रात्रिव्रतत्वावगते:। 'रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्त्तव्या सम्मुखीतिथि:'। इतिब्रह्मवैवर्तेउच्यते। मार्गकृष्णकालभैरवोत्पत्तिदिनमस्तद्दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्य:।

अष्टाङ्गार्घ:- आप: क्षीरं कुशाग्रानि घृतञ्च दधितण्डुला:। सिद्धार्थकाश्च पुष्पाणि चाष्टङ्गार्घ: प्रकथ्यते।।

अष्टाङ्गप्रणाम:- उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामेऽष्टाङ ईरित:।।

चरणोदकग्रहणमन्त्र:- अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् देव्या: (विष्णो:) पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्।।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८ याम्यगोल:, याम्यायनम्, हेमन्तर्तु: (राहु) पूर्वेकाल:, ता. १७ त: अशुद्धसमय:

दिनांक: ६ दिसम्बर से २४ दिसम्बर २०२६ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	बुध	६०।००	अहोरात्र	ज्ये.३४।४८	रा.८।४२	धृ.१०।५६	किं.२९।१७	वृ.रा.८।४२	७।२३।०५।२६	२६।०३	६।४७	५।१३	३०	२३	९	हरिशो व्रतं, गंड सं. ६।१८ उ. रा. १२।१८ या., विवाह:-द्विरागमनश्च मूले, पश्चिम यात्रा ज्येष्ठायां, अमृतयोग:
१	गुरु	१।४२	प्रा.७।२९	मूल.४१।०६	रा.११।१४	शू.७।२०	बव.१।४२	धनु	७।२४।०६।३८	२६।०२	६।४८	५।१२	१	२४	१०	चन्द्रदर्शनं, पूर्वोत्तर यात्रा, विवाह:-द्विरागमनश्च मूले, सुभिक्षकरं, शिववास: दि. ७।२९ उ., अग्निवास:, दीक्षाग्रहणं प्रा. ७।२९ उ.
२	शुक्र	७।०४	दि.९।३८	पू.षा.४७।३८	रा.१।५१	गं.८।३८	कौ.७।०४	धनु	६।२५।०७।५५	२६।००	६।४८	५।१२	२	२५	११	यशस्पति स्मृति दिवस:, तृतीयायां पूर्वोत्तर यात्रा, विवाह: द्विरागमनश्च उत्तराषाढ़े, शिववास:-मृत्युयोगश्च दि. ९।३८ या., दीक्षाग्रहणं
३	शनि	१२।२९	दि.११।४८	उ.षा.५३।५६	रा.४।२२	वृ.९।५६	गर.१२।२९	ध.दि.८।३३	६।२६।०९।१२	२५।५८	६।४८	५।१२	३	२६	१२	श्री उमामहेश्वर व्रतं, श्री गणेश ४ व्रतं, भद्रा ४५।०० उ., सिद्धियोग: विपणि च दि. ११।४८ या. तत: अग्निवास:
४	रवि	१७।३१	दि.१।४९	श्र.५९।३८	रा.६।४०	ध्रु.१०।५८	वि.१७।३१	मकर	७।२७।१०।२९	२५।५६	६।४९	५।११	४	२७	१३	भद्रा १७।३१ या., भदवारम्भ: रा.६।४० उ., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, द्विरागमनं, शिववास:-अग्निवास:-अमृतयोगश्च दि. १।४९ उ., दीक्षाग्रहणं दि. १।४९ उ.
५	सोम	२१।४८	दि.३।३२	धनि.६०।००	अहोरात्र	व्या.११।३०	बा.२१।४८	म.सं.७।३८	७।२८।११।४५	२५।५५	६।४९	५।११	५	२८	१४	विवाहपंचमी, श्री सीताराम विवाहोत्सव:, जनकपुरे सीतारामदर्शनं, मुण्डनं, विवाह: दिवारात्रौ, द्विरागमनं, गृहप्रवेश:, दक्षिण यात्रा मकरस्थे चंद्रे ततो दक्षिण पश्चिम यात्रा, शिववास:, अग्निवास:-❖
६	मंगल	२५।००	सं.४।४९	धनि.४।२९	दि.८।४५	ह.११।१५	तै.२५।००	कुंभ	७।२९।१३।०३	२५।५४	६।४९	५।११	६	२९	१५	मासान्त:, स्कन्दषष्ठी व्रतं, चम्पाषष्ठी व्रतं, शिववास:-मृत्युयोगश्च सं. ४।४९ या. तत: अमृतयोग:-अग्निवाश्च
७	बुध	२७।०८	सं.५।४०	शत.८।१३	दि.१०।०६	व.१०।०७	व.२७।०८	कु.रा.४।५२	८।००।१४।१९	२५।५३	६।४९	५।११	७	१	१६	भद्रा २७।०८ उ. ५७।३१ या., मूले धनुषि रवि: ३२।०८ या. शुद्ध: मु. ३० फलं साम्यं षडशीति सं. पु. कालो दि. १२।०० उ., खरमासारम्भ:, विजय दिवस:, अग्निवास:, सिद्धियोग: सं. ५।४० या. तत: मृत्युयोग:
८	गुरु	२७।५३	सं.५।५९	पू.भा.१०।४४	दि.११।०८	सि.८।००	बव.२७।५३	मीन	८।०१।१५।३५	२५।५२	६।५०	५।१०	८	२	१७	मासादि:, सोनी स्मृति दिवस:, अमृतयोग: सं. ५।५९ या. तत: मृत्युयोग:
९	शुक्र	२७।१८	सं.५।४५	उ.भा.११।५५	दि.११।३६	व्य.४।५२	कौ.२७।१८	मीन	८।०२।१६।५७	२५।५१	६।५०	५।१०	९	३	१८	दशम्यां उत्तरयात्रा, महानंदा नवमी, शिववास:-अग्निवास:-अमृतयोगश्च सं. ५।४५ या., सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ११।३६ उ.
१०	शनि	२५।३०	सं.५।०२	रे.११।५८	दि.११।३७	वरी.००।४४	गर.२५।३०	मी.दि.११।३७	८।०३।१८।१९	२५।५०	६।५०	५।१०	१०	४	१९	परिघयोग: ५५।००, भद्रा ५४।०५ उ., भदवा समाप्ति: दि. ११।३७ उ., गंड प्रा. ६।४८ उ. १२।४८ या., एकादश्यां पूर्वां विना यात्रा, अग्निवास:-मृत्युयोगश्च सं. ५।०२ या. तत: अमृतयोग:
११	रवि	२२।३९	दि.३।५४	अ.१०।४९	दि.११।१०	शि.४९।५४	वि.२२।३९	मेष	८।०४।१९।४१	२५।४९	६।५०	५।१०	११	५	२०	मोक्षदा-११ व्रतं सर्वेषां, भद्रा २२।३९ या., सूतीस्नानं, संगीता स्मृतिदिवस:, गीताजयन्ती, मृत्युयोग: दि. ३।५४ या. तत: शिववास:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ११।१० या.
१२	सोम	१८।१८	दि.२।०९	भ.८।५०	दि.१०।२२	सि.४३।२५	बा.१८।१८	मे.दि.३।५९	८।०५।२१।०३	२५।४८	६।५०	५।१०	१२	६	२१	केशवद्वादशी, गोमूत्रेण पारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, शिववास:, मृत्युयोग: दि. २।०९ या. तत: अग्निवास:, उमाकान्त स्मृति दिवस:
१३	मंगल	१४।०९	दि.१२।३१	कृ.५।०१	दि.८।५१	सा.३६।१८	तै.१४।०९	वृष	८।०६।२२।२५	२५।४७	६।५१	५।०९	१३	७	२२	प्रदोष-१४ व्रतं, रोहिण्यां पूर्व-दक्षिण यात्रा, सिद्धियोग:-शिववासश्च दि. १२।३१ या. तत: राज्यप्रदयोग:
१४	बुध	८।५३	दि.१०।२४	रो.२।३२	दि.७।५२	शु.२८।४७	व.८।५३	वृ.सं.७।०५	८।०७।२३।४७	२५।४६	६।५१	५।०९	१४	८	२३	मृग. न. ५६।०५, पूर्णिमा व्रतं, भद्रा ८।५३ उ. ३६।४ या., रोहिण्यां पूर्व-दक्षिण यात्रा, सर्वार्थसिद्धियोग:, किसान दिवस:, अग्निवास:, सवार्थसिद्धियोग: दि. ७।५२ या.
१५	गुरु	३।१४	दि.८।०९	आ.५४।२७	दि.४।३८	शु.२०।५९	बव.३।१४	मिथुन	८।०८।२५।०८	२५।४६	६।५१	५।०९	१५	९	२४	मार्गी पूर्णिमा स्नानदानादि:, १ तिथि ५४।०६, क्षेत्र स्नानं, हरिहरनाथपूजनं दर्शनं, भगवान दत्तात्रेयावतार दिवस:, त्रेता युगान्त:, दग्धतिथि: रा. ५। ४७ उ., सिद्धियोग: दि. ८।०९ या. तत: शिववास:

❖ अमृतयोगश्च दि. ३।३२ या. तत: सिद्धियोग:, वक्रीगुरु: ४५।३५, दीक्षाग्रहणं

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. बुध	४।०९।०४।०५	७।११।२६।०४	४।०४।१६।०१	६।०७।२३।३०	११।१२।३५।४८	१०।०२।०१।१६	४३।०१	१६।०९	१७।५३	१९।५०	२२।०७	०।२८	२।४०	४।५५	७।१७	९।३७	११।३८	१३।१४	१४।४२
१. गुरु	४।०९।२२।२२	७।१३।०१।२२	४।०४।१७।१०	६।०८।०९।२८	११।१२।३६।३२	१०।०१।५८।०५	४३।०१	१६।०४	१७।४९	१९।४५	२२।०२	०।२३	२।३५	४।५०	७।१२	९।३२	११।३३	१३।०९	१४।३७
२. शुक्र	४।०९।४३।२३	७।१४।४३।०२	४।०४।१७।०१	६।०९।०२।५०	११।१२।३६।४९	१०।०१।५४।५४	४३।००	१६।००	१७।४५	१९।४१	२१।५८	०।१९	२।३१	४।४६	७।०८	९।२८	११।२९	१३।०५	१४।३३
३. शनि	४।१०।०४।२४	७।१६।२४।४२	४।०४।१६।५२	६।०९।५६।१२	११।१२।३७।०५	१०।०१।५१।४३	४२।५९	१५।५६	१७।४१	१९।३७	२१।५४	०।१५	२।२७	४।४२	७।०४	९।२४	११।२५	१३।०१	१४।२९
४. रवि	४।१०।२५।२४	७।१८।०६।२२	४।०४।१६।४३	६।१०।४९।३४	११।१२।३७।२१	१०।०१।४८।३२	४२।५८	१५।५१	१७।३६	१९।३२	२१।४९	०।११	२।२३	४।३८	६।५९	९।१९	११।२०	१२।५६	१४।२४
५. सोम	४।१०।४६।२४	७।१९।४८।०१	४।०४।१६।३४	६।११।४२।५६	११।१२।३७।३७	१०।०१।४५।२१	४२।५७	१५।४७	१७।३२	१९।२८	२१।४५	०।०७	२।१९	४।३४	६।५५	९।१५	११।१६	१२।५२	१४।२०
६. मंगल	४।११।०७।२४	७।२१।२९।४०	४।०४।१६।२६	६।१२।३६।१८	११।१२।३७।५३	१०।०१।४२।१०	४२।५६	१५।४४	१७।२९	१९।२५	२१।४२	०।०४	२।१६	४।३१	६।५२	९।१२	११।१३	१२।४९	१४।१७
७. बुध	४।११।२८।२४	७।२३।११।१९	४।०४।१६।१८	६।१३।२९।४०	११।१२।३८।०९	१०।०१।३८।५९	४२।५६	१५।३८	१७।२३	१९।१९	२१।३६	२३।५८	२।१०	४।२५	६।४६	९।०६	११।०७	१२।४३	१४।११
८. गुरु	४।११।४९।२४	७।२४।५२।५८	४।०४।१६।१०	६।१४।२३।०१	११।१२।३८।२५	१०।०१।३५।४८	४२।५६	१५।३२	१७।१७	१९।१३	२१।३०	२३।५२	२।०४	४।१९	६।४०	९।००	११।०१	१२।३७	१४।०५
९. शुक्र	४।११।५९।४६	७।२६।३६।०६	४।०४।१४।३७	६।१५।२२।०७	११।१२।३८।५१	१०।०१।३२।३७	४२।५५	१५।२७	१७।१२	१९।०८	२१।२५	२३।४७	१।५९	४।१४	६।३५	८।५५	१०।५६	१२।३२	१४।००
१०. शनि	४।१२।१०।०७	७।२८।१९।१४	४।०४।१३।०४	६।१६।२१।१२	११।१२।३९।१७	१०।०१।२९।२६	४२।५४	१५।२२	१७।०७	१९।०३	२१।२०	२३।४२	१।५४	४।०९	६।३०	८।५०	१०।५१	१२।२७	१३।५५
११. रवि	४।१२।२०।२८	८।००।०२।२२	४।०४।११।३२	६।१७।२०।१७	११।१२।३९।४३	१०।०१।२६।१५	४२।५३	१५।१७	१७।०२	१८।५८	२१।१५	२३।३७	१।४९	४।०४	६।२५	८।४५	१०।४६	१२।२२	१३।५०
१२. सोम	४।१२।३०।४९	८।०१।४५।२९	४।०४।१०।००	६।१८।१९।२२	११।१२।४०।०९	१०।०१।२३।०४	४२।५३	१५।१२	१६।५७	१८।५३	२१।१०	२३।३२	१।४४	३।५९	६।२०	८।४०	१०।४१	१२।१७	१३।४५
१३.मंगल	४।१२।४१।१०	८।०३।२८।३६	४।०४।०८।२८	६।१९।१८।२७	११।१२।४०।३५	१०।०१।१९।५३	४२।५३	१५।०७	१६।५२	१८।४८	२१।०५	२३।२७	१।३९	३।५४	६।१५	८।३५	१०।३६	१२।१२	१३।४०
१४. बुध	४।१२।५१।३१	८।०५।११।४३	४।०४।०६।५६	६।२०।१७।३२	११।१२।४१।००	१०।०१।१६।४२	४२।५३	१५।०२	१६।४७	१८।४३	२१।००	२३।२२	१।३४	३।४९	६।१०	८।३०	१०।३१	१२।०७	१३।३५
१५. गुरु	४।१३।०१।५२	८।०६।५४।५०	४।०४।०५।३४	६।२१।१६।३७	११।१२।४१।२५	१०।०१।१३।३१	४२।५३	१४।५७	१६।४२	१८।३८	२०।५५	२३।१७	१।२९	३।४४	६।०५	८।२५	१०।२६	१२।०२	१३।३०

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.९।२३-१०।४१।दि.१२।००-१।१८	रा.१२।००-१।४१।रा.३।२३-५।०५
दि.२।३६-५।१२	रा.१२।००-१।४२।रा.५।०६-६।४९
दि.९।२४-१२।००	रा.८।३६-१०।१८
प्रा.६।४८-८।०६।दि.१।१८-२।३६।दि.३।५४-५।१२	सं.५।१२-६।५४।रा.१।४२-३।२४।रा.५।०६-६।४९
दि.१०।४२-१।१७	रा.१०।१७-१२।००।रा.१।४२-३।२४
दि.८।६-९।२४।दि.२।३६-३।५३	रा.१०।१७-१२।००।रा.३।२४-५।०६
दि.८।६-९।२४।दि.१।१८-२।३६	रा.६।५४-८।३६
दि.९।२४-१०।४२।दि.१२।००-१।१७	रा.१२।००-१।४२।रा.३।२४-५।०६
दि.२।३५-५।१०	रा.१२।००-१।४२रा.५।०७-६।५१
दि.९।२५-१२।००	रा.८।३५-१०।१७
प्रा.६।५०-८।०७।दि.१।१७-२।३५।दि.३।५२-५।१०	सं.५।१०-६।५२।रा.१।४२-३।२५।रा.५।०७-६।५१
दि.१०।४२-१।१७	रा.१०।१७-१२।००।रा.१।४२-३।२५
दि.८।०७-९।२५।दि.२।३५-३।५२	रा.१०।१७-१२।००।रा.३।२५-५।०७
दि.८।०८-९।२५।दि.१।१७-२।३४	रा.६।५१-८।३४
दि.९।२५-१०।४२।दि.१२।००-१।१७	रा.१२।००-१।४२।रा.३।२५-५।०८
दि.२।३४-५।०९	रा.१२।००-१।४२।रा.५।०८-६।५०

मा. शु. १ गु. व. ८।४०।१५।२०
अयनांशा: २२।५४।४९

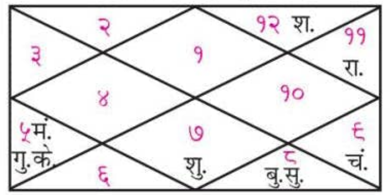

मा. शु. ८ गु. व. ८।४०।१५।२७
अयनांशा: २२।५४।५०

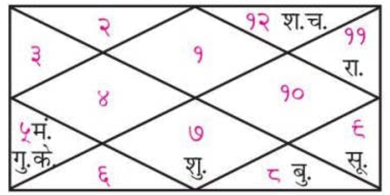

मा. शु. १५ गु. व. ८।४०।१५।३७
अयनांशा: २२।५४।५१

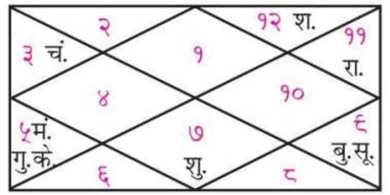

विविधाविषया:-रवौत्याज्यवस्तूनि- क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्। रति: स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्। मार्गादिमासे **रविव्रतभक्ष्याणि-** पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रि:पला: शक्तव: स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्भविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।। **रात्रौ लग्नज्ञानम्-** ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनु:, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ नेर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। **चन्द्रोदयास्तसाधनम्-** तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च।।

पौष कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोलः याम्यायनम्, हेमन्तर्तुः (राहु) पूर्वेकालः, अशुद्धसमयः

दिनांकः २५ दिसम्बर २०२६ से ७ जनवरी २०२७ ई०

तिथयः	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगः दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
२	शुक्र	५१।१७	रा.३।२१	पुन.४६।२७	रा.२।३७	ब्र.१३।०३	तै.२४।१८	मि.रा.६।०७	८।०६।२६।३४	२५।४८	६।५०	५।१०	१६	१०	२५	पौषे कौशिकी स्नानं पुण्यप्रदं, दग्धतिथिः रा. ३।२१ या., अग्निवासः, मृत्युयोगः
३	शनि	४५।४३	रा.१।०७	पु.४६।१८	रा.१।२१	ऐं.५।१३	व.१८।२८	कर्क	८।१०।२७।५६	२५।५०	६।५०	५।१०	१७	११	२६	वैधृति योगः ५२।१८, भद्रा १८।२८ उ. ४५।४३ या.
४	रवि	४०।२५	रा.११।००	श्ले.४२।४३	रा.११।५५	वि.५०।०६	बव.१३।०४	क.रा.११।५५	८।११।२६।२४	२५।५२	६।५०	५।१०	१८	१२	२७	श्री लम्बोदर ४ व्रतं, गंड सं. ७।३१ उ. १।३१ या., शिववासः
५	सोम	३५।३७	रा.६।०८	मघा.३६।४१	रा.१०।४१	प्री.४३।१८	कौ.८।०१	सिंह	८।१२।३०।४६	२५।५३	६।४६	५।११	१९	१३	२८	पूर्व फालगुन्यां उत्तरयात्रा, शिववासः, अमृतयोगः रा. ६।०८ या. ततः सिद्धियोगः
६	मंगल	३१।४२	सं.७।३०	पू.फ.३७।३१	रा.६।४६	आ.३७।०६	गर.३।३६	सिं.रा.३।४७	८।१३।३२।१४	२५।५४	६।४६	५।११	२०	१४	२९	भद्रा ३१।४२ उ., पूर्वाषाढ़े रविः २५।४४, सप्तम्यां पूर्वफालगुन्यां पूर्व यात्रा, मृत्युयोगः, सं. ७।३० या. ततः अमृतयोगः
७	बुध	२८।४०	सं.६।१७	उ.फ.३६।०६	रा.६।१७	सौ.३०।४१	वि.०।११	कन्या	८।१४।३३।३६	२५।५५	६।४६	५।११	२१	१५	३०	सूर्यसप्तमी, गंगा स्नानं सूर्यग्रहण समफलं, भद्रा. ००।११ या., अग्निवासः, सिद्धियोगः सं. ६।१७ या. ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ६।१७ उ.
८	गुरु	२६।४४	सं.५।३१	ह.३५।५५	रा.६।११	शो.२७।०५	कौ.२६।४४	कन्या	८।१५।३५।०४	२५।५६	६।४६	५।११	२२	१६	३१	अपूपाष्टकाष्टमी, अष्टम्यां पूर्व यात्रा, शिववासः-अमृतयोगश्च सं. ५।३१ या. ततः मृत्युयोगः
९	शुक्र	२५।००	सं.४।४८	चि.३६।५२	रा.६।३३	अ.२३।०७	गर.२५।००	क.दि.६।२१	८।१६।३६।३०	२५।५८	६।४८	५।१२	२३	१७	१ ज.	जनवरी- २०२७ ई० आरम्भः, अन्वष्टका नवमी, पूर्व दक्षिण यात्रा, अग्निवासः, अमृतयोगः सं. ४।४८ या.
१०	शनि	२६।३४	सं.५।०२	स्वा.३९।०४	रा.१०।२६	सु.२०।४६	वि.२६।३४	तुला	८।१७।३७।५५	२६।००	६।४८	५।१२	२४	१८	२	एकादश्यां स्वात्यां दक्षिण पश्चिम यात्रा, मृत्युयोगः सं. ५।०२ या. ततः अमृतयोगः-शिववासश्च, सर्वार्थसिद्धियोगः रा. १०।२६ या., विश्व हास्य दिवसः
११	रवि	२८।३०	सं.६।१२	वि.४२।३५	रा.११।५०	धृ.१९।१३	बा.२८।३०	तु.रा.५।२८	८।१८।३९।२०	२६।०२	६।४८	५।१२	२५	१९	३	सफला-११ व्रतं सर्वेषां, श्री पार्श्वनाथ जयंती, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः सं. ६।१२ या.
१२	सोम	३१।२८	रा.७।२२	अनु.४७।१०	रा.१।३६	शू.१८।२६	तै.३१।२८	वृश्चिक	८।१९।४०।४५	२६।०३	६।४७	५।१३	२६	२०	४	गोमयेन पारणम्, शिववासः-मृत्युयोगश्च सं. ७।२२ या., सवार्थसिद्धियोगः रा. १।३६ या., पल्स पोलियो दिवसः
१३	मंगल	३५।४३	रा.९।०४	ज्ये.५२।४४	रा.३।५३	गं.१८।३५	गर.३।३५	वृ.रा.३।५३	८।२०।४२।१०	२६।०४	६।४७	५।१३	२७	२१	५	प्रदोष १३ व्रतं, भद्रा ३५।४३ उ., गंड रा.१।३१ उ., पश्चिम यात्रा, दशतारकारम्भः, अग्निवासः, सिद्धियोगः, रा. ९।०४ या. ततः राज्यप्रदयोगः
१४	बुध	४०।३८	रा.११।०२	मूल.५४।५७	रा.४।४६	वृ.१९।२२	वि.८।१०	धनु.	८।२१।४३।३५	२६।०५	६।४७	५।१३	२८	२२	६	प्रदोष-१४ व्रतं, भद्रा ८।१० या., गंड प्रा. ७।३१ या.
३०	गुरु	४६।०१	रा.१।११	पू.षा.६०।००	अहोरात्र	ध्रु.२०।३२	च.१३।१९	धनु.	८।२२।४५।००	२६।०६	६।४७	५।१३	२९	२३	७	पौषी ३० स्नानदानादिः, पार्वणं, शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्, शिववासः, अग्निवासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथयः दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
२. शुक्र	४।१३।१५।१५	८।०८।३५।२१	४।०४।०३।५५	६।२२।०७।३५	११।१२।४४।५३	१०।०१।१०।२०	४२।५४
३. शनि	४।१३।२८।३८	८।१०।१५।५२	४।०४।०२।१६	६।२२।५८।३३	११।१२।४८।२१	१०।०१।०७।०६	४२।५५
४. रवि	४।१३।४२।००	८।११।५६।२३	४।०४।००।३७	६।२३।४६।३०	११।१२।५१।४६	१०।०१।०३।५८	४२।५६
५. सोम	४।१३।५५।२२	८।१३।३६।५४	४।०३।५८।५८	६।२४।४०।२७	११।१२।५५।१७	१०।०१।००।४७	४२।५७
६. मंगल	४।१४।०८।४४	८।१५।१७।२५	४।०३।५७।१९	६।२५।३१।२४	११।१२।५८।४५	१०।००।५७।३६	४२।५८
७. बुध	४।१४।२२।०६	८।१६।५७।५५	४।०३।५५।४०	६।२६।२२।२१	११।१३।०२।१२	१०।००।५४।२५	४२।५८
८. गुरु	४।१४।३५।२८	८।१८।३८।२५	४।०३।५४।०२	६।२७।१३।१८	११।१३।०५।३६	१०।००।५१।१४	४२।५८
९. शुक्र	४।१४।३७।३६	८।२०।२६।५३	४।०३।४८।२७	६।२८।२५।१८	११।१३।०४।१०	१०।००।४८।०३	४२।५९
१०. शनि	४।१४।३९।५०	८।२२।१५।२१	४।०३।४२।५२	६।२९।३७।१८	११।१३।०८।४०	१०।००।४४।५२	४३।००
११. रवि	४।१४।४२।००	८।२४।०३।४९	४।०३।३७।१७	७।००।४९।१८	११।१३।१०।१०	१०।००।४१।४१	४३।०१
१२. सोम	४।१४।४४।१०	८।२५।५२।१७	४।०३।३१।४२	७।०२।०१।१८	११।१३।११।४०	१०।००।३८।३०	४३।०२
१३.मंगल	४।१४।४६।२०	८।२७।४०।४५	४।०३।२६।०७	७।०३।१२।१८	११।१३।१३।१०	१०।००।३५।१९	४३।०३
१४. बुध	४।१४।४८।३०	८।२९।२९।१३	४।०३।२०।३२	७।०४।२३।१८	११।१३।१४।४०	१०।००।३२।०८	४३।०३
३०. गुरु	४।१४।५०।४०	९।०१।१७।४०	४।०३।१४।५८	७।०५।३४।१८	११।१३।१६।१०	१०।००।२८।५७	४३।०३

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथयः दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
२. शुक्र	१४।५२	१६।३७	१८।३३	२०।५०	२३।१२	१।२४	३।३६	६।००	८।२०	१०।२१	११।५७	१३।२५
३. शनि	१४।४७	१६।३२	१८।२८	२०।४५	२३।०७	१।१९	३।३४	५।५५	८।१५	१०।१६	११।५२	१३।२०
४. रवि	१४।४२	१६।२७	१८।२३	२०।४०	२३।०२	१।१४	३।२६	५।५०	८।१०	१०।११	११।४७	१३।१५
५. सोम	१४।३७	१६।२२	१८।१९	२०।३५	२२।५७	१।०९	३।२४	५।४५	८।०५	१०।०६	११।४२	१३।१०
६. मंगल	१४।३२	१६।१७	१८।११	२०।३०	२२।५२	१।०४	३।१९	५।४०	८।००	१०।०१	११।३७	१३।०५
७. बुध	१४।२७	१६।१२	१८।०६	२०।२५	२२।४७	०।५९	३।१४	५।३५	७।५५	९।५६	११।३२	१३।००
८. गुरु	१४।२२	१६।०७	१८।०१	२०।२०	२२।४२	०।५४	३।०९	५।३०	७।५०	९।५१	११।२७	१२।५५
९. शुक्र	१४।१७	१६।०२	१७।५६	२०।१५	२२।३७	०।४९	३।०४	५।२५	७।४५	९।४६	११।२२	१२।५०
१०. शनि	१४।१२	१५।५७	१७।५१	२०।१०	२२।३५	०।४४	२।५९	५।२०	७।४०	९।४१	११।१७	१२।४५
११. रवि	१४।०७	१५।५२	१७।४६	२०।०५	२२।२७	०।३९	२।५४	५।१५	७।३५	९।३६	११।१२	१२।४०
१२. सोम	१४।०२	१५।४७	१७।४१	२०।००	२२।२२	०।३४	२।४९	५।१०	७।३०	९।३१	११।०७	१२।३५
१३.मंगल	१३।५७	१५।४२	१७।३६	१९।५३	२२।१७	०।२९	२।४४	५।०५	७।२५	९।२६	११।०२	१२।३०
१४. बुध	१३।५२	१५।३७	१७।३१	१९।४८	२२।१२	०।२४	२।३९	५।००	७।२०	९।२१	१०।५७	१२।२५
३०. गुरु	१३।४७	१५।३२	१७।२६	१९।४३	२२।०७	०।१९	२।३४	४।५५	७।१५	९।१६	१०।५२	१२।२०

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथयः दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
२. शुक्र	दि.९।२५-१२।००	रा.८।३५-१०।१७
३. शनि	प्रा.६।५०-८।७।दि.१।१७-२।३५।दि.३।५२-५।१०	सं.५।१०-६।५२।रा.१।४२-३।२५।रा.५।०७-६।५१
४. रवि	दि.१०।४२-१।१७	रा.१०।१७-१२।००।रा.१।४२-३।२५
५. सोम	दि.८।६-९।२४।दि.२।३५-३।५३	रा.१०।१७-१२।००।रा.३।२४-५।०६
६. मंगल	दि.८।६-९।२४।दि.१।१७-२।३५	रा.६।५३-८।३५
७. बुध	दि.९।२४-१०।४२।दि.१२।००-१।१७	रा.१२।०-०१।४२।रा.३।२४-५।०६
८. गुरु	दि.२।३५-५।११	रा.१२।००-१।४२।रा.५।०६-६।४९
९. शुक्र	दि.९।२४-१२।००	रा.८।३६-१०।१८
१०. शनि	प्रा.६।४८-८।०६।दि.१।१८-२।३६।दि.३।५४-५।१२	सं.५।१२-६।५४।रा.१।४२-३।२४।रा.५।०६-६।४७
११. रवि	दि.१०।४२-१।१८	रा.१०।१८-१२००।रा.१।४२-३।२४
१२. सोम	दि.८।०५-९।२३।दि.२।३६-३।५४	रा.१०।१८-१२।००।रा.३।२३-५।०५
१३.मंगल	दि.८।०५-९।२३।दि.१।१८-२।३६	रा.६।५४-८।३६
१४. बुध	दि.९।२३-१०।४१।दि.१२।००-१।१८	रा.१२।००-१।४१।रा.३।२७-५।०५
३०. गुरु	दि.२।३६-५।१३	रा.१२।००-१।४१।रा.५।०५-६।४६

पौ. कृ. ८ गु. व. ८।४०।१५।४१
अयनांशाः २२।५४।५२

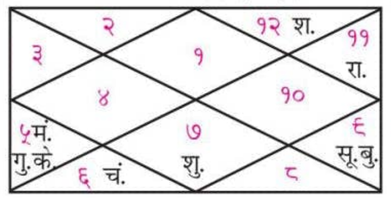

पौ. कृ. ३० गु. व. ८।४०।१५।४८
अयनांशाः २२।५४।५३

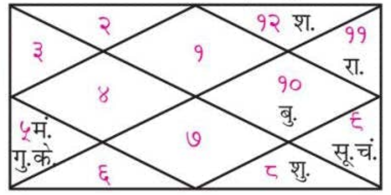

शकुनम्-पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यांतिथौ तोयधरो हि दृश्यः।
तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिःप्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।

दशतारकविचारः- पौषेमूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भ वदेत्फलम्।

गर्भपुष्टिविचारः- वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः।
अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः। तत्र पुष्टेगर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति।

गोचरशन्यादिविचारः- द्विजन्मनि पंचम- सप्त- मगाश्चतुराष्टक द्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्य-विनाशकरा रविराहुशनैश्चर भूमिसुताः।

कौशकिस्नानमन्त्रः- गाधिराजसुते देवि विश्वामित्र मुने श्वसः।
ऋचिकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।

पौषामावास्यायामर्द्धोदययोगो भारतेः- अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता चेत्पौषमाघयोः। अर्द्धोदयः स विज्ञेयः किञ्चिन्न्यूने महोदयः।। किञ्चिन्न्यूने महोदय इति नक्षत्रयोगयोरन्यतरस्याभाव इत्यर्थः। अर्कवासरस्य प्राधान्यादित रुद्रधरीयवर्षकृत्ये। अयमपि योगः दिवैव भवति, दिवैव योगः शस्तोऽयमित्युक्तत्वात्!

पौष शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोल:, याम्यायनम् ता. १५ तः सौम्यायन, हेमन्तर्तु: ता. १५ तः शिशिरर्तु:, (राहु) पूर्वेकाल:,
दिनांक: ८ जनवरी से २२ जनवरी २०२७ ई० अशुद्धसमय: ता. १५ तः शुद्धसमय:

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	शुक्र	५१।२६	रा.३।२२	पू.षा.५।३०	दि.८।५८	व्य.२१।५५	किं.१८।४५	ध.दि.३।३७	८।२३।४६।२४	२६।०८	६।४६	५।१४	३०	२४	८
२	शनि	५६।२६	रा.५।२२	उ.षा.११।५७	दि. ११।३३	ह.२३।०५	बा.२३।५६	मकर	८।२४।४७।४८	२६।१०	६।४६	५।१४	१	२५	९
३	रवि	६०।००	अहोरात्र	श्र.१७।५१	दि. १।५४	व.२३।४८	तै.२८।३५	म.रा.२।५५	८।२५।४९।१२	२६।१२	६।४६	५।१४	२	२६	१०
३	सोम	००।४२	प्रा.७।०२	ध.२२।५५	दि. ३।५५	सि.२३।५०	गर.०।४२	कुम्भ	८।२६।५०।३६	२६।१३	६।४५	५।१५	३	२७	११
४	मंगल	०३।४९	दि.८।१७	शत.२६।५३	सं.५।३०	व्य.२३।००	वि.३।४९	कुम्भ	८।२७।५२।००	२६।१४	६।४५	५।१५	४	२८	१२
५	बुध	०५।४९	दि.९।०५	पू.भा.२९।४४	सं.६।३८	वरी.२१।०६	बा.५।४९	कुं.दि.१२।२१	८।२८।५३।२४	२६।१५	६।४५	५।१५	५	२९	१३
६	गुरु	०६।१८	दि.९।१६	उ.भा.३१।१८	रा.७।१६	प.१८।३१	तै.६।१८	मीन	८।२९।५४।४७	२६।१६	६।४५	५।१५	६	३०	१४
७	शुक्र	०५।४८	दि.९।०३	रे.३५।३६	रा.८।५८	शि.१४।४४	व.५।४८	मीन.रा.८।५८	९।००।५६।०७	२६।१८	६।४४	५।१६	७	१	१५
८	शनि	०३।५४	दि.८।१८	अ.३०।४७	रा.७।०३	सि.१०।०२	बव.३।५४	मेष	९।०१।५७।२७	२६।१९	६।४४	५।१६	८	२	१६
९	रवि	००।५८	प्रा.७।०७	भ.२८।५८	सं.६।१९	सा.४।३०	कौ.०।५८	मे.रा.१२।३	९।०२।५८।४७	२६।२०	६।४४	५।१६	९	३	१७
११	सोम	५२।२३	रा.३।४१	कृ.२६।१७	सं.५।१५	शु.५१।२१	व.२४।५९	वृष	९।०४।००।०६	२६।२१	६।४४	५।१६	१०	४	१८
१२	मंगल	४७।०६	रा.१।०४	रो.२२।५८	दि.३।५५	ब्र.४०।०३	बव.१९।४४	वृ.रा.३।१०	९।०५।०१।२५	२६।२२	६।४४	५।१६	११	५	१९
१३	बुध	४१।२६	रा.११।१७	मृ.१९।०९	दि.२।२३	ऐ.३६।१९	कौ.१४।१६	मिथुन	९।०६।०२।४४	२६।२३	६।४३	५।१७	१२	६	२०
१४	गुरु	३५।३१	रा.८।५५	आ.१५।०५	दि.१२।४५	वै.२८।२७	गर.८।२८	मि.रा.५।३०	९।०७।०४।०३	२६।२४	६।४३	५।१७	१३	७	२१
१५	शुक्र	२९।४०	सं.६।३४	पुन.१०।५४	दि.११।०४	वि.२०।३३	वि.२।३५	कर्क	९।०८।०५।१६	२६।२८	६।४२	५।१८	१४	८	२२

दग्धतिथि: रा. ३।२२ उ. पूर्वाषाढ़े पूर्वोत्तर यात्रा, अग्निवास:, सिद्धियोग:

चन्द्रदर्शनं सुभिक्षकरं, दग्धतिथि: रा. ५।२२ या., शिववास:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ११।३३ उ., प्रवासी भारतीय दिवस:

❖ सौर नेपाली माघ मासारम्भ:, भारतीस सेना दिवस:, प्रयाग कल्पवासारम्भ:, मृत्युयोग: दि. ९।०३ या ततः अग्निवास:, दीक्षाग्रहणं

भदवारम्भ: दि. १।५४ उ., श्रवणायां पश्चिमां विना यात्रा, विश्व हिन्दी दिवस:, सिद्धियोग:

श्री गणेश-४ व्रतं भद्रा ३२।१६ उ., उत्तराषाढ़े रवि: ३८।०९, अग्निवास: दि. ७।०२ उ.

भद्रा ३।४९ या., अग्निवास:-राज्यप्रदयोगश्च दि. ८।१७ या. ततः शिववास:, स्वामी विवेकानन्द जयंती, राष्ट्रिय युवा दिवस:

पूर्वभाद्रे धान्यरोपणं, शिववास:, अग्निवास:-अमृतयोगश्च दि. ९।०५ उ.

मूलकषष्ठी, मकरे रवि: ५१।४६ मु. ३० फलं साम्यं, मासान्त:, खरमास स. ५१।२६, शिववास:-अग्निवासश्च दि. ९।१६ या., सर्वार्थसिद्धियोग: रा. ७।१६ उ.

भद्रा ५।४८ उ. ३४।५१ या., मकरसंक्रांति सौम्यायन संक्रान्ति पुण्यकाल: दि. घं. १२ या., सर्वार्थसिद्धियोग: रा. ८।५८ या. ततः भदवासमाप्ति:, गंड दि. ४।१० उ. रा. १०।१० या., गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती,❖

अष्टलक्षण:, शकुनम्-अष्टम्यांच नवम्याञ्च पौषशुक्लेऽश्विनी यदि। सप्तम्यां रेवती विन्दु-हिमवातै: शुभावहा।। मासादि: दशतारकान्त, अग्निवास: दि. ८।१८ या. ततः शिववास:-सिद्धियोगश्च

१० तिथि ५६।०७, शुभयोग: ५३।४६, शिववास:-प्रा. ७।०७ या. ततः अमृतयोग:, अग्निवास:

पुत्रदा ११ व्रतं स्मार्तानां, विवाह:-गृहप्रवेशश्च रोहिण्यां, एकादशीव्रतोद्यापनं, भद्रा दि. २४।५९ उ. रा. ५२।२३ या., दग्धतिथि: रा. ३।४१ उ., सिद्धियोग:, सवार्थसिद्धियोग: दि. ५।१५ उ.

वैष्णवानामेकादशीव्रतं, नारायण द्वादशी, गोमयेन पारणम्, दग्धतिथि: रा. १।४ या., सूतीस्नानं, पूर्वदक्षिण यात्रा मृगशिरसि, उत्तरां विना यात्रा, शिववास:, अग्निवास:, अमृतयोग: रा. १।०४ या. ततः सिद्धियोग:

प्रदोष १३ व्रतं, मुण्डनं, देवादिप्रतिष्ठा-गृहप्रवेश्च मृगशिरसि., शिववास:, मृत्युयोग: रा. ११।१७ या, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. २।२३ या.

प्रदोष १४ व्रतं, भद्रा ३५।३१ उ., अग्निवास:, मृत्युयोग: रा. ८।५५ या. ततः सिद्धियोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. १२।४५ उ.

पौषी पूर्णिमा, स्नानदानादि:, कौशिकी स्नानं, देवादिप्रतिष्ठा-गृहारम्भश्च पूर्णिमायां, भद्रा २।३५ या., सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ११।०४ या.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम् / अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. शुक्र	४।१४।४७।४०	९।०२।५३।४०	४।०३।०९।३३	७।०६।३९।५२	११।१३।१९।४४	१०।००।२५।४६	४३।०४	१३।४२	१५।२७	१७।२१	१९।३८	२२।०३	०।१५	२।३०	४।५६	७।।११	९।१२	१०।४८	१२।१६	दि.९।२३-१२।००	रा.८।३७-१०।१८
२. शनि	४।१४।४४।४०	९।०४।२९।४०	४।०३।०४।०८	७।०७।४५।२५	११।१३।२३।१८	१०।००।२२।३५	४३।०५	१३।३९	१५।२४	१७।१८	१९।३५	२१।५९	०।११	२।२६	४।५२	७।०७	९।०८	१०।४४	१२।१२	प्रा.६।४६-८।०४।दि.१।१८-२।३७।दि.३।५५-५।१४	सं.५।१४-६।५५।रा.१।४१-३।२३।रा.५।०४-६।४५
३. रवि	४।१४।४१।४०	९।०६।०५।३९	४।०२।५८।४३	७।०८।५०।५८	११।१३।२६।५२	१०।००।१९।२४	४३।०६	१३।३६	१५।२१	१७।१५	१९।३२	२१।५६	०।०८	२।२३	४।४९	७।०४	९।०५	१०।४१	१२।०९	दि.१०।४१-१।१८	रा.१०।१८-१२।००।रा.१।४१-३।२३
३. सोम	४।१४।३८।४०	९।०७।४१।३८	४।०२।५३।१८	७।०९।५६।३१	११।१३।३०।२६	१०।००।१६।१३	४३।०७	१३।३२	१५।१७	१७।११	१९।२८	२१।५२	०।०४	२।१९	४।४५	७।००	९।०१	१०।३७	१२।०५	दि.८।०३-९।२२।दि.२।३७-३।५६	रा.१०।१८-१२।००।रा.३।२३-५।०३
४. मंगल	४।१४।३६।४०	९।०९।१७।३७	४।०२।४७।५३	७।११।०२।०४	११।१३।३४।००	१०।००।१३।०२	४३।०८	१३।२८	१५।१३	१७।०७	१९।२४	२१।४८	०।००	२।१५	४।४१	६।५६	८।५७	१०।३३	१२।०१	दि.८।०३-९।२२।दि.१।१८-२।३७	रा.६।५६-८।३७
५. बुध	४।१४।३४।४०	९।१०।५३।३६	४।०२।४२।२९	७।१२।०७।३७	११।१३।३७।३३	१०।००।०९।५१	४३।०८	१३।२४	१५।०९	१७।०३	१९।२०	२१।४४	२३।५६	२।११	४।३७	६।५२	८।५३	१०।२९	११।५७	दि.९।२२-१०।४१।दि.१२।००-१।१८	रा.१२।००-१।४१।रा.३।२२-५।०३
६. गुरु	४।१४।३१।५०	९।१२।२९।३५	४।०२।३७।०५	७।१३।१३।१०	११।१३।४१।०६	१०।००।०६।४०	४३।०८	१३।२०	१५।०५	१७।००	१९।१६	२१।४०	२३।५२	२।०७	४।३३	६।४८	८।४९	१०।२५	११।५३	दि.२।३७-५।१५	रा.१२।००-१।४१।रा.५।०३-६।४४
७. शुक्र	४।१४।२६।०४	९।१३।५३।४३	४।०२।३०।४५	७।१४।२०।२०	११।१३।४५।२८	१०।००।०३।२९	४३।०९	१३।१६	१५।०१	१६।५६	१९।१२	२१।३६	२३।४८	२।०३	४।२९	६।४४	८।४५	१०।२१	११।४९	दि.९।२२-१२।००	रा.८।३८-१०।१९
८. शनि	४।१४।१९।२८	९।१५।१७।५१	४।०२।२४।२५	७।१५।२७।३०	११।१३।४९।५०	१०।००।००।१८	४३।१०	१३।११	१४।५६	१६।५१	१९।०७	२१।३१	२३।४३	१।५८	४।२४	६।३९	८।४०	१०।१६	११।४४	प्रा.६।४४-८।०३।दि.१।१९-२।३८।दि.३।५७-५।१६	सं.५।१६-६।५७।रा.१।४१-३।२२।रा.५।०३-६।४३
९. रवि	४।१४।१२।५२	९।१६।४१।५९	४।०२।१८।०५	७।१६।३४।४०	११।१३।५४।१२	९।२९।५७।०७	४३।११	१३।०६	१४।५१	१६।४६	१९।०२	२१।२६	२३।३८	१।५३	४।१९	६।३४	८।३५	१०।११	११।३९	दि.१०।४१-१।१९	रा.१०।१९-१२।००।रा.१।४१-३।२२
११. सोम	४।१४।०६।१६	९।१८।०६।०७	४।०२।११।४५	७।१७।४१।५०	११।१३।५८।३४	९।२९।५३।५६	४३।१२	१३।०१	१४।४६	१६।४१	१८।५७	२१।२१	२३।३३	१।४८	४।१४	६।२९	८।३०	१०।०६	११।३४	दि.८।०३-९।२२।दि.२।३८-३।५७	रा.१०।१९-१२।००।रा.३।२२-५।०३
१२.मंगल	४।१३।५९।४०	९।१९।३०।१५	४।०२।०५।२५	७।१८।४८।५९	११।१४।०२।५५	९।२९।५०।४५	४३।१२	१२।५७	१४।४२	१६।३७	१८।५३	२१।१७	२३।२९	१।४४	४।१०	६।२५	८।२६	१०।०२	११।३०	दि.८।०३-९।२२।दि.१।१९-२।३८	रा.६।५७-८।३८
१३. बुध	४।१३।५३।०५	९।२०।५४।२३	४।०१।५९।०५	७।१९।५६।०८	११।१४।०७।१६	९।२९।४७।३४	४३।१२	१२।५२	१४।३७	१६।३३	१८।४८	२१।१३	२३।२४	१।३९	४।०५	६।२०	८।२१	९।५७	११।२५	दि.९।२१-१०।४०।दि.१२।००-१।१९	रा.१२।००-१।४०।रा.३।२१-५।०२
१४. गुरु	४।१३।४६।५०	९।२२।२८।३०	४।०१।५२।४६	७।२१।०३।१७	११।१४।११।३७	९।२९।४४।२३	४३।१२	१२।४७	१४।३२	१६।२७	१८।४३	२१।०७	२३।१९	१।३४	४।००	६।१५	८।१६	९।५२	११।२०	दि.२।३८-५।१७	रा.१२।००-१।४०।रा.५।०२-६।४२
१५. शुक्र	४।१३।३४।४८	९।२३।३७।३२	४।०१।४५।३६	७।२२।११।२६	११।१४।१६।२६	९।२९।४१।१२	४३।१४	१२।४३	१४।२८	१६।२३	१८।३९	२१।०३	२३।१५	१।३०	३।५६	६।११	८।१२	९।४८	११।१६	दि.९।२१-१२।००	रा.८।३८-१०।१९

पौ. शु. ६ गु. व. ८।४०।१५।५५
अयनांशा: २२।५४।५४

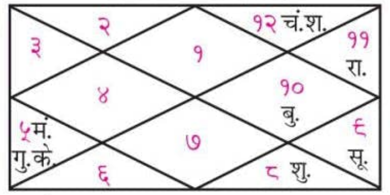

पौ. शु. १४ गु. व. ८।४०।१६।०२
अयनांशा: २२।५४।५५

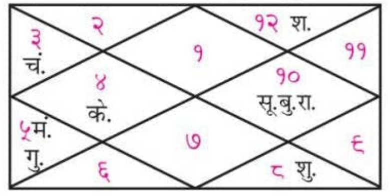

विविधविषय:-शकुनम्-पौषस्य यदि पञ्चम्यां शुक्लायां हिमवर्षणम्।
तदा स्यान्महती वृष्टि: प्रावृट् काले न संशय:।

शकुनम्- पौषशुक्ले तु सप्तम्यामष्टम्यां नवमीतिथौ।
यदि गर्जति पर्जन्य: शुभो गर्भस्तदा ध्रुव:।

शकुनम्- पौषे मेघ: शुक्लषष्ठ्यां श्रावणे तर्हि वर्षणम्।
यदि वृष्टि: पौषषष्ठ्यां भाद्रकृष्णे घनोदय:।।

शंकुनम्- पौषशुक्लचतुर्दश्यां विद्युद्दर्शनमुत्तमम्।
तेनाषाढे कृष्णपक्षे भवेन्मेघमहोदय:।।

वैष्णवानामेकादशी व्रत निर्णय:- दशमी पञ्चपञ्चाशत् घटीकाचेत् प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत्। दशमीपलमात्रेण त्याज्या। चैकादशी तिथि:। मदिराविन्दुपातेन त्याज्या गंगा घटो यथा। **नारदपुराणानुसारेण**-क्षये वाप्यथवावृद्धौ संप्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यां तु पारणम्। **कुर्मपुराणानुसारेण**-तिथिक्षये तु संप्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन। **भविष्ये**-दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्याद् अरुणोदय:। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशी व्रतम्।। **बुधाष्टमी पर्व-** पौषे मासि यदा देविशुक्लाष्टम्यां बुधो भवेत्। तदा तु सा महापुण्या महाभद्रेति कीर्त्तिया।। तस्यां स्नानं जपो होमस्तर्पणं विप्रभोजनम्। मत्प्रीतयेकृतं देविशत-साहस्त्रकं भवेत्।।

माघ कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोल:, सौम्यायनम्, शिशिरर्तु:, (राहु) पूर्वेकाल:, शुद्धसमय:

दिनांक: २३ जनवरी से ६ फरवरी २०२७ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	शनि	२४।००	दि.४।१८	पुष्य.६।५१	दि.९।२६	प्री.१२।५१	कौ.२४।००	कर्क	९।०९।०६।२९	२६।३२	६।४२	५।१८	१५	९	२३	माघे (मकरे) कमलास्नानं पुण्य प्रदं, माघे मूलकंत्याज्यं, गंड रा. ३।३३ उ., पुष्ये पूर्वां विना यात्रा, शिवबास:-अग्निवास:-अमृतयोगश्च दि. ४।१८ या., विपणि दि. ९।२६ या., सुभाष जयंती
२	रवि	१८।४५	दि.२।११	श्ले.३।१०	दि.७।५७	आ.५।२३	गर.१८।४५	क.दि.७।५७	९।१०।०७।४२	२६।३६	६।४१	५।१९	१६	१०	२४	मघा न. ५६।४९, सौ. योग: ५२।५९, श्रवणे रवि: ४१।१४, गंड दि. ९।३३ या., अग्निवास:, सिद्धियोग: दि. २।११ उ. विवाहो मघायां, दीक्षाग्रहणं दि. ७।५७ उ.
३	सोम	१४।०२	दि.१२।१७	पू.फ.५६।५९	रा.५।२८	शो.५१।५९	वि.१४।०२	सिंह	९।११।०८।५५	२६।३९	६।४०	५।२०	१७	११	२५	श्री भालचन्द्र-४ व्रतं, भद्रा १४।०२ या., शिववास: दि. १२।१७ उ., दीक्षाग्रहणं दि. १२।१७ या., मतदाता दिवस:
४	मंगल	१०।१३	दि.१०।४५	उ.फ.५६।०५	रा.५।०६	अ.४६।१७	बा.१०।१३	सि.दि.११।२२	९।१२।१०।०८	२६।४२	६।४०	५।२०	१८	१२	२६	गणतंत्र दिवस: राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकं राष्ट्रगाणं, शिववास:, अग्निवास:, राज्यप्रदयोग: दि. १०।४५ या.
५	बुध	०७।१७	दि.९।३४	ह.५५।३६	रा.४।५३	सु.४१।२६	तै.९।१७	कन्या	९।१३।११।२१	२६।४५	६।३९	५।२१	१९	१३	२७	पूर्वदक्षिण यात्रा हस्ते, सर्वार्थसिद्धियोग:, शिववास: दि. ९।३४ या. तत: अमृतयोग:, मुण्डनं, विपणि
६	गुरु	५।२७	दि.८।४९	चि.५६।१७	रा.५।०९	धृ.३७।२९	व.५।२७	क.सं.५।००	९।१४।१२।३३	२६।४८	६।३८	५।२२	२०	१४	२८	भद्रा ५।२७ उ. ३५।०९ या., विवाहो दिवारात्रौ, पूर्व यात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो पश्चिम यात्रा, अग्निवास:
७	शुक्र	०४।५१	दि.८।३४	स्वा.५८।१४	रा.५।५६	शू.३४।३२	बव.४।५१	तुला	९।१५।१३।३३	२६।५२	६।३८	५।२२	२१	१५	२९	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, विवाहो स्वात्यां, मृत्युयोग: दि. ८।३४ या. तत: शिववास:
८	शनि	०५।३१	दि.८।४९	वि.६०।००	अहोरात्र	गं.३२।३६	कौ.५।३१	तु.रा.१।००	९।१६।१४।३२	२६।५५	६।३७	५।२३	२२	१६	३०	शाकाष्टकाष्टमी, अपराह्ने अष्टका श्राद्धम्, अग्निवास:, शिववास: दि. ८।४९ या., शहीद दिवस:
९	रवि	०७।३९	दि.९।४०	वि.१।२७	प्रा.७।११	वृ.३१।३७	गर.७।३९	वृश्चिक	९।१७।१५।३१	२६।५८	६।३६	५।२४	२३	१७	३१	अन्वष्टकानवमी, भद्रा ३९।२४ उ., अनवष्टकाश्राद्धम्, अग्निवास:-अमृतयोग:-विपणि च दि. ९।४० उ., विवाहो दशम्यां
१०	सोम	११।०८	दि.११।०३	अनु.५।४६	दि.८।५४	ध्रु.३१।३१	वि.११।०८	वृश्चिक	९।१८।१६।३०	२७।०१	६।३६	५।२४	२४	१८	१ फ.	फरवरी मासारम्भ:, भद्रा-११।०८ या., पश्चिमोत्तर यात्रा, अग्निवास:-अमृतयोगश्च दि. ११।०३ या. तत: शिववास:-सिद्धियोगश्च, सर्वार्थसिद्धियोग:-विपणि च दि. ८।५४ या.
११	मंगल	१४।५४	दि.१२।३३	ज्ये.११।०९	दि.११।०३	व्या.३२।१४	बा.१४।५४	वृ.दि.११।०३	९।१९।१७।२९	२७।०४	६।३५	५।२५	२५	१९	२	षटतिला-११ व्रतं सर्वेषां, दग्ध तिथि: दि. १२।३३ उ., गंड दि. ८।३९ उ. दि. २।३९ या., शिववास:, मृत्युयोग: दि. १२।३३ या. तत: अमृतयोग:-अग्निवासश्च
१२	बुध	१९।५९	दि.२।३५	मूल.१७।१४	दि.१।२९	ह.३३।२०	तै.१९।५९	धनु	९।२०।१८।२८	२७।०७	६।३५	५।२५	२६	२०	३	गोदुग्धेन पारणम्, दग्धतिथि: दि. २।३५ या., प्रदोष १३ व्रतम्, शिववास:-अग्निवास:-सिद्धियोगश्च दि. २।३५ या. तत: मृत्युयोग:
१३	गुरु	२५।२२	दि.४।४३	पू.षा.२३।४७	दि.४।०५	व.३४।४२	व.२५।२२	ध.रा.१०।४६	९।२१।१९।२७	२७।१०	६।३४	५।२६	२७	२१	४	भद्रा २५।२२ उ. ५८।०१ या., पूर्वाषाढ़े पूर्वोत्तर यात्रा, नरकनिवारणचतुदर्शी, अमृतयोग: दि. ४।४३ या. तत: अग्निवास:-मृत्युयोगश्च
१४	शुक्र	३०।४०	रा.६।४९	उ.षा.३०।१६	सं.६।३९	सि.३६।०१	श.३०।४०	मकर	९।२२।२०।२७	२७।१४	६।३३	५।२७	२८	२२	५	प्रदोष १४ व्रतं, अर्कोदयात् पूर्व यम तर्पणं, अग्निवास:, अमृतयोग: रा. ६।४९ या. तत: सवार्थसिद्धियोग:
३०	शनि	३५।३७	रा.८।४७	श्र.३६।१८	रा.९।०३	व्य.३६।५७	च.३।०८	मकर	९।२३।२१।२६	२७।१८	६।३२	५।२८	२९	२३	६	माघी ३० स्नानदानादि:, मौनी अमावस्या, पार्वणं, धनिष्ठायां रवि: ४७।०५, भदवारम्भ: रा. ९।०३ उ., शिववास:, सवार्थसिद्धियोग: रा. ९।०३ या. तत: अमृतयोग:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. शनि	४।१३।२३।०७	९।२४।४६।३४	४।०१।३८।२६	७।२३।१९।४१	११।१४।२१।२०	९।२९।३८।०१	४३।१६
२. रवि	४।१३।११।२६	९।२५।५५।३६	४।०१।३१।१७	७।२४।२७।५३	११।१४।२६।११	९।२९।३४।५०	४३।१४
३. सोम	४।१२।५९।४५	९।२७।०४।३८	४।०१।२४।०८	७।२५।३६।०५	११।१४।३१।०२	९।२९।३१।३९	४३।२०
४. मंगल	४।१२।४८।०४	९।२८।१३।३९	४।०१।१६।५९	७।२६।४४।१७	११।१४।३५।५३	९।२९।२८।२८	४३।२२
५. बुध	४।१२।३६।२३	९।२९।२२।४०	४।०१।०९।५०	७।२७।५२।२९	११।१४।४०।४४	९।२९।२५।१७	४३।२३
६. गुरु	४।१२।२४।४२	१०।००।३१।४१	४।०१।०२।४१	७।२९।००।४१	११।१४।४५।३५	९।२९।२२।०६	४३।२४
७. शुक्र	४।१२।०९।०९	१०।०१।२०।२२	४।००।५४।४२	८।००।१०।१२	११।१४।५१।१९	९।२९।१८।५५	४३।२६
८. शनि	४।११।५३।३६	१०।०२।०९।०२	४।००।४७।४३	८।०१।१९।४३	११।१४।५७।०२	९।२९।१५।४४	४३।२८
९. रवि	४।११।३८।०३	१०।०२।५७।४२	४।००।३९।४४	८।०२।२९।१४	११।१५।०२।४५	९।२९।१२।३३	४३।३०
१०. सोम	४।११।२२।३१	१०।०३।४६।२२	४।००।३१।४६	८।०३।३८।४५	११।१५।०८।२८	९।२९।०९।२२	४३।३२
११.मंगल	४।११।०६।५९	१०।०४।३५।०२	४।००।२३।४८	८।०४।४८।१६	११।१५।१४।११	९।२९।०६।११	४३।३३
१२. बुध	४।१०।५१।२७	१०।०५।२३।४२	४।००।१५।५०	८।०५।५६।४७	११।१५।१९।५४	९।२९।०३।००	४३।३४
१३. गुरु	४।१०।३५।५५	१०।०६।१३।२२	४।००।०६।५२	८।०७।०७।१७	११।१५।२५।३७	९।२८।५९।४९	४३।३५
१४. शुक्र	४।१०।०४।५२	१०।०६।०४।५८	३।२९।५८।४८	८।०८।१७।५०	११।१५।३१।२१	९।२८।५६।३८	४३।३७
३०. शनि	४।०९।३३।५०	१०।०५।५६।३४	३।२९।५०।४४	८।०९।२८।२३	११।१५।३७।०५	९।२८।५३।२७	४३।३९

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. शनि	१२।३८	१४।२३	१६।१८	१८।३४	२०।५८	२३।१०	१।२५	३।५१	६।०६	८।०७	९।४३	११।११
२. रवि	१२।३३	१४।१८	१६।१३	१८।२९	२०।५३	२३।०५	१।२०	३।४६	६।०१	८।०२	९।३८	११।०६
३. सोम	१२।२९	१४।१४	१६।०९	१८।२५	२०।४९	२३।०१	१।१६	३।४२	५।५७	७।५८	९।३४	११।०२
४. मंगल	१२।२४	१४।०९	१६।०४	१८।२०	२०।४४	२२।५६	१।११	३।३७	५।५२	७।५३	९।२९	१०।५७
५. बुध	१२।१९	१४।०४	१६।००	१८।१५	२०।३९	२२।५१	१।०६	३।३२	५।४७	७।४८	९।२४	१०।५२
६. गुरु	१२।१५	१४।००	१५।५५	१८।११	२०।३५	२२।४७	१।०२	३।२८	५।४३	७।४४	९।२०	१०।४८
७. शुक्र	१२।१०	१३।५५	१५।५०	१८।०६	२०।३०	२२।४२	०।५७	३।२३	५।३८	७।३९	९।१५	१०।४३
८. शनि	१२।०५	१३।५०	१५।४५	१८।०१	२०।२५	२२।३७	०।५२	३।१८	५।३३	७।३४	९।१०	१०।३८
९. रवि	१२।००	१३।४५	१५।४०	१७।५६	२०।२०	२२।३२	०।४७	३।१३	५।२८	७।२९	९।०५	१०।३३
१०. सोम	११।५६	१३।४१	१५।३६	१७।५२	२०।१६	२२।२८	०।४३	३।०९	५।२४	७।२५	९।०१	१०।२९
११.मंगल	११।५१	१३।३६	१५।३१	१७।४७	२०।११	२२।२३	०।३८	३।०४	५।१९	७।२०	८।५६	१०।२४
१२. बुध	११।४६	१३।३१	१५।२६	१७।४२	२०।०६	२२।१८	०।३४	३।००	५।१४	७।१५	८।५१	१०।१९
१३. गुरु	११।४१	१३।२६	१५।२१	१७।३७	२०।०१	२२।१३	०।२८	२।५५	५।०९	७।१०	८।४६	१०।१४
१४. शुक्र	११।३७	१३।२२	१५।१७	१७।३३	१९।५६	२२।०९	०।२४	२।५१	५।०५	७।०६	८।४२	१०।१०
३०. शनि	११।३२	१३।१७	१५।१२	१७।२८	१९।५१	२२।०४	०।१९	२।४६	५।००	७।०१	८।३७	१०।०५

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथिय: दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. शनि	प्रा.६।४२-८।०१।दि.१।१९-२।३९।दि.३।५८-५।१८	सं.५।१८-६।५८।रा.१।४०-३।२१।रा.५।०१-६।४१
२. रवि	दि.१०।४०-१।१९	रा.१०।१९-१२।००।सं.१।४०-३।२०
३. सोम	दि.८।००-९।२०।दि.२।४०-४।००	रा.१०।२०-१२।००।रा.३।२०-५।००
४. मंगल	दि.८।००-९।२०।दि.१।२०-२।४०	रा.७।००-८।४०
५. बुध	दि.९।१९-१०।३९।दि.१२।००-१।२०	रा.१२।००-१।३९।रा.३।१९-४।५९
६. गुरु	दि.२।४१-५।२२	रा.१२।००-१।३९।रा.४।५८-६।३७
७. शुक्र	दि.९।१९-१२।००	रा.८।४१-१०।२०
८. शनि	प्रा.६।३७-७।५७।दि.१।२०-२।४१।दि.४।०२-५।२३	सं.५।२३-७।२।रा.१।३९-३।१८।रा.४।५७-६।३६
९. रवि	दि.१०।३९-१।२१	रा.१०।२१-१२।००।रा.१।३९-३।१८
१०. सोम	दि.७।५७-९।१८।दि.२।४२-४।०३	रा.१०।२१-१२।००।रा.३।१८-४।५७
११.मंगल	दि.७।५६-९।१७।दि.१।२१-२।४२	रा.७।३-८।४२
१२. बुध	दि.९।१७-१०।३८।दि.१२।००-१।२१	रा.१२।००-१।३८।रा.३।१७-४।५६
१३. गुरु	दि.२।४३-५।२६	रा.१२।००-१।३८।रा.४।५५-६।३३
१४. शुक्र	दि.९।१६-१२।००	रा.८।४३-१०।२१
३०. शनि	प्रा.६।३२-७।५४।दि.१।२२-२।४४।दि.४।०६-५।२८	रा.५।२८-७।६।रा.१-३८-३।१६।रा.४।५४-६।३१

मा. कृ. ६ गु. व. ८।४०।१६।०६
अयनांशा: २२।५४।५६

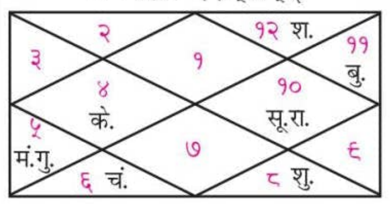

मा. कृ. १३ गु. व. ८।४०।१६।१६
अयनांशा: २२।५४।५७

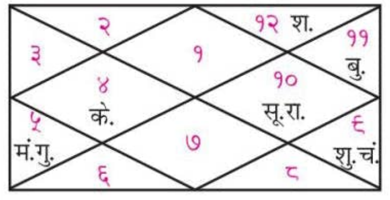

विविधविषया:- माघे प्रात: स्नानफलं-यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभ्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।।

मकरार्के प्रात:स्नानमन्त्र:- मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दच्युत माधव। प्रात: स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दु:खदारिद्र्यानाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रात: स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।।

माघे कुत्रापि स्नानफलम्- स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्त्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे।।

चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्ति:- सर्वदेवमय: साक्षात्सर्वमंगलकारक:। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिप:।। तत्र गणेशं यथोपचारै: संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्।

चतुर्दश्यां नरकनिवारण चतुर्दशीव्रतं- चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय:।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।

तिथयः	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगः दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	रवि	३६।४४	रा.१०।२६	ध.४१।३८	रा.११।११	वरी.३७।१६	कि.७।४०	म.दि.१०।०६	६।२४।२२।२५	२७।२२	६।३२	५।२८	३०	२४	७
२	सोम	४२।४२	रा.११।३६	शत.४५।५२	रा.१२।५२	प.३६।४६	बा.११।१३	कुम्भ	६।२५।२३।२४	२७।२५	६।३१	५।२६	१	२५	८
३	मंगल	४४।३४	रा.१२।२३	पू.भा.४६।००	रा.२।६	शि.३५।२५	तै.१३।३८	कु.सं.७।४७	६।२६।२४।२३	२७।२८	६।३०	५।३०	२	२६	९
४	बुध	४५।०५	रा.१२।३२	उ.भा.५०।५२	रा.२।५१	सि.३३।०२	व.१४।४६	मीन	६।२७।२५।२२	२७।३१	६।३०	५।३०	३	२७	१०
५	गुरु	४४।१६	रा.१२।११	रे.५१।२८	रा.३।०४	सा.२६।३८	बव.१४।४०	मी.रा.३।४	६।२८।२६।२१	२७।३४	६।२६	५।३१	४	२८	११
६	शुक्र	४२।१६	रा.११।२२	अ.५०।५३	रा.२।४६	शु.२५।१४	कौ.१३।१६	मेष	६।२९।२७।०८	२७।३८	६।२८	५।३२	५	२९	१२
७	शनि	३६।१३	रा.१०।०९	भ.४६।१६	रा.२।१०	शु.२०।०१	गर.१०।४४	मेष	१०।००।२७।५५	२७।४१	६।२८	५।३२	६	१	१३
८	रवि	३५।१५	रा.८।३३	कृ.४६।५०	रा.१।११	ब्र.१४।०१	वि.७।१४	मे.दि.७।५५	१०।०१।२८।४२	२७।४४	६।२७	५।३३	७	२	१४
९	सोम	३०।२८	सं.६।३८	रो.४३।४०	रा.११।५५	ऐं.७।२३	बा.२।५१	वृष	१०।०२।२९।२९	२७।४७	६।२७	५।३३	८	३	१५
१०	मंगल	२५।०८	दि.४।२६	मृ.३९।५७	रा.१०।२५	वै.०।१२	गर.२५।०८	वृ.दि.११।१०	१०।०३।३०।१६	२७।५०	६।२६	५।३४	९	४	१६
११	बुध	१९।२६	दि.२।११	आ.३५।५५	रा.८।४७	प्री.४४।५५	वि.१९।२६	मिथुन	१०।०४।३१।०३	२७।५३	६।२५	५।३५	१०	५	१७
१२	गुरु	१३।२९	दि.११।४९	पुन.३१।४५	रा.७।०७	आ.३७।०२	बा.१३।२९	मि.दि.१।३२	१०।०५।३१।५०	२७।५६	६।२५	५।३५	११	६	१८
१३	शुक्र	०७।३५	दि.९।२६	पुष्य.२७।४२	सं.५।२९	सौ.२९।२८	तै.७।३५	कर्क	१०।०६।३२।२५	२८।००	६।२४	५।३६	१२	७	१९
१४	शनि	०१।५५	दि.७।०९	श्ले.२३।५५	दि.३।५७	शो.२१।४७	व.१।५५	क.दि.३।५७	१०।०७।३३।००	२८।०४	६।२३	५।३७	१३	८	२०

माघ शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, (राहु) पूर्वेकालः, ता. १३ तः दक्षिणेकालः, शुद्धसमयः

दिनांकः ७ फरवरी से २० फरवरी २०२७ ई०

शिशिर नवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्री दुर्गापूजनोत्सवः, विवाहः धनिष्ठायां, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. १०।२६ या.

चन्द्रदर्शनं, रेमन्त पूजा, मुण्डनं, देवादिप्रतिष्ठा, शिववासः, मृत्युयोगः रा. ११।३६ या., दीक्षाग्रहणं

पश्चिम दक्षिण यात्रा पूर्वभाद्रे, उपनयनं छन्दोगानां, अग्निवासः, सिद्धियोगः, रा १२।२३ या. ततः राज्यप्रदयोगः

❖ रा. ४।१६ या., सूतीस्नानं, सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः, विपणि, दीक्षाग्रहणं

भद्रा १४।४९ उ. ४५।०५ या. श्री गणेश चतुर्थी व्रतं, कुन्द कुसुमै सदाशिवपूजनं, विवाहः पञ्चम्यां

वसन्त-५ सरस्वत्यावतारः, श्री सरस्वतीपूजनं, हल पंचमी, पश्चिमोत्तराभिमुखे हल प्रवाहः, उपनयनं, मुण्डनं, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं, देवादिप्रतिष्ठा, भदवा समाप्तिः रा. ३।०४ उ., गंड रा. १०।१६ उ.❖

गज पूजा, विल्वाभिमंत्रणं, मासान्तः, शिववासः, सिद्धियोगः रा. ११।२२ या. ततः मृत्युयोगः-सर्वार्थसिद्धियोगः-विपणि च

पत्रिका प्रवेशः, महारात्रिर्निशापूजा, ब्रह्मसावर्णि मन्वादिः, कुंभे रविः २०।३०, मु. १५ फलं महर्घं षडशीति सं. पु. दि. १२ या., अचलासप्तमी, प्रयागकल्पवासः समाप्तिः, अग्निवासः

महाष्टमी व्रतं, दीक्षाग्रहणं, व्रतांग जागरणा, मासादिः, सिद्धियोगः रा. ८।३३ या. ★ रविदास जयन्ती सिद्धियोगः दि. ७।०९ या. ततः अग्निवासः-मृत्युयोगश्च

महानवमी व्रतं, हवनादिः, भद्रा-७।१४ या., विवाह-द्विरागमनं-गृहप्रवेशश्च दशम्यां, श्री हरसू ब्रह्मदेव जयंती, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा. ६।२८ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः

वि० योगः ५२।२७, विजयादशमी, अपराजिता पूजनं, देवीविसर्जनं, जयन्ती धारणं नवरात्र पारणंच, उपनयनं छन्दोगानां, सूतीस्नानं, उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि, अग्निवासः-मृत्युयोगश्च दि. ४।२९ उ.

भैमी-११ व्रतं सर्वेषां, भद्रा १९।२६ या. एकादशी व्रतोद्यापनं, उपनयनं, द्विरागमनं-गृहप्रवेशश्च पुनर्वसौ, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. २।११ या. ततः शिववासः-सिद्धियोगश्च

माधव १२, गोदुग्धेन पारणम्, प्रदोष-१३ व्रतं, मुण्डनं, द्विरागमनं, गृहप्रवेशः, देवादिप्रतिष्ठा, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. ११।४९ उ.

प्रदोष १४ व्रतं, शतभिषायां रविः ५४।३०, मुण्डनं, गृहारम्भः-गृहप्रवेशः देवादिप्रतिष्ठाश्च त्र्योदश्यायां, पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये, शिववासः-अग्निवासः-विपणि च दि. ९।२६ या. ततः अमृतयोगः

माघीपूर्णिमा स्नानदानादिः, १५ तिथि ५४।४७, पूर्णिमा व्रतं, कमलायां जीववत्सायां स्नानं दानंच शिवार्चनं पुण्यप्रदं, भद्रा १।५५ उ. २९।१९ या., गंड दि. ११।३३ उ. दि. ५।३३ या.,★

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम् / अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथियः दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. रवि	४।०६।०२।४८	१०।०५।४८।११	३।२६।४२।४१	८।१०।३८।५६	११।१५।४२।४८	६।२८।५०।१६	४३।४१	११।२७	१३।१२	१५।०७	१७।२३	१९।४६	२१।५९	०।१४	२।४१	४।५५	६।५६	८।३२	१०।००	दि.१०।३८-१।२२	रा.१०।२२-१२।००।रा.१।३८-३।१६
२. सोम	४।०८।३१।४६	१०।०५।३६।४८	३।२६।३४।३८	८।११।४६।२८	११।१५।४८।३१	६।२८।४७।०५	४३।४३	११।२३	१३।०८	१५।०३	१७।१९	१९।४२	२१।५५	०।१०	२।३७	४।५१	६।५२	८।२८	९।५६	दि.७।५३-९।१५।दि.२।४४-४।०६	रा.१०।२२-१२।००रा.३।१५-४।५३
३. मंगल	४।०८।००।४४	१०।०५।३१।२५	३।२६।२६।३५	८।१३।००।००	११।१५।५४।१४	६।२८।४३।५४	४३।४५	११।१८	१३।०३	१४।५८	१७।१४	१९।३७	२१।५०	०।०५	२।३२	४।४६	६।४७	८।२३	९।५१	दि.७।५२-९।१५।दि.१।२२-२।४५	रा.७।०७-८।४५
४. बुध	४।०७।२९।४३	१०।०५।२३।०२	३।२६।१८।३२	८।१४।१०।३२	११।१५।५९।५७	६।२८।४०।४३	४३।४६	११।१३	१२।५८	१४।५३	१७।०९	१९।३२	२१।४५	०।००	२।२७	४।४१	६।४२	८।१८	९।४६	दि.९।१५-१०।३७।दि.१२।००-१।२२	रा.१२।००-१।३७।रा.३।१५-४।५२
५. गुरु	४।०६।५८।४२	१०।०५।१४।३६	३।२६।१०।२९	८।१५।२१।०४	११।१६।०५।४०	६।२८।३७।३२	४३।४७	११।०५	१२।५३	१४।४८	१७।०४	१९।२७	२१।४०	२३।५५	२।२२	४।३६	६।३७	८।१३	९।४१	दि.२।४५-५।३१	रा.१२।००-१।३७।रा.४।५१-६।२८
६. शुक्र	४।०६।०७।४९	१०।०४।३८।४३	३।२६।०१।४३	८।१६।३६।२४	११।१६।१२।३३	६।२८।३४।२१	४३।४९	११।०३	१२।५०	१४।४३	१७।००	१९।२२	२१।३५	२३।५०	२।१७	४।३१	६।३४	८।०८	९।३९	दि.९।१४-१२।००	रा.८।४६-१०।२३
७. शनि	४।०६।०६।५६	१०।०४।०२।४७	३।२८।५२।५८	८।१७।५१।४४	११।१६।१९।२६	६।२८।३१।१०	४३।५१	११।०१	१२।४७	१४।३९	१६।५८	१९।२१	२१।३१	२३।४६	२।१३	४।२९	६।३०	८।०४	९।३८	प्रा.६।२८-७।५१।दि.१।२३-२।४६।दि.४।०९-५।३२	सं.५।३२-७।०९।रा.१।३७-३।१४।रा.४।५१-६।२७
८. रवि	४।०६।०६।०३	१०।०३।२६।५१	३।२८।४४।१३	८।१९।०७।०४	११।१६।२६।१९	६।२८।२७।५९	४३।५३	११।०४	१२।४४	१४।४५	१६।५५	१९।२०	२१।२९	२३।४४	२।१०	४।२७	६।२८	८।००	९।३६	दि.१०।३६-१।२३	रा.१०।२३-१२।००रा.१।३६-३।१३
९. सोम	४।०६।०५।१०	१०।०२।५०।५५	३।२८।३५।२८	८।२०।२२।२४	११।१६।३३।१२	६।२८।२४।४८	४३।५५	११।००	१२।४०	१४।४१	१६।५३	१९।१६	२१।२७	२३।४२	२।०६	४।२३	६।२४	७।५८	९।३२	दि.७।५०-९।१३।दि.२।४६-४।०९	रा.१०।२३-१२।००।रा.३।१३-४।५०
१०.मंगल	४।०६।०४।१७	१०।०२।१४।५९	३।२८।२६।४३	८।२१।३७।४३	११।१६।४०।०५	६।२८।२१।३७	४३।५६	१०।५६	१२।३६	१४।३७	१६।५१	१९।१२	२१।२६	२३।४०	२।०२	४।१९	६।२०	७।५४	९।२८	दि.७।४९-९।१३।दि.१।२३-२।४७	रा.७।१०-८।४७
११. बुध	४।०६।०३।२४	१०।०१।३९।०४	३।२८।१७।५८	८।२२।५३।०२	११।१६।४६।५७	६।२८।१८।२६	४३।५७	१०।५१	१२।३१	१४।३२	१६।४९	१९।०७	२१।२३	२३।३९	१।५७	४।१४	६।१५	७।५२	९।२३	दि.९।१२-१०।३६।दि.१२।००-१।२३	रा.१२।००-१।३६।रा.३।१२-४।४८
१२. गुरु	४।०६।०२।३१	१०।०१।०३।०९	३।२८।०९।१३	८।२४।०८।२१	११।१६।५३।४९	६।२८।१५।१५	४३।५८	१०।४७	१२।२७	१४।२८	१६।४५	१९।०३	२१।१९	२३।३५	१।५३	४।१०	६।११	७।५०	९।१९	दि.२।४७-५।३५	रा.१२।००-१।३६।रा.४।४८-६।२४
१३. शुक्र	४।०५।३४।४८	१०।००।१६।३१	३।२८।००।४८	८।२५।१५।३६	११।१७।००।३९	६।२८।१२।०४	४४।००	१०।४३	१२।२३	१४।२४	१६।४१	१८।५९	२१।१५	२३।३१	१।४९	४।०६	६।०७	७।४७	९।१५	दि.९।१२-१२।००	रा.८।४८-१०।२४
१४. शनि	४।०५।०७।०५	०९।२९।२९।५३	३।२७।५२।२३	८।२६।२३।५१	११।१७।०७।२९	६।२८।०८।५३	४४।०२	१०।३९	१२।१९	१४।२०	१६।३७	१८।५५	२१।११	२३।२७	१।४५	४।०२	६।०३	७।४३	९।११	प्रा.६।२३-७।४७।दि.१।२४-२।४८।दि.४।१२-५।३७	सं.५।३७-७।१२।रा.१।३५-३।११।रा.४।४७-६।२२

मा. शु. ५ गु. व. ८।४०।१६।२३
अयनांशाः २२।५४।५८

मा. शु. १२ गु. व. ८।४०।१६।३०
अयनांशाः २२।५४।५६

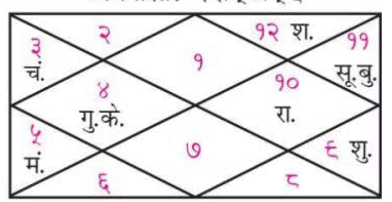

विविधविषयः-

अचलासप्तम्यां- सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र।।

स्नानमन्त्रः- यद्यज्जन्मकृतं पापं मयासप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्चशोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाता ज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्त विधं पापं स्नानं मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवी हर माकरि सप्तमी।।

सूर्य का अर्घ्य दें- सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। अर्घ्योपरान्त प्रणाम करें-जननी सर्वलोकानां सप्तमीसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्य मूर्त्तये।।

अष्टम्यां भीष्मतर्पण मन्त्रः- वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृति प्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्म वर्मणे।। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च।

माघी पूर्णिमा- परयुतग्राह्या। यथोक्तं ब्रह्मवैवर्ते "भूतविद्धे न कर्तव्ये दशपूर्णे कदाचन।। माघस्थयोश्च जीवेन्द्वोमहामाघीति कथ्यते। ज्योतिषे मेषपृष्ठे यदासौरिः सिंहे च गुरु चन्द्रमाः। भास्करः श्रवणर्क्षे च महामाघीति सा स्मृता।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोल: सौम्यायनम्, शिशिरर्तु:, (राहु) दक्षिणेकाल:, शुद्धसमय:

दिनांक: २१ फरवरी से ८ मार्च २०२७ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	रवि	५२।०२	रा.३।११	मघा.२०।३८	दि.२।३७	अ.१४।४०	बा.२४।२२	सिंह	१०।०८।३३।३५	२८।०८	६।२२	५।३८	१४	९	२१	फाल्गुने वागमती स्नानं पुण्यप्रदं, शिववास:, मृत्युयोग:, विवाहो मघायां
२	सोम	४८।१२	रा.१।३६	पू.फ.१८।०४	दि.१।३६	सु.८।०७	तै.२०।०७	सिं.सं.७।२५	१०।०९।३४।०९	२८।१२	६।२२	५।३८	१५	१०	२२	कणमर्दनं पूर्वफल्गुन्यां, मुण्डनं, विवाह:-द्विरागनं-गृहारम्भश्च उत्तरफाल्गुन्यां, अग्निवास:, मृत्युयोग: रा. १।३६ या., दीक्षाग्रहणं
३	मंगल	४५।२१	रा.१२।२९	उ.फ.१६।१८	दि.१२।५२	धृ.२।१६	व.१६।४६	कन्या	१०।१०।३४।४३	२८।१६	६।२१	५।३९	१६	११	२३	शूल योग: ५४।५६, भद्रा १६।४६ उ. ४५।२१ या., दग्धतिथि: रा. १२।२९ उ., सूतीस्नानं, तृतीयायां हस्ते पूर्व दक्षिण यात्रा, सिद्धियोग: रा. १२।२६ या. तत: राज्यप्रदयोग:
४	बुध	४३।३४	रा.११।४६	ह.१५।३५	दि.१२।३४	गं.५३।०२	बव.१४।२७	क.रा.१२।४०	१०।११।३५।१७	२८।२०	६।२०	५।४०	१७	१२	२४	हेरम्ब-४ व्रतं, दग्धतिथि: रा. ११।४६ या., विवाह:-द्विरागमनश्च पञ्चम्यां, शिववास:, अग्निवास:, सर्वार्थसिद्धियोग: रा. १२।३४ या., केन्द्रीय शुल्क दिवस:
५	गुरु	४२।५८	रा.११।३०	चि.१६।०२	दि.१२।४४	वृ.४९।५०	कौ.१३।१६	तुला	१०।१२।३५।५१	२८।२४	६।१९	५।४१	१८	१३	२५	पश्चिम यात्रा पंचम्यां, मुण्डनं, विवाह दिवारात्रौ, द्विरागमन, गृहारम्भ:, शिववास:, सिद्धियोग: रा. ११।३० या., दीक्षाग्रहणं
६	शुक्र	४३।४५	रा.११।४८	स्वा.२२।३९	दि.३।२२	ध्रु.४७।३८	गर.१३।२१	तुला	१०।१३।३६।१२	२८।२८	६।१८	५।४२	१९	१४	२६	भद्रा ४३।४५ उ., दक्षिण यात्रा स्वात्यां, अग्निवास:, सिद्धियोग: रा. ११।४८ या. तत: मृत्युयोग:
७	शनि	४५।५४	रा.१२।४०	वि.२०।४०	दि.२।३४	व्या.४६।२९	वि.१४।४९	तु.दि.८।४६	१०।१४।३६।३३	२८।३२	६।१८	५।४२	२०	१५	२७	भद्रा १४।४९ या., सप्तम्यां अनुराधायां पश्चिमोत्तर यात्रा, विपणि दि. २।३४ उ. रा. १२।४० या.
८	रवि	४९।०६	रा.१।५५	अनु.२४।४५	सं.४।११	ह.४६।०८	बा.१७।३०	वृश्चिक	१०।१५।३६।५४	२८।३६	६।१७	५।४३	२१	१६	२८	शाकाष्टकाष्टमी अष्टम्यां, विवाह: अनुराधायां, उत्तर यात्रा, शिववास:, सिद्धियोग: रा. १।५५ या., राष्ट्रिय विज्ञान दिवस:
९	सोम	५३।२४	रा.३।३८	ज्ये.२९।५७	सं.६।१४	वज्र.४६।४०	तै.२१।१५	वृ.सं.६।१४	१०।१६।३७।१५	२८।४०	६।१६	५।४४	२२	१७	१ मा.	मार्च मासारम्भ:, अन्वष्टका नवमी, गंड दि. ३।५१ उ. रा. ९।५१ या., विवाह:
१०	मंगल	५८।२१	रा.५।३५	मू.३५।५५	रा.८।३७	सि.४७।४१	व.२५।५२	धनु	१०।१७।३७।३६	२८।४४	६।१५	५।४५	२३	१८	२	भद्रा २५।५२ उ. ५८।२१ या., दशम्यां पूर्व यात्रा
११	बुध	६०।००	अहोरात्र	पू.षा.४२।२६	रा.११।१३	व्य.४९।०६	बव.३१।०२	ध.रा.५।५३	१०।१८।३७।५७	२८।४७	६।१५	५।४५	२४	१९	३	पूर्व यात्रा पूर्वाषाढ़े, शिववास:, अग्निवास:, अमृतयोग:, विवाह: उत्तराषाढ़े
११	गुरु	०३।४४	दि.७।४४	उ.षा.४८।५९	रा.१।५०	व.५१।०२	बा.३।४४	मकर	१०।१९।३८।१८	२८।५०	६।१४	५।४६	२५	२०	४	विजया-११ व्रतं सर्वेषां, सूतीस्नानं, विवाह: दिवारात्रौ, शिववास:, अग्निवास: दि. ७।४४ या., दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां, सुरक्षा दिवस:
१२	शुक्र	०९।०१	दि.९।४९	श्र.५५।१०	रा.४।१७	प.५१।४०	तै.९।०१	मकर	१०।२०।३८।२५	२८।५४	६।१३	५।४७	२६	२१	५	गोदध्ना पारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्व भाद्रपदे रवि: ९।४८, भदवारम्भ: रा. ४।१७ उ., शिववास:-मृत्युयोगश्च दि. ९।४६ या. तत: अग्निवास:, सर्वार्थसिद्धियोग:
१३	शनि	१३।४६	दि.११।४२	धनि.६०।००	अहोरात्र	शि.५२।०७	व.१३।४६	म.सं.५।२२	१०।२१।३८।३२	२८।५८	६।१२	५।४८	२७	२२	६	प्रदोष-१४ व्रतं, भद्रा १३।४६ उ. ४५।४६ या., चतुर्दश्यां मकरस्थे चंद्रे दक्षिण यात्रा ततौ पश्चिम यात्रा, महाशिवरात्रि, अग्निवास: दि. ११।४२ या. तत: सिद्धियोग:
१४	रवि	१७।४५	दि.१।१८	धनि.०।४०	श्र.६।२८	सि.५२।०६	श.१७।४५	कुम्भ	१०।२२।३८।३९	२९।०२	६।१२	५।४८	२८	२३	७	पार्वणं अमायां, शिववास: दि. १।१२ उ., अग्निवास:
३०	सोम	२०।३२	दि.२।२४	शत.५।१३	दि.८।१६	सा.५१।०४	ना.२०।३२	कु.रा.३।१६	१०।२३।३८।४६	२९।०६	६।११	५।४९	२९	२४	८	फाल्गुनी-३० स्नानदानादि:, सोमवती अमावस्या व्रतंच अश्वत्थमूले अष्टोत्तरशत प्रदक्षिणं, शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखम्, शिववास: दि. २।२४ या. तत: अग्निवास:-सिद्धियोगश्च, राष्ट्रिय महिला दिवस:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. रवि	४।०४।३९।२२	९।२८।४३।१५	३।२७।४३।५८	८।२७।३०।०६	११।१७।१४।१९	९।२८।०५।४२	४४।०४	१०।३४	१२।१४	१४।१५	१६।३२	१८।५०	२१।०६	२३।२२	१।४०	३।५८	५।५९	७।३८	९।०६
२. सोम	४।०४।११।३९	९।२७।५६।३७	३।२७।३५।३३	८।२८।३७।२१	११।१७।२१।०८	९।२८।०२।३१	४४।०६	१०।३०	१२।१०	१४।११	१६।२८	१८।४६	२१।०२	२३।१८	१।३६	३।५४	५।५५	७।३४	९।०२
३. मंगल	४।०३।४३।५६	९।२७।०९।५९	३।२७।२७।०८	८।२९।४४।३५	११।१७।२७।५७	९।२७।५९।२०	४४।०८	१०।२६	१२।०६	१४।०७	१६।२४	१८।४२	२०।५८	२३।१४	१।३२	३।५०	५।५१	७।३०	८।५८
४. बुध	४।०३।१६।१३	९।२६।२३।२१	३।२७।१८।४४	९।००।५१।४९	११।१७।३४।४६	९।२७।५६।०९	४४।१०	१०।२१	१२।०१	१४।०२	१६।१९	१८।३७	२०।५३	२३।०९	१।२७	३।४५	५।४६	७।२५	८।५३
५. गुरु	४।०२।४८।३०	९।२५।३६।४४	३।२७।१०।२०	९।०१।५९।०३	११।१७।४१।३५	९।२७।५२।५८	४४।१२	१०।१७	११।५७	१३।५८	१६।१५	१८।३३	२०।४९	२३।०५	१।२३	३।४१	५।४२	७।२१	८।४९
६. शुक्र	४।०२।२९।१६	९।२५।२९।०२	३।२७।०१।५७	९।०३।११।१४	११।१७।४८।४६	९।२७।४९।४७	४४।१४	१०।१३	११।५३	१३।५४	१६।११	१८।२९	२०।४५	२३।०१	१।१९	३।३७	५।३८	७।१७	८।४५
७. शनि	४।०२।०४।०२	९।२५।२१।२०	३।२६।५३।३४	९।०४।२३।२५	११।१७।५५।५६	९।२७।४६।३६	४४।१६	१०।०९	११।४९	१३।५०	१६।०७	१८।२५	२०।४१	२२।५७	१।०७	३।३३	५।३४	७।१३	८।४१
८. रवि	४।०१।४१।४९	९।२५।१३।३८	३।२६।४५।१२	९।०५।३५।३६	११।१८।०३।०६	९।२७।४३।२५	४४।१८	१०।०४	११।४४	१३।४५	१६।०२	१८।२०	२०।३६	२२।५२	१।०२	३।२८	५।२९	७।०८	८।३६
९. सोम	४।०१।१९।३६	९।२५।०५।५६	३।२६।३६।५०	९।०६।४७।४६	११।१८।१०।१६	९।२७।४०।१४	४४।२०	१०।००	११।४०	१३।४१	१५।५८	१८।१६	२०।३२	२२।४८	०।५८	३।२४	५।२५	७।०४	८।३२
१०.मंगल	४।००।५७।२३	९।२४।५७।१४	३।२६।२८।२८	९।०७।५९।५६	११।१८।१७।२६	९।२७।३७।०३	४४।२२	९।५६	११।३६	१३।३७	१५।५४	१८।१२	२०।२८	२२।४४	०।५४	३।२०	५।२१	७।००	८।२८
११. बुध	४।००।३५।१०	९।२४।४९।३२	३।२६।२०।०६	९।०९।१२।०६	११।१८।२४।३६	९।२७।३३।५२	४४।२४	९।५२	११।३२	१३।३३	१५।५०	१८।०८	२०।२४	२२।४०	०।५०	३।१६	५।१६	६।५६	८।२४
११. गुरु	४।००।१२।५७	९।२४।४२।५४	३।२६।११।४४	९।१०।२४।१६	११।१८।३१।४६	९।२६।३०।४१	४४।२५	९।४८	११।२८	१३।२९	१५।४६	१८।०४	२०।२०	२२।३६	०।४६	३।१२	५।१३	६।५२	८।२०
१२. शुक्र	३।२९।५४।५३	९।२५।१७।२५	३।२६।०४।०४	९।११।३६।१८	११।१८।३९।०५	९।२७।२७।३०	४४।२७	९।४४	११।२४	१३।२५	१५।४२	१८।००	२०।१६	२२।३२	०।४२	३।०८	५।०९	६।४८	८।१६
१३. शनि	३।२९।३९।४९	९।२५।५९।५६	३।२५।५६।२४	९।१२।४८।२०	११।१८।४६।२४	९।२७।२४।१९	४४।२९	९।४०	११।२०	१३।२१	१५।३८	१७।५६	२०।१२	२२।२८	०।३८	३।०४	५।०५	६।४४	८।१२
१४. रवि	३।२९।१८।४५	९।२६।२६।२७	३।२५।४९।४४	९।१४।००।२२	११।१८।५३।४३	९।२७।२१।०८	४४।३१	९।३६	११।१६	१३।१७	१५।३४	१७।५२	२०।०८	२२।२४	०।३४	३।००	५।०१	६।४०	८।०८
३०. सोम	३।२९।००।४१	९।२७।००।५८	३।२५।४२।०४	९।१५।१२।२४	११।१९।०१।०२	९।२७।१७।५८	४४।३३	९।३१	११।११	१३।१२	१५।२९	१७।४७	२०।०३	२२।१९	०।२९	२।५५	४।५६	६।३५	८।०३

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथिय: दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. रवि	दि.१०।३५-१।२४	रा.१०।२४-१२।००।रा.१।३५-३।११
२. सोम	दि.७।४६-९।११।दि.२।४९-४।१३	रा.१०।२४-१२।००।रा.३।११-४।४६
३. मंगल	दि.७।४५-९।१०।दि.१।२४-२।४९	रा.७।१४-८।४९
४. बुध	दि.९।१०-१०।३५।दि.१२।००-१।२५	रा.१२।००-१।३५।रा.३।१०-४।४५
५. गुरु	दि.२।५०-५।४१	रा.१२।००-१।३४।रा.४।४४-६।१८
६. शुक्र	दि.९।९-१२।००	रा.८।५१-१०।२५
७. शनि	प्रा.६।१८-७।४३।दि.१।२५-२।५१।दि.४।१६-५।४२	सं.५।४२-७।१६।रा.१।३४-३।०९।रा.४।४३-६।१७
८. रवि	दि.१०।३४-१।२५	रा.१०।२५-१२।००।रा.१।३४-३।०८
९. सोम	दि.७।४२-९।०८।दि.२।५२-४।१८	रा.१०।२६-१२।००।रा.३।०८-४।४२
१०.मंगल	दि.७।४१-९।०७।दि.१।२६-२।५२	रा.७।१८-८।५२
११. बुध	दि.९।७-१०।३३।दि.१२।००-१।२६	रा.१२।००-१।३३।रा.३।०७-४।४१
११. गुरु	दि.२।५३-५।४६	रा.१२।००-१।३३।रा.४।४०-६।४३
१२. शुक्र	दि.९।०६-१२।००	रा.८।५३-१०।२६
१३. शनि	प्रा.६।१२-७।३९।दि.१।२७-२।५४।दि.४।२१-५।४८	सं.५।४८-७।२१।रा.१।३३-३।०६।रा.४।३९-६।११
१४. रवि	दि.१०।३३-१।२७	रा.१०।२७-१२।००।रा.१।३३-३।०६
३०. सोम	दि.७।३८-९।५।दि.२।५४-४।२१	रा.१०।२७-१२।००।रा.३।०५-४।३८

फा. कृ. ५ गु. व. ८।४०।१६।३७
अयनांशा: २२।५५।००

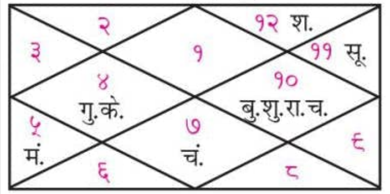

फा. कृ. ११ गु. व. ८।४०।१६।४४
अयनांशा: २२।५५।०१

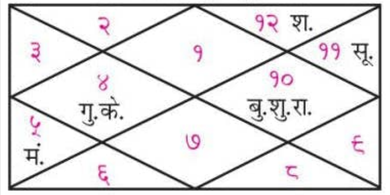

विविधविषया:-माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां- शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे- माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिव: फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरै:। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता।।

तथा च- उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशय:।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्।

गंगासागरसंगमस्नानमन्त्र:- त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे। उभयो: संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै।।

समुद्रस्नानमन्त्र:- त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधा: कामदीपन। प्रधान: सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्यय:।। अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते।।

गंगास्नानमन्त्र:- ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव।।

गंगामाहात्म्यं विष्णुपुराणे- गंगा गंगेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।।

पुनश्च- इदं हि गाङ्गां त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम्। याने विहङ्गं शयने भुजङ्गं करे रथाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्।।

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	मंगल	२२।१५	दि.३।०४	पू.भा.८।३७	दि.६।३७	शु.४६।०२	बव.२२।१५	मीन	१०।२४।३८।५३	२६।१०	६।१०	५।५०	१	२५	९
२	बुध	२२।३५	दि.३।११	उ.भा.१०।४५	दि.१०।२७	शु.४५।५९	कौ.२२।३५	मीन	१०।२५।३६।००	२६।१५	६।०६	५।५१	२	२६	१०
३	गुरु	२१।३८	दि.२।४७	रे.११।३५	दि.१०।४६	ब्र.४१।५९	गर.२१।३८	मी.दि.१०।४६	१०।२६।३६।०७	२६।२०	६।०८	५।५२	३	२७	११
४	शुक्र	१९।२८	दि.१।५४	अ.१२।१६	दि.११।०१	ऐं.३७।०६	वि.१९।२८	मेष	१०।२७।३६।०७	२६।२४	६।०७	५।५३	४	२८	१२
५	शनि	१६।१४	दि.१२।३६	भ.९।५०	दि.१०।०२	वै.३१।२४	बा.१६।१४	मे.दि.४।८	१०।२८।३६।०७	२६।२८	६।०६	५।५४	५	२९	१३
६	रवि	१२।१०	दि.१०।५८	कृ.७।३७	दि.६।०६	वि.२५।०१	तै.१२।१०	वृष	१०।२९।३६।०७	२६।३२	६।०६	५।५४	६	३०	१४
७	सोम	०७।१५	दि.८।५५	रो.३।३३	दि.७।३०	प्री.१८।०३	व.७।१५	वृ.सं.६।५९	११।००।३६।०७	२६।३६	६।०५	५।५५	७	१	१५
८	मंगल	०१।५१	प्रा.६।४८	मृ.००।५८	प्रा.६।२७	आ.१०।४०	बव.१।५१	मिथुन	११।०१।३६।०७	२६।४०	६।०४	५।५६	८	२	१६
१०	बुध	५०।०६	रा.२।०५	पुन.५२।४९	रा.३।११	सौ.२।५९	तै.२३।०५	मि.रा.६।३५	११।०२।३६।०७	२६।४४	६।०३	५।५७	९	३	१७
११	गुरु	४४।१३	रा.११।४३	पु.४८।४३	रा.१।३१	अ.४७।२९	व.१७।०९	कर्क	११।०३।३८।०७	२६।४८	६।०२	५।५८	१०	४	१८
१२	शुक्र	३८।२९	रा.६।२६	श्ले.४४।५३	रा.११।५९	सु.३६।५६	बव.११।२१	क.रा.११।५९	११।०४।३७।४४	२६।५२	६।०२	५।५८	११	५	१९
१३	शनि	३३।१०	रा.७।१७	मघा.४१।२८	रा.१०।३६	धृ.३२।४५	कौ.५।५०	सिंह	११।०५।३७।२१	२६।५६	६।०१	५।५९	१२	६	२०
१४	रवि	२८।१७	सं.५।१९	पू.फ.३८।४३	रा.६।२९	शू.२६।०५	गर.०।४३	सि.३।१८	११।०६।३६।५७	३०।००	६।००	६।००	१३	७	२१
१५	सोम	२४।३९	दि.३।५१	उ.फ.३६।५२	रा.८।४४	गं.२०।०५	बव.२४।३९	कन्या	११।०७।३६।३३	३०।०४	५।५९	६।०१	१४	८	२२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोल:, सौम्यायनम:, शिशिरर्तु: ता. १५ त: वसन्तर्तु:, (राहु) दक्षिणेकाल: शुद्धसमय:

३५

दिनांक: ६ मार्च से २२ मार्च २०२७ ई०

९	कल्याणेश्वरात् जनकपुरस्य वृहत परिक्रमारम्भ:, श्री रामकृष्ण जयन्ती, चन्द्रदर्शनं, मृत्युयोग: दि. ३।०४ या. तत: शिववास:-अमृतयोगश्च
१०	गंड रा. ६।०० उ., द्वितीयायां रेवत्यां पश्चिम यात्रा, मुण्डनं, विवाह दिवारात्रौ, द्विरागमनं, देवादिप्रतिष्ठा, अग्निवास:, शिववास:-सिद्धियोगश्च दि. ३।११ या. तत: अमृतयोग:, विपणि, दीक्षाग्रहणं
११	श्री गणेश ४ व्रतं, मुण्डनं, विवाह:-द्विरागमनं-दीक्षाग्रहणं-देवादिप्रतिष्ठाश्च तृतीयायां, भद्रा ५०।३३ उ., भदवा समाप्ति: दि. १०।४६ उ., दग्धतिथि: दि. ०२।४७ उ., गंड दि. १२।०० या. सूतीस्नानं,❖
१२	भद्रा. १९।२८ या., दग्ध तिथि: दि. १।५४ या., अमृतयोग: दि. १।५४ या. तत: शिववास:-अग्निवासश्च, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ११।०१ या.
१३	कृतिकायां षष्ठयां शस्त्र धारणं, शिववास:, मृत्युयोग: दि. १२।३६ या. तत: अमृतयोग:
१४	मासान्त:, कृतिकायां धान्यच्छेदनं, शिववास:-अग्निवास:-मृत्युयोगश्च दि. १०।५८ या. तत: दीक्षाग्रहणं
१५	भद्रा ७।१५ उ. ३४।३३ या., मीने रवि:- ९।१६ मु. ३० फलं साम्यं षडशीति सं. पु. कालो दि.घं ६।१२ या., मीनार्कत्वाद् विवाह दिनं नैव, मृत्युयोग: दि. ८।५५ या. तत: अग्निवास:,★
१६	९ तिथि ५४।१३, आर्द्रा न. ५६।०१, मासादि:, अग्निवास:-सिद्धियोगश्च दि. ६।४८ या. तत: शिववास:-राज्यप्रदयोगश्च
१७	शोभन योग: ५२।१२, पश्चिम दक्षिण यात्रा पुनर्वसौ ततौ उत्तरां विना यात्रा, अग्निवास:, उपनयनं (क्षत्रिय वैश्यानां), दीक्षाग्रहणं
१८	आमलकी ११ व्रतं सर्वेषां, एकादशी व्रतोद्यापनं, उपनयनं, भद्रा १७।०९ उ. ४४।१३ या., उत्तरभाद्रपदे रवि:- ३०।५४, सूतीस्नानं, दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये, सर्वार्थसिद्धियोग: रा. १।३१ या., दीक्षाग्रहणं
१९	श्री गोविंद द्वादशी, गोदध्ना पारणम्, गंड रा. ७।३५ उ. रा. १।३५ या., शिववास:, अग्निवास:, मृत्युयोग: रा. ६।२६ या.
२०	प्रदोष-१३ व्रतं, पूर्व फल्गुन्यां उत्तर यात्रा, प्रदोष- १४ व्रतं, शिववास: सं. ७।१७ या. तत: सिद्धियोग:
२१	भद्रा २८।१७ उ. ५६।२८ या., रात्र्यन्ते ४।३५ उपरि होलिका दहनं, अग्निवास: सं. ५।१९ या. तत: अमृतयोग:
२२	होलिकोत्सव:, होली, फाल्गुनी पूर्णिमा, स्नानदानादि:, कुलदेवताभ्य: सिन्दूरार्पणं, पातरिदानं, जलदिवस:, अमृतयोग: दि. ३।५१ या. तत: शिववास:-अग्निवास:-सिद्धियोगश्च

❖ तृतीयायां रेवत्यां पश्चिमोत्तर यात्रा, अमृतयोग:-विपणि च, दि. २।४७ या. तत: मृत्युयोग:, सर्वार्थसिद्धियोग:

★ सर्वार्थसिद्धियोग: दीक्षाग्रहणं

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. मंगल	३।२८।४२।३७	९।२७।३५।२९	३।२५।३४।२५	९।१६।२४।२६	११।१९।०८।२१	९।२७।१४।४६	४४।३५
२. बुध	३।२८।२४।३४	९।२८।१०।००	३।२५।२६।४६	९।१७।३६।२८	११।१९।१५।४०	९।२७।११।३५	४४।३७
३. गुरु	३।२८।०६।३१	९।२८।४४।३१	३।२५।१८।०७	९।१८।४८।२९	११।१९।२२।५८	९।२७।०८।२४	४४।४०
४. शुक्र	३।२७।५२।०४	९।२९।५०।५०	३।२५।११।२७	९।१९।५६।५७	११।१९।३०।३५	९।२७।०८।२४	४४।४२
५. शनि	३।२७।३७।३७	१०।००।५७।०९	३।२५।०४।४७	९।२१।०५।२५	११।१९।३८।१२	९।२७।०५।१३	४४।४४
६. रवि	३।२७।२३।१०	१०।०२।०३।०८	३।२४।५८।०७	९।२२।१३।५३	११।१९।४५।४९	९।२७।०२।०२	४४।४६
७. सोम	३।२७।०८।४३	१०।०३।०९।४७	३।२४।५१।२७	९।२३।२२।२१	११।१९।५३।२६	९।२६।५८।५१	४४।४८
८. मंगल	३।२६।५४।१६	१०।०४।१६।०५	३।२४।४४।४७	९।२४।३०।४८	११।२०।०१।०३	९।२६।५५।४०	४४।५०
१०. बुध	३।२६।३९।४९	१०।०५।२२।२३	३।२४।३८।०७	९।२५।३९।१५	११।२०।०८।४०	९।२६।५२।२९	४४।५२
११. गुरु	३।२६।२५।२३	१०।०६।२८।४१	३।२४।३१।२८	९।२६।४७।४२	११।२०।१५।१७	६।२६।४६।०७	४४।५४
१२. शुक्र	३।२६।२३।३८	१०।०७।५४।४०	३।२४।२५।५९	९।२७।५९।००	११।२०।२३।१५	९।२६।४२।५६	४४।५६
१३. शनि	३।२६।०१।५३	१०।०९।२०।३९	३।२४।२०।३०	९।२९।१०।१८	११।२०।३१।१३	९।२६।३९।४५	४४।५८
१४. रवि	३।२५।५०।०८	१०।१०।४६।३८	३।२४।१५।०२	१०।००।२१।३६	११।२०।३९।११	९।२६।३६।३४	४५।००
१५. सोम	३।२५।३८।२३	१०।१२।१२।३७	३।२४।०९।३४	१०।०१।३२।५४	११।२०।४७।०८	९।२६।३३।२३	४५।०२

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. मंगल	९।२६	११।०६	१३।०७	१५।२४	१७।४२	१९।५८	२२।१४	०।२४	२।५१	४।४९	६।३०	७।५८
२. बुध	९।२२	११।०२	१३।०३	१५।२०	१७।३८	१९।५४	२२।१०	०।२०	२।४६	४।४७	६।२६	७।५४
३. गुरु	९।१८	१०।५८	१२।५९	१५।१५	१७।३४	१९।५०	२२।०६	०।१६	२।४२	४।४३	६।२२	७।५०
४. शुक्र	९।१४	१०।५४	१२।५५	१५।११	१७।३०	१९।४६	२२।०२	०।१२	२।३८	४।३९	६।१८	७।४६
५. शनि	९।१०	१०।५०	१२।५१	१५।०९	१७।२६	१९।४२	२१।५८	०।०८	२।३४	४।३५	६।१५	७।४२
६. रवि	९।०६	१०।४६	१२।४७	१५।०७	१७।२२	१९।३८	२१।५४	०।०४	२।३०	४।३१	६।१२	७।४०
७. सोम	९।०२	१०।४२	१२।४३	१५।०५	१७।१८	१९।३४	२१।५०	०।००	२।२६	४।२७	६।०९	७।३७
८. मंगल	८।५८	१०।३८	१२।३९	१५।०३	१७।१४	१९।३०	२१।४६	२३।५६	२।२२	४।२३	६।०५	७।३३
१०. बुध	८।५५	१०।३५	१२।३६	१५।०२	१७।११	१९।२७	२१।४३	२३।५३	२।१९	४।२०	६।०२	७।३०
११. गुरु	८।५१	१०।३१	१२।३२	१४।५८	१७।०७	१९।२३	२१।३९	२३।४९	२।१५	४।१६	५।५६	७।२६
१२. शुक्र	८।४७	१०।२७	१२।२८	१४।५४	१७।०३	१९।१९	२१।३५	२३।४५	२।११	४।१२	५।५२	७।२२
१३. शनि	८।४३	१०।२३	१२।२४	१४।५०	१६।५९	१९।१५	२१।३१	२३।४२	२।०७	४।०८	५।४८	७।१८
१४. रवि	८।३९	१०।१९	१२।२०	१४।४६	१६।५५	१९।११	२१।२७	२३।३७	२।०३	४।०४	५।४४	७।१४
१५. सोम	८।३५	१०।१५	१२।१६	१४।४२	१६।५१	१९।०७	२१।२३	२३।३३	१।५९	४।००	५।४०	७।१०

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथिय: दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. मंगल	दि.७।३७-९।०५। दि.१।२७-२।५५	रा.७।२२-८।५५
२. बुध	दि.९।०४-१२।३२। दि.१२।००-१।२७	रा.१२।००-१।३२। रा.३।०४-४।३६
३. गुरु	दि.२।५६-५।५२	रा.१२।००-१।३२। रा.४।३६-६।०७
४. शुक्र	दि.९।०३-१२।००	रा.८।५६-१०।२८
५. शनि	प्रा.६।६-७।३४। दि.१।२८-२।५७। दि.४।२५-५।५४	सं.५।५४-७।२५। रा.१।३१-३।०३। रा.४।३४-६।०५
६. रवि	दि.१०।३१-१।२८	रा.१०।२८-१२।००। रा.१।३१-३।०३
७. सोम	दि.७।३३-९।०२। दि.२।५७-४।२६	रा.१०।२८-१२।००। रा.३।०२-४।३३
८. मंगल	दि.७।३३-९।०२। दि.१।२६-२।५८	रा.७।२७-८।५८
१०. बुध	दि.९।०१-१०।३० दि.१२।००-१।२९	रा.१२।००-१।३०। रा.३।०१-४।३२
११. गुरु	दि.२।५९-५।५८	रा.१२।००-१।३०। रा.४।३१-६।०१
१२. शुक्र	दि.९।०१-१२।००	रा.८।५९-१०।२९
१३. शनि	प्रा.६।०१-७।३०। दि.१।२९-२।५९। दि.४।२९-५।२९	सं.५।२९-७।२९। रा.१।३०-३।००। रा.४।३०-६।००
१४. रवि	दि.१०।३०-१२।००	रा.१०।३०-१२।००। रा.१।३०-३।००
१५. सोम	दि.७।२९-८।५९। दि.३।००-४।३०	रा.१०।३०-१२।००। रा.२।५९-४।२९

फा. शु. ३ गु. व. ८।४०।१६।५१
अयनांशा: २२।५५।०२

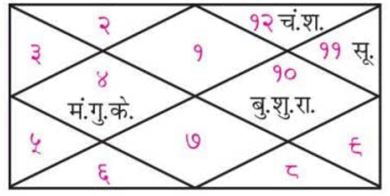

फा. शु. ११ गु. व. ८।४०।१६।५८
अयनांशा: २२।५५।०३

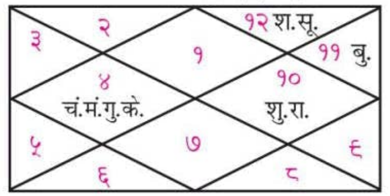

विविधविषय:- होलिकादाहविशेष- तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत। धृतै: किलकिलाशब्दैस्तालशब्दै-र्मनोरमै:। तमग्निं त्रि: परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जलपन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागत:। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां दाहयेत्।

ध्यानमंत्र:- असूमयावसन्तप्ते: कृत्वा त्वं होलि वालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदा भव। ततो 'होलिकायै नम:' इति मन्त्रेण यथोपचारै: संपूज्य प्रदीपयेत्।

होलिका प्रदीपमन्त्र:- दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नम:। हिताय सर्वजगत: प्रीतये पार्वतीपते:। तत: परदिन

होलीकाभस्मधारणमन्त्र:- वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभि:। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव।। **होलिका दाहे वायु विचार-** होलिकादाहे पूर्ववायौ राजाप्रजासुखम् अग्निकोणेऽग्निभयं, दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं, पश्चिमे वृष्टि: वायव्ये वायुवृद्धि: उत्तरैशान्यो: सुभिक्षं, निर्वातसमयो राज्ञो हानिकर:।

चैत्र कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८३, शाके १९४८, याम्यगोल:, सौम्यायनम्, वसन्तर्तु: (राहु) दक्षिणेकाल: शुद्धसमय:

दिनांक: २३ मार्च से ६ अप्रैल २०२७ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	मंगल	२१।४५	दि.२।४०	हस्त.३५।५३	रा.८।१६	वृ.१४।४६	कौ.२१।४५	कन्या	११।०८।३६।०६	३०।०८	५।५८	६।०२	१५	९	२३	दग्धतिथि: दि. २।४० उ., सप्तडोरारम्भ:, शिववास:-अग्निवास:-मृत्युयोगश्च दि. २।४० या. तत: अमृतयोग:
२	बुध	१६।५८	दि.१।५७	चि.३६।०४	रा.८।२४	ध्रु.१०।२५	गर.१६।५८	क.दि.८।२१	११।०९।३५।४५	३०।११	५।५८	६।०२	१६	१०	२४	भद्रा ४९।४१ उ., दग्धतिथि: दि. १।५७ या., सिद्धियोग: दि. १।५७ या. तत: अग्निवास:-मृत्युयोगश्च, दीक्षाग्रहणं
३	गुरु	१९।२४	दि.१।४३	स्वा.३७।२९	रा.५।५७	व्या.७।०२	वि.१९।२४	तुला	११।१०।३५।२१	३०।१४	५।५७	६।०३	१७	११	२५	श्री विकट- ४ व्रतं, भद्रा १९।२४ या., तृतीयायां पश्चिम यात्राश्च दीक्षाग्रहणं, अग्निवास:-अमृतयोग: दि. १।४३ या. तत: शिववास:-मृत्युयोगश्च
४	शुक्र	२०।०६	दि.१।५८	वि.४०।११	रा.१०।००	ह.५।०७	बा.२०।०६	तु.दि.३।४४	११।११।३४।४३	३०।१८	५।५६	६।०४	१८	१२	२६	अनुराधायां सवार्थसिद्धियोग:, अमृतयोग: दि. १।५८ या. तत: अग्निवास:, शिववास:
५	शनि	२२।१३	दि.२।४९	अनु.४४।०३	रा.११।३३	वज्र.१।१०	तै.२२।१३	वृश्चिक	११।१२।३४।०५	३०।२२	५।५६	६।०४	१९	१३	२७	षष्ठ्यां अनुराधायां पश्चिमोत्तर यात्रा, रंगपंचमी, शिववास:-अग्निवास:-मृत्युयोगश्च दि. २।४९ या. तत: अमृतयोग:
६	रवि	२५।२३	दि.४।०४	ज्ये.४९।०२	रा.१।३२	सि.२।४४	व.२५।२३	वृ.रा.१।३२	११।१३।३३।२७	३०।२६	५।५५	६।०५	२०	१४	२८	भद्रा २५।२३ उ. ५७।३१ या., गंड रा. ११।१० उ. रा. ५।१० या., अग्निवास:, मृत्युयोग: दि. ४।०४ या., चन्द्रकला स्मृतिदिवस:
७	सोम	२९।३८	सं.५।४५	मूल.५५।५६	रा.४।१६	व्य.३।०८	बव.२९।३८	धनु	११।१४।३२।४९	३०।३०	५।५४	६।०६	२१	१५	२९	कर्णछेदनं, धान्यरोपणं, धान्यच्छेदनं, मृत्युयोग: दि. ५।४५ या. तत: शिववास:
८	मंगल	३४।२८	रा.७।४०	पू.षा.६०।००	अहोरात्र	व.४।०९	बा.२।०३	धनु	११।१५।३२।१०	३०।३४	५।५३	६।०७	२२	१६	३०	पूर्व यात्रा, श्री शीतलाष्टमी, पर्युषितान्नपानादिकम्, अग्निवास:, शिववास:-सिद्धियोगश्च रा. ७।४० या. तत: राज्यप्रदयोग:
९	बुध	३९।५०	रा.९।४९	पू.षा.१।१९	प्रा.६।२५	परि.५।३२	तै.७।०९	ध.दि.१।०४	११।१६।३१।३१	३०।३७	५।५३	६।०७	२३	१७	३१	रेवत्यां रवि: ५७।१५, श्री ऋषभनाथ जी जयंती
१०	गुरु	४५।००	रा.११।५२	उ.षा.७।५४	दि.९।०२	शि.७।०५	व.१२।२५	मकर	११।१७।३०।५२	३०।४०	५।५२	६।०८	२४	१८	१ अप्रैल	अप्रैल मासारम्भ:, भद्रा १२।२५ उ. ४५।०० या., सूतीस्नानं, श्रवणायां दशम्यां दक्षिणां विना यात्रा, अग्निवास:, सिद्धियोग: रा. ११।५२ या.
११	शुक्र	४९।४३	रा.१।४४	श्र.१४।११	दि.११।३१	सि.८।२२	बव.१७।२१	म.रा.१२।४०	११।१८।२९।५४	३०।४४	५।५१	६।०९	२५	१९	२	पापमोचिनी ११ व्रतं, भदवारम्भ: दि. ११।३१ उ., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, शिववास:, सिद्धियोग: रा. १।४४ या. तत: मृत्युयोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ११।३१ या.
१२	शनि	५३।३५	रा.३।१६	धनि.१९।५३	दि.१।४७	सा.९।१३	कौ.२१।३९	कुम्भ	११।१९।२८।५६	३०।४८	५।५०	६।१०	२६	२०	३	गोदध्नापारणम्, मीना स्मृति दिवस:, हिन्दी रंगमंच दिवस:, रात्र्यान्ते ४।३४ उ. महामहावारुणीयोग:, शिववास:, अग्निवास:
१३	रवि	५६।१६	रा.४।२०	शत.२४।३८	दि.३।४१	शु.९।२२	गर.२४।५६	कुम्भ	११।२०।२७।५८	३०।५२	५।५०	६।१०	२७	२१	४	प्रदोष-१३ व्रतं, वारुणीयोग: दि. ३।४१ या. तत्र गंगास्नानं शतसूर्यग्रहण समफलं, सिद्धियोग:
१४	सोम	५७।४८	रा.५।५६	पू.भा.२८।१६	सं.५।०७	शु.८।३७	वि.२७।०२	कुं.दि.१०।४७	११।२१।२७।००	३०।५६	५।४९	६।११	२८	२२	५	प्रदोष-१४ व्रतं, भद्रा २७।०२ या., अग्निवास:, विश्व टीकाकरण दिवस:,
३०	मंगल	५८।००	रा.५।००	उ.भा.३०।४४	सं.६।०६	ब्र.६।५७	च.२७।५४	मीन	११।२२।२६।०२	३१।००	५।४८	६।१२	२९	२३	६	चैत्री ३० स्नानदानादि:, अशुभवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्, शिववास:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. मंगल	३।२५।२६।३८	१०।१३।३८।३५	३।२४।०४।०६	१०।०२।४४।१२	११।२०।५५।०५	६।२६।३०।१२	४५।०४
२. बुध	३।२५।१४।५३	१०।१५।०४।३३	३।२३।५८।३८	१०।०३।५५।३०	११।२१।०३।०२	६।२६।२७।०१	४५।०६
३. गुरु	३।२५।०३।०९	१०।१६।३०।३१	३।२३।५३।१०	१०।०५।०६।४३	११।२१।१०।५९	६।२६।२३।५०	४५।०७
४. शुक्र	३।२७।०२।२७	१०।१८।०४।१८	३।२३।४९।०४	१०।०६।१९।४६	११।२१।१९।२१	६।२६।२०।३१	४५।०९
५. शनि	३।२५।०१।४५	१०।१९।४८।०५	३।२३।४४।५८	१०।०७।३२।४९	११।२१।२७।४३	६।२६।१७।२०	४५।११
६. रवि	३।२५।०१।०३	१०।२०।२६।५२	३।२३।४०।५२	१०।०८।४५।५२	११।२१।३६।०५	६।२६।१४।०९	४५।१३
७. सोम	३।२५।००।२१	१०।२२।०५।३९	३।२३।३६।४६	१०।०९।५८।५५	११।२१।४४।२६	६।२६।११।५८	४५।१५
८. मंगल	३।२४।५९।४०	१०।२३।४४।२६	३।२३।३२।४०	१०।११।११।५७	११।२१।५२।४७	६।२६।०८।४७	४५।१७
९. बुध	३।२४।५८।५९	१०।२५।२३।१३	३।२३।२८।३४	१०।१२।२४।५९	११।२२।०१।०८	६।२६।०५।३६	४५।१९
१०. गुरु	३।२४।५८।१८	१०।२८।०२।००	३।२३।२४।२९	१०।१३।३८।०१	११।२२।०९।२९	६।२६।०१।३५	४५।२०
११. शुक्र	३।२५।०१।०६	१०।२९।४८।३४	३।२३।२१।४१	१०।१४।५१।०३	११।२२।१८।१७	६।२५।५८।२२	४५।२२
१२. शनि	३।२५।०३।५४	११।०१।३५।०८	३।२३।१८।५३	१०।१६।०४।०५	११।२२।२७।०४	६।२५।५५।११	४५।२४
१३. रवि	३।२५।०६।४२	११।०३।२१।४२	३।२३।१६।०५	१०।१७।१७।०७	११।२२।३५।५१	६।२५।५२।००	४५।२६
१४. सोम	३।२५।०९।३०	११।०५।०८।१६	३।२३।१३।१७	१०।१८।३०।०९	११।२२।४४।३८	६।२५।४८।४९	४५।२८
३०.मंगल	३।२५।१२।१८	११।०६।५४।५०	३।२३।१०।२९	१०।१९।४३।११	११।२२।५३।२५	६।२५।४५।३८	४५।३०

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथय: दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. मंगल	८।३२	१०।१२	१२।१३	१४।३७	१६।४८	१९।०४	२१।२०	२३।३७	१।५६	३।५७	५।३७	७।०४
२. बुध	८।३०	१०।१०	१२।११	१४।२८	१६।४६	१९।०२	२१।१८	२३।३५	१।५४	३।५५	५।३५	७।०२
३. गुरु	८।२७	१०।०७	१२।०८	१४।२५	१६।४३	१८।५९	२१।१५	२३।३२	१।५१	३।५२	५।३२	६।५९
४. शुक्र	८।२४	१०।०४	१२।०५	१४।२२	१६।४०	१८।५६	२१।१२	२३।२९	१।४८	३।४९	५।२९	६।५६
५. शनि	८।२०	१०।००	१२।०१	१४।१८	१६।३६	१८।५२	२१।०८	२३।२५	१।४४	३।४५	५।२५	६।५२
६. रवि	८।१६	९।५६	११।५७	१४।१४	१६।३२	१८।४८	२१।०४	२३।२१	१।४०	३।४३	५।२१	६।४८
७. सोम	८।१०	९।५२	११।५३	१४।१०	१६।२८	१८।४४	२१।००	२३।१७	१।३६	३।३९	५।१७	६।४४
८. मंगल	८।०८	९।४८	११।४९	१४।०६	१६।२४	१८।४०	२०।५६	२३।१३	१।३२	३।३५	५।१३	६।४०
९. बुध	८।०४	९।४४	११।४५	१४।०२	१६।२०	१८।३६	२०।५२	२३।०९	१।२८	३।३१	५।०९	६।३६
१०. गुरु	८।००	९।४०	११।४१	१३।५८	१६।१६	१८।३२	२०।४८	२३।०५	१।२४	३।२७	५।०५	६।३२
११. शुक्र	७।५७	९।३७	११।३८	१३।५५	१६।१३	१८।२९	२०।४५	२३।०२	१।२१	३।२४	५।०२	६।२९
१२. शनि	७।५३	९।३३	११।३४	१३।५१	१६।०९	१८।२५	२०।४१	२२।५८	१।१७	३।२०	४।५८	६।२५
१३. रवि	७।४९	९।२९	११।३०	१३।४७	१६।०५	१८।२१	२०।३७	२२।५४	१।१३	३।१६	४।५४	६।२१
१४. सोम	७।४५	९।२५	११।२६	१३।४३	१६।०१	१८।१७	२०।३३	२२।५०	१।०९	३।१२	४।५०	६।१७
३०.मंगल	७।४२	९।२२	११।२३	१३।४०	१५।५८	१८।१४	२०।३०	२२।४७	१।०६	३।०९	४।४७	६।१४

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथय: दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. मंगल	दि.७।२८-८।५९।दि.१।३०-३।०१	रा.७।३१-९।०१
२. बुध	दि.८।५९-१०।२९।दि.१२।००-१।३०	रा.१२।००-१।२९।रा.२।५९-४।२८
३. गुरु	दि.३।०१-६।०३	रा.१२।००-१।२९।रा.४।२७-५।५६
४. शुक्र	दि.८।५८-१२।००	रा.९।०२-१०।३१
५. शनि	प्रा.५।५६-७।२७।दि.१।३१-३।०२।दि.४।३३-६।०४	सं.६।०४-७।३३।रा.१।२९-२।५८।रा.४।२७-५।५५
६. रवि	दि.१०।२८-१२।००	रा.१०।३१-१२।००।रा.१।२८-२।५७
७. सोम	दि.७।२५-८।५७।दि.३।०३-४।३४	रा.१०।३१-१२।००।रा.२।५७-४।२५
८. मंगल	दि.७।२४-८।५६।दि.१।३१-३।०३	रा.७।३५-९।०३
९. बुध	दि.८।५६-१०।२८।दि.१२।००-१।३१	रा.१२।००-१।२८।रा.५।५६-४।२४
१०. गुरु	दि.३।०४-६।०८	रा.१२।००-१।२८।रा.४।२४-६।५१
११. शुक्र	दि.८।५५-१२।००	रा.९।०४-१०।३२
१२. शनि	प्रा.५।५०-७।२२।दि.१।३२-३।०५।दि.४।३७-६।१०	सं.६।१०-७।३७।रा.१।२७-२।५५।रा.४।२२-५।४९
१३. रवि	दि.१०।२७-१।३२	रा.१०।३२-१२।००।रा.१।२७-२।५५
१४. सोम	दि.७।२१-८।५४।दि.३।०५-४।३८	रा.१०।३२-१२।००।रा.२।५४-४।२१
३०.मंगल	दि.७।२१-८।५४।दि.१।३३-३।०६	रा.७।३३-९।०६

चै. कृ. ३ गु. व. ८।४०।१७।०५
अयनांशा: २२।५५।०४

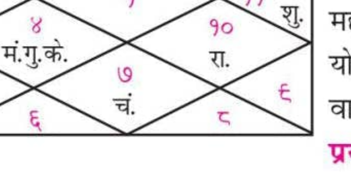

चै. कृ. १० गु. व. ८।४०।१७।१२
अयनांशा: २२।५५।०५

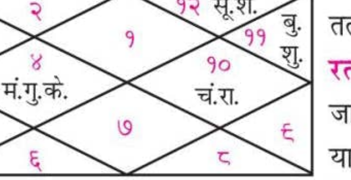

विविधविषय:-स्कन्दे वारुणीयोग:-वरुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी। गङ्गयां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतै: समा।। **महावारुणीयोग:**-शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता। गङ्गायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहै: समा।। **महामहावारुणीयोग:**-शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत्।। **एते योगा दिवैव शस्ता:**-दिवैव योग: शस्तोऽयं न तु रात्रौ कदाचन इति भारतवचनात् सधवाया अपि वारुण्यादिस्नानमिति।

प्रयागे केशवपनफलम्:- किं गयापिंडदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरूक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानांजाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन-सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्धपीनसकेतव:। केतव: कपट:, पिनसो, मुहुर्नासाश्रावी।

रत्नावलीरत्नकलापयो:- प्रागन्यपुंस: पुरतोऽपरस्तात् पुन: पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुत: केऽपि वदन्त्यसत्यम्। यात्रायां क्षुतम् अवश्यमेव वर्जनीयम्।

रत्न कलापे- अग्रे क्षुतं चेत् शकुनै: किमन्यै: पश्चात् क्षुतं चेत् शकुनै: किमन्यै:। जातानजातञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञा:। शुभक्षूतम्

चैत्र शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, याम्यगोल:, ता. १४ त: सौम्यगोल:, सौम्यायनम्, वसन्तर्तु:, (राहु) दक्षिणेकाल: शुद्धसमय:

दिनांक: ७ अप्रैल से २० अप्रैल २०२७ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	बुध	५६।५७	रा.४।३४	रेवती.३१।४८	सं.६।३०	ऐं.४।१७	किं.२७।२८	मी.सं.६।३०	११।२३।२५।०४	३१।०४	५।४७	६।१३	३०	२४	७
२	गुरु	५४।४०	रा.३।३८	अ.३१।४३	सं.६।२७	वै.०।३६	बा.२५।४८	मेष	११।२४।२४।०६	३१।०८	५।४६	६।१४	१	२५	८
३	शुक्र	५१।२०	रा.२।१८	भरणी.३०।३२	सं.५।५६	प्री.५०।३०	तै.२३।००	मे.रा.११।४६	११।२५।२२।५७	३१।१२	५।४६	६।१४	२	२६	९
४	शनि	४७।०६	रा.१२।३७	कृ.२८।३०	सं.५।०६	आ.४४।२२	व.१६।१४	वृष.	११।२६।२१।४८	३१।१६	५।४५	६।१५	३	२७	१०
५	रवि	४२।०८	रा.१०।३५	रो.२५।३५	दि.३।५८	सौ.३७।३५	बव.१४।३८	वृ.रा.३।१६	११।२७।२०।३९	३१।२०	५।४४	६।१६	४	२८	११
६	सोम	३६।३७	रा.८।२२	मृ.२२।०५	दि.२।३२	शो.३०।२०	कौ.९।२२	मिथुन	११।२८।१९।३०	३१।२४	५।४३	६।१७	५	२९	१२
७	मंगल	३०।५०	सं.६।०२	आ.१८।१०	दि.१२।५८	अ.२२।४६	गर.७।०८	मिथुन	११।२९।१८।२१	३१।२८	५।४२	६।१८	६	३०	१३
८	बुध	२४।४७	दि.३।३७	पुन.१४।०२	दि.११।१६	सु.१५।०४	वि.४।४७	मि.प्रा.५।५०	००।००।१७।१२	३१।३२	५।४२	६।१८	७	१	१४
९	गुरु	१८।४३	दि.१।१०	पुष्य.९।५२	दि.९।३८	धृ.७।२२	कौ.२५।५३	कर्क	००।०१।१६।०२	३१।३६	५।४१	६।१९	८	२	१५
१०	शुक्र	१२।५८	दि.१०।५१	श्लेषा.५।५९	दि.८।०४	गंड.५२।३८	गर.१९।४८	क.दि.८।०४	००।०२।१४।३५	३१।४०	५।४०	६।२०	९	३	१६
११	शनि	७।३४	दि.८।४०	मघा.२।२८	दि.६।३८	वृ.४५।५४	वि.१३।५०	सिंह	००।०३।१३।०८	३१।४४	५।३९	६।२१	१०	४	१७
१२	रवि	०२।१६	प्रा.६।३३	उ.फ.५७।३२	रा.४।३६	ध्रु.३९।५०	बा.८।२०	सिं.दि.१०।३०	००।०४।११।४१	३१।४८	५।३८	६।२२	११	५	१८
१४	सोम	५५।५८	रा.४।०१	हस्त.५६।१९	रा.४।१०	व्या.३४।२६	तै.३।१७	कन्या	००।०५।१०।१४	३१।५२	५।३८	६।२२	१२	६	१९
१५	मंगल	५४।०७	रा.३।१६	चित्रा.५६।१५	रा.४।०७	ह.२९।५२	वि.२७।२१	क.दि.४।०८	००।०६।०८।४७	३१।५६	५।३७	६।२३	१३	७	२०

अं० ता०	
७	हिन्दु नववर्ष विक्रम सं. २०८४ आरम्भ:, वसन्ती नवरात्रारम्भ:, कलशस्थापनं श्री दुर्गापूजनोत्सव:, भदवा समाप्ति: सं. ६।३० उ., गंड दि. १।३२ उ. रा. ७।३२ या., अमृतयोग:, पश्चिम यात्रा, विश्व स्वास्थ्य दिवस:
८	वि. योग: ५५।२१, चन्द्रदर्शनं, रेमन्त पूजा, दग्ध तिथि: रा. ३।३८ या., सूतीस्नानं, दक्षिणां विना यात्रा अश्विन्यां, शिववास:, अग्निवास:, सर्वार्थसिद्धियोग: सं. ६।२७ या., दीक्षाग्रहणं अश्विन्यां
९	मन्वन्तरादि:
१०	श्री गणेश ४ व्रतं, श्री सूर्यषष्ठी व्रतीनां संयम: (नहाय-खाय), भ. १९।१४ उ. ४७।९ या., दक्षिण यात्रा रोहिण्यां, अग्निवास:, सिद्धियोग: रा. १२।३७ या. तत: मृत्युयोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: सं. ५।०६ उ.
११	श्री सूर्यषष्ठी व्रतीनां एकभुक्त (खरना), श्री पंचमी, लक्ष्मीव्रतं, पंचम्यां पूर्व दक्षिण यात्रा, शिववास:, अग्निवास:, अमृतयोग: रा. १०।३५ या. तत: मृत्युयोग:, उपनयनं, दीक्षाग्रहणं रोहिन्यां
१२	श्री सूर्यषष्ठी व्रतं सायं कालिकार्घदानं, गजपूजा, विल्वाभिमंत्रणं, पूर्वाविना यात्रा मृगशिरसि, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. २।३२ या., शिववास:, सिद्धियोग: रा. ८।२२ या. तत: मृत्युयोग:
१३	मासान्त:, भ. ३७।४० उ., प्रात: कालिकार्घदानं, पत्रिका प्रवेश:, महारात्रिर्निशापूजा, अग्निवास:, अमृतयोग: सं. ६।०२ या. तत: सिद्धियोग: ❖ हरिद्वारकल्पवासारम्भ:, मृत्युयोग: दि. ३।३७ या.
१४	मेष संक्रान्ति, अश्विन्यां मेषे रवि: ३१।३९ मु. ३० फलं साम्यं जवविषुव संक्रान्ति पुण्यकालो: ५।४१ या., भ. ४।४७ या., अशोकाष्टमी अशोक कलिका पानं, ब्रह्मपुत्र स्नानं, महाष्टमीव्रतं, सतुआईन,❖
१५	मासादि:, रामनवमी, रामावतार:, हनुमदध्वजदानं, श्रीसीताराम पूजनं, दर्शनं, हवनादि:, त्रिशूलिनी पूजा, जुड़िशीतल, गंड ५४।५९ उ., मार्गीगुरु: ४२।१९, शिववास:-मृत्युयोगश्च दि. १।१० या.★
१६	भ. ४६।४९ उ., विजयादशमी, अपराजिता पूजा, देवी विसर्जनं, जयन्ती धारणं, नवरात्र-रामनवमी पारणंच, गंड ९।५९ या., शूल योग: ५२।२९, विवाहो मघायां, अमृतयोग: दि. ११।११ या. तत: शिववास:, अग्निवास:
१७	पू.फ.न. ५७।०५, भ. १३।५० या., कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, अग्निवास:, अमृतयोग: दि. ८।४० या. तत: शिववास: ♦ अग्निवास:-सिद्धियोगश्च प्रा. ६।३३ उ., विपणि, दीक्षाग्रहणं द्वादश्यायां
१८	१३ तिथिमानम् ५६।३६ विष्णु द्वादशी, गो घृतेन पारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, चैत्रावली, द्विरागमनं, देवादिप्रतिष्ठा, मदन १३, मदन पूजनं मेषादित्ये निम्ब पत्रयुत मसूर बीजपानं, महावीर जयंती, शिववास:,♦
१९	भ. ५९।०३ उ., मदन भंजिका १४, प्रदोष-१४ व्रतं, द्विरागमनं, दयाकान्त स्मृतिदिवस:, विपणि ★ तत: सिद्धियोग:, अग्निवास:, सर्वार्थसिद्धियोग:, गुरुपुष्य योगश्च दि. ६।३८ या.
२०	चैत्री पूर्णिमा, स्नानदानादि: भ. २७।२१ या., अग्निवास:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. बुध	३।२५।१५।०६	११।०८।४१।२४	३।२३।०४।५३	१०।२०।५६।१२	११।२३।०२।१२	६।२५।४२।२७	४५।३२
२. गुरु	३।२५।१७।५४	११।१०।२७।५७	३।२३।०४।५३	१०।२२।०६।१३	११।२३।१०।५९	६।२५।३६।१६	४५।३४
३. शुक्र	३।२५।२५।१२	११।१२।१६।०६	३।२३।०३।४७	१०।२३।२५।५२	११।२३।१७।१२	६।२५।३६।०५	४५।३६
४. शनि	३।२५।३२।३०	११।१४।१०।१५	३।२३।०२।४१	१०।२४।४२।३१	११।२३।२३।२५	६।२५।३२।५४	४५।३८
५. रवि	३।२५।३९।४८	११।१६।०१।२३	३।२३।०१।३६	१०।२५।५९।१०	११।२३।२९।३८	६।२५।२९।४३	४५।४०
६. सोम	३।२५।४७।०६	११।१७।५२।३१	३।२३।००।३१	१०।२७।१५।४९	११।२३।३५।५१	६।२५।२६।३२	४५।४२
७. मंगल	३।२५।५४।२३	११।१९।४३।३९	३।२२।५९।२६	१०।२८।३२।२८	११।२३।४२।०३	६।२५।२३।२१	४५।४४
८. बुध	३।२६।०१।४०	११।२१।३४।४७	३।२२।५८।२१	१०।२९।४९।०७	११।२३।४८।१५	६।२५।२०।१०	४५।४६
९. गुरु	३।२६।०८।५७	११।२३।२५।५५	३।२२।५७।१६	११।०१।०५।४६	११।२३।५४।२७	६।२५।१६।५९	४५।४८
१०. शुक्र	३।२६।२३।३६	११।२५।५१।३८	३।२२।५७।३२	११।०२।१८।५७	११।२४।०३।३८	६।२५।१३।४८	४५।५०
११. शनि	३।२६।३८।१५	११।२८।१७।२१	३।२२।५७।४८	११।०३।३२।०७	११।२४।१२।४९	६।२५।१०।३७	४५।५२
१२. रवि	३।२६।५२।२४	०।००।४३।०४	३।२२।५८।०४	११।०४।४५।१७	११।२४।२२।००	६।२५।०७।२६	४५।५४
१४. सोम	३।२७।०७।३३	०।०३।०८।४७	३।२२।५८।२०	११।०५।५८।२७	११।२४।३१।११	६।२५।०४।१५	४५।५६
१५.मंगल	३।२७।२२।१२	०।०५।३४।२६	३।२२।५८।३५	११।०७।११।३७	११।२४।४०।२१	६।२५।०१।०४	४५।५८

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मे.अं. घ. मि.	मे.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क. अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. बुध	७।३८	९।१८	११।१६	१३।३६	१५।५४	१८।१०	२०।३०	२२।४३	१।०२	३।०५	४।४३	६।१०
२. गुरु	७।३४	९।१४	११।१५	१३।३२	१५।५०	१८।०६	२०।२६	२२।३९	०।५८	३।०१	४।३९	६।०६
३. शुक्र	७।३०	९।१०	११।११	१३।२८	१५।४६	१८।०२	२०।२२	२२।३५	०।५४	२।५७	४।३५	६।०२
४. शनि	७।२६	९।०६	११।०७	१३।२४	१५।४२	१७।५८	२०।१८	२२।३१	०।५०	२।५३	४।३१	५।५८
५. रवि	७।२२	९।०२	११।०३	१३।२०	१५।३८	१७।५४	२०।१४	२२।२७	०।४६	२।४९	४।२७	५।५४
६. सोम	७।१८	८।५८	१०।५९	१३।१६	१५।३४	१७।५०	२०।१०	२२।२३	०।४२	२।४५	४।२३	५।५०
७. मंगल	७।१४	८।५४	१०।५५	१३।१२	१५।३०	१७।४६	२०।०६	२२।१९	०।३८	२।४१	४।१९	५।४५
८. बुध	७।१०	८।५०	१०।५१	१३।०८	१५।२६	१७।४२	२०।०२	२२।१५	०।३४	२।३७	४।१५	५।४१
९. गुरु	७।०७	८।४७	१०।४८	१३।०५	१५।२३	१७।३९	१९।५९	२२।१२	०।३१	२।३४	४।१२	५।३८
१०. शुक्र	७।०३	८।४३	१०।४४	१३।०१	१५।१९	१७।३५	१९।५५	२२।०८	०।२७	२।३०	४।०८	५।३४
११. शनि	७।००	८।४०	१०।४१	१२।५८	१५।१६	१७।३१	१९।५२	२२।०५	०।२४	२।२७	४।०५	५।३१
१२. रवि	६।५६	८।३६	१०।३७	१२।५४	१५।१२	१७।२७	१९।४८	२२।०१	०।२०	२।२३	४।०१	५।२७
१४. सोम	६।५३	८।३३	१०।३४	१२।५१	१५।०९	१७।२४	१९।४५	२१।५८	०।१७	२।२०	३।५८	५।२४
१५.मंगल	६।४९	८।२९	१०।३१	१२।४७	१५।०५	१७।२०	१९।४१	२१।५४	०।१३	२।१६	३।५४	५।२०

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथिय: दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. बुध	दि.८।५३-१०।२६।दि.१२।००-१।३३	रा.१२।००-१।२६।रा.२।५३-४।२०
२. गुरु	दि.३।०७-६।१४	रा.१२।००-१।२६।रा.४।१९-५।४५
३. शुक्र	दि.८।५३-१२।००	रा.९।०७-१०।३३
४. शनि	दि.५।४५-७।१८।दि.१।३३-३।०७।दि.४।४१-६।१५	सं.६।१५-७।४१।रा.१।२६-२।५२।रा.४।१८-५।४४
५. रवि	दि.१०।२६-१२।००	रा.१०।३४-१२।००।रा.१।२६-२।५२
६. सोम	दि.७।१७-८।५१।दि.३।०८-४।४२	रा.१०।३४-१२।००।रा.२।५१-४।१७
७. मंगल	दि.७।१६-८।५१।रा.१।३४-३।०९	रा.७।४३-९।०९
८. बुध	दि.८।५१-१०।२५।रा.१२।००-१।३४	रा.१०।३४-१२।००।रा.२।५१-४।१६
९. गुरु	दि.३।०९-६।१९	रा.१०।३४-१२।००।रा.४।१५-५।४०
१०. शुक्र	दि.८।५०-१२।००	रा.९।१०-१०।३५
११. शनि	प्रा.५।३९-७।१४।दि.१।३५-३।१०।दि.४।४५-६।२१	सं.६।२१-७।४५।रा.१।२४-२।४९।रा.४।१४-५।३८
१२. रवि	दि.१०।२४-१।३५	रा.१०।३५-१२।००।रा.१।२४-२।४९
१४. सोम	दि.७।१३-८।४९।दि.३।११-४।४६	रा.१०।३५-१२।००।रा.२।४९-४।१३
१५.मंगल	दि.७।१२-८।४८।दि.१।३५-३।११	रा.७।४७-९।११

चै. शु. २ गु. व. ८।४०।१७।१६
अयनांशा: २२।५५।०६

चै. शु. ६ गु. व. ८।४०।१७।२६
अयनांशा: २२।५५।०७

विविधविषया:- चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावत् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्, सप्तशतीपाठदिकं च कुर्यात्। चैत्रशुक्लतृतीयायाङ्गौरीशङ्करौ सम्पूज्य दोलोत्सवं कुर्यात्। तदुक्तं **देवीमहापुराणे**-तृतीयायां यजेद्दवीं शङ्करेण समन्विताम् कुङ्कुमागरुकर्पूमणिवस्त्र-सुगन्धकै:।। स्रग्गन्धधूपदीपैश्च दमनेन विशेषत:। आन्दोलयेत्ततो वत्स शिवोमातुष्टये सदा।।

चैत्रशुक्लपञ्चम्यां लक्ष्मीव्रतम्, कृत्यमहार्णवे-शुक्लायामथ पञ्चम्यां चैत्रै मासि शुभाना। श्रीर्ब्रह्मलोकात् सम्प्राप्ता मानुष्यं केशवाज्ञया।। तस्मात्ता। पूजयेत्तत्र यस्तं लक्ष्मीर्न मुञ्चति। एषा श्रीपञ्चमी कार्या विष्णुलोकगतिप्रदा।।

चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्र:- त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिवामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु। एतत्पानफलं **लिंगपुराणे**- अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिवन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयु:।।

ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्र: ब्रह्मपुत्रमहाभाग शन्तनो: कुलसम्भव:। अमोघागर्भसम्भूत पापं लौहित्य मे हर।।

चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतं तत्रांगदेवतापूजनपूर्वकं श्रीरामं संपूज्यार्घ्यं

दद्यात्तन्मन्त्र:- दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधुनां जातो राम: स्वयं हरि:। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभि: सहितोऽनघ।। तत: परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणँश्च भोजयेत्।।

चक्षूरक्षार्थं पठनीयमन्त्र:- शर्यातिञ्च सुकन्यां शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते।

वैशाख कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्यगोल:, सौम्यायनम्, वसन्तर्तु: (राहु) दक्षिणेकाल: शुद्धसमय:

दिनांक: २१ अप्रैल से ०६ मई २०२७ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	बुध	५३।२६	रा.२।५६	स्वा.५७।०२	रा.४।२५	ब्र.२६।१८	बा.२४।३०	तुला	०।०७।०७।१६	३१।५६	५।३६	६।२४	१४	८	२१	वैशाखे तैलंत्यजेत्, पश्चिम दक्षिण यात्रा-विवाह:-द्विरागमनश्च स्वात्यायां, शिववास:, अमृतयोग:
२	गुरु	५४।०६	रा.३।१५	विशा.५६।४६	रा.शे.५।३०	सि.२३।४३	तै.२२।४८	तु.रा.११।१४	०।०८।०५।५१	३२।०२	५।३६	६।२४	१५	९	२२	अश्विन्यां मेषे बुध: ४०।१७, पृथ्वी दिवस:, अग्निवास:
३	शुक्र	५६।१४	रा.४।०४	अनु.६०।००	अहोरात्र	व्य.२२।०९	व.२२।२०	वृश्चिक	०।०९।०४।२०	३२।०६	५।३५	६।२५	१६	१०	२३	भद्रा २२।२० उ. ५२।२६ या., विवाह: दिवारात्रौ, द्विरागमनं, गृहारम्भ:, सवार्थसिद्धियोग:, विपणि, दीक्षाग्रहणं, कुँवरसिंह जयन्ती
४	शनि	५९।१८	रा.शे.५।१७	अनु.३।२६	दि.६।५६	वरि.२१।२९	बव.२३।१२	वृश्चिक	०।१०।०२।२९	३२।०९	५।३४	६।२६	१७	११	२४	वक्रतुंड ४ व्रतं, पश्चिमोत्तर यात्रा, चतुर्थ्यां, शिववास:, अग्निवास:, सिद्धियोग:
५	रवि	६०।००	अहोरात्र	ज्ये.८।१३	दि.८।५१	परि.२१।४६	कौ.२५।१६	वृ.दि.८।५१	०।११।००।४८	३२।१२	५।३४	६।२६	१८	१२	२५	गंड-२।१३ उ. ७।१३ या. दग्ध तिथि: ५६।३५ उ. उत्तर यात्रा पंचम्यां, विवाह:- दीक्षाग्रहणं-द्विरागमनश्च मूले, शिववास:, अमृतयोग:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. ८।५१ उ.
५	सोम	३।३०	दि.६।५७	मूल.१३।५५	दि.११।०७	शि.२२।४४	गर.२८।२८	धनु	०।११।५९।०६	३२।१५	५।३३	६।२७	१९	१३	२६	कोकिला षष्ठी, दग्धतिथि: अहोरात्र, अग्निवास:, शिववास: प्रा. ६।५७ या. तत: सिद्धियोग:, द्विरागमनं
६	मंगल	८।१६	दि.८।५०	पू.षा.२०।१६	दि.१।३८	सि.२४।०७	व.००।२१	ध.रा.८।१८	०।१२।५७।२४	३२।१८	५।३२	६।२८	२०	१४	२७	भ. ०।२१ उ. ३२।४० या. दग्धतिथि: ०।२१ या., मृत्युयोग: प्रा. ८।५० या. तत: अमृतयोग:
७	बुध	१३।३४	दि.१०।५६	उ.षा.२६।५२	दि.४।१६	सा.२५।४३	बव.४।५९	मकर	०।१३।५५।४२	३२।२१	५।३१	६।२९	२१	१५	२८	सर्करा सप्तमी, भरण्यां रवि: १२।३९, विवाह: दिवारात्रौ, अग्निवास:, सिद्धियोग:-विपणि च दि. १०।५६ या. तत: शिववास:-मृत्युयोगश्च
८	गुरु	१८।३७	दि.१२।५७	श्रवण३३।१६	रा.६।४९	शु.२७।१०	कौ.१०।०२	मकर	०।१४।५४।००	३२।२४	५।३१	६।२९	२२	१६	२९	भदवारम्भ: सं. ६।४९ उ. दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां, विवाह: अष्टम्यां, शिववास:-अमृतयोगश्च दि. १२।५७ या. तत: मृत्युयोग:
९	शुक्र	२३।१०	दि.२।४६	धनि.३९।०६	रा.९।०८	शु.२८।१२	गर.१५।१२	म.दि.७।५८	०।१५।५१।५३	३२।२८	५।३०	६।३०	२३	१७	३०	भद्रा-४७।३६ उ., द्वादश्यां दक्षिण यात्रा नवम्यां, अग्निवास:, अमृतयोग: दि. २।४६ या.
१०	शनि	२६।५५	दि.४।१६	शत.४४।०८	रा.११।०९	ब्र.२८।३८	वि.२०।००	कुम्भ	०।१६।४९।४६	३२।३१	५।३०	६।३०	२४	१८	१ मई	मई मासारम्भ:, भद्रा-२०।०० या., मृत्युयोग: दि. ४।१६ या. तत: अमृतयोग:-शिववासश्च, शिवाजी जयन्ती, श्रमिक दिवस:
११	रवि	२९।३१	सं.५।१७	पू.भा.४८।००	रा.१२।४१	ऐं.२८।०८	बा.२४।०५	कुं.रा.६।१७	०।१७।४७।३९	३२।३४	५।२९	६।३१	२५	१९	२	वरुथिनी ११ व्रतं सर्वेषां, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, विवाह: उत्तरभाद्रपदे, द्वादश्यां दक्षिण यात्रा पूर्वभाद्रे, शिववास:, अग्निवास:-मृत्युयोगश्च सं. ५।१७ या.
१२	सोम	३०।५९	सं.५।५३	उ.भा.५०।४२	रा.१।४६	वै.२६।४६	तै.२७।११	मीन	०।१८।४५।३२	३२।३७	५।२९	६।३१	२६	२०	३	कुशोदकेन पारणम्, प्रदोष-१३ व्रतं, विवाह: दिवारात्रौ, शिववास:-मृत्युयोगश्च सं. ५।५३ या. तत: अग्निवास:, प्रेस स्वतंत्रता दिवस:
१३	मंगल	३१।०७	सं.५।५५	रेवती.५२।०६	रा.२।१८	वि.२४।२२	व.२९।१३	मी.रा२।१८	०।१९।४३।२५	३२।४०	५।२८	६।३२	२७	२१	४	भद्रा २९।१३ उ. ५९।३२ या. प्रदोष- १४ व्रतं, भदवा समाप्ति: रा.२।१८ उ., गंड ४०।०६ उ. ५५।०६ या., पश्चिम यात्रा, सिद्धियोग: सं. ५।५५ या. तत: राज्यप्रदयोग:, गुंजेश्वर स्मृति दिवस:
१४	बुध	३०।०१	सं.५।२७	अश्वि.५२।१७	रा.२।२२	प्री.२०।५७	श.२९।५१	मेष	०।२०।४१।१७	३२।४३	५।२७	६।३३	२८	२२	५	आर्द्रायां शुक्र: १३।४७, शिववास: सं. ५।२७ उ.
३०	गुरु	२७।३९	दि.४।३०	भरणी.५१।१८	रा.१।५८	आ.१६।३४	नाग.२९।१०	मेष	०।२१।३९।०९	३२।४६	५।२७	६।३३	२९	२३	६	वैशाखी अमावास्या, स्नानदानादि:, शिववास: दि. ४।३० या., अग्निवास:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. बुध	३।२७।५१।२९	०।०८।००।११	३।२२।५८।५०	११।०८।२४।४७	११।२४।४९।३१	९।२४।५७।५३	४६।००	६।४६	८।२६	१०।२८	१२।४४	१५।०२	१७।१७	१९।३८	२१।५१	०।१०	२।१३	३।५१	५।१७
२. गुरु	३।२७।५१।२९	०।१०।२५।५३	३।२२।५९।०५	११।०९।३७।२७	११।२४।५८।४१	९।२४।५४।४२	४६।०१	६।४२	८।२२	१०।२४	१२।४०	१४।५८	१७।१३	१९।३४	२१।४७	०।०६	२।०९	३।४७	५।१३
३. शुक्र	३।२८।०३।४९	०।१२।०९।५२	३।२३।००।३५	११।१०।५२।२७	११।२५।०६।५१	९।२४।५१।३१	४६।०३	६।३९	८।१९	१०।२१	१२।३७	१४।५५	१७।१०	१९।३१	२१।४४	०।०३	२।०६	३।४४	५।१०
४. शनि	३।२८।१६।०९	०।१३।५३।५१	३।२३।०२।०५	११।१२।५७।२७	११।२५।१५।०१	९।२४।४८।२०	४६।०५	६।३६	८।१६	१०।१८	१२।३४	१४।५२	१७।०७	१९।२८	२१।४१	०।००	२।०३	३।४१	५।०७
५. रवि	३।२८।२८।२८	०।१५।३७।५०	३।२३।०३।३५	११।१३।२२।२७	११।२५।२३।१०	९।२४।४५।०९	४६।०७	६।३२	८।१२	१०।१४	१२।३०	१४।४८	१७।०३	१९।२४	२१।३८	२३।५७	२।००	३।३८	५।०४
५. सोम	३।२८।४०।४७	०।१७।२१।४९	३।२३।०५।०५	११।१४।३७।२७	११।२५।३१।१९	९।२४।४१।५८	४६।०९	६।२९	८।०९	१०।११	१२।२७	१४।४५	१७।००	१९।२१	२१।३५	२३।५४	१।५७	३।३५	५।०१
६. मंगल	३।२८।५३।०६	०।१९।०५।४७	३।२३।०६।३५	११।१५।५२।२६	११।२५।३९।२८	९।२४।३८।४७	४६।१०	६।२६	८।०६	१०।०८	१२।२४	१४।४२	१६।५७	१९।१८	२१।३२	२३।५०	१।५३	३।३१	४।५७
७. बुध	३।२९।०५।२५	०।२०।४९।४५	३।२३।०८।०५	११।१७।०७।२५	११।२५।४७।३७	९।२४।३५।३६	४६।११	६।२३	८।०३	१०।०५	१२।२१	१४।३९	१६।५४	१९।१५	२१।२८	२३।४६	१।४९	३।२८	४।५४
८. गुरु	३।२९।१७।४४	०।२२।३३।४३	३।२३।०९।३५	११।१८।२२।२४	११।२५।५५।४६	९।२४।३२।२५	४६।१२	६।२०	८।००	१०।०२	१२।१८	१४।३६	१६।५१	१९।१२	२१।२५	२३।४२	१।४५	३।२४	४।५०
९. शुक्र	३।२९।३९।१५	०।२३।४७।३२	३।२३।१३।०३	११।१९।३७।४३	११।२६।०३।३४	९।२४।२९।१४	४६।१४	६।१६	७।५६	९।५८	१२।१४	१४।३२	१६।४७	१९।०८	२१।२१	२३।३८	१।४२	३।२१	४।४७
१०. शनि	३।२९।५४।४६	०।२५।११।२१	३।२३।१६।३१	११।२०।५३।०२	११।२६।११।२२	९।२४।२६।०३	४६।१६	६।१३	७।५३	९।५५	१२।११	१४।२९	१६।४४	१९।०४	२१।१८	२३।३५	१।३९	३।१८	४।४४
११. रवि	४।००।१३।१७	०।२६।३५।१०	३।२३।१९।५९	११।२२।०८।२०	११।२६।१९।१०	९।२४।२२।५२	४६।१८	६।१०	७।५०	९।५२	१२।०८	१४।२६	१६।४१	१९।०१	२१।१५	२३।३२	१।३६	३।१५	४।४१
१२. सोम	४।००।३१।४८	०।२७।५८।५९	३।२३।२३।२७	११।२३।२३।३८	११।२६।२६।५८	९।२४।१९।४१	४६।२०	६।०७	७।४७	९।४९	१२।०५	१४।२३	१६।३८	१८।५८	२१।१२	२३।२९	१।३२	३।११	४।३७
१३.मंगल	४।००।५०।१८	०।२९।२२।४८	३।२३।२६।५५	११।२४।३८।५६	११।२६।३४।४६	९।२४।१६।३०	४६।२१	६।०४	७।४४	९।४६	१२।०२	१४।२०	१६।३५	१८।५५	२१।०९	२३।२६	१।२९	३।०८	४।३४
१४. बुध	४।०१।०८।४८	१।००।४६।३७	३।२३।३०।२३	११।२५।५४।१४	११।२६।४२।३४	९।२४।१३।१९	४६।२२	६।००	७।४०	९।४२	११।५८	१४।१६	१६।३१	१८।५१	२१।०५	२३।२२	१।२६	३।०५	४।३१
३०. गुरु	४।०१।२७।१८	१।०२।१०।२५	३।२३।३३।५१	११।२७।०९।३२	११।२६।५०।२२	९।२४।१०।०८	४६।२३	५।५७	७।३७	९।३९	११।५५	१४।१३	१६।२८	१८।४८	२१।०२	२३।१९	१।२२	३।०१	४।२७

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.८।४८-१०।२४।दि.१२।००-१।३६	रा.१२।००-१।२४।रा.२।४८-४।१२
दि.३।१२-६।२४	रा.१२।००-१।२४।रा.४।१२-५।३५
दि.८।४७-१२।००	रा.९।१२-१०।३६
प्रा.५।३४-७।१०।दि.१।३६-३।१३।दि.४।४९-६।२३	सं.६।२३-७।४९।रा.१।२३-२।४७।रा.४।१०-५।३३
दि.१०।२३-१।३६	रा.१०।३६-१२।००।रा.१।२३-२।४७
दि.७।९-८।४६।दि.३।१३-४।५०	रा.१०।३६-१२।००।रा.२।४६-४।९
दि.७।९-८।४६।दि.१।३७-३।१४	रा.७।५१-९।१४
दि.८।४५-१०।२२।दि.१२।००-१।३७	रा.१२।००-१।२२।रा.२।४५-४।०८
दि.३।१४-६।२९	रा.१२।००-१।२२।रा.४।०८-५।३०
दि.८।४५-१२।००	रा.९।१५-१०।३७
प्रा.५।३०-७।०७।दि.१।३७-३।१५।दि.४।५२-६।३०	सं.६।३०-७।५२।रा.१।२२-२।४५।रा.४।०७-५।२९
दि.१०।२२-१।३७	रा.१०।३७-१२।००।रा.१।२२-२।४४
दि.७।०६-८।४४।दि.३।१५-४।५३	रा.१०।३७-१२।००।रा.२।४४-४।०६
दि.७।०६-८।४४।दि.१।३८-३।१६	रा.७।५४-९।१६
दि.८।४३-१०।२१।दि.१२।००-१।३८	रा.१२।००-१।२१।रा.२।४३-४।०५
दि.३।१६-६।३३	रा.१२।००-१।२१।रा.४।०५-५।२६

वै. कृ. २ शु. व. ८।४०।१७।३३
अयनांशा: २२।५५।०८

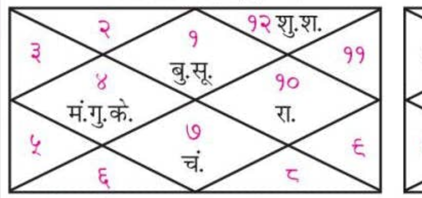

वै. कृ. ८ गु. व. ८।४०।१७।४०
अयनांशा: २२।५५।०९

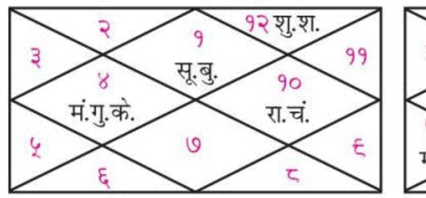

वै. कृ. ३० गु. व. ८।४०।१७।४७
अयनांशा: २२।५५।१०

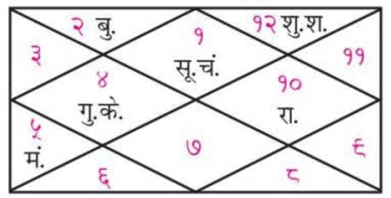

विविधविषया:-वैशाखे प्रात:स्नानमन्त्र:-वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवे:। प्रात: सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन।। मधुहन्तु: प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रात: स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।।

प्रात:स्नानसमय:- उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।।

मासविशेषे स्नानम्- कौशिकी माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववतीं मार्गे कार्तिके यामुनीं तथा।। भूयसी गैरिका चैवमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा।। विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुन मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा।। वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्य: शुभावहा:।। गंगा तु सर्वदेति।

वैशाख शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्यगोल:, सौम्यायनम्, वसन्तर्तु: ता. १५ त: ग्रीष्मर्तु:, (राहु) दक्षिणेकाल: ता. १५ त: पश्चिमेकाल: शुद्धसमय:

दिनांक: ७ मई से २० मई २०२७ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	शुक्र	२४।१६	दि.३।०८	कृ.४६।२६	रा.१।१२	सौ.११।२२	बव.२७।१८	मे.दि.७।४६	०।२२।३७।१२	३२।५०	५।२६	६।३४	१	२४	७	चन्द्रदर्शनं, विवाह: रोहिण्यां, शिवाजी जयन्ती, अग्निवास:-सिद्धियोगश्च दि. ३।०८ या. तत: शिववास:-मृत्युयोगश्च
२	शनि	२०।००	दि.१।२५	रो.४४।४६	रा.११।२१	शो.५।२६	कौ.२४।२०	वृष	०।२३।३५।१४	३२।५३	५।२५	६।३५	२	२५	८	सर्वार्थसिद्धियोग:, अतिगंड योग: ५३।१४, शिववास: दि. १।२५ या., विश्व रेडक्रॉस दिवस:
३	रवि	१४।५६	दि.११।२३	मृग.४३।१६	रा.१०।४३	शु.५१।४३	गर.२०।२५	वृ.दि.१०।४७	०।२४।३३।१६	३२।५६	५।२५	६।३५	३	२६	९	अक्षयतृतीया, त्रेतायुगादि:, गंगा-कौशिकी-वाङ्मत्यादि स्नानं, विवाह:-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठाश्च मृगशिरसि, श्री गणेश ४ व्रतं, तृतीयायां पश्चिमां विना यात्रा, परशुराम जयन्ती, रविव्रतविसर्ग:,❖
४	सोम	६।२२	दि.६।०८	आ.३६।२२	रा.६।०६	धृ.४४।१६	वि.१५।४१	मिथुन	०।२५।३१।१८	३२।५६	५।२४	६।३६	४	२७	१०	भद्रा १५।४१ या., बुधोदय: पश्चिमे, उपनयनं, द्विरागमनं, गृहप्रवेश: रा. ६।०६ उ., अग्निवास:, शिववास:-अमृतयोगश्च दि. ६।०८ उ. ❖ सप्तडोराविसर्ग:, सिद्धियोग: दि. ११।२३ या.
५	मंगल	३।२६	प्रा.६।४६	पुन.३५।१८	रा.७।३१	शू.३६।४१	बा.१०।१६	मि.दि.१।५६	०।२६।२६।२०	३३।०२	५।२४	६।३६	५	२८	११	६ तिथिमानम् ५३।५४ जगदगुरु शंकराचार्य जयन्ती, दग्धतिथि: १०।१६ उ., शिववास:, प्रयोगिकी दिवस:
७	बुध	५१।१५	रा.१।५३	पुष्य.३१।०७	सं.५।५०	ग.२६।०१	तै.४।२६	कर्क	०।२७।२७।२२	३३।०५	५।२३	६।३७	६	२९	१२	जाह्नवी सप्तमी, भद्रा ५८।२३ उ., कृत्तिकायां रवि: ००।३०, मुण्डनं, द्विरागमनं पुष्ये, गृहप्रवेश:-देवादिप्रतिष्ठाश्च सप्तम्यां पुष्ये, दग्धतिथि: ४।२९ या., सप्तम्यां पुष्ये उत्तरां विना यात्रा, शिववास:,★
८	गुरु	४५।२५	रा.११।३२	श्ले.२७।०७	दि.४।१३	वृ.२१।२८	वि.२५।१६	क.दि.४।१३	०।२८।२५।२४	३३।०८	५।२२	६।३८	७	३०	१३	भद्रा २५।१९ या., गंड १६।०७ उ.-३१।०७ या., अमृतयोग:, विवाह: अष्टम्यां मघाश्च ★ सिद्धियोग:, अग्निवास:, विपणि, दीक्षाग्रहणं पुष्ये
९	शुक्र	३६।५६	रा.६।२०	मघा.२३।३१	दि.२।४६	ध्रु.१४।१४	बा.१६।५४	सिंह	०।२९।२३।०२	३३।११	५।२२	६।३८	८	३१	१४	जानकी नवमी व्रतं, मैथिली दिवस:, हनुमद्धवजदानं, श्रीसीताराम पूजनादि, वगलामुखी जयन्ती, मासान्त:, शिववास:, अग्निवास:
१०	शनि	३५।०५	रा.७।२३	पू.फ.२०।२७	दि.१।३२	व्या.७।२८	तै.२३।२५	सिं.सं.७।१८	१।००।२०।४०	३३।१४	५।२१	६।३९	९	१	१५	वृषे रवि: २८।१४ मु. ४५ फलं महर्घं विष्णुपदी सं. पु. कालो दि. घं १२ उ., हरिद्वारकल्पवास: समाप्ति:, मृत्युयोग: रा. ७।२३ या. तत: अमृतयोग:, विपणि दि. १।३२ उ.
११	रवि	३१।०६	सं.५।४७	उ.फ.१८।१४	दि.१२।३६	ह.१।१७	व.८।०३	कन्या	१।०१।१८।१८	३३।१७	५।२१	६।३९	१०	२	१६	भद्रा ८।३ उ. ३५।३० या., मोहिनी ११ व्रतं सर्वेषां, मासादि:, एकादशीव्रतोद्यापनं, मृत्युयोग: सं. ५।४७ या., सर्वार्थसिद्धियोग: दि. १२।३६ उ., विपणि, दीक्षाग्रहणं
१२	सोम	२८।०३	दि.४।३३	हस्त.१६।४८	दि.१२।०३	सि.५१।०७	बव.३।१६	क.रा.१।१९	१।०२।१५।५५	३३।२०	५।२०	६।४०	११	३	१७	मधुसूदन- १२, कुशोदकेनपारणम्, मुण्डनं, विवाह: दिवारात्रौ, गृहारम्भ:, गृहप्रवेश:, देवादिप्रतिष्ठा, प्रदोष-१३ व्रतं, शिववास:, अग्निवास:, मृत्युयोग: दि. ४।३३ या., विपणि दि. १२।०३ या.
१३	मंगल	२६।०६	दि.३।४५	चित्रा.१६।२८	दि.११।५४	व्या.४७।२२	तै.२७।४०	तुला	१।०३।१३।३२	३३।२३	५।१९	६।४१	१२	४	१८	प्रदोष- १४ व्रतं, छिन्नमस्ता जयन्ती, नरसिंहावतार:, पश्चिम दक्षिण यात्रा, शिववास:-सिद्धियोगश्च दि. ३।४५ या. तत: राज्यप्रदयोग:
१४	बुध	२५।२२	दि.३।२८	स्वा.१७।२२	दि.१२।१६	वरि.४४।३८	व.२५।१५	तुला	१।०४।११।०६	३३।२६	५।१९	६।४१	१३	५	१९	भद्रा २५।१५ उ. ५४।४० या., अग्निवास:
१५	गुरु	२५।५५	दि.३।४०	वि.१९।२६	दि.१।०६	परि.४२।५४	बव.२४।०४	तु.दि.८।१५	१।०५।०८।४६	३३।२८	५।१८	६।४२	१४	६	२०	वैशाखी पूर्णिमा, स्नानदानादि:, बुद्ध जयन्ती, विवाह: अनुराधायां, गृहारम्भ: पूर्णिमायां, पूर्णिमायां अनुराधायां पश्चिमोत्तर यात्रा, सिद्धियोग: दि. ३।४० या. तत: शिववास:, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. १।०६ उ.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क. अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. शुक्र	४।०१।४८।५१	१।०३।५३।०१	३।२३।३८।१९	११।२८।२३।००	११।२६।५०।५४	६।२४।०६।५७	४६।२५	५।५४	७।३४	६।३६	११।५२	१४।१०	१६।२४	१८।४४	२०।५८	२३।१५	१।१८	२।५७	४।२४
२. शनि	४।०२।१०।२४	१।०५।३५।३७	३।२३।४२।४७	११।२९।३६।४२	११।२६।५६।१४	६।२४।०३।४६	४६।२७	५।५०	७।३०	६।३२	११।४८	१४।०६	१६।२०	१८।४०	२०।५४	२३।११	१।१४	२।५४	४।२०
३. रवि	४।०२।३१।५७	१।०७।१८।१३	३।२३।४७।१५	०।००।५०।१७	११।२७।०७।३४	६।२४।००।३५	४६।२९	५।४६	७।२६	६।२८	११।४४	१४।०२	१६।१६	१८।३६	२०।५०	२३।०७	१।१०	२।५०	४।१६
४. सोम	४।०२।५३।३०	१।०९।००।४८	३।२३।५१।४३	०।०२।०३।५२	११।२७।१५।५४	६।२३।५७।२४	४६।३१	५।४२	७।२२	६।२४	११।४०	१३।५८	१६।१२	१८।३२	२०।४६	२३।०३	१।०६	२।४६	४।१२
५. मंगल	४।०३।१५।०२	१।१०।४३।२३	३।२३।५६।११	०।३।१७।२६	११।२७।२४।१४	६।२३।५४।१३	४६।३२	५।३८	७।१८	६।२०	११।३६	१३।५४	१६।०८	१८।२८	२०।४२	२२।५९	१।०२	२।४२	४।०८
७. बुध	४।०३।३६।३४	१।१२।२५।५८	३।२४।००।३९	०।०४।३१।००	११।२७।३२।३४	६।२३।५१।०२	४६।३३	५।३४	७।१४	६।१६	११।३२	१३।५०	१६।०४	१८।२४	२०।३८	२२।५५	०।५८	२।३८	४।०४
८. गुरु	४।०३।५८।०६	१।१४।०८।३३	३।२४।०५।०७	०।०५।४४।३४	११।२७।४०।५३	६।२३।४७।५१	४६।३४	५।३०	७।१०	६।१२	११।२८	१३।४६	१६।००	१८।२०	२०।३४	२२।५१	०।५४	२।३४	४।००
९. शुक्र	४।०४।२१।२९	१।१५।३६।१०	३।२४।१०।३७	०।०६।५६।२८	११।२७।४८।३६	६।२३।४४।४०	४६।३६	५।२५	७।०५	६।०७	११।२३	१३।४१	१५।५६	१८।१६	२०।३०	२२।४७	०।५०	२।३०	३।५६
१०. शनि	४।०४।४४।५२	१।१७।०९।४७	३।२४।१६।०७	०।०८।१४।२२	११।२७।५६।१९	६।२३।४१।२९	४६।३८	५।२१	७।०१	६।०५	११।१९	१३।३७	१५।५२	१८।१२	२०।२६	२२।४३	०।४६	२।२६	३।५२
११. रवि	४।०५।०८।१५	१।१८।४०।२४	३।२४।२१।३७	०।०९।२९।१६	११।२८।०४।०२	६।२३।३८।१८	४६।४०	५।२१	६।५७	८।५७	११।१५	१३।३३	१५।४८	१८।०८	२०।२२	२२।३९	०।४२	२।२२	३।४८
१२. सोम	४।०५।३१।३७	१।२०।११।०१	३।२४।२७।०७	०।१०।४४।१०	११।२८।११।४५	६।२३।३५।०७	४६।४१	५।१८	६।५४	८।५४	११।१२	१३।३०	१५।४५	१८।०५	२०।१९	२२।३६	०।३९	२।१९	३।४५
१३.मंगल	४।०५।५४।५९	१।२१।४१।३७	३।२४।३२।३७	०।११।५९।०४	११।२८।१९।२७	६।२३।३१।५६	४६।४२	५।१४	६।५०	८।५०	११।०८	१३।२६	१५।४१	१८।०१	२०।१५	२२।३२	०।३५	२।१५	३।४१
१४. बुध	४।०६।१८।२१	१।२३।१२।१३	३।२४।३८।०६	०।१३।१३।५८	११।२८।२७।०९	६।२३।२८।४५	४६।४३	५।१०	६।४६	८।४६	११।०४	१३।२२	१५।३७	१७।५७	२०।११	२२।२८	०।३१	२।११	३।३७
१५. गुरु	४।०६।४१।४३	१।२४।४२।४९	३।२४।४३।२९	०।१४।२८।५१	११।२८।३४।५१	६।२३।२५।३४	४६।४४	५।०६	६।४२	८।४२	११।००	१३।१८	१५।३३	१७।५३	२०।०७	२२।२४	०।२७	२।०७	३।३३

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.८।४३-१२।००	रा.६।१७-१०।३८
प्रा.५।२५-७।०३।दि.१।३८-३।१७।दि.४।५६-६।३५	सं.६।३५-७।५६।रा.१।२१-२।४२।रा.४।०३-५।२४
दि.१०।२१-१।३८	रा.१०।३८-१२।००।रा.१।२१-२।४२
दि.७।०३-८।४२।दि.३।१८-४।५७	रा.१०।३९-१२।००।रा.२।४२-४।०३
दि.७।०३-८।४२।दि.१।३९-३।१८	रा.७।५७-६।१८
दि.८।४१-१०।२०।दि.१२।००-१।३९	रा.१२।००-१।२०।रा.२।४१-४।०२
दि.३।१९-६।३८	रा.१२।००-१।२०।रा.४।०१-५।२१
दि.८।४१-१२।००	रा.६।१९-१०।३९
प्रा.५।२१-७।००।दि.१।३९-३।१९।दि.४।५९-६।३९	सं.६।३९-७।५९।रा.१।२०-२।४०।रा.४।००-५।२०
दि.१०।२०-१।३९	रा.१०।३९-१२।००।रा.१।२०-२।४०
दि.७।००-८।४०।दि.३।२०-५।००	रा.१०।४०-१२।००।रा.२।४०-४।००
दि.६।५९-८।३९।दि.१।४०-३।२०	रा.८।००-९।२०
दि.८।३९-१०।१९।दि.१२।००-१।४०	रा.१२।००-१।१९।रा.२।३९-३।५९
दि.३।२१-६।४२	रा.१२।००-१।१९।रा.३।५८-५।१७

वै. शु. ८ गु. व. ८।४०।१७।५४
अयनांशा: २२।५५।११

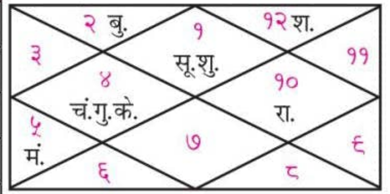

वै. शु. १५ गु. व. ८।४०।१८।०१
अयनांशा: २२।५५।१२

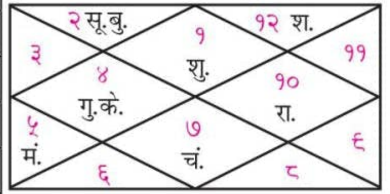

त्रीतरशान्तिरपि- विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतर:।

विविधविषय:-परशुरामार्घ्यदानमन्त्र:- जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। **जानकीनवमीव्रतम्, वृहदद्विष्णुपुराणे**- वैशाखस्य सिते पक्षे नवमी तु मघायुता। सैव मध्याह्वयोगेन शस्यते व्रतकर्मणि।। तत्र जानकीं सम्पूज्य

प्रणमेत्तन्मन्त्र:- दशाननविनाशाय जाता धरणिसम्भवा। मैथिली शीलसम्पन्ना पातु न: पतिदेवता।। **अक्षयतृतीयायां दानमक्षयफलदम्, विष्णुधमोत्तरे**-वैशाखे शुक्लपक्षे तु तृतीयायां द्विजोत्तम। यद्ददाति नरश्रेष्ठ तद्दाताऽक्षयमश्नुते।।

वैशाखे त्याज्य वस्तुनि:- कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने।

वैशाखेदान वस्तूनि:- प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद् व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथा पुपग्रहाणि च।

मूलवास:- स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभ: कार्त्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधास्तात्तु तपस्यमार्गे वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र।

अभुक्तमूलविचार:- अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिका:। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसा: क्रमात्। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्ति: मूलादिनक्षत्रेषु कार्या।

मूलवृक्षविचार:- मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मनुयोऽष्टौ दिशा रुद्रा: सूर्या: पञ्चाब्धयोऽग्न्य:। मूले मूलविनाश: स्यात्स्तम्भे वंशिविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेश: शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपूला लक्ष्मी: शिखायामल्पजीवितम्।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्यगोल:, सौम्यायनम्, ग्रीष्मर्तुः (राहु) पश्चिमेकाल: शुद्धसमय:

दिनांक: २१ मई से ४ जून २०२७ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	शुक्र	२७।५१	दि.४।२६	अनु.२२।५४	दि.२।२८	शिव.४२।१०	कौ.२४।०७	वृश्चिक	१।०६।०६।१३	३३।३०	५।१८	६।४२	१५	७	२१
२	शनि	३०।५०	सं.५।३८	ज्ये.२७।२४	दि.४।१६	सि.४२।१९	गर.२५।३०	वृ.दि.४।१६	१।०७।०३।४०	३३।३२	५।१८	६।४२	१६	८	२२
३	रवि	३४।५४	रा.७।१४	मूल.३२।५८	दि.६।२८	सा.४३।१२	वि.२८।०१	धनु	१।०८।०१।०७	३३।३४	५।१७	६।४३	१७	९	२३
४	सोम	३६।३६	रा.९।०८	पू.षा.३९।१०	रा.८।५७	शु.४४।३६	बा.३१।४४	ध.रा.३।५३	१।०८।५८।३३	३३।३६	५।१७	६।४३	१८	१०	२४
५	मंगल	४४।४७	रा.११।११	उ.षा.४५।४४	रा.११।३५	शु.४६।१५	कौ.३।२८	मकर	१।०९।५५।५९	३३।३८	५।१७	६।४३	१९	११	२५
६	बुध	४९।४९	रा.१।११	श्र.५२।१५	रा.२।१०	ब्र.४७।५२	गर.८।१३	मकर	१।१०।५३।२५	३३।४०	५।१६	६।४४	२०	१२	२६
७	गुरु	५४।२४	रा.३।०१	धनि.५८।१४	रा.४।३४	ऐ.४९।०४	वि.१३।४८	म.दि.३।२२	१।११।५०।५१	३३।४२	५।१६	६।४४	२१	१३	२७
८	शुक्र	५८।०५	रा.४।२९	शत.६०।००	अहोरात्र	वै.४९।४३	बा.१८।४५	कुंभ	१।१२।४७।४१	३३।४४	५।१५	६।४५	२२	१४	२८
९	शनि	६०।००	अहोरात्र	शत.३।२७	प्रा.६।३८	वि.४९।२८	तै.२३।०९	कुं.रा.१।५२	१।१३।४५।११	३३।४५	५।१५	६।४५	२३	१५	२९
९	रवि	०।३६	प्रा.५।२९	पू.भा.७।३३	दि.८।१६	प्री.४८।२३	व.२६।४१	मीन	१।१४।४२।४१	३३।४६	५।१५	६।४५	२४	१६	३०
१०	सोम	२।०५	प्रा.६।०५	उ.भा.१०।३३	दि.९।२८	आ.४६।१५	बव.२९।११	मीन	१।१५।४०।१०	३३।४७	५।१५	६।४५	२५	१७	३१
११	मंगल	२।११	प्रा.६।०६	रेवती.१२।१४	दि.१०।०८	सौ.४३।०६	बा.०।११	मी.दि.१०।८	१।१६।३७।३९	३३।४८	५।१४	६।४६	२६	१८	१ जून
१२	बुध	१।०१	प्रा.५।३८	अ.१२।३९	दि.१०।१८	शो.३८।५६	तै.०।४८	मेष	१।१७।३५।०८	३३।४९	५।१४	६।४६	२७	१९	२
१४	गुरु	५५।१२	रा.३।१९	भरणी.११।५६	दि.१०।००	अति.३३।५७	व.०।०५	मे.दि.३।५०	१।१८।३२।४७	३३।५०	५।१४	६।४६	२८	२०	३
३०	शुक्र	५०।५४	रा.१।३५	कृ.१०।१०	दि.९।१८	शु.२८।१०	च.२८।२९	वृष	१।१९।२९।३७	३३।५२	५।१४	६।४६	२९	२१	४

- ज्येष्ठे वृत्तान्तकं त्यजेत्, उत्तर यात्रा प्रतिपदि, अग्निवास:, शिववास:-सिद्धियोगश्च दि. ४।२६ या. तत: मृत्युयोग:, मुण्डनं, विवाह: अनुराधायां, सर्वार्थसिद्धियोग:-विपणि च दि. २।२८ या.
- भद्रा ५६।४५ उ., गंड २१।२४ उ. २६।२४ या., गृहारम्भ: दि. ४।१६ उ.
- भद्रा २८।०१ या. आखूरथ-४ व्रतं, दग्ध तिथि: २८।०१ उ., तृतीयायां मूले पूर्वोत्तर यात्रा, विवाह: तृतीयायां, सर्वार्थसिद्धियोग: सं. ६।२८ या., अग्निवास:-सिद्धियोगश्च रा. ७।१४ या.
- दग्ध तिथि:-३१।४४ या., शिववास:, विवाह: उत्तराषाढ़े
- रोहिण्यां रवि: ५४।१७, शिववास:, अग्निवास:
- भद्रा-४१।१३ उ. भदवारम्भ: रा. २।१० उ. उत्तरां विना यात्रा, श्रवणायां, विवाह: दिवारात्रौ, अमृतयोग: रा. १।११ या. तत: सिद्धियोग:
- भद्रा-१३।४८ या., अग्निवास:, विवाह: धनिष्ठायां
- विश्वनाथ स्मृति दिवस:, शिववास:
- पश्चिम दक्षिण यात्रा पूर्वभाद्रे नवम्यां, अग्निवास:, राज्यप्रदयोग:
- भद्रा-२६।४१ उ. ५८।१२ या. उत्तर यात्रा पूर्वभाद्रे, विवाह: उत्तरभाद्रपदे, अग्निवास:-अमृतयोगश्च प्रा. ५।२६ उ., विपणि दि. ८।१३ उ., हिन्दी पत्रकारिता दिवस:
- रेवत्यां पश्चिमोत्तर यात्रा, विवाह: दिवारात्रौ, अमृतयोग: प्रा. ६।०५ या. तत: शिववास:-सिद्धियोगश्च, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस:
- जून मासारम्भ: अपरा ११ व्रतं सर्वेषां, भदवा समाप्ति: दि. १०।०८ उ., गंड ०।१४ उ. १५।१४ या., द्वादश्यां मीनस्थ चंद्रे पश्चिम यात्रा ततौ उत्तरां विना यात्रा, अगस्त्यास्त, शिववास:,❖
- १३ तिथिमानम् ५७।३६ प्रदोष-१३ व्रतं, द्वादश्यां उत्तरां विना यात्रा-विवाहश्च अश्विन्यां, शिववास:-सिद्धियोगश्च प्रा. ५।३८ या. तत: मृत्युयोग:
- भ. ०।०५ उ. २९।०१ या., प्रदोष १४ व्रतं, अग्निवास:, मृत्युयोग:
- ज्येष्ठी अमावास्या, स्नानदानादि:, वट सावित्री (वरसाति) व्रतम्, शिववास:, विवाह: रोहिण्यां प्रतिपदि

❖ मृत्युयोग: प्रा. ६।०६ या. तत: अग्निवास:-अमृतयोगश्च, सर्वार्थसिद्धियोग: दि. १०।०८ उ.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. शुक्र	४।०७।०८।०२	१।२५।५२।२१	३।२४।५०।४८	०।१५।४१।०९	११।२८।४१।३४	९।२३।२२।२३	४६।४५
२. शनि	४।०७।३४।२१	१।२७।०२।१३	३।२४।५८।०७	०।१६।५३।२७	११।२८।४८।१७	९।२३।१९।१२	४६।४६
३. रवि	४।०८।००।४०	१।२८।११।५५	३।२५।०५।२६	०।१८।०५।४५	११।२८।५५।००	९।२३।१६।०१	४६।४७
४. सोम	४।०८।२६।५९	१।२९।२१।३६	३।२५।१२।४५	०।१९।१८।०२	११।२९।०१।४३	९।२३।१२।५०	४६।४८
५. मंगल	४।०८।५२।१७	२।००।३१।१७	३।२५।२०।०३	०।२०।३०।१९	११।२९।०८।२६	९।२३।०९।३९	४६।४९
६. बुध	४।०९।१८।३५	२।०१।४०।५८	३।२५।२७।०१	०।२१।४२।३६	११।२९।१५।०९	९।२३।०६।२८	४६।५०
७. गुरु	४।०९।४५।५३	२।०२।५०।३९	३।२५।३४।३९	०।२२।५४।५३	११।२९।२१।५१	९।२३।०३।१७	४६।५१
८. शुक्र	४।१०।१३।२५	२।०३।२९।२०	३।२५।४२।३८	०।२४।०५।२६	११।२९।२८।४२	९।२३।००।०६	४६।५२
९. शनि	४।१०।४०।५७	२।०४।०८।२१	३।२५।५०।३७	०।२५।१५।५९	११।२९।३५।३३	९।२२।५६।५५	४६।५३
९. रवि	४।११।०८।२८	२।०४।४६।४१	३।२५।५८।३६	०।२६।२६।३२	११।२९।४२।२४	९।२२।५३।४४	४६।५४
१०. सोम	४।११।३५।५९	२।०५।२५।२१	३।२६।०६।३५	०।२७।३७।०५	११।२९।४९।१५	९।२२।५०।३३	४६।५५
११.मंगल	४।१२।०३।३०	२।०६।०४।०१	३।२६।१४।३४	०।२८।४७।३८	११।२९।५६।०६	९।२२।४७।२२	४६।५५
१२. बुध	४।१२।३१।०१	२।०६।४२।४१	३।२६।२२।३३	०।२९।५८।११	०।००।०२।५६	९।२२।४४।११	४६।५५
१४. गुरु	४।१२।५८।३२	२।०७।२१।२१	३।२६।३०।३२	१।०१।०८।४३	०।००।०९।४६	९।२२।४१।००	४६।५५
३०. शुक्र	४।१३।२७।४७	२।०७।१७।०७	३।२६।३९।३८	१।०२।२५।०७	०।००।१६।२४	९।२२।३७।४९	४६।५५

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. शुक्र	५।०२	६।३९	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३२	१७।५०	२०।०८	२२।२६	०।२७	२।०७	३।३४
२. शनि	४।५५	६।३५	८।३६	१०।५४	१३।१२	१५।३०	१७।४६	२०।०४	२२।२२	०।२३	२।०३	३।३०
३. रवि	४।५१	६।३१	८।३२	१०।५०	१३।०८	१५।२६	१७।४२	२०।००	२२।१८	०।१९	१।५९	३।२६
४. सोम	४।४८	६।२८	८।२९	१०।४६	१३।०४	१५।२२	१७।३८	१९।५६	२२।१४	०।१५	१।५५	३।२२
५. मंगल	४।४४	६।२४	८।२५	१०।४२	१३।००	१५।१८	१७।३४	१९।५२	२२।१०	०।११	१।५१	३।१८
६. बुध	४।४०	६।२०	८।२१	१०।३९	१२।५६	१५।१४	१७।३०	१९।४८	२२।०६	०।०७	१।४७	३।१४
७. गुरु	४।३७	६।१७	८।१८	१०।३७	१२।५३	१५।११	१७।२७	१९।४५	२२।०३	०।०४	१।४४	३।११
८. शुक्र	४।३३	६।१३	८।१४	१०।३३	१२।४९	१५।०७	१७।२३	१९।४१	२१।५९	०।००	१।४०	३।०७
९. शनि	४।२९	६।०९	८।१०	१०।२९	१२।४५	१५।०३	१७।१९	१९।३७	२१।५५	२३।५६	१।३६	३।०३
९. रवि	४।२६	६।०६	८।०७	१०।२६	१२।४२	१५।००	१७।१६	१९।३४	२१।५२	२३।५३	१।३२	३।००
१०. सोम	४।२२	६।०२	८।०३	१०।२२	१२।३८	१४।५६	१७।१२	१९।३०	२१।४८	२३।४९	१।२९	२।५६
११.मंगल	४।१८	५।५८	७।५९	१०।१८	१२।३४	१४।५२	१७।०८	१९।२६	२१।४४	२३।४५	१।२५	२।५२
१२. बुध	४।१५	५।५५	७।५६	१०।१५	१२।३१	१४।४९	१७।०५	१९।२३	२१।४१	२३।४२	१।२२	२।४९
१४. गुरु	४।११	५।५१	७।५२	१०।११	१२।२७	१४।४५	१७।०१	१९।१९	२१।३७	२३।३८	१।१८	२।४५
३०. शुक्र	४।०७	५।४७	७।४८	१०।०७	१२।२३	१४।४१	१६।५७	१९।१५	२१।३३	२३।३४	१।१४	२।४१

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.८।३९-१२।००	रा.९।२१-१०।४०
प्रा.५।१८-६।५८।दि.१।४०-३।२१।दि.५।०१-६।४२	सं.६।४२-८।०१।रा.१।१९-२।३९।रा.३।५८-५।१७
दि.१०।१९-१।४०	रा.१०।४०-१२।००।रा.१।१९-२।३८
दि.६।५७-८।३८।दि.३।२१-५।०२	रा.१०।४०-१२।००।रा.२।३८-३।५७
दि.६।५७-८।३८।दि.१।४०-३।२१	रा.८।०२-९।२१
दि.८।३८-१०।१९।दि.१२।००-१।४१	रा.१२।००-१।१९।रा.२।३८-३।५७
दि.३।२२-६।४४	रा.१२।००-१।१९।रा.३।५७-५।१५
दि.८।३७-१२।००	रा.९।२२-१०।४१
प्रा.५।१५-६।५६।दि.१।४१-३।२२।दि.५।०३-६।४५	सं.६।४५-८।०३।रा.१।१८-२।३७।रा.३।५६-५।१४
दि.१०।१८-१।४१	रा.१०।४१-१२।००।रा.१।१८-२।३७
दि.६।५६-८।३७।दि.३।२२-५।०३	रा.१०।४१-१२।००।रा.२।३७-३।५६
दि.६।५५-८।३७।दि.१।४१-३।२३	रा.८।०४-९।२३
दि.८।३७-१०।१८।दि.१२।००-१।४१	रा.१२।००-१।१८।रा.२।३७-३।५५
दि.३।२३-६।४६	रा.१२।००-१।१८।रा.३।५५-५।१३
दि.८।३७-१२।००	रा.९।२३-१०।४१

ज्ये. कृ. ७ गु. व. ८।४०।१८।०८
अयनांशा: २२।५५।१३

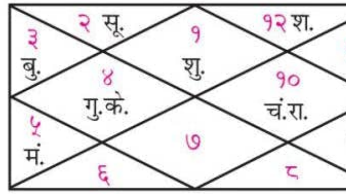

ज्ये. कृ. १३ गु. व. ८।४०।१८।१५
अयनांशा: २२।५५।१४

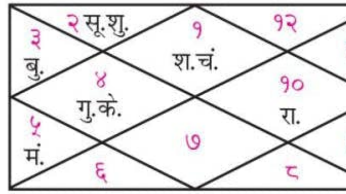

विविधविषय:-ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि वामनपुराणे-उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम् त्रिविक्रमय प्रीत्यर्थं प्रदद्याज्ज्येष्ठमासि च।। **कृत्यशिरोमणौ**-निदाघकाले पानीयं यस्य तिष्ठत्यवारितम्। स दुर्गं विषर्म कृच्छ्रं न कदाचिदवाप्नुयात्।। छात्रदानात्तथा ज्येष्ठे सर्वान् कामानवाप्नुयात्। छत्रोपानहयोर्द्दानाज्ज्येष्ठे मासिक द्विजोत्तमा:। अक्षयं फलमाप्नोति नाकलोकं च गच्छति।।

वटसावित्री व्रतम्:- अमावास्याञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपोजयेत्। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात् सौवर्णी वापी मृण्मयीम्।। सप्तधानेन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभां। सार्द्ध सत्यवता साध्वीं फल नैवेद्यदीपकै:। सावित्रयाख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोतमैरिती विधिपूर्वकं सुपूज्य ब्रह्मणाय दद्यात्।

मन्त्र:- सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्य महासती। बाह्मण: प्रीरणार्थाय ब्राह्मण: प्रतिगृह्यतां।

तिथयः	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगः दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	शनि	४५।४७	रा.११।३१	रो.७।३५	दि.८।१५	धृ.२१।४४	किं.२३।१२	वृ.सं.७।३६	१।२०।२६।३६	३३।५४	५।१३	६।४७	३०	२२	५
२	रवि	४०।०६	रा.६।१६	मृग.४।२०	दि.६।५७	शु.१४।४३	बा.१८।४८	मिथुन	१।२१।२३।३५	३३।५६	५।१३	६।४७	१	२३	६
३	सोम	३४।०६	रा.६।५२	आर्द्रा.०।३३	प्रा.५।२६	ग.०७।२४	तै.१३।४१	मि.रा.१०।२३	१।२२।२०।३४	३३।५७	५।१३	६।४७	२	२४	७
४	मंगल	२८।००	दि.४।२४	पुष्य.५२।१६	रा.२।०६	ध्रु.५२।११	व.८।०३	कर्क	१।२३।१७।३३	३३।५८	५।१२	६।४८	३	२५	८
५	बुध	२८।४८	दि.२।१६	श्ले.४८।१४	रा.१२।३०	व्या.४४।४१	बव.२।०३	क.रा.१२।३०	१।२४।१४।३२	३३।५६	५।१२	६।४८	४	२६	९
६	गुरु	१५।५६	दि.११।३४	मघा.४४।३२	रा.१०।०१	ह.३७।२५	तै.२२।४६	सिंह	१।२५।११।३१	३४।००	५।१२	६।४८	५	२७	१०
७	शुक्र	१०।२७	दि.६।३४	पू.फ.४१।१७	रा.६।४३	व.३०।३१	व.१६।४८	सिं.रा.३।२८	१।२६।०८।३१	३४।०२	५।१२	६।४८	६	२८	११
८	शनि	५।३१	दि.७।२३	उ.फ.३८।५१	रा.८।४३	सि.२४।१४	बव.११।०५	कन्या	१।२७।०५।३१	३४।०३	५।११	६।४९	७	२९	१२
९	रवि	१।२४	प्रा.५।४४	हस्त.३७।१३	रा.८।०४	व्य.१४।३८	कौ.५।५३	कन्या	१।२८।०२।३१	३४।०४	५।११	६।४९	८	३०	१३
१०	सोम	५६।११	रा.३।३९	चित्रा.३६।३७	रा.७।५०	वरि.१३।४९	गर.१।२६	क.दि.७।५७	१।२८।५९।३१	३४।०५	५।११	६।४९	९	३१	१४
१२	मंगल	५५।१९	रा.३।१८	स्वा.३७।१४	रा.७।४१	परि.९।५५	बव.२६।३५	तुला	१।२९।५६।३१	३४।०६	५।११	६।४९	१०	३२	१५
१३	बुध	५५।४४	रा.३।२८	विशा.३९।०५	रा.८।०५	शि.६।५९	कौ.२४।३९	तु.दि.२।३८	२।००।५३।३१	३४।०७	५।११	६।४९	११	१	१६
१४	गुरु	५७।३०	रा.शे.४।११	अनु.४२।१३	रा.१०।०३	सि.५।०५	गर.२३।५७	वृश्चिक	२।०१।५०।३१	३४।०८	५।१०	६।५०	१२	२	१७
१५	शुक्र	६०।००	अहोरात्र	ज्ये.४६।२५	रा.११।४४	सा.४।१२	वि.२४।३०	वृ.रा.११।४४	२।०२।४७।२६	३४।०९	५।१०	६।५०	१३	३	१८
१५	शनि	०।२२	प्रा.५।१८	मूल.५१।४४	रा.१।५२	शु.३।११	बा.२६।१८	धनु	२।३।४४।२१	३४।१०	५।१०	६।५०	१४	४	१९

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, ग्रीष्मर्तुः।। (राहु) पश्चिमेकालः शुद्धसमयः

दिनांकः ५ जून से १९ जून २०२७ ई०

रोहिण्यां दक्षिण यात्रा, मृगशिरसि पूर्वां विना यात्रा, अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ८।१५ या., पर्यावरण दिवसः

चन्द्रदर्शनं, मृगशिरसि पश्चिमां विना यात्रा, शिववासः, अग्निवासः, देवादिप्रतिष्ठा दि. ६।५७ या.

पुनर्वसु न. ५५।५४, पंचाग्नि व्रतं, रम्भातृतीया, उपनयनं, मुण्डनं, देवादिप्रतिष्ठा पुष्ये, दग्ध तिथिः ४०।५९ उ., वृ. योगः ५२।२८, महाराणाप्रताप जयन्ती

भद्रा ८।०३ उ. ३५।०७ या., श्री गणेश ४ व्रतं, उमाचतुर्थी, उमापूजनं, सरस्वती स्मृतिदिवसः, मृगशिरसि रविः ५२।४४, दग्धतिथिः ३५।०७ या., अग्निवासः-राज्यप्रदयोगश्च दि. ४।२४ या.

गंड ३७।१४ उ. ५२।१४ या., उपनयनं, विवाहो मघायाम्, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. २।१६ उ.

विन्ध्यवासिनी पूजा, विवाहो मघायाम्, ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां हस्तयोगतः। दशजन्माघहा गङ्गा दशपापहरा स्मृता।।, शिववासः-अग्निवासश्च दि. ११।३४ या.

भद्रा १६।४८ उ. ४३।५७ या., मृत्युयोगः दि. ९।३४ या. ततः अग्निवासः

"गंगाया पूजिता यान्तु पूजिताः सर्वदेवताः", अग्निवासः दि. ७।२३ या. ततः शिववासः-सिद्धियोगश्च ❖ विपणि प्रा. ५।४४ तः रा. ८।०४ या.

१० तिथिमानम् ५६।५२, हस्ते सर्वार्थसिद्धियोगः, अग्निवासः, उपनयनं, विवाहो-देवादिप्रतिष्ठा-पूर्व दक्षिण यात्राश्च दशम्यां गंगादशहरा, रामेश्वर दर्शनं, शिववासः प्रा. ५।४४ या. ततः अमृतयोगः,❖

भ. ३०।२२ उ. ५७।५२ या., निर्जला ११ व्रतं स्मार्तानां, एकादशी व्रतोद्यापनं, दक्षिण यात्रा, गृहारम्भः-गृहप्रवेशश्च, उपनयनं, मुण्डनं, विवाहः दिवारात्रौ, सिद्धियोगः, देवादिप्रतिष्ठा

वैष्णवानामेकादशीव्रतं, त्रिविक्रम-१२, तिलेन पारणम्, मिथुने रविः ५२।३४ मु. ४५ फलं. महर्घं, मासान्तः, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः, रक्तदान दिवस

प्रदोष १३ व्रतं, षड्शीति संक्रान्ति, पुण्य कालो दि.घं.-१२ या., शिववासः, मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ८।०५ उ.

भद्रा ५३।५४ उ., प्रदोष १४ व्रतं, चम्पक चर्तुदशी, रुद्र पूजा, मासादिः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.शे. ४।११ या. ततः सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा. १०।०३ या.

ज्येष्ठी पूर्णिमा-तिलादिदानं, साम्प्रतिक वैवस्वत मन्वादिः, विवाहः मूले, भद्रा २४।३० या., गंड ४०।१३ उ. ५५।१३ या., कबीर जयंती

प्रतिपदी उत्तर यात्रा, अग्निवासः, शिववासः-अमृतयोगश्च प्रा. ५।१८ उ.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथियः दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क.अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. शनि	४।१३।५७।०२	२।०७।१२।५३	३।२६।४८।४४	१।०३।४१।३०	०।००।२३।०२	६।२२।३४।३८	४६।५६	४।०४	५।४४	७।४५	१०।०३	१२।२१	१४।३७	१६।५३	१९।११	२१।२९	२३।३०	१।१०	२।३७
२. रवि	४।१४।२६।१७	२।०७।०८।३९	३।२६।५७।५०	१।०४।५७।५३	०।००।२९।४०	६।२२।३१।२७	४६।५७	४।००	५।४०	७।४१	९।५९	१२।१७	१४।३३	१६।४९	१९।०७	२१।२५	२३।२६	१।०६	२।३३
३. सोम	४।१४।५५।३२	२।०७।०४।२५	३।२७।०६।५६	१।०६।१४।१६	०।००।३६।१८	६।२२।२८।१६	४६।५८	३।५६	५।३६	७।३७	९।५५	१२।१३	१४।२९	१६।४५	१९।०३	२१।२१	२३।२२	१।०२	२।२९
४. मंगल	४।१५।२४।४७	२।०७।००।११	६।२७।१६।०२	१।०७।३०।३९	०।००।४२।५५	६।२२।२५।०५	४६।५९	३।५३	५।३३	७।३४	९।५२	१२।१०	१४।२६	१६।४२	१९।००	२१।१८	२३।१९	०।५९	२।२६
५. बुध	४।१५।५४।०१	२।०६।५५।५७	३।२७।२५।०७	१।०८।४७।०२	०।००४९।३२	६।२२।२१।५४	४७।००	३।४९	५।२९	७।३०	९।४८	१२।०६	१४।२२	१६।३८	१८।५६	२१।१४	२३।१५	०।५५	२।२२
६. गुरु	४।१६।२३।१५	२।०६।५१।४४	३।२७।३४।१२	१।१०।०३।२५	०।००।५६।०९	६।२२।१८।४१	४७।००	३।४७	५।२७	७।२८	९।४६	१२।०४	१४।२०	१६।३६	१८।५४	२१।१२	२३।१३	०।५३	२।२०
७. शुक्र	४।१६।५३।४०	२।०६।०९।१८	३।२७।४३।५८	१।११।१६।५५	०।०१।०१।४२	६।२२।१५।३२	४७।०१	३।४४	५।२४	७।२५	९।४३	१२।०१	१४।१७	१६।३३	१८।५१	२१।०९	२३।१०	०।५०	२।१७
८. शनि	४।१७।२४।०४	२।०५।२६।५२	३।२७।५३।४४	१।१२।३०।२५	०।०१।०७।१५	६।२२।१२।२१	४७।०२	३।४१	५।२१	७।२१	९।३९	११।५७	१४।१३	१६।२९	१८।४७	२१।०५	२३।०६	०।४६	२।१३
९. रवि	४।१७।५४।२८	२।०४।४४।२७	३।२८।०३।३०	१।१३।४३।५५	०।०१।१२।४८	६।२२।०९।२१	४७।०३	३।३८	५।१८	७।१८	९।३६	११।५४	१४।१०	१६।२६	१८।४४	२१।०२	२३।०३	०।४३	२।१०
१०. सोम	४।१८।२४।५२	२।०४।०२।०२	३।२८।१३।१६	१।१४।५७।२५	०।०१।१८।२१	६।२२।०५।५९	४७।०४	३।३४	५।१४	७।१५	९।३३	११।५१	१४।०७	१६।२३	१८।४१	२०।५९	२३।००	०।४०	२।०७
१२.मंगल	४।१८।५५।१६	२।०३।१९।३७	३।२८।२३।०१	१।१६।१०।५५	०।०१।२३।५४	६।२२।०२।४८	४७।०४	३।३१	५।११	७।१२	९।३०	११।४८	१४।०४	१६।२०	१८।३८	२०।५६	२२।५७	०।३७	२।०४
१३. बुध	४।१९।२५।४०	२।०२।३७।१२	३।२८।३२।४६	१।१७।२४।२४	०।०१।२९।२७	६।२१।५९।३७	४७।०४	३।२७	५।०७	७।०८	९।२६	११।४४	१४।००	१६।१६	१८।३४	२०।५२	२२।५३	०।३३	२।००
१४. गुरु	४।१९।५६।०४	२।०१।५४।४१	३।२८।४२।३१	१।१८।३७।५३	०।०१।३४।५९	६।२१।५६।२६	४७।०४	३।२३	५।०३	७।०४	९।२२	११।४०	१३।५६	१६।१२	१८।३०	२०।४८	२२।४९	०।२९	१।५६
१५. शुक्र	४।२०।२६।४७	२।०१।१५।३२	३।२८।५३।१७	१।१९।५१।१३	०।०१।४०।०२	६।२१।५३।१५	४७।०५	३।१८	४।५९	७।००	९।१८	११।३६	१३।५२	१६।०८	१८।२६	२०।४४	२२।४५	०।२५	१।५२
१५. शनि	४।२०।५७।३०	२।००।३६।२३	३।२९।०४।०१	१।२१।०४।३२	०।०१।४५।०५	६।२१।५०।०४	४७।०६	३।१६	४।५६	६।५७	९।१५	११।४३	१३।४९	१६।०५	१८।२३	२०।४१	२२।४३	०।२२	१।४९

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
प्रा.५।१३-६।५४।दि.१।४१-३।२३।दि.५।०५-६।४७	सं.६।४७-८।०५।रा.१।१८-२।३६।रा.३।५४-५।१२
दि.१०।१८-१।४१	रा.१०।४१-१२।००।रा.१।१८-२।३६
दि.६।५४-८।३६।दि.३।२३-५।०५	रा.१०।४१-१२।००।रा.२।३६-३।५४
दि.६।५४-८।३६।दि.१।४२-३।२४	रा.८।०६-९।२४
दि.८।३६-१०।१८।दि.१२।००-१।४२	रा.१२।००-१।१८।रा.२।३६-३।५४
दि.३।२४-६।४८	रा.१२।००-१।१८।रा.३।५४-५।११
दि.८।३६-१२।००	रा.९।२४-१०।४२
प्रा.५।११-६।५३।दि.१।४२-२।२४।दि.५।०६-६।४९	सं.६।४९-८।०६।रा.१।१७-२।३५।रा.३।५३-५।१०
दि.१०।१७-१।४२	रा.१०।४२-१२।००।रा.१।१७-२।३५
दि.६।५३-८।३५।दि.३।२४-५।०६	रा.१०।४२-१२।००।रा.२।३५-३।५३
दि.६।५३-८।३५।दि.१।४२-३।२४	रा.८।०६-९।२४
दि.८।३५-१०।१७।दि.१२।००-१।४२	रा.१२।००-१।१७।रा.२।३५-३।५३
दि.३।२५-६।५०	रा.१२।००-१।१७।रा.३।५२-५।१०
दि.८।३५-१२।००	रा.९।२५-१०।४२
प्रा.५।१०-६।५२।दि.१।४२-३।२५।दि.५।०७-६।५०	सं.६।५०-८।०७।रा.१।१७-२।३५।रा.३।५२-५।१०

ज्ये. शु. ६ गु. व. ८।४०।१८।२२
अयनांशाः २२।५५।१५

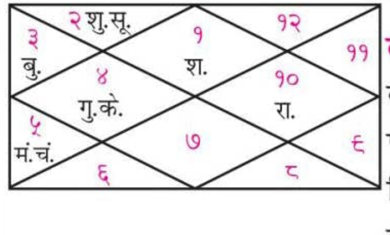

ज्ये. शु. १४ गु. व. ८।४०।१८।२६
अयनांशाः २२।५५।१६

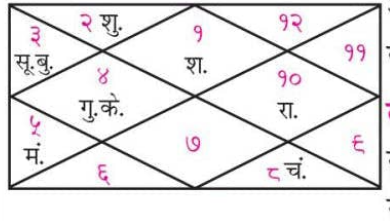

विविधविषयाः-चतुर्थ्यां सौभाग्यवृद्धये उमापूजनं ब्रह्मपुराणे- ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां तु जाता पूर्वामुमा सती। तस्मात् सा तत्र सम्पूज्या स्त्रीभिः सौभाग्यवृद्धये।।

दशपापानि- पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्। अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविध तथा। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ट चिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशपापहरा यस्मात् तस्मात् दशहरा स्मृता।

गंगादशहरा वाराहपुराणे- दशमीशुक्लपक्षेतु ज्येष्ठेमासे कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वारा। हरते दशपापानि तस्मात् दशहरा स्मृता।।

दशहरायां दशयोगाः, स्कन्दे- ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरःस्नात्वा सर्व पापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्यगोल:, सौम्यायनम्, ग्रीष्मर्तु: (राहु) पश्चिमेकाल: शुद्धसमय:

दिनांक: २० जून से ४ जुलाई २०२७ ई०

तिथय:	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योग: दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशय:	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०	
१	रवि	४।२१	दि.६।५४	पू.षा.५७।४६	रा.४।१६	शु.४।५८	तै.२६।२७	धनु	२।०४।४१।१६	३४।११	५।१०	६।५०	१५	५	२०	विल्वमाषाढ़े त्यजेत्, अग्निवास:, मृत्युयोग:-शिववासश्च दि. ६।५४ या.
२	सोम	८।५६	दि.८।४५	उ.षा.६०।००	अहोरात्र	ब्र.६।१६	गर.१।०५	ध.दि.१०।५६	२।०५।३८।११	३४।१२	५।१०	६।५०	१६	६	२१	भद्रा ३४।१३. उ., मुण्डनं, गृहारम्भ:, अग्निवास:-मृत्युयोगश्च दि. ८।४५ या., अंतर्राष्ट्रिय योग दिवस:
३	मंगल	१३।००	दि.१०।२२	उ.षा.४।१६	प्रा.६।५१	ऐं.७।५७	वि.७।२०	मकर	२।०६।३५।०६	३४।१३	५।०९	६।५१	१७	७	२२	भद्रा- ७।२० या. अंगार चतुर्थी, विघ्नराज ४ व्रतं, आर्द्रायां रवि:-५४।४६, श्रवणायां उत्तरां विना यात्रा, सिद्धियोग: दि. १०।२२ या. तत: शिववास:-अग्निवास:-राज्यप्रदयोगश्च
४	बुध	१९।००	दि.१२।४५	श्रव.१०।४६	दि.९।२७	वै.९।३८	बा.१०।२२	म.रा.१०।४१	२।०७।३२।०१	३४।१४	५।०९	६।५१	१८	८	२३	भदवारम्भ: दि. ९।२७ उ., शिववास:, मुण्डनं, गृहारम्भ:-विवाहश्च पंचम्यां
५	गुरु	२३।३२	दि.२।३३	धनि.१६।५२	दि.११।५४	वि.१०।५६	तै.१५।२७	कुम्भ	२।०८।२८।५६	३४।१४	५।०९	६।५१	१९	९	२४	मुण्डनं-गृहारम्भश्च विवाहो धनिष्ठायां-पश्चिम यात्रा पंचम्यां, शिववास: - सिद्धियोगश्च दि. २।३३ या. तत: अग्निवास:
६	शुक्र	२७।१७	दि.३।५७	शत.२२।१७	दि.२।०४	प्री.११।४३	व.२०।१५	कुम्भ	२।०९।२५।४८	३४।१३	५।०९	६।५१	२०	१०	२५	भद्रा २०।१५ उ. ५२।१८ या., अग्निवास:-सिद्धियोगश्च दि. ३।५७ या. तत: मृत्युयोग:
७	शनि	२९।५४	सं.५।०६	पू.भा.२६।३७	दि.३।४८	आ.११।४०	बव.२४।२१	कुं.दि.९।२२	२।१०।२२।४०	३४।१२	५।०९	६।५१	२१	११	२६	दग्धतिथि: २४।२१ उ. पश्चिम दक्षिण यात्रा सप्तम्यां, शिववास:-अग्निवासश्च सं. ५।०६ उ.
८	रवि	३१।२३	सं.५।४२	उ.भा.२९।५०	सं.५।५	सौ.१०।४६	कौ.२७।२४	मीन	२।११।१९।३२	३४।११	५।०९	६।५१	२२	१२	२७	दग्धतिथि: २७।२४ या., शिववास:-सिद्धियोगश्च सं. ५।४२ या.
९	सोम	३१।३२	सं.५।४६	रेवती.३१।४७	सं.५।५३	शो.८।५२	गर.२९।२३	मी.सं.५।५३	२।१२।१६।२४	३४।१०	५।१०	६।५०	२३	१३	२८	भद्रा ५९।४२ उ., भदवा समाप्ति: सं. ५।५३ उ., गंड-२०।१३ उ. २३।१३ या., क्षीण: शुक्र: २६।२९, मीनस्थे चन्द्रे पश्चिमोत्तर यात्रा दशम्यां ततौ पूर्वां विना यात्रा, अग्निवास:, अमृतयोग: सं. ५।४६ उ.
१०	मंगल	३०।२०	सं.५।१८	अ.३२।२५	सं.५।४४	अ.५।५३	वि.३०।०२	मेष	२।१३।१३।१५	३४।०८	५।१०	६।५०	२४	१४	२९	भद्रा ३०।०२ या. दशम्यां, उत्तरां विना यात्रा, धृतियोग: ५५।१०, शिववास: - मृत्युयोगश्च सं. ५।१८ उ., सर्वार्थसिद्धियोग: सं. ५।४४ या.
११	बुध	२७।५९	दि.४।२२	भरणी.३१।५५	सं.५।५७	शु.१।५६	बा.२९।२०	मे.रा.११।४८	२।१४।१०।०६	३४।०६	५।११	५।४९	२५	१५	३०	योगिनी ११ व्रतं सर्वेषां, शिववास:, अग्निवास:, अमृतयोग: दि. ४।२२ या. तत: सिद्धियोग:
१२	गुरु	२४।३५	दि.३।००	कृ.३०।२१	सं.५।१९	शू.५१।२८	तै.२७।२८	वृष	२।१५।०६।५७	३४।०४	५।११	६।४९	२६	१६	१ जुलाई	जुलाई मासारम्भ:, यवचूर्णेन पारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, मैथिल वैवाहिकसभारम्भ: (सौराठससौला) विवाह: रोहिण्यां, पूर्वास्त: शुक्र:-२६।२९, रोहिण्यां पूर्व यात्रा, शिववास: दि. ३।०० या. तत: अमृतयोग:
१३	शुक्र	२०।१९	दि.१।१९	रो.२७।५९	दि.४।२४	ग.४५।८	व.२४।३१	वृ.रा.३।४४	२।१६।०३।४८	३४।०२	५।१२	६।४८	२७	१७	२	भद्रा २४।३१ उ. ५२।३३ या. प्रदोष १४ व्रतं, अग्निवास:, अमृतयोग: दि. १।१९ उ., विवाह: त्र्योदश्यायां
१४	शनि	१५।२०	दि.११।२०	मृग.२४।४०	दि.३।४	वृ.३८।१३	श.२०।३४	मिथुन	२।१७।००।३९	३४।०१	५।१२	६।४८	२८	१८	३	पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि चतुर्दश्यां, राज्यप्रदयोग: दि. ११।२० या. तत: शिववास:
३०	रवि	९।३४	दि.९।०१	आर्द्रा.२१।०७	दि.१।३९	ध्रु.३०।५६	ना.१७।३५	मिथुन	२।१७।५७।३०	३४।००	५।१२	६।४८	२९	१९	४	आषाढ़ी अमावस्या, स्नानदानादि:, त्र्यहो जन्मदिन कृत्यं, शिववास:-अग्निवास: दि. ९।०१ या. तत: मृत्युयोग:

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथिय: दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क. अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. रवि	४।२१।२८।१३	१।२६।५७।१५	३।२६।१४।४५	१।२२।१७।५१	०।०१।५०।०७	९।२१।४६।५३	४७।०६	३।१२	४।५२	६।५३	९।११	११।३६	१३।४५	१६।०१	१८।१६	२०।३७	२२।३८	०।१८	१।४५
२. सोम	४।२१।५८।५५	१।२६।१८।०७	३।२६।२५।२६	१।२३।३१।१०	०।०१।५५।०६	९।२१।४३।४२	४७।०६	३।०८	४।४८	६।४६	९।०७	११।३५	१३।४१	१५।५७	१८।१५	२०।३३	२२।३४	०।१४	१।४१
३. मंगल	४।२२।२९।३७	१।२८।३८।५९	३।२६।३६।१३	१।२४।४४।२९	०।०२।००।११	९।२१।४०।३१	४७।०७	३।०५	४।४५	६।४६	९।०४	११।२२	१३।३८	१५।५४	१८।१२	२०।३०	२२।३१	०।११	१।३८
४. बुध	४।२३।००।१९	१।२७।५९।५१	३।२६।४६।५७	१।२५।५७।४८	०।०२।०५।१३	९।२१।३७।२०	४७।०७	३।०१	४।४१	६।४२	९।००	११।१८	१३।३४	१५।५०	१८।०८	२०।२६	२२।२७	०।०७	१।३४
५. गुरु	४।२३।३१।०१	१।२७।२०।४३	३।२६।५७।४१	१।२७।११।०७	०।०२।१०।१५	९।२१।३४।०९	४७।०७	२।५७	४।३७	६।३८	८।५६	११।१४	१३।३०	१५।४६	१८।०४	२०।२२	२२।२३	०।०३	१।३०
६. शुक्र	४।२४।०४।३९	१।२७।२४।१२	४।००।०८।२५	१।२८।२४।४१	०।०२।१४।५८	९।२१।३०।५८	४७।०६	२।५४	४।३४	६।३५	८।५३	११।११	१३।२७	१५।४३	१८।०१	२०।१९	२२।२०	०।००	१।२७
७. शनि	४।२४।३८।१७	१।२७।२७।४१	४।००।२०।०९	१।२९।३८।१५	०।०२।१९।४१	९।२१।२७।४७	४७।०५	२।५०	४।३०	६।३१	८।४९	११।०७	१३।२३	१५।३९	१७।५७	२०।१५	२२।१६	२३।५६	१।२३
८. रवि	४।२५।११।५५	१।२७।३१।१०	४।००।३१।२३	२।००।५१।४९	०।०२।२४।२४	९।२१।२४।३६	४७।०४	२।४६	४।२६	६।२७	८।४५	११।०३	१३।१९	१५।३५	१७।५३	२०।११	२२।१२	२३।५२	१।१९
९. सोम	४।२५।४५।३३	१।२७।३४।३८	४।००।४२।३६	२।०२।०५।२३	०।०२।२९।०७	९।२१।२१।२५	४७।०३	२।४३	४।२३	६।२४	८।४२	११।००	१३।१६	१५।३२	१७।५०	२०।०८	२२।०९	२३।४९	१।१६
१०.मंगल	४।२६।१९।११	१।२७।३८।०६	४।००।५३।४९	२।०३।१८।५६	०।०२।३३।५०	९।२१।१८।१४	४७।०२	२।३९	४।१९	६।२०	८।३८	१०।५६	१३।१२	१५।२८	१७।४६	२०।०४	२२।०५	२३।४५	१।१२
११. बुध	४।२६।५२।४९	१।२७।४१।१४	४।०१।०५।०२	२।०४।३२।२९	०।०२।३८।३३	९।२१।१५।०३	४७।०२	२।३५	४।१५	६।१६	८।३४	१०।५२	१३।०८	१५।२४	१७।४२	२०।००	२२।०१	२३।४१	१।०८
१२. गुरु	४।२७।२६।२६	१।२७।४५।०२	४।०१।१६।१५	२।०५।४६।०२	०।०२।४३।१५	९।२१।१२।५८	४७।०२	२।३२	४।१२	६।१३	८।३१	१०।४९	१३।०५	१५।२१	१७।३९	१९।५७	२१।५८	२३।३८	१।०५
१३. शुक्र	४।२८।००।०८	१।२८।२७।३०	४।०१।२८।११	२।०६।५९।२२	०।०२।४७।१३	९।२१।०८।४१	४७।०१	२।२८	४।०८	६।०९	८।२७	१०।४५	१३।०१	१५।१७	१७।३५	१९।५३	२१।५४	२३।३४	१।०१
१४. शनि	४।२८।३३।५०	१।२९।०९।५८	४।०१।४०।०४	२।०८।१२।४२	०।०२।५१।११	९।२१।०५।३०	४७।००	२।२४	४।०४	६।०५	८।२३	१०।४१	१२।५७	१५।१३	१७।३१	१९।४९	२१।५०	२३।३०	०।५७
३०. रवि	४।२९।०७।३२	१।२९।५२।२६	४।०१।५२।०२	२।०९।२६।०२	०।०२।५५।०९	९।२१।०२।१९	४६।५९	२।२०	४।००	६।०१	८।१९	१०।३७	१२।५३	१५।०९	१७।२७	१९।४५	२१।४६	२३।२६	०।५३

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
दि.१०।१७-१।४२	रा.१०।४२-१२।००।रा.१।१७-२।३५
दि.६।५२-८।३५।दि.३।२५-५।०७	रा.१०।४२-१२।००।रा.२।३५-३।५२
दि.६।५१-८।३४।दि.१।४२-३।२५	रा.८।०८-९।२५
दि.८।३४-१०।१७।दि.१२।००-१।४२	रा.१२।००-१।१७।रा.२।३४-३।५१
दि.३।२५-६।५१	रा.१२।००-१।१७।रा.३।५१-५।१०
दि.८।३४-१२।००	रा.९।२५-१०।४२
प्रा.५।६-६।५१।दि.१।४२-३।२५।दि.५।०८-६।५१	सं.६।५१-८।०८।रा.१।१७-२।३४।रा.३।५१-५।०६
दि.१०।१७-१।४२	रा.१०।४२-१२।००।रा.१।१७-२।३४
दि.६।५२-८।३५।दि.३।२५-५।०७	रा.१०।४२-१२।००।रा.२।३५-३।५२
दि.६।५२-८।३५।दि.१।४२-३।२५	रा.८।०७-९।२५
दि.८।३५-१०।१७।दि.१२।००-१।४८	रा.१२।००-१।१७।रा.२।३५-३।५३
दि.३।२४-६।४६	रा.१२।००-१।१७।रा.३।५३-५।१२
दि.८।३६-१२।००	रा.९।२४-१०।४२
प्रा.५।१२-६।५४।दि.१।४२-३।२४।दि.५।०६-६।४८	सं.६।४८-८।०६।रा.१।१८-२।३६।रा.३।५४-५।१२
दि.१०।१८-१।४२	रा.१०।४२-१२।००।रा.१।१८-२।३६

आ. कृ. ५ गु. व. ८।४०।१८।३६

अयनांशा: २२।५५।१७

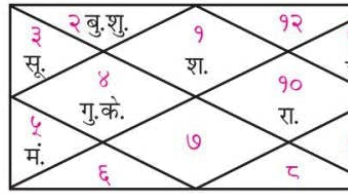

आ. कृ. १२ गु. व. ८।४०।१८।४३

अयनांशा: २२।५५।१८

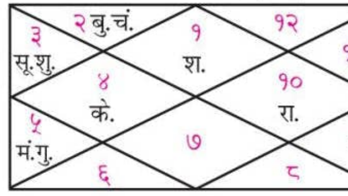

विविध:-ग्रहस्थितिवशने वृष्टिविचार:- बुध: शुक्र समीपस्थ: करोत्येकार्णवा महीं। तयोरन्तर्गतो भानु: समुद्रमपि शोषयेत्। पुरत: पृष्ठतो भानु: शुभा यदि समीपगा:। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेते प्रतिलोमगा। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टि: प्रजायते। उदयास्तगत: शुक्र: बुधश्च वृष्टिकारक:। चलत्यंगारके वृष्टि: ध्रुवावृष्टिश्शनैश्चरे। वारिपूर्णां महींकृत्वा पश्चात्संचरतेगुरु: । शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते।

सूर्यनक्षत्राणि- रोहिणी-मृगशिरा पूर्वोत्तरफल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाती-विशाखा-अनुराधा-ज्येष्ठा-मूल-शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषानि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। **एतत्फलम-** चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टि: सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टितदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते।

नक्षत्राणां पुरुषादिसंज्ञा- मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आद्रार्दिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टि:, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभाव:।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

सन् १४३४ साल, संवत् २०८४, शाके १९४९, सौम्यायनम्, सौम्यगोलः ता. १७ तः याम्यगोलः ग्रीष्मर्तुः ता. १७ तः वर्षर्तुः (राहु) पश्चिमेकालः

दिनांकः ५ जुलाई १८ जुलाई २०२७ ई० शुद्धसमयः ता. १३ तः अशुद्धसमयः

तिथयः	दिनानि	तिथि दं. प.	तिथि घ. मि.	नक्षत्राणि दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगः दं. प.	करणानि दं. प.	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानम्	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	मु० ता०	ने० ता०	अं० ता०
१	सोम	३।३४	प्रा.६।३७	पुन.१७।१३	दि.१२।०१	व्या.२३।३५	बव.१०।२४	मि.दि.६।२६	२।१८।५४।२१	३३।५६	५।१२	६।४८	१	१९	५
३	मंगल	५१।१०	रा.१।४०	पुष्य.१२।५३	दि.१०।२१	ह.१५।४६	कौ.४।२८	कर्क	२।१९।५१।११	३३।५४	५।१२	६।४८	२	२०	६
४	बुध	४५।१४	रा.११।१८	श्ले.८।४७	दि.८।४४	व.८।१३	व.२५।१४	क.दि.८।४४	२।२०।४८।०१	३३।५५	५।१३	६।४७	३	२१	७
५	गुरु	३९।३८	रा.९।०४	मघा.४।५८	दि.७।१२	सि.०।४९	बव.१९।०४	सिंह	२।२१।४४।५१	३३।५६	५।१३	६।४७	४	२२	८
६	शुक्र	३४।३७	रा.७।०३	पू.फ.१।३४	प्रा.५।५१	वरि.४७।२४	कौ.१३।०७	सिं.दि.११।४४	२।२२।४१।४६	३३।५४	५।१३	६।४७	५	२३	९
७	शनि	३०।३०	सं.५।२६	हस्त.५७।०५	रा.४।०४	परि.४१।३९	गर.७।३९	कन्या	२।२३।३८।४१	३३।५२	५।१४	६।४६	६	२४	१०
८	रवि	२७।२४	दि.४।११	चित्रा.५६।१३	रा.३।४३	शि.३६।४०	वि.३।१७	क.दि.३।५४	२।२४।३५।३५	३३।५०	५।१४	६।४६	७	२५	११
९	सोम	२५।०२	दि.३।१४	स्वा.५६।३२	रा.३।५१	सि.३२।३३	कौ.२६।५१	तुला	२।२५।३२।२९	३३।४९	५।१४	६।४६	८	२६	१२
१०	मंगल	२४।०४	दि.२।५१	विशा.५८।०५	रा.४।२८	सा.२९।२६	गर.२४।०९	तु.रा.१०।१८	२।२६।२९।२३	३३।४८	५।१४	६।४६	९	२७	१३
११	बुध	२४।२१	दि.२।५९	अनु.६०।००	अहोरात्र	शु.२७।१०	वि.२२।४४	वृश्चिक	२।२७।२६।१७	३३।४७	५।१५	६।४५	१०	२८	१४
१२	गुरु	२६।०२	दि.३।३९	अनु.०।५३	प्रा.५।३६	शु.२६।१६	बा.२२।३१	वृश्चिक	२।२८।२३।११	३३।४६	५।१५	६।४५	११	२९	१५
१३	शुक्र	२८।४५	दि.४।४५	ज्ये.४।५२	दि.७।१२	ब्र.२६।०२	तै.२३।३९	वृ.दि.७।१२	२।२९।२०।०६	३३।४४	५।१५	६।४५	१२	३०	१६
१४	शनि	३२।३८	सं.६।१८	मूल.६।५६	दि.६।१३	ऐं.२६।४१	व.२५।५५	धनु	३।००।१७।०१	३३।४३	५।१५	६।४५	१३	१	१७
१५	रवि	३७।१२	रा.८।०९	पू.षा.१५।५२	दि.११।३७	वै.२८।२५	बव.२९।२३	ध.दि.६।१५	३।०१।१३।५६	३३।४२	५।१६	६।४४	१४	२	१८

५ २ तिथिमानम् ५७।२१, चन्द्रदर्शनं, ग्रीष्म नवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्री दुर्गापूजनोत्सवः, मिथुनस्थे चन्द्रे पश्चिम दक्षिण यात्रा प्रतिपदि, श्री जगन्नाथ रथयात्रोत्सवारम्भः, समुद्रस्नानं, जगन्नाथ दर्शनं,❖
६ ३ तिथि ५३।५२, गं. ५७।४७ उ., पुनर्वसो रविः ५८।३९, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, सिद्धियोगः, उपनयनं छन्दोगानां
७ भद्रा २५।१४ उ. ५२।८ या., गंड १२।४७ या., विवाहो मघायां
८ पूर्व फाल्गुन्यां पूर्वोत्तर यात्रा, उपनयनं, विवाहो मघायां, व्य. योग ५३।१०, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः
९ उ. फाल्गुनी न. ५७।२०, पूर्व फाल्गुन्यां पूर्वोत्तर यात्रा, विवाहः, गृहप्रवेशः सप्तम्यां, देवादिप्रतिष्ठा प्रा. ५।५१ उ., शिववासः-सिद्धियोगश्च रा. ७।०३ या. ततः मृत्युयोगः, विपणि प्रा. ५।५१ उ.,♦
१० भद्रा ३५।०३ उ., दग्धतिथिः ३५।०३ उ., सप्तम्यां दक्षिण यात्रा, अग्निवासः, गृहप्रवेशः सप्तम्यां
११ भद्रा-३।१७ या., करमूले पुलिक मूल बन्धनं, दग्धतिथिः ३०।३१ या., सिद्धियोगः दि. ४।११ या. ततः शिववासः - अग्निवासश्च, जनसंख्या दिवसः
१२ दशम्यां स्वात्यां पश्चिम दक्षिण यात्रा, शिववासः - अग्निवासश्च दि. ३।१४ या. ततः अमृतयोगः, मुण्डनं, क्षीणः शुक्रः ००।५२
१३ भद्रा ५३।२७ उ., रैवतमन्वादिः, अग्निवासः-मृत्युयोगश्च दि. २।५१ उ.
१४ भद्रा २२।४४ या., हरिशयनी ११ व्रतं सर्वेषां, चातुर्मास्यव्रतारम्भः। पश्चिम यात्रा अनुराधायां, अग्निवासः - अमृतयोगश्च दि. २।५६ या. ततः शिववासः - सिद्धियोगश्च, विपणि
१५ वामन १२ द्वादशी, यव चूर्णेन पारणम्, प्रदोष- १३ व्रतं, गंड ५८।५२ उ., पश्चिमोत्तर यात्रा त्रयोदश्यां, पूर्वास्तशुक्रः ०।५२, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि. ३।३६ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा. ५।३६ या.
१६ प्रदोष- १४ व्रतं, गंड- ९।५२ या., मासान्तः, शिववासः अग्निवासश्च दि. ४।४५ या. ततः अमृतयोगः
१७ कर्के रविः ३०।३१ मू. ३० फलं साम्यं याम्यायनम्, संक्रान्ति, पु.कालो दि. १२ उ., सिद्धियोगः सं. ६।१८ या. ततः अग्निवासः-मृत्युयोगश्च
१८ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा, स्नान दानादिः, गुरु व्यासयोः पूजनं, भद्रा २९।३० या., चाक्षुष मन्वादिः, मासादिः, पूर्णान्ताद् सन् १४३५ साल संज्ञक वर्षारम्भः, करमूले पुलिक मूल बन्धनं,★

❖ अग्निवासः सिद्धियोगश्च प्रा. ६।३७ या. ततः शिववासः - मृत्युयोगश्च, विपणि दि. १२।०१ उ., मुण्डनं-देवादिप्रतिष्ठा द्वितीयायां

♦ मैथिलवैवाहिक सभासमाप्तिः (सौराठससौला)

★ विपणि दि. ११।३६ उ., अमृतयोगः रा. ८।०६ या.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथियः दिनानि	मंगल राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्र राश्यादि	शनि राश्यादि	राहु राश्यादि	मिश्रमानम्
१. सोम	४।२६।४१।१२	२।००।३४।५४	४।०२।०३।५७	२।१०।३६।२२	०।२।५९।०७	९।२०।५५।५७	४६।५८
2. मंगल	५।००।१४।५४	२।०१।१७।२२	४।०२।१५।५२	२।११।५२।४२	०।०३।०३।०५	९।२०।५२।४६	४६।५८
४. बुध	५।००।४८।३६	२।०१।५९।५०	४।०२।२७।४७	२।१३।०६।०२	०।०।३।०७।०३	९।२०।४९।३५	४६।५८
५. गुरु	५।०१।२२।२०	२।०२।५२।१७	४।०२।३९।४२	२।१४।१९।२१	०।०३।११।००	९।२०।४६।१४	४६।५८
6. शुक्र	५।०१।५६।३५	२।०४।५७।५४	४।०२।५२।०९	२।१५।३२।५०	०।०३।१४।११	९।२०।४३।१३	४६।५७
7. शनि	५।०२।३०।५०	२।०५।१३।३१	४।०३।०४।३६	२।१६।४६।१९	०।०३।१७।२२	९।२०।४०।०२	४६।५६
8. रवि	५।०३।०५।०४	२।०६।२९।०८	४।०३।१७।०३	२।१७।५९।४८	०।०३।२०।३०	९।२०।३६।५१	४६।५५
9. सोम	५।०३।३९।१८	२।०७।४४।४४	४।०३।२९।३०	२।१९।१३।१७	०।०३।२३।४३	९।२०।३३।४०	४६।५४
१०.मंगल	५।०४।१३।३२	२।०९।००।२०	४।०३।४१।५७	२।२०।२६।४४	०।०३।२६।५३	९।२०।३०।२९	४६।५३
11. बुध	५।०४।४७।४६	२।१०।१५।५६	४।०३।५४।२३	२।२१।४०।१२	०।०३।३०।०३	९।२०।२७।१८	४६।५३
12. गुरु	५।०५।२२।००	२।११।३१।३२	४।०४।०६।४९	२।२२।५३।४०	०।०३।३३।१३	९।१०।२४।०६	४६।५३
१३. शुक्र	५।०५।५७।१८	२।१२।५९।५३	४।०४।३२।१८	२।२४।०७।४९	०।०३।३५।३६	९।२०।२०।५५	४६।५२
१४. शनि	५।०६।३२।३५	२।१४।२८।१३	४।०४।४५।०२	२।२५।२१।५८	०।०३।३८।०५	९।२०।१७।४४	४६।५१
१५. रवि	५।०७।०७।५२	२।१५।५६।३३	४।०४।५७।४६	२।२६।३६।०७	०।०३।४०।३१	९।२०।१४।३४	४६।५०

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथियः दिनानि	मे.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	मि.अं. घ. मि.	क. अं. घ. मि.	सिंह.अं. घ. मि.	कन्या.अं. घ. मि.	तुला.अं. घ. मि.	वृ.अं. घ. मि.	ध.अं. घ. मि.	म.अं. घ. मि.	कु.अं. घ. मि.	मी.अं. घ. मि.
१. सोम	२।१६	३।५६	५।५७	८।१५	१०।३३	१२।४९	१५।०५	१७।२३	१९।४१	२१।४२	२३।२२	०।४९
2. मंगल	२।१२	३।५२	५।५३	८।११	१०।२९	१२।४५	१५।०१	१७।१९	१९।३७	२१।३८	२३।१८	०।४५
४. बुध	२।०९	३।४९	५।५०	८।०८	१०।२६	१२।४२	१४।५८	१७।१६	१९।३४	२१।३५	२३।१५	०।४२
५. गुरु	२।०५	३।४५	५।४६	८।०४	१०।२२	१२।३८	१४।५४	१७।१२	१९।३०	२१।३१	२३।११	०।३८
6. शुक्र	२।०१	३।४१	५।४२	८।००	१०।१८	१२।३४	१४।५०	१७।०८	१९।२६	२१।२७	२३।०७	०।३४
7. शनि	१।५७	३।३७	५।३८	७।५६	१०।१४	१२।३०	१४।४६	१७।०४	१९।२२	२१।२३	२३।०३	०।३०
8. रवि	१।५३	३।३३	५।३४	७।५२	१०।१०	१२।२६	१४।४२	१७।००	१९।१८	२१।१९	२२।५९	०।२६
9. सोम	१।४९	३।२९	५।३०	७।४८	१०।०६	१२।२२	१४।३८	१६।५६	१९।१४	२१।१५	२२।५५	०।२२
१०.मंगल	१।४५	३।२५	५।२६	७।४४	१०।०२	१२।१८	१४।३४	१६।५२	१९।१०	२१।११	२२।५१	०।१८
11. बुध	१।४१	३।२१	५।२२	७।४०	९।५८	१२।१४	१४।३०	१६।४८	१९।०६	२१।०७	२२।४७	०।14
12. गुरु	१।३७	३।१७	५।१८	७।३६	९।५४	१२।१०	१४।२६	१६।४४	१९।०२	२१।०३	२२।४३	०।१०
१३. शुक्र	१।३४	३।१४	५।१५	७।३३	९।५१	१२।०७	१४।२३	१६।४१	१८।५९	२१।००	२२।४०	०।०७
१४. शनि	१।३०	३।१०	५।११	७।२९	९।४७	१२।०३	१४।१९	१६।३७	१८।५५	२०।५६	२२।३६	०।०३
१५. रवि	१।२६	३।०६	५।०७	७।२५	९।४३	१२।५९	१४।१५	१६।३३	१८।५१	२०।५२	२२।३२	२३।५९

अर्धप्रहराबोधचक्रम्

तिथियः दिनानि	दिवार्धप्रहरा	निशार्धप्रहरा
१. सोम	दि.६।५४-८।३६।दि.३।२४-५।०६	रा१०।४२-१२।००।रा२।३६-३।५४
2. मंगल	दि.६।५४-८।३६।दि.१।४२-३।२४	रा.८।०६-९।२४
४. बुध	दि.८।३६-१०।१८।दि.१२।००-१।४१	रा.१२।००-१।१८।रा.२।३६-३।५४
५. गुरु	दि.३।२३-६।४७	रा.१२।००-१।१८।रा.३।५४-५।१३
6. शुक्र	दि.८।३६-१२।००	रा.९।२३-१०।४१
7. शनि	प्रा.५।१४-६।५५।दि.१।४१-३।२३।दि.५।०४-६।४६	सं.६।४६-८।०४।रा.१।१८-२।३७।रा.३।५५-५।१४
8. रवि	दि.१०।१८-१।४१	रा.१०।४१-१२।००।रा.१।१८-२।३७
9. सोम	दि.६।५५-८।३७।दि.३।२३-५।०४	रा.१०।४१-१२।००।रा.२।३७-३।५५
१०.मंगल	दि.६।५५-८।३७।दि.१।४१-३।२३	रा.८।०४-९।२३
11. बुध	दि.८।३७-१०।१8।दि.१२।००-१।४1	रा.१२।००-१।१8।रा.२।३७-३।५6
12. गुरु	दि.३।२२-६।४५	रा.१२।००-१।१८।रा.३।५६-५।१५
१३. शुक्र	दि.८।३७-१२।००	रा.९।२२-१०।४१
१४. शनि	प्रा.५।१५-६।५६।दि.१।४१-३।२२।दि.५।०३-६।४५	सं.६।४५-८।०३।रा.१।१८-२।३७।रा.३।५६-५।१६
१५. रवि	दि.१०।१९-१।४१	रा.१०।४१-१२।००।रा.१।१८-२।३७

आ. शु. ५ गु. व. ८।४०।१८।५०
अयनांशाः २२।५५।१९

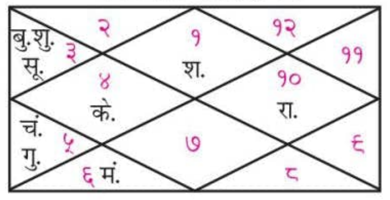

आ. शु. १२ गु. व. ८।४०।१८।५७
अयनांशाः २२।५५।२०

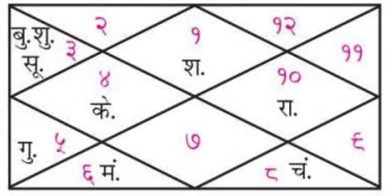

विविधविषयः-आषाढ़े शकुन विचारः- आषाढ़कृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षां चान्यथा दुर्भिक्षं, तथैव कृष्णवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढ़ शुक्लद्वितीयायाम् नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढ़े सति सुभिक्षं, प्रजापीडा च उत्तराषाढ़े। **आषाढ़शुक्लद्वितीयायां जगन्नाथ रथयात्रा-** तद्दिने रथस्थरामावलोकिनो नैव विपद्यते। पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम्- तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायौ धान्यः उत्पत्तिः। सुवृष्टि प्रजासुखञ्च जायते, तदितरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति।

आद्रानक्षत्रस्थेसूर्येपायसभोजनमहत्वम्- आर्द्रायाः प्रथमेपादे क्षीरमश्नाति यो नरः अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति। क्षीरम् अत्र पायसम् इति। आषाढ़ शुक्लपक्षे रविवासरे करमूले

आषाढ़शुक्लपक्षे रविवासरे करमूले पुलिकमूलबन्धन मन्त्रः- शुचिसितदिन करवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्य।। एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्य व्यतीते तु मुक्तिस्तस्य करादु भवेत् इत्यनेन कार्त्तिकशुक्ल द्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः।

इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च **प्रथम लग्नसारणी** यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात्।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
३	४७	५४	०१	०८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	०३	११	१९	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	००	०८	१६	२५	३३	४२
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
वृष	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	५०	५८	०७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३३	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२	०३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४९
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	०७	१८	२९	४०	५२	०३	१४	२५	३७	४८	५८	११	२२	३३	४४	५६	०७	१८	२९
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४५	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४५	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१८	३०	४१	५२	०३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	०७
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१५	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३९	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४३	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
५	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३६
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	२४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४९	४९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	५२	०१	०९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	०८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	०६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	०५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	०५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	०३	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	०१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	०८	५७	४०	५९	१२	५८	४०	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०२
३	०६	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	०७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	०५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	०३	१०	१८	२५	३२	३९
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

नतसाधनानपेक्षिता-दशमलग्लानयनसारिणीयम् **दशम लग्नसारणी** विलग्नलग्नांशमानकोष्टेह्यधः फलं तद्दशम् निरुक्तम्

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	८	८	८	८	९	९	९	०९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
२९९	२७	३७	४७	५६	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	४६	०२	४८	३४	२९	०६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
३२३	४४	५५	०६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०९	१३	२४	३५	४६	५६
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३२३	७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
२९९	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२८	३६	४५
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
२७८	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	०५	१४	२३
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
	०८	२४	४९	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
२९९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
३२३	४४	५५	०६	१६	२७	३८	५९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
३२३	०७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
२९९	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५१	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२७	३६	४५
	१४	२२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	०३
२७८	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

👆 लग्नको घटाकर, राशि में ३० से गुणा कर अंश को जोड़ दे फिर जो आये उसको ६ से भाग देने पर जो लब्धि आयें वो अंश होंगें जो शेष बचे उसे पुनः ६० से गुणा करके फिर ६ से भाग दे वो घड़ी होगे इस तरह क्रमशः जो लब्धि आये वो ही षष्ट्याशः होगा।

लग्नसारणीदेखने की रीति- जिस समय लग्न सारणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट काल बना कर उसमें उस दिन का सूर्य स्पष्ट लिखा होता है। सूर्य स्पष्ट जितने राशि पर जितने अंश पर हो उसको लग्न सारणी में देखे कि उस राशि के सामने और उतने अंशो कोष्टक के नीचे मिलेगें। वही लग्न राशि अंशादि होंगें। यथा- इष्टकाल १४।२३ और स्पष्टसूर्य उस दिन ६।२६।२०।५४ है। लग्न सारणी में ६ राशि के सामने और २६ अंश के नीचे ३६।०६ है। अब ३१।०६ को इष्टकाल के १४।२३ में जोड़ दिया तो ४३।२६ घट्यादि हुए इनको लग्न सारणी में देखा तो ६ राशि १८ अंश के नीचे ४३।३४ लिखा हुआ है अर्थात् १।२८।४३।३४ लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न बनाने की रीति- जिस समय दशम सारणी से दशम स्पष्ट लग्न करना हो तो सबसे प्रथम लग्न स्पष्ट के राशि अंश से घटी पलों में से घटी फल पल जितने हो दशम सारणी से उस कोष्टक में देखें कि घटी पल कहां पर है वही दशम लग्न स्पष्ट होगा।

यथा-प्रथम लग्न स्पष्ट ४।२६।२७।४० है तो लग्न स्पष्ट के घड़ी पल २७।४० को दशम लग्न सारणी में देखें तो पता चला कि २७।४०।२ राशि २५ अंश पर आया तो यह दशम स्पष्ट हुआ इसमें ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ लग्न होगा। चतुर्थ लग्न में प्रथम 👆

मास	जन.	फर	मार्च	अप्रै	मई	जून	जुला	अग	सित	अक्टू	नव	दिस.
दिनांक	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१	-३	-१४	-१२	-४	+३	+२	-३	-६	+०	+१०	+१६	+११
२	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+१०	+१६	+११
३	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+११	+१६	+११
४	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
५	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
६	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+१२	+१६	+९
७	-६	-१४	-११	-२	+३	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
८	-६	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
९	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+८
१०	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+८
११	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
१२	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+४	+१३	+१६	+७
१३	-८	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१३	+१६	+६
१४	-९	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१४	+१६	+६
१५	-९	-१४	-०९	+०	+४	-०	-६	-५	+५	+१४	+१६	+५
१६	-१०	-१४	-९	+०	+४	-०	-६	-४	+५	+१४	+१६	+५
१७	-१०	-१४	-९	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१४	+१५	+४
१८	-१०	-१४	-८	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१५	+१५	+४
१९	-१०	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१५	+३
२०	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१५	+३
२१	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२२	-११	-१४	-७	+१	+४	-२	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२३	-१२	-१४	-७	+१	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+१४	+१
२४	-१२	-१३	-७	+२	+३	-२	-६	-३	+८	+१६	+१४	+१
२५	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+८	+१६	+१३	+०
२६	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+८	+१६	+१३	+०
२७	-१३	-१३	-६	+२	+३	-३	-६	-२	+९	+१६	+१३	-१
२८	-१३	-१३	-५	+२	+३	-३	-६	-२	+९	+१६	+१२	-१
२९	-१३	-१२	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+९	+१६	+१२	-२
३०	-१३	०	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+१०	+१६	+१२	-२
३१	-१३	०	-५	०	+३	०	-६	-१	०	+१६	०	-३

देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कार प्रकार:

सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही हैं। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह ५ या ७ बजते हैं परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होते हैं। अत: स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (जोड़ना या घटाना) करना चाहिए। जैसे १ मार्च को कटिहार के इष्टकाल में १२ मिनट वेलान्तर ऋण एवं २० मिनट ४० सेकेण्ड देशान्तर धन कर देगें तो कटिहार का स्थानीय समय हो जायेगा।

देशान्तर साधन- १. (८२।३०-इष्टस्थान का रेखांश)४ = इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश ऋण। यथा- दिल्ली-रेखांश ७७।१८।(८२।३०-७७।१८ = ५।१२)४ = २०।४८ दिल्ली का रेखांश ऋण।

२. (इष्टस्थान का रेखांश- ८२।३०)४ = इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश धन। यथा-पटना-रेखांश ८५।१३।(८५।१३-८२।३० = २।४३)४ = १०।५२ पटना का रेखांश धन।

ॐ

नक्षत्र मेलापक चक्रम् पाश्वे कन्यानक्षत्राणि उपरि वरनक्षत्राणि

नक्षत्राणि	अ.	भर	कृति १.	कृति ३.	रो.	मृग २.	मृग २.	आर्द्रा	पुन ३.	पुन १.	पूष्य	श्लेपा	मघा	पू.फा.	उ.फा१.	उ.फ३.	हस्त	चित्रा २.	चित्रा २.	स्वा.	विशा ३.	विशा १.	अनुराधा	ज्ये १.	मूल	पू.षा।।	पू.षा३.	उ.षा१.	उ.षा३.	श्रव.१।।	श्रव २।।	धनि २.	धनि २.	शत	पू.भा३.	पू.भा१.	उ.भा.	रेव
अश्वि.	२८	३३	२८।।	१८।।	२१।।	२२।।	२६	१७	१८	२२।।	३१।।	२७	२०।।	२६	१७।।	११	०९	१३	२२।।	२६।।	२२।।	१९।।	२६।।	१५	१३	२६	२७।।	२४।।	२६	२६	२४	२१	२१	१६	१६	१४।।	२४।।	२६
भरणी	३४	२८	२९	१९	२२।।	१३।।	१७	२६	२६	३०।।	२३।।	२४।।	२१	१९	२८	२१।।	१९	०६	१४।।	२९।।	२२।।	१९।।	१७।।	१९।।	२०	१९	२०	२७	२८।।	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२।।	१६।।	२८
कृति.१	२७।।	२७।।	२८	१६।।	०९	१५।।	१९	२०	२१	२५।।	२६।।	२३।।	१७।।	२१	२२	१५।।	१५।।	१८।।	२७।।	१५।।	१९।।	१६।।	२०।।	२६।।	२४।।	१८	१९	१४	१५।।	११।।	१०।।	२५	२५	२७	१९।।	१७।।	१९।।	११।।
कृति.३	१८।।	१८।।	१९	२८	१९	२५।।	१६।।	१७।।	१८।।	२२	२३	२०	१९।।	२३	२४	२१	२१	२३।।	२२।।	१०।।	१४।।	२१।।	२५।।	३१।।	२०	१२।।	१३।।	०९।।	१४	११	१०	२२।।	२९।।	३१	२३।।	२०	२२	१४
रोहिणी	२३।।	२३।।	१०	१९	२८	३६	२७	२३।।	२३।।	२७	२६	१३	१२।।	२६।।	२८	२५	२६	२०	१९	१५।।	०९।।	१६।।	३०।।	२४।।	१४	१९	२०	११।।	१७	१९	१८	२०	२६	२४	३०।।	२७	२६	१९
मृग.२	२३।।	१३।।	१८।।	२७।।	३४	२८	२०	२५	२३।।	२६	१९	२२	२१।।	१७।।	२५।।	२३।।	२७	१३	१०	२५	१७।।	२३।।	२२।।	२५।।	१५	१२	११	१८	२१	२४।।	२४	१३	१९	२७	२९।।	२६।।	१७	२७
मृग.२	२७	१८	२१	१८।।	२५।।	२०	२८	३३	३१।।	१९।।	११	१५।।	२४	२०।।	२८।।	३०।।	३४	२१	१४	२७	१९।।	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०।।	२५	२५	१२	१३	२१	२३।।	२७।।	१७	२७
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८।।	२४।।	२६	३४	२८	२५	१३	२०।।	१३।।	२३।।	२९।।	२२।।	२४।।	२४।।	२७	२०	२७	२०	१३।।	१७	०४	१६	२८	२७	२७	२२।।	२२।।	२२।।	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
पुन.३	१९	२६	२२	१९।।	२३।।	२४।।	३२।।	२४	२८	१६	२३	१६।।	२२।।	२७।।	२१।।	२३।।	२४।।	२५।।	१८।।	२७	२१	१३।।	२०।।	०५	१३	२७	२६	२७	२७।।	२२।।	२३।।	१७।।	१८।।	११	१७	१९।।	२७	२८
पुन.१	२१।।	२८	२३।।	२०	२४	२५	१९	१०।।	१४।।	२८	३५	२८।।	१५।।	२०	१४।।	१७	१८	२०।।	२०	२७	२०	१९	२६	१०।।	०८	२१	२०।।	२१।।	२८।।	२५	२७	२१	१२।।	०७	११	१७	२५	२५।।
पूष्य.	३०।।	२१।।	२६।।	२३	२४	१७	१०	१८	२१।।	३५	२८	३०	१८।।	१४।।	२३।।	२६	२७	१२	११।।	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११।।	२२।।	२६	२४	२५	१३	०४।।	१४।।	१८	२४	१८	२७
श्लेषा	२५	२३।।	२२।।	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८।।	२८।।	२८	१५	१५।।	१७।।	२०।।	२०।।	२६	२५	११।।	१६।।	१५।।	२०	२६	२२।।	१६	१६।।	०८।।	१२	१३	१३	२७	०८।।	१८।।	१२।।	१८।।	२०	१२
मघा	२१	२१	१७।।	१८।।	११।।	१९।।	२२।।	२२।।	२१।।	१६।।	१८।।	१६	२८	३०	२६।।	१६।।	१६।।	२२।।	२५।।	११।।	१७।।	२४।।	२६।।	३४	२४	२०	२१	११।।	०५।।	०५।।	०४।।	१८।।	२४।।	२५।।	१८।।	१७।।	१८।।	१२
पू.फा.	२७	१९	२१	२२	२५।।	१७।।	२०।।	२८।।	२७।।	२२।।	१६।।	१६।।	३०	२८	३४	२४	२२।।	०८।।	११।।	२५।।	१९।।	२६।।	२४।।	२४।।	१९	१८	१९	२७	२१	१९।।	१८।।	०४।।	११।।	१९।।	२४।।	२३।।	१६।।	२४।।
उ.फा.१	१८।।	२७	२२	२३	२७	२५।।	२८।।	२१।।	२१।।	१६।।	२५।।	१८।।	२६।।	३४	२८	१८	१६।।	१४।।	१७।।	२६।।	१७।।	२४।।	३०	१९।।	१०	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११।।	१८।।	१२।।	१३।।	१५।।	२६।।	२४।।
उ.फा.३	१३	२१।।	१६।।	२१	२५	२३।।	३०।।	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२१।।	१७।।	२५	१९	२८	२५।।	२४।।	१६।।	२५।।	१६।।	१८	२७	१३	१५।।	२९।।	२८।।	२९।।	२६	२५	२५	१६।।	१६।।	१०।।	१४।।	१८	२९	२७
हस्त	१०	२०	१६।।	२१	२६	२६	३३	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२३।।	१७।।	२२।।	१७	२६	२८	२७	१९	२६।।	१७।।	१९।।	२६	१२	१४	२७	२६	२७।।	२३	२४	२४	१९	१९	०८।।	१४।।	१९	२७	२७
चित्रा२	१३	०६	१९	२५।।	२०	१२	१९	२६	२४।।	२०।।	१२।।	२६।।	२३।।	०९।।	१५।।	२४	२७	२८	२०	१९	२६।।	२८।।	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७।।	१९	१९	१८	१८	२४	१८।।	२२	११	२१
चित्रा२	२२।।	१५।।	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२०	१८।।	२०	१२	२६	२५।।	१०	१७।।	१७।।	२०	२१	२८	२७	३४।।	२४।।	०७।।	२१।।	२८	१४	१३	२१	२५।।	२७	२७	२६	२०	२६	२१	१५	०४	१३
स्वाती	२७।।	२९।।	१७।।	१२।।	१६।।	२७	२७	२६	२६।।	२८	२८	१५।।	१३।।	२५।।	२५।।	२५।।	२७।।	२१	२८	२८	२०	१०	२३।।	१८।।	२३	२७	२६	१८	२२।।	२३।।	२३।।	२७	२१	२०	२५	२०।।	२०	१३
विशा३	२२।।	२२।।	२०।।	१५।।	१०।।	१८।।	१९।।	२१	२१	२२।।	२१।।	१९	१७।।	१९।।	१८।।	१७।।	१८।।	२७।।	३४।।	१८	२८	१८	१७	२१।।	२८	२२	२१	१३	१७।।	१७	१७।।	३२।।	२६।।	२६।।	२२	१६।।	१३।।	०५
विशा१	१६।।	१६।।	१४।।	१९।।	१४।।	२२।।	१३	१४।।	१४।।	१९	१८	१५।।	२१	२३	२१।।	१८	१९	२८	२३।।	०८	१७	२८	२७	३१।।	२३।।	१७।।	१६।।	०९।।	१२	१२	१२	२७	२७	२६।।	२२।।	२१	१८	०९।।
अनु.	२४।।	२४।।	१९।।	२४।।	२७।।	२०।।	११	१६	२१।।	२६।।	१८	२१	२४।।	२०।।	२९।।	२६	२७	१२	०७।।	२२।।	१७	२८	२८	३१	१६।।	१४।।	१४।।	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४।।	२४	१८	२७
ज्येष्ठा	१२	१८।।	२४।।	२९।।	२२।।	२२।।	१३	०३	०६	१०।।	२०	२६	३१	२३।।	१६।।	१३	१२	२५।।	२०।।	१७।।	२०।।	३१।।	३०	२८	१५	१७।।	१७।।	१७।।	२०	२०	२०	२१	२५	१८	११	१०।।	२१	२१
मूल	१२	२०	२४।।	१९	१३	१४	२१	१५	१२	०८।।	१७।।	२४	२५	१९	०९।।	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४।।	१६।।	१६	२८	२८	२७	२५।।	१५।।	१५।।	१५।।	२१।।	२५	२१	११	१७।।	२५।।	२७
पू.षा.।।	२६	१९	१८	१२।।	१९	११	१९	२७	२७	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२७	२८।।	२७	१२	१२	२७	२०	१६।।	१८।।	१८।।	२८	२८	२७	३३	२३	२३।।	२३।।	०८।।	१६।।	२३।।	३१।।	३२।।	२३।।	३२।।
पू.षा.३।।	२७	२०	१९	१३।।	२०	१२	१८	२६	२६	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८।।	१८।।	१९	२७	२७	२८	३४	२४	२४	२३।।	०८।।	१५।।	२२।।	२९।।	३२।।	२३।।	३२।।
उ.षा.१	२५।।	२७	१४	०८।।	११।।	१८	२४	२६	२६	२३।।	२४।।	०९।।	११।।	२७	२८	२८।।	२७।।	२०	२०	१९	१२	११।।	२५।।	१९।।	२५।।	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५।।	२२।।	२२।।	२८।।	३१।।	३२।।	२३।।
उ.षा.३	२८	२९।।	१६।।	१४	१७	२२।।	२०।।	२२।।	२२।।	२७	२८।।	१३	०६।।	२२	२३	२६	२५	१७।।	२४।।	२३।।	१६।।	१४	२८	२२	१६।।	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५।।	१७।।	१७।।	२३।।	३०।।	३२।।	२३।।
श्रवण१	२८	२७	१४।।	१२	१८	३४।।	२४	२१।।	२१।।	२७	२५	१५	१७	१९	२०	२४	२५	१९।।	२६।।	२३।।	१६।।	१४	२८	२३	१७।।	२३।।	२४।।	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८।।	२३।।	३१।।	३०।।	२२।।
श्रवण२	२७	२६	१३।।	१०	१७	२६	२३।।	२१	२३।।	२८।।	२६	१५	०६।।	१८।।	२०।।	२३।।	२४	१८।।	२५।।	२३	१६	१४	२८	२३	१६	२५	२५।।	१५	२४	२७	२८	३०	२०	१८।।	२३	३२।।	३१।।	२४।।
धनि.२	२०।।	१०।।	२६	२३।।	२०	१२	०८	१७।।	१७।।	२२	१३	२८	१८।।	०५।।	१२।।	१६	१७।।	१६।।	२४।।	२६	३०	२८	१४	२८	२१।।	०९	०९।।	१६।।	२५।।	२८	२१	२८	१८।।	२३।।	२१।।	२६।।	१५।।	२२।।
धनि.२	२०	११	२६	३०।।	२७	१९	१०	२०	१९	१४	०५	२०	२५।।	११।।	१९।।	१७।।	२१	१८	१९	२२	२५।।	२८	१२	२६	२९।।	१७।।	१६।।	१३।।	१८।।	२१।।	२१	२०।।	२८	३३	२८।।	१८।।	०७।।	१४।।
शतभि.	१५	२१	२८	३२।।	२५।।	२५	१८	१०	१०	०७।।	१५	२०	२६।।	२०।।	१३।।	११	०८।।	२६	२६	१९	२६	२६।।	२१	१९	२२।।	२४।।	२३।।	२३।।	१८।।	१८।।	१८।।	२५	३३	२८	१९	०९	१७।।	१६।।
पू.भा.३	१८	२५	२०	२४।।	३१।।	३१।।	२४।।	१७	१७	१३।।	२०।।	१४	१९।।	२५।।	१७।।	१५।।	१७।।	१८।।	१९।।	२८	२१	२१।।	०७।।	१२	१५।।	३१।।	३०।।	२९।।	२४	२५।।	२५।।	२०।।	२७।।	१९	२८।।	१८	२३	२०।।
पू.भा.१	१४।।	२१।।	१६।।	१९	२६	२६।।	२५।।	१८	१८	१८	२५	१८।।	१६।।	२२।।	१४।।	१६।।	१८।।	१९।।	१२।।	१९	१४	२१	२७	११।।	१५	३१।।	३१।।	३०	२८	२९।।	३०	२५।।	१७	०७।।	१६।।	२८	३३	३०।।
उ.भा.	२४।।	१५।।	१८।।	२१	२५	१७	१६।।	२५।।	२७	२६	१९	२०	१७।।	१५।।	२५।।	२७।।	२६	०९।।	०५	१९।।	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२।।	३१।।	२९।।	२८।।	२९।।	१४।।	०६	१६	२१।।	३३	२८	३४।।
रेवती	२५	२४।।	११।।	१४	१७	१६	२५।।	२४।।	२५।।	२४।।	२७।।	१३	१२	२२	२२	२४।।	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	०५।।	१२।।	२७	२२	२७	३०	३०	२१	१९	२०	२२।।	२२।।	१४	१६	१८	२०।।	३३	२८

अक्षांस-रेखांश एवं देशान्तरसरणी

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
आरा	२५।३४	८४।३२	+ ०८।०८
औरंगाबाद	२४।४५	८४।२५	+ ०७।४०
कटिहार	२४।३०	८७।४०	+ २०।४०
कमतौल	२६।२०	८५।५०	+ १३।२०
कहलगाँव	२५।१६	८७।१७	+ १९।०८
क्वाथ	२५।२०	८४।१६	+ ०७।०४
खगड़िया	२५।३१	८६।२७	+ १५।४८
गया	२४।४९	८५।०१	+ १०।०४
गोगरी	२५।२८	८६।३८	+ १६।३२
गोपालगंज	२६।२८	८४।२६	+ ०७।४४
छपरा	२५।४७	८४।४७	+ ०९।०८
जमालपुर	२५।१९	८६।३२	+ १६।०८
जयनगर	२६।३६	८६।०८	+ १४।३२
जहानाबाद	२५।१३	८४।५९	+ ०९।५६
जोगबनी	२६।२३	८७।१६	+ १९।०४
झञ्झारपुर	२६।१६	८६।१७	+ १५।०८
टेकारी	२५।४०	८५।१२	+ १०।४८
डुमरॉव	२५।३३	८४।१२	+ ०६।४८
दरभंगा	२६।१०	८५।५४	+ १३।३६
दानापुर	२६।१०	८५।५४	+ १०।२०
डेहरी	२४।५३	८४।१४	+ १४।५६
धंगाइन	२५।१४	५४।१३	+ ०६।५२
दुमका	२४।३०	५७।२०	+ १९।२०
नवादा	२४।५३	८५।३५	+ १२।२०
नालन्दा	२५।०७	८५।२५	+ ११।४०
नौगछिया	२५।२४	८७।०६	+ १८।२४
पुपरी	२६।२८	८५।४२	+ १२।४८
पटना	२५।३७	८५।१३	+ १०।५२
पारसनाथ	२४।००	८६।११	+ १४।४४
पूर्णिया	२५।४९	८७।३१	+ २०।०४
फार्बीसगंज	२६।१८	५७।१६	+ १९।०४
बगहा	२७।०८	८४।०४	+ ०६।१६
बक्सर	२५।३४	८४।०१	+ ०६।०४
बरौनी	२५।२८	८५।५६	+ १३।५६
बहेड़ी	२५।५७	८६।०३	+ १४।१२
बॉकीपुर	२५।३६	८५।०७	+ १०।२८
बाढ़	२५।२	८५।४३	+ १२।५२

देशान्तर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
बिरौलसुपौल	२५।५७	८६।१५	+ १५।००
बेगूसराय	२४।४५	८६।०८	+ १४।३२
बोधगया	२४।४१	८५।०८	+ १०।०८
बेनीपट्टी	२६।२७	८५।५४	+ १३।३६
बेतिया	२६।४८	८४।३३	+ ०८।१२
भागलपुर	२५।१५	८७।०२	+ १८।०८
मधुबनी	२६।२१	८६।०७	+ १४।२८
मधेपुर	२६।११	८६।२३	+ १५।३२
मधेपुरा	२५।५७	८६।५१	+ १४।२४
मुंगेर	२५।२४	८६।८९	+ १७।५६
मुजफ्फरपुर	२६।०७	८५।२७	+ ११।४८
मोकामा	२५।२४	८५।५५	+ १३।४०
मोतिहारी	२६।४०	८४।५५	+ ०९।४०
रक्सौल	२६।५८	५४।५८	+ ०९।५२
राजगीर	२५।०१	८५।२६	+ ११।४४
रोसड़ा	२५।४५	५६।०२	+ १४।०८
लालगंज	२५।५२	८६।१०	+ १४।४०
लौकहा	२६।३३	८६।२८	+ १५।५२
शेखपुरा	२५।०९	८५।५३	+ १३।३२
समस्तीपुर	२५।५५	८५।५०	+ १३।२०
सहर्षा	२५।५४	८६।३६	+ १६।२४
सासाराम	२४।५७	८४।०३	+ ०६।१२
सिमरियाघाट	२५।२५	८६।००	+ १४।००
सीतामढ़ी	२६।३४	८५।३०	+ १२।००
सीवान	२६।०२	८४।००	+ ०६।००
सुगौली	२६।४७	८४।४८	+ ०९।१२
सोनपुर	२५।४०	८५।०२	+ १०।०८
हाजीपुर	२५।४१	८५।४	+ १०।१७
गढ़वा	२४।१०	८३।५२	+ ०५।२८
गिरिडिह	२४।१०	८६।२१	+ १५।२४
गोविन्दपुर	२३।५१	८६।३४	+ १६।१६
घाटशिला	२२।३५	८६।२८	+ १५।५२
चतरा	२४।१२	८४।५६	+ ०९।४४
चायबासा	२२।३३	८५।५+	+ १३।२४
जमशेदपुर	२२।४८	८६।११	+ १४।४४
झरिया	२३।५०	८६।३३	+ १६।१२
डाल्टेनगंज	२४।०२	८४।०४	+ ०६।१६
डोरण्डा	२३।२२	८५।२२	+ ११।२८

झारखण्ड — देशान्तर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
तिलैया	२४।२०	८५।३९	+ १२।०४
देवघर	२४।२९	८६।४३	+ १६।५२
धनबाद	२३।४७	८६।३०	+ १६।००
पकौर	२४।३८	५७।५४	+ २१।३६
पलामू	२३।५२	८४।१७	+ ०७।०८
पालकोट	२२।५२	८४।४१	+ ०८।४४
पोराहाट	२२।३६	८५।२८	+ ११।५२
बरवा	२३।१०	८४।१६	+ ०७।०४
बसिया	२२।५२	८४।५३	+ ०९।३२
बोकारो	२३।५१	८६।०२	+ १४।०८
मधुपुर	२४।१८	८६।३७	+ १६।२८
मानखेरी	२३।४०	८४।३३	+ ०८।१२
मसानजोर	२४।०५	८७।२१	+ १९।२४
मैथन	२३।५४	८६।५४	+ १७।३६
राँची	२३।२३	८५।२३	+ ११।३२
राजमहल	२५।०३	८७।५३	+ २१।३२
रामगढ़	२३।३८	८५।३४	+ १२।१६
लोहरदग्गा	२३।२६	८४।४२	+ ०८।४८
सरायकेला	२२।४२	८५।५८	+ १३।५२
सारण्डा	२२।१६	८५।१५	+ ११।००
साहबगंज	२५।१३	८७।४०	+ २०।४०
सिन्दरी	२३।३९	८६।३१	+ १६।०४
हजारीबाग	२३।५९	८५।२५	+ ११।४०
उत्तर प्रदेश			
अयोध्या	२६।४७	८१।१२	-५।१२
आगरा	२७।९	७८।००	-१८।००
आजमगढ़	२६।०३	८३।१०	+ २।४०
इटावा	२६।४६	७९।०२	-१३।५२
इलाहाबाद	२५।५७	८१।५०	-०२।४०
कानपुर	२६।२८	८०।४१	-०७।१६
काशी	२५।१८	८३।००	+२।००
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२६	-२०।१६
गाजीपुर	२५।३४	८३।३६	+०४।२४
गोरखपुर	२६।४५	८३।२३	+०३।३२
चित्रकूट	२५।१३	८०।४८	-०६।४८
जौनपुर	२५।४४	८२।४१	+००।४४
झाँसी	२५।२७	७९।३४	-१५।४४
देवरिया	२६।३१	८३।४८	+०५।१२
प्रतापगढ़	२५।५२	८२।०२	-०१।५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
बरेली	२८।२०	७९।२४	-१२।२४
बलिया	२५।४५	५४।०६	+०६।३६
बस्ती	२६।४८	८२।४४	+००।५६
बान्दा	२५।२८	८०।००	-१०।००
मथुरा	२७।२८	७७।१०	-१९।१६
लखनऊ	२६।५०	८०।५४	-०६।२४
वृन्दावन	२७।३३	७७।४४	-१९।२०
सहारनपुर	२९।५८	७७।३३	-१९।४८
सुल्तानपुर	२६।१५	८२।०४	-०१।४४
मध्यप्रदेश			
इटारसी	२२।३०	७७।५५	-१८।२०
उज्जैन	२३।०९	१५।४३	-२७।०८
कटनी	२३।४७	८०।२७	-८।१२
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	-१७।२०
नीमच	२४।२७	७४।५२	-३०।३२
भोपाल	२३।१६	७७।३६	-१९।३६
रीवा	२४।३१	८१।१९	-०४।४४
विदिशा	२३।३२	७७।५१	-१८।३६
सतना	२४।३४	८०।५५	-०६।२०
अन्य स्थान			
अकोला	२०।३२	७७।०५	-२१।४०
अजमेर	२६।२२	७४।४०	-३१।२०
आन्ध्रप्रदेश	१६।००	८०।००	-१०।००
अम्बाला	३०।२०	७६।५५	-२२।२०
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३६	-३९।३६
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	-३०।२८
आसनसोल	२३।४२	८६।५८	+१७।५२
उड़ीसा	२१।१७	८५।३०	+१२।००
ऋषिकेश	३०।०७	७८।१६	-१६।५६
केदारनाथ	३०।४४	७९।०३	-१३।४८
कर्नाटक	१२।००	७९।००	-१४।००
कोचीन	९।५८	७६।१५	-२५।००
काँचीपुरम	१२।५०	७९।४२	-११।१२
कोटा	२५।१०	७५।५२	-२६।३२
कोयम्बटुर	११।००	७६।५६	-२२।१६
कटक	२०।२६	८५।५२	-९।२८
केरल	१०।००	७६।२५	-२४।२०
कलकता	२२।३२	८८।३०	+२०।००
कश्मीर	३४।३०	७६।३०	-२४।००
गोत्री	३०।५६	७९।०२	-१३५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
गढ़वाल	३०।१३	७९।३०	- १२।००
गुजरात	२२।५५	७२।३०	-४०।००
गुवाहाटी	२६।१०	९१।४५	+३७।००
चण्डीगढ़	३०४२	७६।५४	-२२।२४
जालन्धर	३१।२०	७५।३४	-२७।४४
जम्मू	३२।४३	७४।५२	-३०।३२
तंजौर	१०।४७	७९।०८	-१३।२८
तिरुचिरापल्ली	१०।५०	७८।४२	-१५।१२
तिरुपति	१३।४०	७९।२०	-१२।४०
तिरुवनन्तपुरम	०८।३१	७७।००	-२२।००
दार्जिलिंग	२७।०३	८८।१८	+२३।१२
दिल्ली	२८।३५	७७।१८	-२०।४८
द्वारका	२२।१४	६८।५८	-५४।०८
नागरपुर	२१।०४	७९।१३	-१३।०८
नासिक	२०।००	७३।५०	-३४।४०
देहरादून	३०।१९	७८।०३	-१७।४८
नैनीताल	२९।२३	७९।२७	-१२।१२
पटियाला	३०।०१	७६।२८	-२४।०८
पानीपत	२९।२०	७७।०६	-२१।३६
पूणे	१८।३१	७३।५३	-३४।२८
पुरी	१९।४८	८५।५०	+१३।२०
बीकानेर	२८।०२	७३।२२	-३६।३२
बंगलुरु	१२।५८	७७।३६	-१९।३६
भुवनेश्वर	२०।१५	८५।५०	+१३।२०
मुम्बई	१९।००	७२।५५	-३८।२०
रामेश्वरम	०९।१८	७९।१८	-१२।४८
रुद्रप्रयाग	३०।१६	७८।८९	-१४।०४
हरिद्वार	२९।५८	७८।०९	-१०।२४
हलद्वानी	२९।१३	७९।३१	-११।५६
लुधियाना	३०।५५	७५।५१	-२६।३६
वडोदरा	२२।१८	७३।१३	-३७।०८
शिमला	३१।०१	७७।१५	-२१।००
श्रीनगर	३४।०६	७४।४८	-३०।४८
सूरत	२१।१०	७२।५१	-३८।३६
होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	-२६।१२
हावड़ा	२२।३६	८८।१९	+२५।१६
हैदराबाद	१७।२६	७८।२७	-१६।१२

शतपद्चक्रम्

नक्षत्र वर्णाः	चु.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई ऊ.ए.	ओ.वा. बी.बू	वे.वो. का.की	कू.घ ङ.छा	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.	मा.मी. मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रु.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	न.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.	ये.यो. भा.भी	भू.धा. फा.ढा.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो. सा. सी. सू.	से. सौ. द. दी.	दु. थ. झ. ञ.	दे. दो. चा.ची.
नक्षत्रम्	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
राशिः	मेष	मेष	मेष-१ वृष-३	वृष	वृष-२ मिथुन-२	मिथुन	मिथुन-३ कर्क-१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह-१ कन्या-३	कन्या	कन्या-२ तुला-२	तुला	तुला-३ वृश्चिक-१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु-१ मकर३	मकर	मकर-२ कुम्भ-२	कुम्भ	कुम्भ-३ मीन-१	मीन	मीन
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय-१ वैश्य-३	वैश्य	वैश्य-२ शुद्र-२	शुद्र	शुद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय-१ वैश्य-३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य-२ शुद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र
वश्यः	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद-२ मानव-२	मानव	मानव-३ जल-१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर-१ मानव-३	मानव	मानव	मानव	मानव-३ कीट-१	कीट	कीट	मानव	मानव।। चतु३।।	चतुष्पद	चतु.१।। जल.२।।	जलचर-२ मानव-२	मानव	मानव-३ जलचर-१	जलचर	जलचर
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
हंसक (तत्त्व)	अग्नि	अग्नि	अ१. भू३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अग्नि१ भूमि३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अग्नि-१ भूमि-३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल
योनिः	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैरः	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशः	भौमः	भौमः	भौमः-१ शुक्रः-३	शुक्र	शुक्रः-२ बुधः-२	बुधः	बुधः-३ चन्द्र-१	चन्द्रः	चन्द्रः	सूर्यः	सूर्यः	सूर्यः-१ बुधः-३	बुधः	बुधः-२ शुक्रः-२	शुक्रः	शुक्रः-३ भौमः-१	भौमः	भौमः	गुरुः	गुरुः	गुरुः-१ शनिः-३	शनिः	शनिः	शनिः	शनिः-३ गुरु-१	गुरुः	गुरुः
गणः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्यः	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

जन्म राशेः सायुररिष्टदवषणि

राशि	अरिष्टदवर्षाणि	आयुः
मेषः	१। १३। ५०। ६२	७५
वृषः	३। ६। ८। ३३। ४६। ५२। ६३	७५
मिथनुम्	६। १०। ११। १८। २४। ५३। ६३	७५
कर्कः	१। १६। २२। २७। ३५। ४५। ५५। ६०	७०
सिंह	१। १०। १५। २५। ४५। ५१। ६१	६५
कन्या	१। ३। १३। २६। ३३। ४३	६८
तुला	२। ४। १६। २१। ३३। ४१। ५१। ६१	६५
वृश्चिक	३। ७। ८। १३। ३२। ३५। ४५। ६३	७५
धनुः	३। ६। १०। १६। २३। ३६। ४७। ५७। ६७	६५
मकरः	३। १०। ३२। ३३। ४२। ५१। ५६। ६१	१००
कुम्भः	१८। ३२	६१
मीनः	१८। ३३	६१

जन्म लग्नात् सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयु
मेषः	४। ११। १६। ४४। ५८	१००
वृषः	१। २८। ३३। ४४	६०
मिथनुम्	१। १०। १४। ३८। ५८	६४
कर्कः	५। २५। ४०। ४८। ६२	१००
सिंहः	५। १३। २८। ३६। ४८	६३
कन्या	४। १६। २३। ३६। ४५	१००
तुला	१५। ३१। ३५। ५४। ६२	७५
वृश्चिक	११। २८। ३८। ५२। ६२	१००
धनुः	२। ८। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७	८१
मकरः	५। १३। २७। ३६। ५७। ६२	८५
कुम्भः	२। २८। ३३। ४८। ६४	६०
मीनः	१। ८। १३। ३६। ४८	८३

६ गणगुणाः

॥ कन्यायाः॥

गण	दे.	मा	रा.
दे.	६	५	०
मा.	५	६	०
रा.	०	०	६

८ नाडीगुणाः अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

ना	आ.	म.	अ.	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग
आ.	०	८	८	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
म.	८	०	८	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
अ.	८	८	०	सर्प	मूषक	मृग	मेष

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	वृहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चं.मं.वृ.	सू.बु.	सू.च.वृ	सू.शु.	सू.च.मं.	बु.श.	बु.शु.	मित्राणि
बुधः	मं.वृ. शु.श.	शुक्रः शनिः	मं.वृ. शनि	शनि	म. वृहः	गुरुः	समाः
शु.शु.	×	बुधः	चन्द्र	बु.शु.	सू.चं.	सू.च.मं.	शत्रवः

विवाहे पञ्चशालाकाचक्रम्

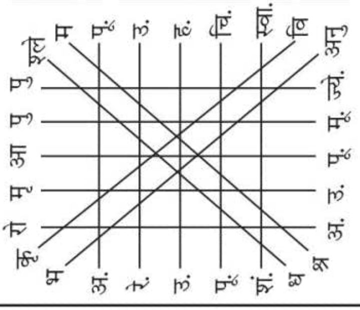

राहुकेत्वोः शनिवत्। सू. श. रा. के. ३। ६। ८। ११ चं. २। ३। ११ मं. ३। ६। ११ बु.वृ. १। २। ३। ४। ५। ६। ६। १०। ११ शु. १। २। ४। ५। ६। १०। ११

उक्तस्थानस्थग्रहांकान् संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहवलविश्वा बोध्याः। लग्नेशनवमांशेशौ १। ४। ७। १०। ११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभ	३। ६। १०। ११	३। ६। ७। १०। ११	२। ५। ७। ६। ११
पूज्यः	१। २। ५। ७। ६	१। २। ५। ६	१। ३। ६। १०
निन्द्य	४। ८। १२	४। ८। १२	४। ८। १२

विवाहे रेखाप्रदग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श	ग्र.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	सं

गुरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञान प्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि-वृहस्पति-राहु- शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग- मित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

१ वर्ण गुणाः॥ वरस्य

॥ कन्यायाः॥

वर्णाः	विप्र	क्षात्रिय	वैश्य	शूद्र
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुणाः वरस्य

वश्य	चतु.	मा.	जल	वन	कीट
चतु	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ तारागुणाः वरस्य

ता	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य

ग्रहा	सू.	च.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.
सू	५	५	५	४	५	०	०
च.	५	५	४	१	४	।।	।।
म.	५	४	५	।।	५	३	।।
बु.	४	१	।।	५	।।	५	४
गु.	५	४	५	।।	५	।।	३
शु.	०	।।	३	५	।।	५	५
श.	०	।।	।।	४	३	५	५

७ राशिकूटगुणाः वरस्य

राशयः	१ मे	२ वृ	३ मि	४ क	५ सि	६ कं	७ तु	८ वृ	९ ध	१० म	११ कुं	१२ मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चि	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

४ योनिकूटगुणाः वरस्य

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	माहिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	१	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	३	३	३	१	३	०	३	०
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	२	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	१	१
गौ	३	२	३	२	२	२	२	४	३	१	२	२	२	३
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	३
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	२	२	३	१	२	२	२	४

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

आयुर्विचारः-

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम्। प्रकारत्रयेप्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायूर्ग्राह्यम्। त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम्। विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेश-षष्ठेशयोर्यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुः। इत्थमेवात्मकारकवशेनापि। १,८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः, पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्वपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमशः ८०, ७२, ६४ वर्षाण्यायुः। अल्पायुष्वपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति।

आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च-

अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा। लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानानन्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेश-दशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तर-शुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति।।

विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम्

सूर्यदशावर्शाणि ६	चन्द्रदशावर्षाणि १०	भौमदशावर्षाणि ७	राहुदशावर्षाणि१८	गुरुदशावर्षाणि१६	शनिदशावर्षाणि१६	बुधदशावर्षाणि१७	केतुदशावर्षाणि७	शुक्रदशावर्षाणि२०
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्रवणा	मृ. चि. ध.	आर्द्रा. स्वा. श.	पुन. वि. पूभा.	पुष्य. अनु. उभा.	आश्ले. ज्ये. रेव.	मघा. मू. अश्वि.	पूफा. पूषा. भर.
अन्तर्दशा १८	अन्तर्दशा ३०	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ५४	अन्तर्दशा ४८	अन्तर्दशा ५७	अन्तर्दशा ५१	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ६०
ग्र. व. मा.दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
सू.० ३ १८	चं.० १००	मं. ० ४ २७	रा.२ ८ १२	वृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	वृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ६	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	सू. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	वृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	वृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	सू. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
वृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	सू. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	सू. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	वृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	सू. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	वृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	वृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	सू. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	वृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

विशोत्तरीदशा साधन विधिः-

कृत्तिका नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से एकादि शेष में क्रम से सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है।

उदाहरण- जन्म नक्षत्र मघा है। यहाँ कृत्तिका से मघा तक गणना की तो ८ संख्या हुई, इसमें ९ का भाग दिया तो लब्धी कुछ नहीं मिला, शेष ८ ही रहे। सूर्य, चन्द्र, भौमादि क्रम से आठ तक गिना तो आठवीं संख्या केतु की हुई। अतः जन्मदशा केतु की कहलायेगी।

योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम्

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
श्र.आ.चि.	ध.पुन. स्वा.	श.पु.वि.	अ.आश्ले. अनु. पूभा.	भर.म. ज्ये. उभा	कृ.पूफ. मू.रे.	रो.उफ.पूषा	मृ.ह. उषा
मा.१२ चं.	मा.२४ सू.	मा.३६वृ	मा.४८मं	मा.६०बु.	मा.७२श.	मा.८४शु.	मा.९६के.
मं.०।१०	पिं.१।१०	धा.३।०	भ्रा.५।१०	भ.८।१०	उ.१२।०	सि.१६।१०	सं.२१।१०
पि.०।२०	धा.२।००	भ्रा.४।०	भ.६।२०	उ.१०।०	सि.१४।०	सं.१८।२०	मं.२।२०
धा.१।०	भ्रा.२।२०	भ.५।०	उ.८।०	सि.११।२०	सं.१६।०	मं.२।१०	पि.५।१०
भ्रा.१।१०	भ.३।१०	उ.६।०	सि.१।१०	सं.१३।१०	मं.२।०	पिं.४।२०	धा.८।००
भ.१।२०	उ.४।०	सि.७।०	सं.१०।२०	मं.१।२०	पिं.४।०	धा.७।०	भ्रा.१०।२०
उ.२।०	सि.४।२०	सं.८।०	मं.१।१०	पि.३।१०	धा.६।०	भ्रा.९।१०	भ.१३।१०
सि.२।१०	सं.५।१०	मं.१।०	पि.२।२०	धा.५।०	भ्रा.८।०	भ.११।२०	उ.१६।००
सं.२।२०	मं.०।२०	पि.२।००	धा.४।००	भ्रा.६।२०	भ.१०।०	उ.१४।०	सि.१८।२०

योगिनीदशा की भुक्त भोग्य साधन

जन्मर्क्षं त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात्। मङ्गलाद्याः सङ्कटान्ता वर्षवृद्धया दशाः स्मृताः। ततो विंशोत्तरीदशावद् भुक्तभोग्यवर्षानयनं कार्यम्।

त्रिविधायुर्बोधकचक्रम्

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः चरभेष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्वायुर्निर्णेयम्।

नवमांशचक्रम्

राशि	मे. सि. ध.	वृष कं. म.	मि. तु. कु.	क. वृ. मी.
३/२०	म.	श.	शु.	चं.
६/४०	शु.	श.	मं.	सू.
१०/००	बु.	वृ.	वृ.	बु.
१३/२०	च	मं.	श.	शु.
१६/४०	सू.	शु.	श.	मं.
२०/००	बु.	बु.	वृ.	वृ.
२३/२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६/४०	मं.	सू.	शु.	श.
३०/००	वृ.	बु.	बु.	वृ.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्

अंशाः	मे. तु. मि. ध. सिं. कु.
५अ.	म.
१०अं.	श.
१८अं.	वृ.
२५अं.	बु.
३०अं.	शु.

समराशौ त्रिंशांशचक्रम्

अंशाः	वृ. के. क. वृ. म. मी.
५अ.	शु.
१२अं.	बु.
२०अं.	वृ.
२५अं.	श.
३०अं.	मं.

होराचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं.	क.	तु	वृ	ध.	म	कु	मी
१५अं	सू	चं.	सू	चं.	सू.	चं.	सू	चं.	सू	चं.	सू	चं.
३०अं	चं	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.	च	सू.	च	क

होरालग्नानयनम्-द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम्। दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत्।

द्रेष्काणचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं.	क.	तु	वृ	ध.	म	कु	मी
१०अं	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
२०अं	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च
३०अं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम्

शनिः	रविः	भौमः	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्रः	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ	पूफ	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उभा	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृता	संज्ञा

द्वादशांशज्ञानम्

प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति। द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति।

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभि-र्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि-वृहस्पति-राहु-शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्विवर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग-मित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

मेषसंक्रमे वारिपूर्णघटदानं-कुशादिकं हीत्वा ओं सोपकरण ।वारिर्पूघिटाय नमः३। कुशोपरि-ओं ब्राह्मणाय नमः३। घटं सिक्त्वा-ओमद्यामुके मासि अमुके-पक्षेऽमुकतिथौ मेषार्कसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले) अमुकगोत्रस्य मम श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथ-सिद्धिपूर्वकपितृस्वर्गकाम इमं सोपकरणवारिपूर्णघटं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय-ओमद्य कृतैतत्सोपकरण-वारिपूर्णघटदानप्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्नि-दैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः-एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः। अस्य प्रसादात्सफला मम सन्तु मनोरथाः। इति प्रार्थयेत्।

वर्षप्रवेशसारिणी। प्रतिवर्षक्षेपकदिनादि

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
दिन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५
दण्ड	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गव	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	
दिन	४	२	१	६	५	४	२	१	६	
दण्ड	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७	५२	
पल	३०	४५	००	१५	३०	४५	००	१५	३०	
विपल	००	००	००	००	००	००	००	००	००	

विंशोत्तरीमुद्दादशाचक्रम्

पति	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

गतवर्षसंख्या जन्मनक्षत्रसंख्यायुक्त द्विहीना नवभक्ता शेषक्रमेण दशापतिः।

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्- सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिस्ततः। शेषांके जन्मनि गताच्चन्द्र-राशिरिह न्यसेत्।। शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत् त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ। शुभैर्विद्धौ शुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ।।

त्रिराशिपतिः

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु.	मं.	श	मं.	वृ.	चं.
रात्रौ	वृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	वृ.	चं.

वर्षमुन्थानयन-(गतवर्षसंख्या+जन्मलग्नसंख्या)÷१२। एकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः। **वर्षेशनिर्णयः**-वर्षलग्नेष-जन्मलग्नेष-मुंथेश- त्रिराशिपति- दिवारविराशीश- रात्रौचन्द्रराशीशेषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवत्तरो वर्षेशः

गोचरफलबोधकचक्रम्

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नैरुज्यम्	सूखम्
सुहृद्	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शौकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीडा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीडा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्म	कार्यसिद्धि	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुर्वृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

शनि का स्वर्णादि पादः- यदि स्वजन्मराशितः शनिराशि संचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्यनिम्न लिखितानि पदानि भवेयुः-जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं, द्विपञ्च नन्दे: रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टचार्केष्विह लौहपादम्। **स्वर्णादि पाद फल-** लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्चकाञ्चने ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत्। **अनिष्टफलदायकशनि जपः-** कार्यः-लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्य।

७।। वर्षीय शनेः मासभेदेन फलम्-

मस्तके ७ मासाः-सर्वांशे हानिः। नेत्रे ६ मासाः-सर्वांशे हानिः। मुखे ८ मासाः भोजनादिलाभः। कण्ठे ६ मासाः-भूषणादिलाभः। हृदये १० मासाः-यन्त्रादिलाभः। उदरे ११ मासाः-अन्नादिलाभः। नाभौ ४ मासाः-कष्टमुद्रे। गुह्ये ५ मासाः-सर्वांशे हानिः। जानुनि १४ मासाः-राजबलेन जयः। जंघयो: ११ मासाः-स्त्रियादौ सौख्यम्। पादयोः ५ मासाः-व्यर्थभ्रमणम्।

गोचरफल-बोधचक्र

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	स्थानहानि	सौख्य	बन्धन	भय	अभय	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग
धन	भय	धन	धननाश	धनाप्ति	धनाप्ति	धनागम	हानि	धन	धननाश
सहज	धन	लाभ	धनाप्ति	भीति	लाभ	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख
सुहृद्	मानहानि	रोग	भय	धन	धनहानि	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति
सुत	दैन्य	कार्यसिद्धि	धनक्षय	रोग	पुत्रसुख	पुत्राप्ति	धनपुत्रनाश	शोक	शोक
रिपु	विजय	शत्रुभय	विजय	अलाभ	शोक	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनाप्ति
जया	भ्रमण	लाभ	व्यय	विग्रह	मान	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति
मृत्यु	पीड़ा	कष्ट	कष्ट	लाभ	क्लेश	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय
धर्म	धर्महानि	मान	पीड़ा	रोग	धर्मरति	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन
कर्म	कार्यसिद्धि	सुख	शोक	सुख	उन्नति	दैन्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक
आय	धन	लाभ	धनाप्ति	सौख्य	लाभ	धनाप्ति	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश
वय	कष्ट	व्यय	हानि	नाश	चिन्ता	हानि	हानि	शोक	धनक्षय

जन्म कालिक ग्रहों का भावफल (स्त्रियों के लिये)

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग
धन	दु:ख	पुत्रवती	दु:खिता	सौभाग्यवती	सौभाग्यवती	धनागम	हानि	धन	धननाश
सहज	पुत्रवती	धनाढ्या	पुत्रिणी	धनवती	पुत्रवती	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख
सुहृद्	दरिद्रा	दुर्भगा	अल्पसन्तति	सुखी	सुखी	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति
सुत	सन्ताननाश	कन्याधिक	पुत्रमरण	उत्तमसुख	उत्तमसुखी	पुत्राप्ति	धनपुत्रनाश	शोक	शोक
रिपु	धनवती	विधवा	धनयुक्त	क्लेशप्राप्ति	धनवती	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनाप्ति
जया	रोगीणी	प्रवासिनी	स्वामीनाश	क्षय	भयबन्धन	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति
मृत्यु	विधवा	अतिकष्ट	धनवती	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय
धर्म	धर्मनिष्ठा	पुत्रवती	कर्मकारिणी	उत्तमभोग	धर्मवृद्धि	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन
कर्म	परिश्रमी	व्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	पतिधनी	दैन्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक
आय	पुत्रवती	लक्ष्मीवती	पुत्रवती	सुखी	आयुष्मती	धनाप्ति	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश
वय	अतिव्ययी	दिनान्धा	वन्ध्या	सुपुत्रवती	सुशीला	हानि	हानि	शोक	धनक्षय

राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाधातादिचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	बु.	च	सू	बु	शु	मं.	वृ	श	श	वृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह्र	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह्र	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
घामा	का	मार्ग	आषा	पौ	ज्ये	भा.	मा	आ	श्रा	वै	चै.	फा
घाति	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
दिन	र.	श.	चं.	बु.	श	श	बृ.	शु.	शु.	मं	वृ	शु
नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु	मू.	श्र	श	रे.	म.	रो.	आ	श्ले
योग	वि.	सु.	प.	व्या	धृ	शु.	शुक्ल	व्य	वज्र	वै	गं	वज्र
करण	बव	श.	च	ना	बव	कौ	तै	ग	तै	श.	वणि	वि
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु.चं.	१	५	६	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीचं.	१	८	७	६	४	३	६	२	१०	११	५	१२

ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	बृ.	शु.	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	म२८	कं१५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	वृश्चि३	क२८	मी१५	म५	कं२७	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु.	कु	कु	सि
जातिः	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२वर्ष	२४व	२८व	२२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपुं	पु	स्त्री	नपुं	नपुं	पु
आकृति	ह्र	ह्र	ह्र	ह्र	दीर्घ	ह्र	दी	दी	दी

कारकग्रहा:- ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्नयूनांशक्रमेणामात्य-भ्रातृमातृपितृ-पुत्रज्ञातिकारका: ज्ञेया:। अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्।

स्थिरकारका:-तन्वादिभावनां क्रमेण सूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रबुध-गुरु-भौम-शुक्र-शनि-सूर्यगुरु-रविबुधगुरुशनि-गुरु-शनय: स्थिरकारका: भवन्ति।

स्वर्णादिचरणकचन्मज्ञानम्- जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।६ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपाद, ४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम्। **आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु-**रजतपादे, जयेष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म भवति।

तेषां फलम्-स्वर्णपादेत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं, लौहपादे च हीनफलमिति।

हस्तरेखा-(हथेली में ग्रह पर्वत (Mounts) व उनका फल)

हथेली में ग्रहों के पर्वतों का भी विशेष महत्त्व रहता है। अगर जन्म कुण्डली में कोई ग्रह बलवान होता है, तो उस जातक की हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत उभरा और स्पष्ट होता है। जिस व्यक्ति को अपनी जन्म-तिथि अथवा जन्म समय का ज्ञान नहीं होता, उस व्यक्ति की हथेली पर पर्वतों के आधार पर सही जन्म-कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। अंगूठे से जन्म लग्न मालूम किया जाता है। प्रथम अंगुली (तर्जनी) से बृहस्पति की स्थिति, मध्यमा से शनि, व अनामिका से सूर्य की स्थिति मालूम कर कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। तर्जनी के नीचे के स्थान को बृहस्पति का पर्वत कहते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे के स्थान को शनि का पर्वत कहते हैं। अनामिका अंगुली के नीचे के भाग को सूर्य पर्वत कहते हैं और कनिष्ठिका अंगुली के नीचे के स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। अंगूठे के नीचे हथेली पर जो जीवन रेखा से घिरा हो उसे शुक्र पर्वत कहते हैं। उसी के बाँयी ओर हथेली में ऊँचे उठे पर्वत को चन्द्र पर्वत कहते हैं। हृदय रेखा के नीचे और मस्तिष्क रेखा के ऊपर ऊँचे उठे भाग को मंगल का प्रथम क्षेत्र कहते हैं। शुक्र पर्वत के ऊपर और बृहस्पति, को मंगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के एक-एक ग्रह पर्वत तथा मंगल के दो ग्रह पर्वत हथेली में होते हैं। हथेली का मध्य भाग की अपेक्षा ग्रह पर्वत ऊँचे उठे होते हैं। अंग्रेजी में इन पर्वतों को डवनदजे कहते हैं।

सूर्यपर्वत (Sun Mount) यह पर्वत अनामिका अंगुली के नीचे होता है। सूर्य पर्वत उन्नत होने पर जातक उत्साही, कला प्रेमी, शिल्पविद्या में निपुण, भावुक, धनवान्, उदार होता है। अगर सूर्य का पर्वत धंसा हुआ हो तो उस जातक में उत्साह की कमी होती है। और उसकी बुद्धि भी तेज नहीं होती। उसे सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती यदि क्रास का चिह्न हो तो अनावश्यक बदनामी प्राप्त होती है। यदि सूर्य पर्वत हथेली में साधारण रूप से उच्च हो तो काव्य-कला सौन्दर्य इत्यादि में अभिरूचि होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य का पर्वत उच्च हो उसे यश व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और वह धनवान होता है। सूर्य का पर्वत उठा हुआ हो तो व्यक्ति लेखक, यशस्वी, सुखी एवं बुद्धिमान होता है। सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो जातक उच्च राज्यधिकारी, सरकारी क्षेत्रों में लाभान्वित, उच्च पदाधिकारी या लेखक अथवा कलाकार होता है। सूर्य-पर्वत पर बिन्दु या वृत्त का चिह्न शुभ नहीं माना जाता। जिस व्यक्ति के हाथ में यह पर्वत हो ही न उसका जीवन साधारण सा होता है। इस पर्वत से प्रतिभा, यश, सम्मान, सुख व सफलता की जानकारी प्राप्त होती है। अगर सूर्य-पर्वत बुध पर्वत के साथ मिला हो तो ऐसे जातक नम्र स्वभाव वाले, वाहनादि सुखों से युक्त, ईमानदार, व्यवहार दक्ष होते हैं। यदि स्त्री के हाथों में यह लक्षण हो तो रूपवती, पति से प्रीति रखने वाली, हंसमुख व सुशीला होती है। सूर्य पर्वत पर अगर दो खड़ी रेखाएँ हो तो वह महाधनी होता है। अगर सूर्य का पर्वत शनि की ओर झुक जाए तो व्यक्ति एकान्तप्रिय व उदासीन होता है कभी-कभी निराशावादी बन जाता है।

चन्द्र पर्वत (Moon Mount) दाहिने हाथ में आयु रेखा से बांयी ओर भाग्य रेखा के पास और मणिबंध रेखा से ऊपर चन्द्र पर्वत होता है। चन्द्र क्षेत्र सौन्दर्य-प्रियता, कल्पना काव्य, कला, संगीत, कल्पना, गायन आदि के कारण सफल होता है धन, स्त्री, माता व विदेश यात्रा का सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्र क्षेत्र, साधारण हो तो पाचन शक्ति कमजोर होती है। चन्द्र-क्षेत्र का संपूर्ण भाग अत्यधिक उच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण हथेली में शुभ न हों तो सिर दर्द, पागलपन आदि के रोग होते हैं। चन्द्र-पर्वत अच्छा और उठाव हो तो मनुष्य सुखी, कला प्रेमी और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, अधिक उठा हुआ हो तो व्यक्ति में उतावलापन अधिक होता है, और उसे क्रोध भी जल्दी आता है। चन्द्र पर्वत गहरा हो तो व्यक्ति चिन्ता-ग्रस्त होता है। चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण का चिह्न हो, तो व्यक्ति गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। इस पर्वत पर वर्तुल या कोई दाग का चिह्न हो तो मानसिक रोग एवं जलभय होता है। यदि इस पर ऊर्ध्व रेखाएँ हों, तो विदेश-यात्रा के अवसर मिलते हैं। इस पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ विदेश में विघ्न व परेशानियाँ पैदा करती है। चन्द्र-क्षेत्र मणिबन्ध की ओर झुका हुआ हो व्यक्ति कल्पना लोक में विचरण करता है। चन्द्र-पर्वत से यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो वह व्यक्ति जलयात्रा करता है। चन्द्र प्रधान व्यक्ति कलाकार होते हैं। तथा कोमलता और भावुकता इनके स्वाभाविक गुण होते हैं। चन्द्र पर्वत उन्नत हो तो जातक में कल्पना, भावुकता, सौन्दर्य प्रियता तथा प्रेम विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्ति अच्छे कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार और कवि होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र अनुपस्थित होता है, वह कठोर हृदय का होता है।

मंगल पर्वत (Mars Mount) मंगल के दो क्षेत्र होते हैं। पहला हथेली में बुध पर्वत एवं हृदय रेखा के नीचे एवं चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है। दूसरा मंगल पर्वत बृहस्पति पर्वत के नीचे होता है जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती हे। यह जीवन रेखा के अन्दर और शुक्र पर्वत की समाप्ति पर होता है। मंगल प्रधान व्यक्ति साहसी निडर, तथा शक्तिशाली होते हैं। जिनके हाथों में मंगल पर्वत बलवान होता है वे प्रभुत्वाकांक्षी, परिश्रम के कामों में दक्ष, लड़ाई-झगड़े में उत्साही होते हैं। धीरजता तथा साहस इनका प्रधान गुण होता है। नैतिक बलशाली, चंचल प्रकृति के सैनिक होते हैं। यदि मंगल पर्वत बहुत अधिक ऊँचा हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, अकारण क्रोध करने वाला समाज-विरोधी, निर्दयी होता है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से लड़ाकू तथा अपनी बात को जबरदस्ती मनवाने के आदी होते हैं। यदि मंगल का पर्वत नीचा हो तो व्यक्ति में सहन-शक्ति की कमी होती है, नास्तिक, डरपोक तथा शान्त विचार का होता है। यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र क्षेत्र की ओर होता है तो यह निश्चित समझना चाहिए कि उस व्यक्ति में सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुण विशेष होंगे। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत, व्यर्थ का आडम्बर तथा प्रदर्शन प्रिय होते हैं। यदि मंगल पर्वत या राहु के पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति (कुशल, दृढ़-निश्चयी, उत्तम सेनापति अर्थात् प्रबन्धन क्षमता से युक्त होता है। मंगल पर्वत यदि बुध की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छी राय देने वाला, सलाहकार होता है। यदि मंगल पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों और उनसे जाल -सा बन गया हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु दुर्घटना के फलस्वरूप होती है। मंगल का पर्वत यदि अशुभ, निर्बल हो तो ऐसे व्यक्ति को तीव्र ज्वर, पित्त विकार, शस्त्र, शत्रु, चोर व राजा से भय प्राप्त होता है। रक्त-विकार से पीड़ा होती है। यदि मंगल पर्वत भली प्रकार से विकसित हो तथा साथ ही हथेली का रंग भी लालिमा लिए हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही ऊँचा पद प्राप्त करता है। संघर्षों एवं बाधाओं के बावजूद वह अपने लक्ष्य तक पहुँच जाने में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

वस्तुत: मंगल पर्वत से ही व्यक्ति साहसी, निर्भीक और स्पष्टवक्ता बनता है।

बुध पर्वत (Mercury Mount)- कनिष्ठिका ऊँगली के नीचे (मूल में) हृदय रेखा या मंगल पर्वत के ऊपर जो स्थान है उस स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। यह पर्वत भौतिक सम्पदा एवं भौतिक समृद्धि का सूचक है। बुध का क्षेत्र अच्छा हो तो व्यक्ति को व्यापारिक एवं वैज्ञानिक कार्यों में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, ज्योतिषी, धनी एवं कवि होता है। कानून का ज्ञाता, लेखक एवं हंसमुख प्रकृति का भी होता है। यदि बुध पर्वत अत्यन्त ऊँचा हो तो वह ठग, चालाक, धुर्त, विश्वासघाती और लफंगा भी होता है। ऐसे व्यक्ति धन की पीछे पागल रहते हैं। यदि बुध पर्वत नीचा हो तो अप्रसन्न, आलसी, धनहीन एवं मन्दबुद्धि होते हैं।

यदि बुध पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में आसानी से सफलता प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति व्यापार कुशल, प्रतापी चिकित्सक, वकील, ज्योतिषी आदि होता है। ऐसे व्यक्ति विद्या-व्यसनी होते हैं। यदि बुध पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हंसमुख विद्या-व्यसनी होते हैं। यदि बुध पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हंसमुख प्रकृति का होता है। यही फल मंगल, बुध दोनों के उच्च होने का भी समझना चाहिए। जिन व्यक्तियों के बुध व गुरु के पर्वत समान रूप से ऊँचे उठे हों, वे विद्याभ्यासी, संगीत प्रिय, सफल साहित्यकार, पत्रकार, लेखक होते हैं। श्रमवान और उद्यमी होते हैं। मान-सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं। बुध व शुक्र का पर्वत समान रूप से ऊँचे हो तो वह विलक्षण ज्ञान वाला, श्रृंगार प्रिय और संतति सुख से पूर्ण होता है।

जिनके हाथों में बुध पर्वत सही रूप से विकसित होता है, वे मनोविज्ञान के क्षेत्र में माहिर होते हैं। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी एवं भौतिकवादी कहे जाते हैं। धन-संचय करने में ये उचित-अनुचित आदि का कोई ख्याल नहीं रखते। यदि बुध पर्वत पर कोई तिरछी रेखा आई हो तो उसे गुप्त परेशानी होती है। यदि इस पर त्रिकोण Δ का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी, मान प्रतिष्ठा वाला या व्यापारी होकर प्रचुर धन पैदा करता है। यदि बुध पर्वत पर दो चार खड़ी रेखाएँ हों तो वह डॉक्टर या औषधि संग्रहकर्ता होता है। यदि बुध का पर्वत ऊँचा उठा हुआ कुछ चौरस दिखे तो वह ज्योतिषी होता है। यदि हथेली पर बुध पर्वत का अभाव हो तो उसका जीवन दरिद्रता में ही व्यतीत होता है। लम्बी उंगलियों के साथ विकसित बुध पर्वत हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला होता है।

यदि बुध पर्वत अपने आप में पूर्णत: श्रेष्ठ एवं विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

बृहस्पति क्षेत्र (Jupiter Mount)-तर्जनी अँगुली के मूल भाग में राहु पर्वत के ऊपर शनि पर्वत के पास जो स्थान है उसे गुरु का क्षेत्र या गुरु पर्वत कहते हैं। हथेली में गुरु का पर्वत उच्च हो तो उस व्यक्ति में देव-तुल्य सभी गुण पाए जाते हैं। ऐसा व्यक्ति तेजवान, ओजस्वी, दर्शनीय विद्वान्, उदार, ज्योतिषी, अध्यापक होता है। वह धनधान्य युक्त, सदाचारी, सत्यवक्ता होने के साथ-साथ जहाँ स्वयं की उन्नति करता है, वहाँ दूसरों को उन्नति देने में सहायक रहता है। यदि गुरु का पर्वत अत्यन्त उच्च हो तो व्यक्ति आडम्बर वाला, मिथ्याभिमानी, स्वार्थी, धोखा देने में चतुर तथा स्वेच्छाचारी होता है।

यदि गुरु पर्वत अल्पविकसित या अविकसित होता है तो उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों की न्यूनता समझनी चाहिए। विपरीत योनि के प्रति इनके मन में कोमल भावनाएँ होती हैं। यदि गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील तथा अपने ही कार्यों में लगा रहने वाला परन्तु जीवन में सफलता न मिल पाने के कारण धीरे-धीरे उसमें निराशा की भावना आने लगती है। यदि गुरु पर्वत राहु पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति धूर्त तथा रोगी होता है। यदि गुरु, शुक्र का पर्वत एक समान ऊँचा हो तो ऐसा व्यक्ति असत्य वक्ता, शत्रु-युक्त, अविचारी, झगड़ालू तथा स्त्रियों के साथ रहकर भी उनसे कम प्रीति वाला होता है। यदि गुरु पर्वत निम्न तथा शनि पर्वत ही अधिक उठा हो तो वह समाज व घर वालों से घृणा करता है। तथा इन दोनों के एक समान ऊँचे होने पर धैर्यवान, भाग्यवान और अदृष्टवादी होता है।

अगर बृहस्पति-क्षेत्र पर क्रास का चिह्न हो तो जातक धार्मिक क्षेत्र में बहुत ऊँचा उठ जाता है। उसका वैवाहिक जीवन सानन्द रहता है। यदि गुरु पर्वत पर सीधी रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है परन्तु बहुत सी रेखाएं होने पर अपयश प्राप्त होता है। गुरु पर्वत पर त्रिकोण चिह्न हो तो व्यक्ति सात्विक विचार, चतुर व कुशल होता है। यदि त्रिकोण के साथ सूर्य रेखा भी हो तो ऐसा व्यक्ति संस्था का मंत्री होता है। गुरु के पर्वत पर तारा का चिह्न हो तो अच्छा फल देता है किन्तु परिवार की ओर से परेशानी कारक होता है। यदि गुरु के पर्वत पर गुणा (क्रास) का चिह्न हो तथा तर्जनी के मूल में स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति का विवाह सम्पन्न एवं कुलीन घराने में होता है। ऐसे व्यक्ति ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त कर अच्छी उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। गुणा का चिह्न या अत्यन्त सूक्ष्म होने पर उसके मस्तक पर चोट आदि से कोई घाव अवश्य हो जाता है।

यदि व्यक्ति की उँगलियाँ नुकीली हों तथा गुरु पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति अंधविश्वासी होता है। वर्गाकार उँगलियों के साथ विकसित गुरु पर्वत हो तो वह जीवन में निरंकुश तथा अत्याचारी बन जाता है। यदि उँगलियाँ लम्बी हो तो वह व्यक्ति अपव्ययी तथा भोगी होता है। यदि गुरु पर्वत अशुभ हो तो उसे कुष्ठ, चर्म, क्षय-रोग, गठिया, पीलिया तथा फेफड़े सम्बन्धी रोग रहता है।

वस्तुत: गुरु पर्वत जीवन में अत्यधिक सहायक तथा उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला पर्वत कहा गया है।

शुक्र पर्वत (Venus Mount)-अंगूठे के नीचे और जीवन रेखा के भीतर का भाग शुक्र क्षेत्र कहलाता है। शुक्र पर्वत से सौन्दर्य प्रियता, काम वासना, संगीत प्रियता, स्वास्थ्य, संतान उत्पन्न करने की शक्ति का विचार किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति के हाथ में शुक्र का पर्वत उठा हुआ न हो तो उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण न्यून मात्रा में होता है। शुक्र क्षेत्र का साधारण उच्च होना अच्छा है। साधारण उच्च होने पर जातक में उपर्युक्त सभी गुण पाये जाते हैं।

शुक्र का अति उच्च होना अशुभ होता है। अति उच्च होने पर मनुष्य अत्यधिक विलासी, व्यभिचारी व कामुक होता है। शुक्र पर्वत उठावदार व शुभ होने पर व्यक्ति निरोगी होता है, और वह सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। उसकी ललित कला में अधिक रूचि होती है। यदि शुक्र पर्वत पर व्रत या बिन्दु के चिह्न अशुभ होते हैं। शुक्र क्षेत्र से कोई रेखा वृहस्पति की ओर जावे तो उस व्यक्ति को यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि कोई रेखा शुक्र से निकल कर भाग्य रेखा को काटे तो धन हानि होती है। शुक्र पर्वत हथेली में अनुपस्थित होने पर व्यक्ति निर्मोही हो जाता है। वह उदासीन व सन्यासी बन जाता है। हाथ में शुक्र पर्वत अच्छा होने पर चेहरा लावण्यमय व प्रभावशाली होता है।

शनि पर्वत (Saturn Mount)-यह मध्यमा अंगुली के नीचे होता है। एकान्त-प्रियता, परिश्रम-शीलता व किसी वस्तु का गंभीरता पूर्वक अध्ययन इसके स्वाभाविक गुण है। यदि शनि पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो उस जातक पर शनि का प्रभाव अधिक रहता है। अत: वह मनुष्य चिन्तायुक्त व दु:खी रहता है तथा अविश्वासी होता है। अगर शनि का क्षेत्र साधारण उन्नत हो तो वह जातक विचारशील होता है। अगर शनि का पर्वत बिगड़ा हुआ हो तो उस मनुष्य का स्वास्थ्य खराब रहता है व विशेष रूप से वह पित-वात रोग का रोगी होता है। शनि का पर्वत उठावदार व शुभ हो तो उस व्यक्ति का जीवन सुखी होता है। आवश्यकता से अधिक उठा हुआ हो तो वह एकान्त-प्रिय और वैराग्य की भावना रखने वाला होता है। शनि का पर्वत गहरा होने पर मनुष्य का जीवन दु:खी होता है और वह कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। जिस व्यक्ति के शनि पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो, वह यौगिक क्रियाओं और गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। शनि पर्वत पर वृत या बिन्दु के चिन्ह दु:ख व दरिद्रता के चिह्न होते हैं। शनि पर्वत प्रधान व्यक्ति एकान्त-प्रिय होने के कारण भीड़ से बचना चाहते हैं। शनि क्षेत्र प्रधान व्यक्ति प्राय: इंजीनियर, जादूगर, साहित्यकार व वैज्ञानिक होते हैं। नृत्य, गान, संगीत इत्यादि में इनकी रुचि नहीं होती है। ये संदेहशील प्रकृति के व्यक्ति होते है। शनि क्षेत्र अत्यधिक विकसित होने पर जातक आत्महत्या तक कर लेता है। वे स्वभाव से उदासीन व चिड़चिड़े होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत वृहस्पति की ओर झुका हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। उस व्यक्ति में वृहस्पति के गुणों का समावेश हो जाता है। वह व्यक्ति उन्नतशील बन जाता है। सूर्य की ओर झुका हुआ होने पर व्यक्ति निष्क्रिय व उदासीन हो जाता है। शनि क्षेत्र पर रेखाएं शुभ होती है परन्तु चिह्न जैसे वृत्त आदि अशुभ माने गए है।

ऊपर संक्षेप में भिन्न ग्रह क्षेत्रों के लक्षण और फल बताये गये हैं। किसी हाथ में एक, किसी में दो, किसी में तीन ग्रह क्षेत्र उच्च रहते हैं। इसलि अलग-अलग फलों का मिलान पर, परिणाम में जो फल आवे, वह कहना चाहिए।

विवाह सम्बन्धी योग-

(१) यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो और वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है।

(२) यदि स्त्री के दाएँ हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायक प्राप्त होती है।

(३) यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उदित होकर गुरु-पर्वत पर गई हो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है। उसे सुख, यश एवं विदेश-गमन आदि के लाभ प्राप्त होते है।

(४) यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय-रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है।

(५) यदि हृदय रेखा गुरु क्षेत्र से उदय हो तथा चन्द्र से निकलती हुई भाग्य रेखा आकर हृदय-रेखा में विलीन हो गई तो ऐसी स्त्री को अत्यधिक प्रेम करने वाला पति प्राप्त होता है।

(६) यदि हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

(७) यदि भाग्य-रेखा, चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सुन्दर गहरे रूप में बृहस्पति के क्षेत्र तक चली जाये तो उस स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य पुरुष की सहायता से भाग्योदय होता है।

(८) यदि किसी विवाह-रेखा स्पष्ट तथा सुन्दर हो, साथ ही चन्द्र क्षेत्र से आई हुई कोई प्रभाव रेखा भाग्य रेखा में आकर मिल जाये तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी धनी कुल में होता है। उसे अपन सम्बन्धियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के सहयोग से भाग्योदय होता है।

(९) यदि विवाह-रेखा में से पतली-पतली शाखायें निकलकर हृदय रेखा की ओर गई हो तो ऐसी स्त्री के पति का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण दाम्पत्य सुख में बाधा होती है।

कालसर्प योग-चामत्कारिक शुभ फल भी देता है

कालसर्प योग जन्म कुण्डली में उस स्थिति में बनता है, जब कुण्डली में समस्त ग्रह राहु-केतु के एक ओर स्थित होते हैं। ज्योतिष जगत में 'कालसर्प योग' के विषय में बड़ी चर्चाएँ हैं। प्राचीन विचारधारा के ज्योतिर्विदों का कहना है कि प्राचीन ग्रन्थों में कालसर्प योग का कहीं उल्लेख नहीं है। आधुनिक ज्योर्तिविद जातक के जन्माङ्ग में कालसर्प योग की जो स्थिति बनाते हैं, वह स्थिति पहले भी होती थी, जिसे राहु की दशा कहा जाता था। अति प्राचीन ज्योतिर्विदों ने '**कालसर्प योग**' शब्द का प्रयोग नहीं किया। परन्तु महर्षि पाराशर एवं वराह मिहिर ने अपने ग्रन्थों में '**सर्प योग**' की चर्चा की है। बृहत्जातक तथा वृहत् पराशर होराशास्त्र में- योग: प्रोक्तकाल सर्पश्च ......।। एवं 'राहुकेतुमध्ये ग्रहा सर्वे विघ्नदा काल सर्प संज्ञक: तथा काल सर्पयोगस्य विषविषात जीवने भयावह पुन: पुनरपि शोकं च। मानसागरी के अध्याय ४ में स्पष्ट उल्लेख है कि **''लग्नाच्च सप्तमे स्थाने शनि राहु संयुतौ। सर्पेण बाधा तस्योक्ता शय्यायां स्वपतोऽपिच।।४१०।।''** यदि सप्तम भाव में शनि राहु के साथ हो तो उस जातक की मृत्यु 'सर्पदंश' से होती है। इसी सर्प योग को हम '**कालसर्प योग**' भी कहते है।

(राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दु:खों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दु:खों से व्याकुल होकर ही मनुष्य की शक्तियों का स्मरण करता है।)

कुछ विद्वान लोग यह प्रश्न करते हैं कि '**कालसर्प योग**' अस्तित्व में कैसे आया? तो यह प्रश्न अनुचित नहीं है क्योंकि अधिकांश ग्रन्थों में '**सर्प योग**' की तो चर्चा है किन्तु '**कालसर्प योग**' की नहीं। 'काल' शब्द जोड़ दिया जाए, तो साधारण प्राणी के मस्तिष्क में उसका प्रथम अर्थ 'मृत्यु' ही आएगा और जब 'काल' शब्द के साथ 'सर्प' जुड़ा हो, तब तो प्रथम दृष्ट्या जातक भयभीत हो जायेगा। समाज में सामान्य रूप से '**काल**' और '**सर्प**' दोनों प्रथमत: भयावह ही हैं। यह तो उसे धैर्य बँधाने और समझाने पर ही समझ में आयेगा कि 'काल' का अर्थ है समय और 'सर्प' हमारे पूज्य देवता हैं, नाग की पूजा और शिव भक्ति मे हमें ऊर्जा प्राप्त होकर मन को शान्ति मिलती है। राहु-केतु की महादशा एवं कालसर्प/पितृदोष से पीड़ित जातकों की ऊर्जा शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए नाग पूजा एवं शिवभक्ति का विधान हमारे शास्त्रों ने सुझाया है। इससे जातक को आने वाले कष्टों से राहत होंगे।

राहु-केतु छाया ग्रह हैं। जैसे प्राचीन चरक संहिता में कैंसर एवं एड्स जैसे रोगों का उल्लेख नहीं है।, परन्तु ये रोग नहीं है, ऐसा नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार कालसर्प योग जब सभी सात ग्रह राहु और केतु या केतु या राहु के मध्य आ जाते हैं, तो राहु के प्रभाव से अन्य ग्रह निष्प्रभावी हो जाते हैं और राहु का अधिक प्रभाव आता है, जन्मकुण्डली में कालसर्प योग का निर्णय करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। राहु या केतु के साथ अन्य ग्रहों का साहचर्य की स्थिति में भाव-स्पष्ट कर लिए जाएँ तो इस योग में और भी अधिक स्पष्टता आ जाएगी। जैसे-लग्न भाव से निर्मित कालसर्प योग में यदि राहु के साथ मंगल या कोई भी ग्रह है तथा उसके भोगांश राहु से अधिक हैं तो कालसर्प योग दोषपूर्ण नहीं होगा, बल्कि योगकारक बनता है। कुछ विद्वान तो इसे भंग कालसर्प दोष की कुण्डली मानते हैं।

वैदिक रूप से राहु का अधिदेवता काल, प्रति अधिदेवता सर्प है, जबकि केतु का अधिदेवता चित्रगुप्त एवं प्रतिअधिदेवता ब्रह्माजी हैं। कालसर्प योग से संबंधित जन्मकुण्डलियों के अध्ययन करने पर यह दिखाई पड़ता है कि कुछ कालसर्प योग से युक्त जातक असहनीय कष्ट झेल रहे हैं और कुछ उत्तरोत्तर समृद्धि, वैभव प्राप्त कर रहे हैं। व्यक्ति जब पद, प्रतिष्ठा, धन, परिवार आदि के मद में चूर हो जाता है, तब वह अपने सम्माननीय माता-पिता, पितर तथा आश्रित अन्य लोगों को सम्मान न देकर उनसे सम्मान कराने की इच्छायें रखता है और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है, उसी का प्रभाव अगले जन्म में कालसर्प योग के रूप में आता है। इसके विपरीत अपने माता-पिता आदि की यथाशक्ति सेवा करते हैं, उन्हें कालसर्प योग अनुकूल हो सुखी बनाता है।

सामान्यत: कालसर्प योग का प्रभाव जीवनपर्यन्त रहता है, परन्तु राहु अथवा केतु की दशाऽन्तर्दशा में इसके प्रभाव, फलों का प्रादुर्भाव होते देखा जा सकता है। एक अन्य मान्यतानुसार कालसर्प योग यदि किसी

जातक की कुण्डली में प्रथम छः भावों में बनता हो, तो उसे जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में विशेष संघर्षपूर्वक परिस्थितियों का सामना रहता है। (इस स्थिति में राहु सप्तम में तथा केतु लग्न भावस्थ होगा) इसी भाँति यदि राहु और केतु के मध्य सभी सातों ग्रह सप्तम भाव से द्वादश भावों के बीच पड़ते हों, तो तत्सम्बन्धित योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य को जीवन का उत्तरार्द्ध भाग विशेष कठिन परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है। ध्यान रहे, इस योग की गणना राहु से लेकर केतु तक करनी चाहिए।

कालसर्प का शुभाशुभ फल द्वादश भावों में राश्यानुसार अलग-अलग होता है।

1. अनन्त कालसर्प योग- प्रथम व सातवें भाव से निर्मित कालसर्प योग मनुष्य के व्यक्तित्व, शरीर, सिर, आत्मा एवं पिता की माता(दादी) पर जीवन पर्यन्त प्रभावी रहता है। 42 वर्ष की आयु तक अथवा राहु की महादशा में विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

अशुभ प्रभाव- शारीरिक रोग, कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहता है। जीवन में संघर्ष अधिक करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में असन्तोष बना रहता है। जातक जीवन पर्यन्त उदर विकार से पीड़ित रहता है। बचपन में अथवा बड़े होने तक पेट में कीड़े होते हैं। प्रायः इसको शौच संबंधी कष्ट बना रहता है। यह तब और भी अधिक प्रभावी होता है, जब लग्न एवं राशि एक ही हो। जातक को स्वप्न में सूर्य एवं मृत्यु लोग की आत्माएँ दिखती हैं।

शुभ फल- यदि यह अनन्त कालसर्प योग वृष एवं मिथुन, सिंह राशि पर आता है तब राजयोगकारक भी होता है। जातक प्रायः विदेश गमन भी करता है। रविक्षेत्रोदये राहौ राजभोगाय सम्पदि।। वैद्यनाथ। गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, बाहरी तौर पर सज्जन परन्तु भीतर से चालाक प्रवृत्ति का होगा।

2. कुलिक कालसर्प दोष- द्वितीय व आठवें भाव से निर्मित कालसर्प दोष में यदि राहु अशुभ हो, तो जातक को कुटुम्ब एवं धन सम्बन्धी उलझनों का सामना रहता है। अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों में निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। गुप्त रोग होने की संभावना रहती है। जातक प्रायः अपनी वाणी पर संयम नहीं रख पाता। कभी-कभी मुख सम्बन्धी रोग, गले या श्वास सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हों।

शुभ फल- अचानक धन की प्राप्ति होती है। गड़ा धन, लॉटरी, सट्टा आदि से भी धन का आगम हो सकता है। परिवार ख्याति प्राप्त एवं संयुक्त होता है। जातक धन की अपेक्षा कीर्ति को अधिक मूल्यवान समझता है।

3. वासुकि कालसर्प योग- तृतीय एवं नवम भाव में निर्मित इस योग से अपने निकटस्थ भाई-बन्धुओं के कारण ही विविध परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विदेशों में अथवा भ्रमणशील (घूमने-फिरने) के कार्यों द्वारा धनार्जन होता है।

शुभ प्रभाव- तृतीयेश उच्च स्थानस्थ होकर भाग्येश, पंचमेश या राज्येश से युति होने पर एवं राहु के तृतीय भाव में वृष या मिथुन या कन्या राशिस्थ होने पर अखण्ड साम्राज्य प्रदान करता है। राजनीति में विशेष सफलता देता है। भाई-बहन होते हैं तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। यदि गुरु की दृष्टि भी हो तो पराक्रम में वृद्धि तथा भाई-बन्धुओं का यथेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जातक का सम्पर्क एवं सम्बन्ध उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ भी रहता है, जिनसे जातक लाभान्वित भी होता है। शुभफल का अनुभव स्त्री राशियों में प्राप्त होता है। अशुभ फल का अनुभव पुरुष राशियों में प्राप्त होगा।

4. शंखपाल कालसर्प योग- चतुर्थ व दशम भावों द्वारा निर्मत कालसर्प योग का प्रभाव जातक की माता, स्थायी सम्पत्ति, पैतृक सम्पत्ति, वाहन-सुख एवं शरीर में पेट पर पड़ता है। चतुर्थेश निर्बल होने एवं राहु नीच राशिस्थ होने से जातक को आराम कम व संघर्ष अधिक रहता है। माता-पिता एवं परिवार के निर्मित परेशानियाँ होती हैं। आय में अनिश्चितता रहती है। जातक को पथरी एवं किडनी आदि उदर विकार होते हैं। जातक घरेलू परिस्थितियों के प्रति असन्तुष्ट रहता है।

शुभ फल- इसके विपरीत उच्च राशिस्थ राहु होने एवं चतुर्थेश के बलिष्ठ होने पर यह योग पूर्ण शुभ तो नहीं, अपितु अल्प शुभफली बन जाता है। जन्म स्थान छोड़ने पर जातक सुखी रहता है तथा माता को कष्ट के बावजूद सुख प्राप्त होता है। १, २, ३, ४ एवं कन्या राशि में शुभ फल प्राप्त होते हैं।

5. पद्म कालसर्प योग- पंचम व एकादश भावों के मध्य कालसर्प योग का प्रभाव शिक्षा, संतान, श्रम का मूल्यांकन, मान-सम्मान, पेट विशेषकर लीवर एवं आँत पर पड़ता है। पंचमेश नीच, वक्री, अस्त या अन्य निर्बल भावों में स्थित हो तथा राहु नीच राशि धनु या शत्रु राशि में हो तथा किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी न हो तो जीवन के पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। कोई भी विशेष कार्य पूर्ण होने से पूर्व विघ्न या रुकावटें पैदा हों। आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहती है। सन्तान उत्पत्ति में विलम्ब अथवा कन्या सन्तान अधिक हों। उच्च-विद्या में विघ्न-बाधाएं अथवा अधूरी शिक्षा रहती है।

शुभ फल- पंचमेश उच्च राशि एवं बलिष्ठ स्थिति में होने एवं उच्च राशि या शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट होने पर यह योग अनेक गुप्त विद्याओं का ज्ञान कराता है। संतान-उत्पत्ति के बाद क्रमिक उन्नति हो। मंगल-राहु योग हो तो जातक कूटनीति का प्रयोग करता है। भृगुसूत्र के अनुसार पंचम में यदि राहु हो तो मनुष्य को पुत्र सुख नहीं मिलता, सर्प के शाप से पुत्र का नाश होता है। नागदेव की पूजा करने से पुत्र प्राप्ति होती है।

6. महापद्म कालसर्प योग- षष्ठ स्थान में राहु होने पर योग बनता है। इसका प्रभाव रोग, शत्रु, मामा और मौसी पर पड़ता है। षष्ठेश निर्बल एवं पापग्रस्त या राहु नीचस्थ होने से जातक गुप्त रोग एवं गुप्त षड्यंत्र का शिकार होता है अथवा मामा/मौसी की अकाल मृत्यु होती है। वृथा खर्च, मानसिक तनाव व गुप्त शत्रु-भय, मातुल (मामाके) पक्ष को अनिष्टकर, दाँतों व नेत्रों सम्बन्धी रोग भय। प्रगति कठिनता से हो पाती है।

शुभ फल- षष्ठेश उच्च राशिस्थ, बलिष्ठ तथा राहु उच्च राशिस्थ होने से शत्रु स्वयं ही (निजी कारणों से) दूर हट जाते हैं। विदेश गमन भी होता है। जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने बुद्धि-चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है।

7. तक्षक कालसर्प योग- राहु के सप्तम भाव में होने पर यह योग बनता है। इसका प्रभाव वैवाहिक जीवन, मित्र, सांझेदारी, दादा पर पड़ता है।

सप्तमेश ६, ८, १२ वें अथवा अशुभ भावस्थ या राहु नीच राशिस्थ होने से वैवाहिक विलम्ब, विवाह होने पर वैवाहिक सुख में कमी, व्यवसाय में साझेदारी के कार्यों में विघ्न-बाधाएँ एवं धोखा, अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही धन, आय के साधन हों। स्त्री/पति की ओर से परेशानी अथवा वैवाहिक जीवन में कलह-कलेश हो।

शुभ फल- सप्तमेश शुभ हो तो जातक का एक जगह सम्बन्ध छूटने के बाद वैवाहिक सुख प्राप्त होता है। स्त्री राशि का राहु शुभ फल करता है। विवाह जल्दी होता है।

8. कर्कोटक कालसर्प योग- राहु के अष्टमस्थ होने से यह योग बनता है। अशुभ होने पर क्लिष्ट रोग का भय, मानसिक तनाव, आर्थिक तंगी व घरेलू उलझनें अधिक हों।

शुभ फल-अष्टमेश शुभ भावस्थ हो, या राहु उच्च राशिस्थ, शुभ दृष्ट हो तो जातक दीर्घजीवी होता है तथा जीवन के उत्तरार्द्ध में भूमि, मकान, वाहन एवं सुयोग्य सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

9. शंखनाद कालसर्प योग- नवम व तृतीये भाव में निर्मित कालसर्प योग में भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ पैदा होंगी। लाटरी, सट्टे में धन का अपव्यय तथा किसी नजदीकी बन्धु द्वारा विश्वासघात हो। मनमाना अचारण करने से प्रवृत्त।

शुभ प्रभाव- जातक स्वाभिमानी, जादू, यंत्र-मंत्र, तन्त्र, ज्योतिष, लाटरी-शेयर आदि विषयों में रूचि रखने वाला, जातक ऐसी योजनाओं के संचालक होते हैं। जिनमें धन की वृद्धि अचानक होती है।

10. पातक कालसर्प योग- दशम एवं चतुर्थ भावों में निर्मित इस योग से जातक अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् जीवन में उन्नति करता है। आयु के उत्तरार्ध भाग में ही सफलता मिलती है। पिता के सुख में कमी करता है। झूठे आरोप झेलने पड़ते हैं।

शुभ प्रभाव- जातक उच्च प्रतिष्ठित संस्थान में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता के बल पर भूमि, आवास, स्त्री आदि सुखों को प्राप्त करता है।

11. विषाक्त कालसर्प योग- एकादेश व पंचम भाव से सम्बन्धित कालसर्प योग के कारण जातक पिता या संतान पक्ष के कारण चिन्तित, गुप्त आर्थिक, परेशानियाँ, प्रथम कन्या संतान की संभावना, पारिवारिक सुख एवं सहयोग में कमी, अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के सम्बन्ध में असन्तोष बना रहता है।

शुभ प्रभाव-लाटरी, सट्टा, शेयर द्वारा आकस्मिक धन लाभ, अनेक यात्राओं द्वारा धन लाभ एवं ऐश्वर्य प्राप्त करता है। अरिष्टनाशक एवं सौभाग्य में वृद्धिकारक होता है।

12. शेषनाग कालसर्प योग- द्वादश भाव में राहु होने पर यह योग बनता है। जातक को शिर, नेत्रादि के कारण कष्ट, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला धन का वृथा खर्च अधिक होता है। कुसंगति के कारण व्यसन आदि का भी शिकार हो सकता है।

शुभ प्रभाव- यदि व्ययेश शुभ भावस्थ हो तो जातक अपने जन्म स्थान से दूर जाकर भाग्योदय प्राप्त करता है। आध्यात्म, धार्मिक, लेखन, ज्योतिष के क्षेत्र में विशेष रूचि रखेगा।

कालसर्प का मुख राहु होता है। यदि राहु बली हो तथा उस पर शुभ और योगकारक ग्रहों का प्रभाव हो, तो कालसर्प योग जातक को अतीव उन्नति देता है। किसी भी जन्मकुण्डली में उच्चस्तरीय सफलता के लिए केवल किसी एक योग पर निर्भर रहना शास्त्रसम्मत नहीं है। उच्चस्तरीय सफलता के लिए लग्न का बली और शुभ प्रभाव में होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि लग्न बली हो, तो जातक की कुण्डली में विद्यमान् सामान्य शुभ ग्रहयोग भी जातक को अच्छी प्रगति देते हैं। इसके विपरीत लग्न के निर्बल होने पर जातक की कुण्डली में विद्यमान ग्रहयोग उच्चस्तरीय सफलता नहीं दे पाते। कालसर्प योग के शुभफलदायक होने की स्थिति में लग्न की बलवत्ता को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। कालसर्प योग जिन स्थितियों में विशेष शुभ फलदायक सिद्ध होता है, उसके लिए योग की स्थिति एवं कुण्डली में विद्यमान् योग कारक ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध को अवश्य देखना चाहिए।

जिन लोगों की कुण्डलियों में यह योग मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या और मीन राशिस्थ राहु से बनता है, उनके मन-मस्तिष्क और हृदय में गुह्य ज्ञान, अंतर्दृष्टि और प्रेरणाओं का अनूठा संगम होता है। जो उनके जीवन में उत्कर्ष के व्यापक अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे मनुष्यों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी होता है। वे समाज कल्याण हेतु तत्पर, व्यवहार-कुशल और त्याग करने की भावना रखते हैं। उनकी लयबद्ध और यर्थाथवादी सोच होती है। लोगों में अपने नाम के प्रचार से उनके अहं और मन को संतुष्टि मिलती है।

(1) उदाहरणार्थ- (१) लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की कुण्डली में कालसर्प योग के बावजूद वे दूरदर्शिता और दृढ़ व स्थिर मानसिकता के व्यक्तित्व से लब्ध एक महान् पुरूष थे। उनके जैसा गृहमंत्री आज तक नहीं हुआ। उनकी कुण्डली में सप्तम भाव में बुध आदित्य योग एवं दशम भाव में रूचक और शश योग हैं। लग्नेश बली है। जिनकी कालसर्प के द्वारा कोई हानि नहीं हुई।

अनेक उच्चस्तरीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डली में कालसर्प योग देखने में आया है। उदाहरणार्थ- सचिन तेंदुलकर, धीरू भाई अम्बानी, सुश्री लता-मंगेशकर, हिटलर, मोरारजी देसाई इत्यादि।

(2) उदाहरण कुण्डली- (२) संलग्न कुण्डली प्रसिद्ध उद्योगपति स्व० धीरू भाई अम्बानी की है, जिनके जन्मांग में समस्त ग्रह तृतीय के राहु तथा नवम के केतु के बीच हैं। कालसर्प योग का मुख तृतीय भाव में शनि की राशि तथा राहु के नक्षत्र में है। तृतीयेश शनि द्वितीय भाव में स्वगृही है। इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु बली तथा शुभ स्थिति में है एवं उसका सम्बन्ध धनभाव से है, जो कि आर्थिक जगत में शीर्ष सफलतादायक है, इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु धन उगलता रहा। तृतीय भाव में इसकी स्थिति स्वपराक्रम को बढ़ाने वाली तथा जुझारू प्रवृत्ति की द्योतक है। इस कालसर्पयोग का शुभ फल लग्न की बलवत्ता ने बहुत बढ़ा दिया। लग्नेश गुरू भाग्येश सूर्य के नक्षत्र में स्थित होकर दशम भावस्थ होना, लग्न में भाग्येश सूर्य और उसका मित्र चन्द्रमा स्थित है। लग्नेश और भाग्येश का नक्षत्र सम्बन्ध तथा भाग्येश की लग्न में स्थिति लग्न को बली और इन्हें प्रबल भाग्यवान बनाया। इस प्रकार श्री अम्बानी की कुण्डली में उच्च सफलतादायक ग्रह योग विद्यमान थें, जिन्हें कालसर्प योग ने और भी ऊँचाईयों तक पहुँचाया।

(3). उदाहरणार्थ- (३) संलगन जन्मांग प्रसिद्ध अभिनेता अनिल कपूर की है, जिन्होंने फिल्मी जगत में अच्छी पहचान बनाई। इनका जन्म कुम्भ लग्न के मिथुन नवांश में हुआ था। कर्कोटक नामक, अष्टमस्थ राहु तथा द्वितीयस्थ केतु के मध्य सभी ग्रह बैठे हैं। लग्नेश शनि एकादश भाव में तथा द्वितीयेश (वाणी का कारक) गुरु बुध के साथ है। कला का कारक शुक्र भाग्य भाव में स्वगृही है, जिसने कपूर जी को वास्तव में कलाकार बनाया। स्पष्ट है, अष्टम भाव में कन्या राशिस्थ राहु (नवांश में भाग्य स्थान) कोई अशुभ/अरिष्ट प्रभाव प्रदान नहीं कर रहा। यद्यपि अष्टमस्थ राहु उत्तम फल नहीं देता परन्तु शुभ-अशुभ परिणाम राशि, बल तथा अन्य ग्रहों को दृष्टि के अनुसार प्रदान करता है। अतः कर्कोटक नामक कालसर्प योग से भय में न आएँ, यदि अष्टमस्थ राहु शुभ होगा तो निश्चय ही लाभकारी परिणाम देगा।

वास्तव में राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दुःखों से व्याकुल होकर भी मनुष्य प्रभु की शक्तियों का स्मरण करने लगता है।

वल्लभ भाई पटेल
31 अक्तू., 1875 ई.
6-00 सायं, लगभग
गुजरात

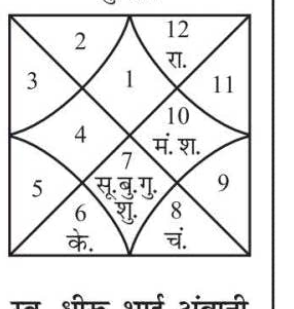

स्व. धीरू भाई अंबानी
28-12-1932
प्रातः 6-31 बजे
जन्मस्थान-गुजरात

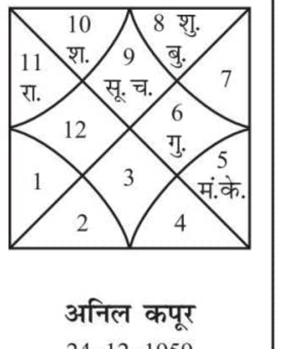

अनिल कपूर
24-12-1959
12-00 दोपहर
मुम्बई

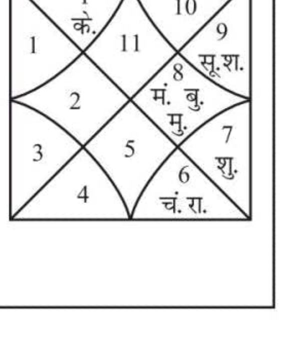

दशगात्र (दशदिन) पिण्दान विधिः-

रात्रौ दाहश्चेत्तर्हि न रात्रौ पिण्दानं भवति अग्रिम दिवसे एव पिण्डद्वयं देयम्। क्रमः-

१. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः शिरः पूरक प्रथमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

२. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः कर्णाक्षिनासापूरक द्वितीय पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

३. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः गलांसभुजवक्षः पूरक तृतीयपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

४. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः नाभिलिंगगुदपूरक चतुर्थः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

५. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः जानुजंघापादपूरक पञ्चमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

६. ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः सर्वमर्मपूरक षष्ठः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

७. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

८. ओं अद्य अमुक-गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः नखदन्तलोमादिपूरक अष्टमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

९. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः वीर्यपूरकः नवमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

१०. ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः पूणत्वतृप्तताक्षुद्विपर्ययपूरकपूरकः दशमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

संक्षिप्त दाह-संस्कार-विधि-

स्नान कय नव श्वेत वस्त्र धारण कय पूर्वमुँह वैसि हाथ में तेकुशा लय नव मॉटिक पात्र में जल भरि शव के दक्षिण मुँह कय-**ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरु क्षेत्रञ्च गंगाञ्च यमुनाञ्च सरिद्वराम्। कौशिकी चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा धनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकम् तथा पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा।** मनसँ जल में तिर्थक ध्यान करैत ओहि जल सँ शवके स्नान करा नूतन वस्त्रद्वय, यज्ञोपवीत, पुष्प, चन्दनादिसँ अलंकृत कय चितापर कुश ओछा पुरुष के अधोमुख (नीचामुँह) स्त्री कें उपर मुँह (चित्त) उत्तर शिरक सुताबी तकरा बाद अपसव्य कय दक्षिण मुँह भय वाम हाथ में सात बंधन सँ बान्हल उल्का ग्रहण करी-**ॐ देवाश्चाग्निमुखाः सर्वे कृतस्नपनं गतायुषमेनं दहन्तु।** मनमे ध्यान करैत-**ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकाञ्च गच्छतु।** इ दुनु मन्त्र पढि तीन वेर शव कें प्रदक्षिणा करैत जरैत उल्का सँ मुँह मुखाग्नि दी, तकरा बाद खढ़ आ काठादि सँ चित्ता जराबी आओर अन्त में एक कबूतरक बराबरि अवशेष बचाबी, तकरा बाद एक प्रादेशक बराबरि सात टा काठी लय जरैत चित्ता में पाछाँ मुँह, 'ॐ क्रव्यादय नमस्तुभ्यं' इ मंत्र पढि सात्तों काठी चित्तापर फेकि दी। तकरा बाद-'**ॐ अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरूषं पशुम्। वैवश्वतो न तृप्यति सुरारिरिव दुर्मतिः।**' ई मन्त्र पढी यमगाथा गवैत(यमक गुणगान) बच्चा सव के आगा बृद्ध लोकनि ओकर पाछाँ-पाछाँ पैर सँ पैर नहि सटय (ऐंरी-गोरी) एहि प्रकारें जलाश्यादि जायक स्नान करथि-**ॐ अद्य अमुक गोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम।** एहिं मन्त्र कें पढि तिलांजलि देवाक चाही। स्त्री लोकनि लेल-**ॐ अद्य अमुकगोत्रे अमुकप्रेते** ई पढवा क चाही। भीजले वस्त्र धारण कयंने कर्त्ता सहित सभ गोटे कर्त्ताक दुआरि पर जाय **ॐ लौहवद् दृढकायोस्त** ई मन्त्र सँ लौह स्पर्श करी तकरा बाद ॐ अश्मेव स्थिरो भूयासम् ई मन्त्र सँ पाथर स्पर्श तकर बाद **ॐ अग्निर्नः शर्म यच्छतु** अग्नि स्पर्श, तकर बाद जलक स्पर्श कय तीत नीमक पात (मिर्च) आदि खाय अपन व्यवहारक अनुसारें अपना घर जयवाक चाही।

अशौचविचार

भारतीय संस्कृति में शौचाशौच विचार महत्त्वपूर्ण है। जननाशौच एवं मरणाशौच भेद से अशौच (अशुद्धि) दो प्रकार का होता है। लोककल्याण हेतु इसे संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. गर्भस्रावजन्य अशौच-प्रथम से चतुर्थमास के भीतर गर्भ नाश को स्राव एवं पांचवे मास से छठे मास के भीतर गर्भनाश को गर्भपात तथा सातवें से दसवें मांस से गर्भ बाहर आये तो उसे प्रसव कहते हैं। **आचतुर्थोद्भवेत्स्रावः पातः पञ्चमषष्ठयोः। अत ऊर्ध्वं प्रसूतिः स्यादृशाहं सूतकं भवेत्।।** ''ब्रह्मपुराण'' के अनुसार सभी वर्णों में प्रथम से लेकर छठे मास के भीतर यदि गर्भनाश हो तो जितने महीने का गर्भ नष्ट होता है उतने दिनों के वाद ही माता की शुद्धि होती है। **''षड्मासाभ्यन्तरे यावद्गर्भस्रावो भवेद्यदि। तदा माससमैस्तासां दिवसैः शुद्धिरिष्यते।।''** सात मास से आगे गर्भपात या प्रसव में माता पिता के साथ साथ ''सपिण्ड'' (प्रथम से सात पीढी तक) को दस दिनों का, सोदक (आठ से चौदह पीढी तक) को तीन दिनों का, और सगोत्र (पन्द्रह से इक्कीस पीढी तक) को एक दिन का अशौच होता है। जननाशौच में दस दिनों तक माता का स्पर्श नहीं करना चाहिये। पिता आदि स्नानोपरान्त स्पर्शयोग हो जाते हैं। कुछ आचार्यों ने जननाशौच को जाति या वर्ण के अनुसार माना है। **जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति।।** किन्तु महर्षि प्रचेता के अनुसार सभी वर्णों की शुद्धि दस दिनों में ही होती है, जो लोक व्यवहार में अधिक प्रचलित है-**''सूतिका सर्ववर्णेषु दशरात्रेण शुद्ध्यति। ऋतौ च न पृथक् शौचं सर्ववर्णेष्वयं विधिः।।''** पुत्र जननाशौच में माता को बीस दिनों एवं कन्या जननाशौच में एक मास तक पाक क्रिया (भोजन बनाना), देव पूजन आदि कार्य नहीं करना चाहिये। मरा हुआ बालक पैदा हो तब भी पूर्ववत् ही अशौच समझना चाहिये।

२. बालकमरण में अशौचः-बालक की मृत्यु दन्तोत्पति काल तक होती है तो उसी क्षण, चौलकर्म (मुण्डन संस्कार) होने के बाद होती है तो तीन रात का अशौच होता है। यदि दाँत जमने के पूर्व ही चौलकर्म हो चुका हो तो उस बालक की मृत्यु पर तीन रात्रि का अशौच होता है एवं ब्रतवन्ध होने के बाद मृत्यु होने पर दस दिनों का अशौच होता है। चौलकर्म के बाद मृत्यु होने पर शास्त्रों में अग्नि संस्कार करने का विधान है। **''दन्तजातेऽनुजाते कृतचूडे व संस्थिते। अग्नि संस्करणे तेषां त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्।। आदन्त जन्मतः सद्यः आचूडान्नैशिकी स्मृताः। त्रिरात्रमाव्रतादेशा दश रात्रमतः परम्।।''** जन्म से दो वर्ष के भीतर बालक या कन्या की मृत्यु होने पर उसे जमीन में गाड़ देना चाहिये। इससे ऊपर की उम्र के सभी वर्णों के मृत बच्चों को दग्ध करने का विधान है-**ऊनं द्विवार्षिकं बालं भूमावेव निधापयेत्। न द्विवर्षस्य कर्तव्या बान्धवैरूदक क्रिया।।** दो वर्ष तक के मृत बच्चों की श्राद्धादिक क्रिया बन्धु वर्गों को नहीं करनी चाहिये। तीन वर्ष से छः वर्ष तक तीन दिनों का अशौच, इसमें अग्निसंस्कार, पिण्डोदक क्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सभी को दस दिनों का अशौच और श्राद्ध करना चाहिये।

३. कन्यामरणजन्य अशौचः-सभी वर्णों में जन्म से लेकर चूड़ाकरण की अवधि पर्यन्त कन्या की मृत्यु होने पर तत्कालिक अशौच होता है। वाग्दान पर्यन्त मृत्यु होने पर एक दिन का अशौच, वाग्दान हो जाने पर दोनों पक्षों में तीन दिनों का अशौच होता है। विवाह के पश्चात् जननाशौच हो या मरणाशौच पतिकुल में ही होगा। जैसा कि कृत्यसम्मुच्चय में कहा है। **आजन्मनस्तु चूडान्तं यत्र कन्या विपद्यते। सद्यः शौचं भवेत्तत्र सर्ववर्णेषु नित्यशः।। ततो वाग्दानपर्यन्त यावदेकाहमेव हि। अतः पर प्रबृद्धानां त्रिरात्रिमिति निश्चयः।** वाग्दाने च कृते तत्र चोभयतस्त्र्यहम्। कन्या यदि पति को छोड़कर स्वतंत्रता पूर्वक अन्य को पतिरूप में स्वीकार कर लेती है तब उसके मरने पर पूर्वपति को अशौच नहीं होता। **कामादक्षत योनिश्चेदन्यं गत्वा व्यवस्थिता।। कन्या तस्य सगोत्रा सा यं त्वाश्रितवती स्वयम्।।** विवाहिता पुत्री का पिता या पति के घर में मृत्यु होने पर माता पिता को तीन दिनों का एवं भाई बान्धवों (पितृव्यादिको) को एक दिन का अशौच होता है। भाई के घर में बहन एवं बहन के घर में भाई की मृत्यु होने पर परस्पर तीन दिनों का अशौच होता है।

४. जमातामरणजन्य अशौचः-जामाता के घर में सास और श्वसुर के मरण में जामाता को तीन दिनों का अशौच एवं घर में न रहने पर डेढ़ दिन का अशौच जमाता को होता है तथा जमाता के मरण में सास श्वसुर को भी तीन दिनों का अशौच होता है। श्यालक (साला) एवं श्यालिका (सरहज) की मृत्यु में बहनोई को एक दिन का अशौच होता है।

५. सगेसम्बन्धीजन्य अशौच-मौसी, बुआ, मामी, भाभी, ममेरा भाई, नानी, भगिनी आदि के मरण में (डेढ़ दिनों) का अशौच होता है। यदि इनकी अपने घर में मृत्यु हो तो तीन दिनों का अशौच होता है। पितामह, पितृव्य आदि के मरण में विवाहिता पुत्री को एक दिन का अशौच होता है। मातामह, मातामही, आचार्य एवं श्रोत्रियों के मरण में तीन दिनों का अशौच होता है। **''त्र्यहं मातामहाचार्यश्रोत्रियेषु शुनिर्चरः।''** शिल्पी, बढई, जुलहा, धोबी, चर्मकार, वैद्य, दासी, राजा, श्रोत्रिय (वेदपाठी) इनको अशौच नहीं होता। मरण के तत्क्षण ही शुद्धि हो जाती है। **शिल्पिनः कारूका वैद्या दासी दासश्च नापिताः। राजानः श्रोत्रियाश्चैव सद्यः शौचाः प्रकीर्तिताः।।**

६. अशौच में त्याज्यकर्मः-सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ) नित्यकर्म, स्मार्तकर्म, अशौच काल में नहीं करना चाहिये। **सन्ध्यां पञ्चमहायज्ञान् नैत्यिकस्मृति कर्म च। तन्मध्ये हापयेत्तेषां तर्पणम्। होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्। श्राद्धं वा पितृयज्ञः स्यात् पित्रोर्बलिरथापि वा।।**

७. सूतककाल निर्णयः-सूर्यादय के पूर्व जन्म या मरण हो तो पूर्वदिन और सूर्योदय के बाद जन्म मरण हो तो उसी दिन से सूतक मानना चाहिये। अग्निहोत्रियों को शवदाह के दिन से तथा सामान्य लोगों को मरणदिन से सूतक लगता है। **मरणादेव कर्तव्यः संयोगः तस्य नाग्निना।। दाहादूर्ध्वमशौचं स्याद्यस्य वैतानिकोविधिः।।**

८. अशौचपरिहारः-संकल्पितव्रत, विवाह, संकल्पितयज्ञ, श्राद्ध, हवन अर्चन तथा जपादि के आरंभ कर देने पर यदि किसी का जन्म या मरण हो तो तज्जन्य अशौच नहीं होता है। पूर्व कथित व्रतादि के प्रारंभ होने के पूर्व जन्म या मरण होने पर अशौच होता है। **व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमार्चनेजपे। आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्।। आरम्भो वरणं यज्ञे संकल्पो व्रतजापयोः। नान्दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया। निमन्त्रणं तु वा श्राद्धे प्रारंभः स्यादिति स्मृतिः।** इसी प्रकार यज्ञ में ब्राह्मणों का वरण हो जाने पर (व्रत और जप में संकल्प हो जाने पर) विवाहदि में नान्दीश्राद्ध हो जाने पर, श्राद्ध में पाक (भोजन) की प्रक्रिया शुरू हो जाने पर अथवा श्राद्ध ब्राह्मणों के निमंत्रण दे देने पर तत् तत् कार्यों का आरंभ मान लिया जाता है।

९. अशौचद्वयसंक्रमणविचारः-यदि जननाशौच में मरणाशौच हो या मरणाशौच में जननाशौच हो तो मरणाशौच के अन्तर्गत जननाशौच की निवृति हो जाती है। **मरणोत्पत्तियोगेतु गरीयो मरणं भवेत्। सूतिका सर्ववर्णेषु दशरात्रेण शुद्ध्यति।।** इस महर्षि वाक्य के अनुसार सभी वर्णों की शुद्धि दस दिनों में होती है। प्रथम सम्पूर्ण अशौच के मध्य में द्वितीय सम्पूर्ण अशौच होने पर प्रथम सम्पूर्ण अशौच का दो भाग करे। यदि प्रथम अशौच दिन से पाँचवे दिन तक द्वितीय अशौच हो तो प्रथम अशौच के साथ ही द्वितीय अशौच की शुद्धि हो जायेगी। यदि प्रथम अशौच के छठे दिन से नव दिन पर्यन्त द्वितीय अशौच हो तब द्वितीय अशौच कालान्त के साथ प्रथम अशौच की शुद्धि होती है। जैसा कि ब्रह्मपुराण में कहा गया है। **आद्यं भागद्वयं यावत् सूतकस्य तु सूतके। द्वितीये पतति त्वाद्यात्सूतकात शुद्धिरिष्यते।।** दसवें दिन (रात्रि में) द्वितीय अशौच प्राप्त हो तो दो दिनों की अशौच वृद्धि होती है। तत् पश्चात् प्रथम एवं द्वितीय अशौच क्षौरकर्म एवं श्राद्धादि कार्य साथ साथ सम्पादित करना चाहिये। रात्रि समाप्ति के बाद अर्थात् प्रातः काल द्वितीय अशौच में तीन दिनों की अशौच वृद्धि होती है। इसके बाद दोनों अशौच का एक साथ श्राद्धादि कार्य सम्पन्न करना चाहिये। **''यदि दशरात्राः सन्निपतेयुराद्यं दशरात्रामाशौचमानवादिवशादतउर्ध्व द्विरात्रेण व्युष्टायांत्रिरात्रेण इति''।**

१०. अस्थिसञ्चय का कालः-ब्रह्मपुराण के अनुसार शवदाह के पश्चात् ब्राह्मणों को चौथे दिन, क्षात्रियों को पाँचवे दिन, वैश्यों को सातवें दिन, शूद्रों को दशवें दिन देश काल के अनुसार अस्थि संचय करना चाहिये। दस दिनों के अशौच में सभी वर्णों को चौथे दिन, तीन दिन के अशौच में दूसरे दिन और सद्यः अशौच में उसी क्षण अस्थि संचय करना चाहिये। **चतुर्थे ब्राह्मणानान्तु पञ्चमेऽहनि भूभुजाम्। सप्तमे वैश्यजातीनां शूद्राणां दशमेऽहनि।। कर्तव्यं तु नरैः श्राद्धं देशकालविधानतः।।** श्राद्धविवेक के अनुसार स्नान के बाद हड्डियों पर पञ्चगव्य का छिड़काव कर सुवर्ण, मधु, घी और तिल मिलाकर मृतपिण्डक में रखकर दक्षिण दिशा की ओर देखते हुये ''ॐ नमोधर्मोय का उच्चारण करते हुये जल में प्रवेश कर प्रेत के स्वर्ग की कामना से ''वह मुझपर प्रसन्न हो ऐसा कहकर जल में हड्डियों को डाल दें। ऐसा करने से मृत प्राणी कल्पकल्पान्तर तक स्वर्ग में निवास करता है-**एवं कृते प्रेतपुरे स्थितस्य स्वर्गे गतिःस्यात्तुमहेन्द्रतुल्या।। गङ्गातोयेऽस्थि मज्जति। गङ्गायां मरणे यादृक् तादृक् फलमवाप्नुयात्।। यावदस्थि मनुष्याणा गङ्गातोयेषुतिष्ठति। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गेलोके महीयते।।**

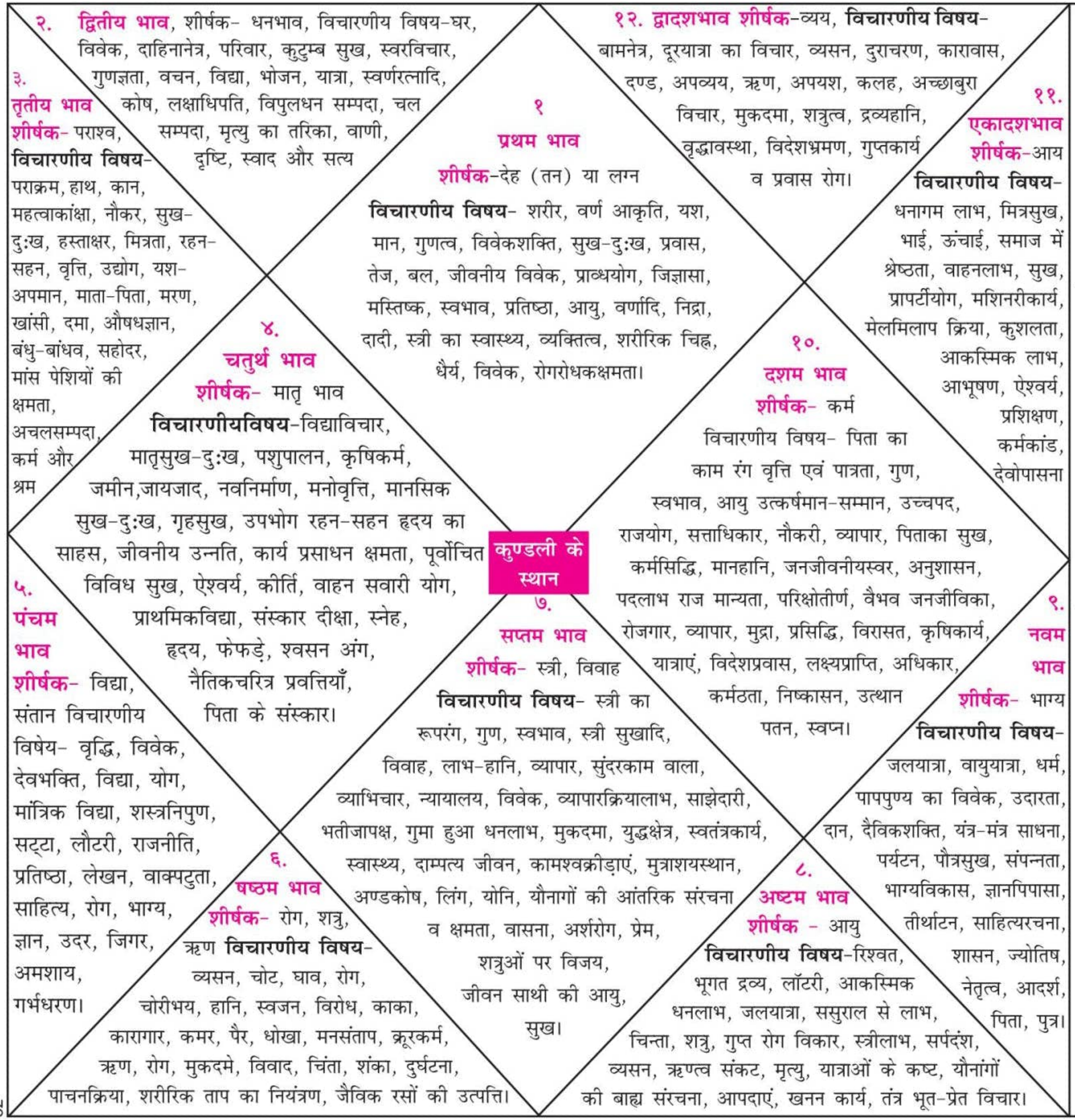

कुण्डली देखने की सामान्यविधि

१. जन्मकुण्डली के १, ४, ७, १० स्थान केन्द्र, २,५,८,११ को पणफर तथा ३,६,९,१२ भाव को आपोक्लिम कहते हैं।
२. १,५,९ को त्रिकोण, परन्तु विशेषकर ५,९ को त्रिकोण की, एवं ३,६,१०,११ भावों की उपचय संज्ञा होती है।
३. केन्द्र (१,४,७,१०) का स्वामी पापग्रह हो तो शुभ फल एवं शुभग्रह हो तो अशुभ फल देता है।
४. त्रिकोण (५,९) का स्वामी शुभ ग्रह हो या पापग्रह हो ये सदा शुभ फल ही देते हैं। किन्तु नवमेश पंचमेश से बली होता है। केन्द्र (१,४,७,१०) के चारो स्थान उत्तरोत्तर बली होते है अर्थात् लग्न से चतुर्थ, चतुर्थ से सप्तम, सप्तम से दशम बली होता है। अतः यदि पापग्रह लग्न और चतुर्थ का स्वामी हो तो चतुर्थेश लग्नेश की अपेक्षा अधिक शुभदायक होता है। इसी तरह दशमेश पापग्रह हो तो सबसे अधिक शुभफल दायक एवं यदि दशमेश शुभग्रह हो तो सबसे अधिक अशुभफल दायक होता है।
५. अष्टमेश सदा अनिष्टकारी होता है। यदि अष्टमेश सूर्य अथवा चन्द्रमा हो तो अनिष्टकर नहीं होते। अष्टमेश यदि लग्नेश हो तो अष्टमेश का दोष नहीं होता है। यह केवल मेष और तुला लग्न वाले जातक पर ही लागू होता है। जातक चन्द्रिका के अनुसार यदि अष्टमेश शुभग्रह के साथ हो तो शुभफल दायक होता है। ३,६,११ भावों के स्वामी पापफलद होते हैं। पापत्व में तीसरे से छठा, छठा से एकादश अधिक बली होती है।
६. ६,८,१२ भाव का स्वामी जिस भाव में होता है, उस भाव के फल को ह्रास होता है।

ग्रहों की दृष्टि विचार-

प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से सप्तम स्थान और सप्तम स्थानस्थ ग्रह को पूर्ण दृष्टि से देखता है। विशेषकर मंगल सप्तम के अतिरिक्त चतुर्थ-अष्टम को, इसी प्रकार शनि तृतीय-दशम, गुरु नवम-पंचम स्थान एवं स्थानगत ग्रह को देखता है।

मंगलदोष विचार

आजकल विवाह में भौम चिन्तन विशेष प्रचलित हो गया है। वर कन्या के जन्मकुण्डली या चन्द्रकुण्डली के लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम्, द्वादश भावों में अवस्थित मंगल परस्पर कष्टदायक होता है अर्थात् वर के कुण्डली में भौम दोष हो तो कन्या का नाश और कन्या के हो तो वर का नाश होता है। मुहूर्तसंग्रह के अनुसार-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
कन्या भर्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशकृत॥

ज्योतिष शास्त्र में मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु को पापग्रह माना गया है। ये सभी नैसर्गिक रूप से पापी होते हैं तथा अपनी दृष्टि एवं युति द्वारा किसी भी भाव के फल को नष्ट कर सकते है। इन पाँचों पापग्रहों के १,४,७,८,१२ भावों में रहने पर दाम्पत्य जीवन में अनेक बाधायें आती रहती हैं। किन्तु मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु उत्तरोतर कम अनिष्टकारी होते हैं अर्थात् मंगल सबसे अधिक एवं केतु कम अरिष्ट कारक होता है। इसी प्रकार सप्तम लग्न चतुर्थ, अष्टम एवं व्यय भाव (स्थान) में स्थित पापग्रहों से मंगली योग का प्रभाव भावों के अनुसार उत्तरोत्तर कम होता है अर्थात् सप्तम में सर्वाधिक एवं द्वादश में सबसे कम प्रभाव होता है। जन्म लग्न एवं चन्द्र राशि एवं शुक्र स्थित राशि से मंगल दोष का विचार होता है। लग्न एवं शुक्र से बनने वाले मंगल दोष की अपेक्षा चन्द्र से बनने वाला मंगल दोष (मंगली) प्रबल होता है। कुछ आचार्यो के अनुसार लग्न एवं चन्द्र से बनने वाले दोष की अपेक्षा शुक्र से बनने वाला मंगल दोष प्रबल होता है। उनका मानना है कि शुक्र रति एवं दाम्पत्य का कारक होता है अतः इससे बनने वाला मंगल दोष विशेष प्रभावकारी होता है।

भौम दोष परिहार

१. यदि वर के जन्म के समय सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु आदि कोई पापग्रह १,४,७,८,१२ भावगत हो तो कन्या का मंगली दोष समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार कन्या कुण्डली में होने पर वर का दोष मिट जाता है-

शनि भैमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥

२. यदि वर या कन्या के १,४,७,८,१२वें शनि हो तो दूसरे भौम दोष समाप्त हो जाता है। **जामित्रे च यदा शौरिलग्ने च हिबुकेऽथवा। अष्टम् द्वादशे वापि भौमदोषो न विद्यते॥**
३. बलान्वित गुरू, शुक्र लग्न या सप्तम में हो तो भौम दोष नहीं होता।
४. वक्री, नीचस्थ, अस्तगत अथवा शत्रुक्षेत्री गुरु, शुक्र उपर्युक्त स्थानों में होने पर भौम दोष नहीं होता। **यथा-सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमे। वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥**
५. जिस कन्या का भौम दोष हो उसका विवाह ऐसे वर से करे जिसकी जन्म कुण्डली में मंगल दोष का शमन करने वाले योग हों।
६. शुक्र से १२,७,८ वें पापग्रह हो तो वर कन्या का नाशक होता है। यथा-**शुक्रः खलान्तरगतः सखलः सिताद्वा पापाः व्ययास्तमृतिगा रमणीहराः स्युः।**
७. गुण की बाहुल्यता होने पर वर कन्या दोनों के भौमजन्यदोष समाप्त हो जाता है। **राशिमैत्रं यदा याति गुणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुणबाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥**
८. यदि मेषस्थ भौम लग्न में, वृश्चिकस्थ भौम चतुर्थ में, मकरस्थ भौम सातवें, कर्कस्थ भौम आठवें तथा धनुस्थ भौम बारहवें हो तो भौम दोष नहीं होता है। **अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे। द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥**
९. द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र, गुरु दृष्ट मंगल, केन्द्रस्थ राहु एवं राहु-मंगल युति भौम दोष का शामक होता है। किन्तु इसका विचार विशेष परिस्थितियों में ही करें। **न मंगली चन्द्रभृगुर्द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवः। न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न मंगली मंगलराहुयोगे॥**
१०. केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३,६,११ में पापग्रह हों तथा सप्तमेश स्वगृही हो तो मंगल दोष नहीं होता। **केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहा। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥**
११. कन्या की कुण्डली में विधवा योग हो तो विधुर योग वाले वर के साथ विवाह करने से उनका दाम्पत्य जीवन चिरस्थायी तथा सुखमय होता है।

ज्योतिष में राजयोग

राजयोग का अर्थ क्या है- ऐसे योग जो मनुष्य को जीवन में मान प्रतिष्ठा, यश एवं वैभव प्रदान करते हैं राजयोग धन की अपेक्षा मान, प्रतिष्ठा एवं यश में अधिक वृद्धि करते है। अच्छे राजयोग असीम लोकप्रियता देते हैं। राजयोग नहीं होने से व्यक्ति धनी होते हुए भी उनका उपभोग नहीं कर पाते हैं। और गुमनाम तथा अलोकप्रिय जीवन व्यतीत करते हैं। और गुमनाम तथा अलोकप्रिय जीवन व्यतीत करते हैं। राजयोग की अनुपस्थिति निर्धनता, विपन्नता, चित्रकला एवं सामाजिक अस्तित्वहीनता का कारण बन सकती है। नाना प्रकार की परेशानियां, संघर्ष उत्पन्न हो सकते हैं। कुण्डली में निम्नलिखित विशेष स्थिति में राजयोग का निर्माण होता है-

१. केन्द्र के स्वामी ग्रह का त्रिकोण के स्वामी ग्रह से संबंध राजयोग कारक हैं।
२. नवमेश दशम में हो तथा दशमेश नवम में हो।
३. नवमेश व दशमेश नवम या दशम में एकत्र हो।
४. नवम में नवमेश का दशम में दशमेश अथवा दोनों में एक ग्रह अपने स्थान में हो।
५. दो या तीन ग्रह अपने उच्च राशि, स्वराशि, मित्र राशि, मूलत्रिकोण राशि या नवमांश में शुभ स्थानों में हो।
६. बलवान एवं केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो।
७. लग्नेश व दशमेश का किसी शुभ स्थान में एकत्र होना अपना स्थान संबंध हो।
८. एकादशेश का लग्नेश, धनेश, चतुर्थेश या पंचमेश से संबंध हो।
९. चंद्रमा से दूसरे या बारहवें स्थानों में बलवान शुभ ग्रह हों।
१०. सूर्य से दूसरे स्थान में चंद्रमा को छोड़कर कोई शुभ ग्रह बलवान स्थिति में हो।
११. सूर्य से बारहवे स्थान में या दूसरे व बारहवें दोनों में बली शुभ ग्रह स्थित हो।
१२. लग्न या चंद्र में ६,७,८ भावें में बुध, गुरु, शुक्र तीनों हो तो प्रबल शुभ राजयोग होता है।
१३. चतुर्थेश व नवमेश एक दूसरे केन्द्र स्थानों में स्थित हो।
१४. पंच महापुरुष योग में से कोई एक योग हो।
१५. विशिष्ट योग होने पर राजयोग होता है।

सिमरियाधाम में महाकुम्भयोग

ताटङ्कमण्डलविभूषितगण्डभागां चूडामणिप्रभृतिमण्डनमण्डिताङ्गीम्।
कौशेयवस्त्रमणि-मौक्तिकहारयुक्तां ध्यायेद्विदेहतनयां शशिगौरवर्णाम्॥
ध्यायेत् कल्पतरोरध:प्रवितते सौवर्णचिन्तामणौ नानारत्नविराजितेऽत्र भवने सद्रत्नसिंहासने।
दूर्वानूतनपत्रसुन्दरतनुं चापं सबाणं महद्बिभ्राणं मुकुटादि-भूषणयुतं पीताम्बर राघवम्॥
(यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ५, श्लो. ७१-८०)

लक्ष्मी: कौस्तुभ-पारिजातक-सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा: धेनु: कामदुघा सुरेश्वरगजो रम्भादि-देवाङ्गना:।
अश्व: सप्तमुखो विषं हरिधनु: शङ्खोऽमृतं चाम्बुधे: रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥
(मधुस्राविणीमीमांसा. पृ. ११)

जिस धराधाम के गर्भ से अवतार लेकर महालक्ष्मी-जगज्जननी-जानकी ने ''माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:'' के अनुसार माता की तरह पृथ्वी संरक्षण-आदर-सम्मान का सन्देश सम्पूर्ण विश्व को दिया है, जहाँ से गौतम-याज्ञवल्क्य-मण्डन-वाचस्पति-कुमारिल आदि राजर्षि-महर्षि-ब्रह्मर्षियों ने प्रवृत्तिमूलक (कर्मप्रधान) वेदान्त, त्यागपूर्वक सांसारिक जीवन-यापन, योग के साथ भोग का समन्वय, यज्ञ-दान-तप-विद्याध्ययन की महत्ता एवम् आत्मतत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, शुक्लयजुर्वेद-शतपथब्राह्मण-बृहदारण्यकोपनिषद्-छान्दोग्योपनिषत्-
ईशावास्योपनिषत्-रामायण-श्रीमद्देवीभागवत-ब्रह्मसिद्धि-भामती-तन्त्रवार्तिक आदि ग्रन्थरत्नों के माध्यम से लोककल्याणार्थ ज्ञानराशि प्रसारित किया है, जहाँ से कात्यायनी-मैत्रेयी-गार्गी-भारती एवं विद्योत्तमा सदृशी महिला विदुषियों की विद्वत्ता का प्रकाश सर्वत्र फैल रहा है ऐसे सर्वत्र विख्यात परम पुण्यप्रद तीरभुक्ति (तिरहुत) क्षेत्र में ही देहमन्थन एवं शास्त्रमन्थन की भाँति क्षीरसागर का मन्थन कर देवताओं ने अमृत कुम्भ (अमृतकलश-अमृतघट) प्राप्त कर यहीं सिमरियाधाम में उत्तरवाहिनी गंगातट पर बैठकर अमृत पान किया था।

ऋग्वेद, शतपथब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार यह भूभाग जलमयप्रदेश (आर्द्रभूमि) के रूप में था। राजा विदेघ (विदेह), माथव (माधव) तथा उनके पुरोहित रहूगण गौतम ने वैश्वानर की उपासना के माध्यम से यज्ञ के द्वारा इस भूभाग को उर्वराशक्ति सम्पन्न तथा वासयोग्य बनाया। आधुनिक भूगर्भवैज्ञानिक, इतिहासकार एवं भूगोलशास्त्र के विशेषज्ञ भी इस विषय को स्वीकार करते हैं। श्रीमद्देवीभागवत में भी इस क्षेत्र की अवस्थिति, हिमालय के पार्श्व (बगल) तथा सागर के अतिसन्निकट में कही गई है। यथा-

राजाऽपि विमनां भूत्वा गौतवं प्रत्यपूजयत्। इयाज हिमवत्पार्श्वे सागरस्य विशेषत:॥ (स्क.६, अ.१४, श्लो.३५)

कुम्भपर्व मुख्यतया श्रीसागरमन्थनपूर्वक अमृतप्राप्ति कथा से सम्बद्ध है। क्षीरसागरमन्थन की कथा स्कन्दपुराण (१।९-१२), विष्णुपुराण (१।९), मत्स्यपुराण (अ.२४९-२५१) तथा पद्मपुराण (१।४) आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होती है। स्कन्दपुराण के माहेश्वरखण्ड में प्राप्त कथानुसार-देवगुरु बृहस्पति के अपमान तथा एक अन्य कथा के अनुसार शिव प्रदत्त पारिजातपुष्पमाल्य को दुर्वासा द्वारा उपहारस्वरूप देने के पश्चात् देवराज इन्द्र ने स्वयं धारण नहीं करके हाथी को पहना दिया तथा हाथी द्वारा उस माला को अपने शुण्ड से उतारकर पाँव से कुचल दिये जाने के फलस्वरूप दुर्वासा द्वारा दिये गये शाप के कारण देवराज इन्द्र त्रैलोक्य राजलक्ष्मीविहीन हो गये। इसी मध्य असुरों ने उक्त वृत्तान्त सुनकर स्वर्ग पर चढ़ाई कर दी तथा स्वर्ग की सारी सम्पत्ति लूट ली किन्तु अभिशप्तत्वात् बलि आदि असुरों के हाथ से वह सारी सम्पत्ति क्षीरसागर (क्षीरोदकी सागर सङ्गम) में गिर पड़ी। इस तरह देवता एवं दैत्य-दोनों श्रीविहीन हो जाने के कारण दु:खी रहने लगे।

दु:खनिवृत्ति के लिये उपायान्तर नहीं देखते हुए देवता एवम् असुरगण अपने-अपने गुरु बृहस्पति एवं शुक्राचार्य से परामर्श कर देवाधिदेव महादेव के नेतृत्व में नष्ट राजलक्ष्मी की पुन: प्राप्ति के लिए क्षीरसागरमन्थन का निश्चय किया।

उक्त कथा अधिकांश ग्रन्थों में मिलती है किन्तु क्षीरसागरमन्थन स्थान के विषय में ये सभी ग्रन्थ मौन हैं। स्थान का निरूपण आदिकाव्य-वाल्मीकि एवं रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग (आगम) ग्रन्थों में मिलता है। यथा वाल्मीकिरामायण में-

अथ रामो महाप्राज्ञो विश्वामित्रं महामुनिम्। प्रपच्छ प्राञ्जलिर्भूत्वा विशालामुत्तमां पुरीम्॥
श्रूयतां राम शक्रस्य कथां कथयत: श्रुताम्। अस्मिन् देशे हि यद्वृत्तं श्रृणु तत्त्वेन राघव॥
पूर्वं कृतयुगे राम दिते: पुत्रा महाबला:। अदितेश्च महाभागा वीर्यवन्त: सुधार्मिका:॥
ततस्तेषां नरव्याघ्र! बुद्धिरासीन् महात्मनाम्। अमरा विजराश्चैव कथं स्यामो निरामया:॥
ततो निश्चित्य मथनं योवत्रं कृत्वा तु वासुकिम्। मन्थानं मन्दरं कृत्वा ममन्थुरमितौजस:॥
उत्पपातागिनसङ्काशं हालाहलमहाविषम्। तेन दग्धं जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्॥
हालाहलं विषं घोरं सञ्जग्राहामृतोपमम्। देवान् विसृज्य देवेशो जगाम भगवान् हर:॥
उच्चै: श्रव्य हयश्रेष्ठो मणिरत्नं च कौस्तुभम्। उदतिष्ठन् नरश्रेष्ठ! तथैवामृतमुत्तमम्॥
(बा०का०, सर्ग ४५, श्लो. ११, १४-१६, १९, २०, २६, ३६)

अर्थात्, देवराज इन्द्र द्वारा सुनी हुई कथा को, धनुर्यज्ञावसर पर जनकपुर जाते हुए, गंगा पार करने के पश्चात् महामुनि विश्वामित्र भगवान श्रीराम को सुनाते हुए कहते हैं कि प्राचीनकाल में कृतयुग में इस तीरभुक्ति क्षेत्र में हिमालय पर्यन्त समुद्र का विस्तार था। उसी के उत्तर तट पर कैलाश से थोड़ी दूर पर गंगा-सागर का संगम तथा वहीं दक्षिण तट पर मन्दार पर्वत भी थी। इसी स्थान पर अजरत्व-अमरत्व एवम् आरोग्य लाभ के लिए देवता एवं राक्षसों ने मिलकर वासुकी को डोरी, कच्छप के पीठ पर स्थिर कर मन्दार पर्वत को मथनी बनाकर समुद्र मन्थन कर अमृत प्राप्त किया। यह स्थान सम्प्रति बिहार प्रान्त के बेगूसराय जिला मुख्यालय से नैर्ऋत्यकोण में अवस्थित शाल्मलीवन (सिमरियाधाम) सिद्ध होता है।

इसी तरह रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में भी कहा गया है-

आर्यावर्त्तस्य पूर्वस्यां समुद्रोऽस्ति सनातन:। हिमवद्गनपर्यन्तं विस्तारोऽभूत् कृते युगे॥
तस्योत्तरस्मिन् पुलिने गङ्गासागरसङ्गम:। ततोऽध्यनतिदूरे वै मम स्थानं सनातनम्॥
जाह्नव्या दक्षिणे भागे मन्दारकुसुमैर्युत:। यत्र वृक्षकृतच्छाये साक्षान्नारायण: स्वयम्॥
मन्दारस्य गिरे: पार्श्वे पुरा सिन्धुर्बभूव ह। जाह्नवी चापि तत्रैव सङ्गता सागरं प्रति॥
मुरारिचरणाज्जाता गच्छन्ती चोत्तरां दिशम्। जाह्नवी सा महापुण्या विशिष्टा शाल्मलीवने॥
तत्रैव कमठपृष्ठे दण्डं संस्थाप्य पर्वतम्। मन्दारं शेषनागञ्च रज्जुं कृत्वा सुरासुरा:॥
ममन्थु: सागरं सर्वे विष्णुं कृत्वा तु सन्निधौ। अमृतैकान्तचित्तस्तु ममन्थु: सागरं शुभे॥
ततोऽमृतघटं धृत्वा भासयन् तेजसा भुवम् आविर्बभूव सहसा देवि! धन्वन्तरि: पुमान्॥
त्रयोदश्यां कृष्णपक्षे तुलार्के च शुभे दिने। कार्तिके मासि सूर्यश्च तुलारुढो यदा भवेत्॥
चन्द्रोऽपि देवकार्यार्थमसिते मम वासरे। गुरावपि तुलारुढे पिबन्त्यमृतमक्षयम्॥
(श्लो.१४, १५, २०, २६, ४३, २७, २८ पूर्वार्द्ध, ३६, ४०, ८८ उत्तरार्द्ध:, ८९)

पूर्वापर सन्दर्भवशात् हरिहरक्षेत्र (गंगा-गंडकी संगमक्षेत्र) के समीप क्षीरसागर की अवस्थिति सिद्ध होती है। (द्रष्टव्य-श्रीमद्भगवत, ८।२-६) उक्त प्रमाणों के आधार पर कार्त्तिककृष्ण त्रयोदशी-चतुर्दशी को तुलागत सूर्य-चन्द्र-गुरुयोग पर्यन्त पूर्वोक्तस्थान सिमरियाधाम (शाल्मलीवन) में क्षीरसागरमन्थन, अमृतप्राप्ति तथा देवताओं द्वारा अमृतपान सिद्ध होता है।

वर्त्तमान समय में उक्त सिमरियाधाम के दक्षिण भूभाग के बौंसी क्षेत्र में अवस्थित मन्दार पर्वत, सन्थाल-परगना के दारुकवन में वासुकिनाग द्वारा स्थापित वासुकिनाथ महादेव, जनकपुर से ५० मील उत्तर ठोसे मेगजेन नामक स्थान पर "जूटा पोखरि" नाम से प्रसिद्ध पुष्करिणी के मध्य भाग में विषपानोत्तर नीलकण्ठ महादेव का विश्रामस्थल, अहिल्यास्थान से पश्चिम ब्रह्मपुर में गौतम कुण्ड तक प्रवाहित क्षीरोदकी (क्षिरोई) नदी, नेपाल का सागरमाथा जिला एवं दरभंगा से ईशान कोण में अवस्थित बलिराजगढ-उक्त

विषय में प्रमाणस्वरूप अद्यपि विद्यमान हैं। एतदर्थ मधुस्राविणीमीमांसा (डा. रामकिशोर झा विभाकर), द्वादश कुंभस्थल (श्रीधनाकर ठाकुर), रुद्रयामलोक्तामृतीकरण ाप्रयोग (अनुवादक डॉ० विद्येश्वर झा एवं डॉ० श्रवण कुमार चौधरी) सिमरिया कुंभदर्पण (डॉ. विजय कुमार, प्रो. अवधेश कुमार झा एवं प्रो. विजय कुमार झा) एवं वाराहपुराणाङ्क कल्याण (गीताप्रेस) भी देखा जा सकता है।

अमृत प्राप्ति के बाद अमृतपान के लिए देवताओं एवं दानवों में भयङ्क युद्ध छिड़ गया। इस क्रम में सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति ने "अमृत घट" की रक्षा करते हुए ११ वर्षों तक ११ स्थानों-कामाख्या, पुरी आदि में विश्राम क्रम में संरक्षित किया। अन्त में १२ वें वर्ष में उसी सिमरियाधाम में भगवान विष्णु के मोहिनीरूप के प्रभाव से देवताओं ने दीपावली के दिन अमृतपान किया। यथा-

अथ तस्य कृते राम महानासीत् कुलक्षयः। अदितेस्तु ततः पुत्रा दितिपुत्रानयोधयन्॥
एकतामगमन् सर्वे असुरा राक्षसैः सह। युद्धमासीन्महाघोरं वीर त्रैलोक्यमोहनम्॥
यदा क्षयं गतं सर्वं तदा विष्णुर्महाबलाः। अमृतं सोहरत्तूर्णं मायामास्थाय मोहिनीम्॥
ये गताभिमुखं विष्णुमक्षरं पुरुषोत्तमम्। सम्पिष्टास्ते तदा युद्धे विष्णुना प्रभविष्णुना॥ (वा.रा., बा.का., सर्ग ४५, श्लो, ४०-४३)

रुद्रयामलोक्तमृतीकरणप्रयोगग्रन्थ में भी कहा गया है-

एतस्मिन्नन्तरे काले विष्णुर्नारायणः स्वयम्। मोहिनीरूपामास्थाय ययौ दैत्यान् विमोहितान्॥
तां सम्मान तदा दैत्यराजो बलिरुवाच ह। सुधा त्वचा विभक्तव्या सर्वेषां सममेव च॥
अद्योपवासः कर्त्तव्यः सुधापानसमुत्सुकैः। रात्रौ जागरणं कृत्वा स्नातव्यं स्वर्णदी जले॥
अत्रैव जाह्नवीतीरे ह्युत्तरे तु महद्वनम्। शाल्मल्याः शोभते देवि गंगा चोत्तरवाहिनी॥
पुलिने तत्र पपुर्देवाः स्नात्वा सुविमले जले॥ (श्लो. ६६, ६४, ६७, ८७ एवं ८८ पूर्वार्द्ध)

धर्मसम्राट् परमहंस स्वामी करपात्रिमहोदय ने भी अपने कुम्भपर्वनिर्णय ग्रन्थ की पृष्ठसङ्ख्या २२ में "देवताओं के १२ दिनों में अथवा मनुष्यों के १२ वर्षों में १२ कुम्भ पर्व होते है" ऐसा उल्लेख किया है। यथा-

देवानां द्वादशाहोभिर्मार्त्यैर्द्वादशवत्सरैः। कुम्भपर्वाणि जायन्ते तथा द्वादशसङ्ख्यया॥

उक्त सफल द्वादश कुम्भयोग घटित द्वादश स्थान के विषय में रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन किया गया है-

देवाश्चागत्य मज्जन्ति तत्र मासं वसन्ति च। तस्मिन् स्नानेन दानेन पुण्यमक्षय्यमाप्नुयात्॥
सिंहे युतौ च रेवायां मिथुने पुरुषोत्तमे। मीनभे ब्रह्मपुत्रे च तव क्षेत्रे वरानने॥
धनूराशिस्थिते ब्रह्मसरसि कर्कटे कृष्णशासने। कन्यायां दक्षिणे सिन्धौ यत्राहं रामपूजितः॥
अथाप्यन्योऽपि योगोस्ति यत्र स्नानं सुधोपमम्। मेषराशिस्थिते भानौ कुम्भे चैव गुरौ स्थिते॥
गङ्गाद्वारे भवेद्योगो भुक्तिमुक्तिप्रदः शिवे। मेषे गुरौ तथा देवि! मकरस्थे दिवाकरे॥
त्रिवेण्यां जायते योगः सद्योऽमृतफलं लभेत्। शिप्रायां मेषगे सूर्ये सिंहस्थे च बृहस्पतौ॥
मासं यावन्नरः स्थित्वाऽमृतत्वं यान्ति दुर्लभम्॥ (श्लो. १२२-१२८)

अर्थात्, सूर्य, चन्द्र एवं गुरु के यथोक्तयोगवशात् सिंह राशि में नासिक (महाराष्ट्र) में, मिथुन राशि में जगन्नाथ (ओडिशा) में, मीन राशि में कामाख्या (आसाम) में, धनु राशि में गङ्गासागर (पश्चिमबंगाल) में, कुम्भराशि में कुम्भकोण (तमिलनाडु) में, तुला राशि में शाल्मलीवन अर्थात् सिमरियाधाम (बिहार) में, वृश्चिक राशि में कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में, कर्क राशि में द्वारका (गुजरात) में, कन्या राशि में रामेश्वरम (तमिलनाडु) में, मेषार्क-कुम्भराशिगत गुरु में हरिद्वार (उत्तराखंड) में, मकरार्क-मेषराशिगतगुरु में प्रयाग (उत्तरप्रदेश) में एवं मेषार्क-सिंहस्थ गुरु में उज्जैन (मध्यप्रदेश) में कुम्भयोग होता है। इन सभी तीर्थस्थल में अमृतघट के संयोग से जल अमृतमय कहा गया है। अतएव इन स्थानों में स्नान, दान, दर्शन, मार्जन, जप, पूजन, हवन, कीर्त्तन, तर्पण, पिण्डदानादि विविध धर्मानुष्ठान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है।

चन्द्रमा प्रतिमास, सूर्य प्रतिवर्ष तथा गुरु प्रतिद्वादशवर्ष में इन राशियों में आते हैं। अतएव सूर्य-चन्द्रयोगानुसार प्रतिवर्ष वैशाख (मेषार्क), कार्त्तिक (तुलार्क) एवं माघ (मकरार्क) मास में क्रमशः हरद्वार सिमरियाधाम एवं प्रयाग में कल्पवास का आयोजन होता है।

इसी तरह उक्त तीनों ग्रहों के योग से प्रति द्वादश वर्ष कुम्भयोग लगता है। जैसे-२०१३ ई० के मिथुनार्क में जगन्नाथ में, २०१४ ई० के कर्कार्क में द्वारका में, २०१५ ई० के सिंहार्क में नासिक मे, २०१६ ई० के मेषार्क-सिंहराशिगत गुरु में उज्जैन में, २०१६ ई० के कन्यार्क में रामेश्वरम में, २०१७ ई० के तुलार्क में सिमरियाधाम में, २०१८ ई० के वृश्चिकार्क में कुरुक्षेत्र में, २०१६ ई० के धन्वर्क में गङ्गासागर में, २०२१ ई० के मेषार्क-कुम्भराशिगत गुरु में हरिद्वार में, २०२१ ई० के कुम्भार्क में कुम्भकोण में, २०२२ ई० के मीनार्क में कामाख्या में तथा २०२३ ई० के मकरार्क-मेषगत गुरु में प्रयाग में, २०२४ ई० में हरिद्वार, उज्जैन, बद्रीनाथ में, २०२५ ई० जगकथपुरी में, २०२६ ई० द्वारिका में, २०२७ ई० नासिक में, २०२८ ई० रामेश्वरम् में महाकुम्भयोग सिद्ध होता है।

तीरभुक्ति या मिथिला क्षेत्र वैकुण्ड लोक के समान है। अतएव यहाँ वास करने से मनुष्य जीवनमुक्त होता है। यहाँ की यात्रा परम पुण्यप्रद कही गई है। काशी में एक वर्षवास से एवं प्रयाग तथा पुष्कर में तीन वर्षों तक वास से जो फल मिलता है वही फल मिथिला में एक दिन वास मात्र से प्राप्त होता है। अयोध्या के समान फल देने वाली मिथिलापुरी है। जैसे यामलसारोद्धार के मिथिलाखण्ड में कहा गया है-

वैकुण्ठमान् पुरस्कृत्य लोकाल्लँक्ष्मीरवातरत्। वैकुण्ठस्तु निजांशेन मिथिलाभूमिमाविशत्॥
अतो निवासभूमिस्ते सर्वस्थानाद्विशिष्यते। वैकुण्ठान्न कलान्यूना दृश्यते मिथिला मया॥ (पटल ३, श्लो. १५-१६)
अविमुक्ते मम क्षेत्रे संवत्सरनिवासतः। यत्फलं लभते मर्त्यो मिथिलायां दिने दिने॥
तीर्थराजे विधिक्षेत्रे वर्षत्रयनिवासतः। यत्फलं समवाप्नोति मिथिलायां दिनेन तत्॥
गयायां पिण्डदानेन पितृणां यत् फलं भवेत्। तत् फलं समवाप्नोति पिण्डदानान्न संशयः॥
कुरुक्षेत्रे तु यद्दानं ब्राह्मणेभ्यः प्रदीयते। तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं मिथिलायां धरेश्वर॥ (पटल ६, श्लो.२६-३४)

बृहद्विष्णुपुराण के मिथिला माहात्म्य में भी कहा गया है-

कथञ्चित्तत्र चेद्गास उद्धाराय भवेदलम्। तत्र यात्रा महापुण्या सर्वकामसमृद्धिदा। (अ. १,श्लो. १७)
मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः॥ (अ. २, श्लो. ३६)
मिथिलावासमासद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते॥ (अ.४, श्लो.१६)
महापुण्यातिरेकैश्च जनुर्लब्धा च भारते। मिथलाया निवासस्य नराः संयान्ति योग्यताम्॥ (अ. ६, श्लो.१३)

अतएव धर्मानुरागियों, साधु-सन्तों एवं विद्वज्जनों से करबद्ध निवेदन है कि उक्त विषय के आलोक में 'वृश्चिकके ब्रह्मसरसि' वचनानुसार इस वर्ष दि.१६.११.२०१८ से १६.१२.२०१८ ई० तक ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र, हरियाणा में अगहन (वृश्चिकार्क) में आयोज्यमान महाकुंभ में तथा दि.१५.०१.२०१६ से १३.०२.२०१६ तक प्रयाग अर्द्धकुम्भ में अवश्यमेव पधारने तथा इस संबंध में अपनी सम्मति प्रदान कर अनुगृहीत करने की कृपा करेंगे।

गंगादशहरा
२६.०५.२०२६

निवेदकः-
स्वामी रवीन्द्र जी ब्रह्मचारी

॥❋॥ नम्र निवेदनम् ॥❋॥

वपमिह पदविद्यां तर्कान्वीक्षिकी वा, चदि पछि विपये-वा-वर्तयामः स पन्थाः ।
उदयति दिशि यस्यां भानुमान् सेव पूर्वा न हि तरणि अदिते दिक पराचीन वृत्तिः। (उदयनाचार्य)

जगन्जननी जगदंबा जानकी की जन्म भूमि जनक याज्ञवल्क्य की तपो भूमि गौतम बावस्पति उदयन पक्षधर की जान भूमि मिथिलांचल के दक्षिण द्वारस्थ उत्तर वाहिणी माँ गंगा के पावन पुलिन पर अवस्थित सर्वमंगला अध्यात्म यांग विद्यापीठ अपने परम पूज्य गुरुदेव करपात्री अग्निहोत्री परमहंस संत शिरोमणि स्वामी चिदात्मन जी महाराज के विमल आदर्शोन्मुख पद चिहनों पर चलते हुए अध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रिय विचारधारा से समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को जोड़ने का प्रयास प्रायः ०५ दशकों से अनवरत करता आ रहा है। आग्यात्मिक धरातल पर मानवीय मूल्य के मौलिक उद्देश्यों को वैश्विक क्षितिज पर रेखांकित करना ही हमारा परम लक्ष्य है। गुरू कृपा से प्राप्त चारित्रिक शुचिता वैचारिक पारदर्शिता एवं नैतिक दृढ़ता के बल पर हम निरंतर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है। आदिकुम्मस्थली सिमरियाधाम अति प्राचीन काल से सद्रघ्शास्त्र विश्रुत द्वादश कुंभस्थलियों में आदि रूप स्थान निरूपित करते हुए न केवल मिथिला मगच एवं अंग प्रदेश की पुण्य संगम स्थली है अपितु सम्पूर्ण भारत वर्ष में आदि कुम्भ स्थली के रूप में सुप्रतिष्ठित रहा है। राजा जनक काल से ही यहां याजिक अनुष्ठान् धार्मिक कृत्य, बौद्धिक प्रवचन, संगोष्ठी पारंपरिक रूप से प्रचलित थे। ऐतिहासिक काल खंड के काले अध्याय में विधर्मी आंक्रांताओं के द्वारा न केवल मठ मंदिरों को नष्ट किया गया अपितु धर्म और आस्था के सांस्कृतिक धरोहर कुम्भ पर्व को भी बंद करवा दिया गया। धर्मप्राण मिथिला भूमि जो कुम्भ प्रथा बन्द होने पर भी कार्तिक मास मेला के रूप में प्रतिवर्ष इस स्थान की एतिहासिक विरासत को अक्षुण रखा। परम् पृथ्य गुरूदेव जो आदि कुम्भ स्थली के साथ लुप्त प्रायः ०७ अन्य कुम्भ स्थलियों को पूर्ण जागृत करने हेतु प्रथम प्रेरक युग पुरुष के रूप में जन जागरण कर अपने प्राचीन धरोहर को पुनः उत्थापित करने हेतु कार्यारंभ किए। मिथिला शरीर शास्त्र और समुद्र मंथन की स्थली द्वादम नामों एवं पांच कारणों से विश्व विख्यात है। आज भी यहाँ ऐसे रल हैं जिन्होंने राजनितिक प्रतिष्ठा को कभी भी महत्व नहीं दिया, अधिकार की भी लिप्या नहीं को, धन को कभी भी अपने जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया। इनके जीवन धर्म हैं, त्याग, संयम और मर्यादा। जिनपर न केवल मिथिला वासी अपितु सम्पूर्ण देशवासी गर्व करते हैं। जिन्होंने शास्त्री आधार विधि से कुम्म पर्व प्रमाणित कर भारतवासियों का सर ऊंचा किया है। इनमें विद्वत् समाज, विशिष्ट संत समाज, प्रशासक वर्ग, पत्रकार बंधुओं, राजनेताओं, कानूनविदों बिहार सरकार के साथ विश्व हिन्दू परिषद् राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ, भारतीय विकास परिषद एवं वनवासी कल्याण आश्रम, स्थापतशासी संस्था, व्यवसायीवर्ग एवं समाजिक सांस्कृतिक संस्था के साथ-साथ कुम्भ सेवा समिति की समन्वयात्मक भूमिका सराहनीय है। मूलतः ज्योतिषीय गणना के आधार पर शास्त्रीय सिद्धांत के आलोक में प्रत्येक राशि पर वर्ष में एक बार सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति का योग होता है और इसी पूर्ण योग से तीर्थ स्थली विशेष में महाकुंभ पर्व सिद्ध होता है। "इष्टव्य रुद्रायामल तंत्र।" आदि कुंभ स्थली सिमरियाधाम में वेदांग ज्योतिष शास्त्र एवं पौराणिक मान्यताओं से संदर्भित कुंभ महापर्व शारव मंथन का तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजन किया गया। इसमें मिथिला विद्वत्परिषद के माननीय अध्यक्ष पूर्व कुलपति एवं अद्वितीय दैवज्ञ पडित प्रवर डॉ. रामचंद्र झा जी के साथ मिथिला के विशिष्ट विद्वान एवं काशी विद्वत्परिषद के माननीय अध्यक्ष वयोवृद्ध प्रोफेसर राम पत्लशुक्ल, प्रोफेसर शिवजी उपाध्याय, प्रोफेसर राम नारायण द्विवेदी के साथ काशी के अन्य विद्वत विभूति साथ ही हिन्दू विश्वविद्यालय बाराणसी, सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली, गुजरात, पुणे, जगन्नाथपुरी, कोलकाता, असम, काठमांडु, संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा, पटना विवि,, भागलपुर, दुमका विवि, ऐसे सुप्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान के लब्धप्रतिष्ठ विषय विशेषज्ञ, चारों धाम के तीर्थ पुरोहितों, प्रयाग बाल सभा, अखाड़ा परिषद के सदस्य, विभिन्न धार्मिक सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । विचारोपरांत २०१७-१८ वर्षीय विवि. पञ्चाङ्ग का लोकार्पण करते हुए महामहिम राज्यपाल गोवा एवं अन्य विशिष्ट विद्वत् विभूतियों ने आदि कुम्मस्थली, सिमरियाधाम, महाकुम्भ पर्व स्नान तिथि निश्चित किया। इसी प्रकार द्वादश कुम्भ योग के अंतर्गत जिन पुण्य तीर्थों में पुनीत मुहूर्त प्राप्त हुए वहां के धर्म प्राण जन समुदाय, तीर्थ पुरोहितों एवं शासन, प्रशासन के सौजन्य से सर्वमंगला परिवार अपनी शाखाओं के साथ श्रद्धा समन्वित अलभ्य युग का अध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। परम् पूज्य गुरुदेव स्वामी प्रायः अपने आशिर्वचनों में वेद एवं बेदांग ज्योतिष की अलौकिकता का अमर संदेश मानवता के रक्षा एवं विश्व शांति के सूत्र रूप में उद्धरित करते हैं- शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुकां निरुक्तं च कल्पः करी। या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका छन्दर्बुधैः पाद पद्घ्म द्वयम् ॥

अथार्त, (बेद भगवान का मुख व्याकरण नेत्रद्वय ज्योतिष शास्त्र, निरूक्त अवणेन्द्रिय और दोनों हाथ कल्पशास्त्र, शिक्षा शास्त्र, नासिका तथा छन्द शास्त्र दोनों पांव हैं।) इसी सूत्र का आश्रय ग्रहण करते हुए सर्व मंगला अध्यात्म् योग विघ्या पीठ एवं स्वामी चिदात्मन चंद बिज्ञान अनुसंधान संस्थान सर्वमंगला विद्वत्परिषद एवं सर्वमंगला विद्वत्परिवार से विमर्शीपरांत श्रवण मास से प प्रकाशन हेतु निर्णय लिया है। धर्म और संस्कृति के समुन्नयन के साथ राष्ट्रिय विकास एवं वैश्विक शांति की कामना से प्रकाशित।

कोशिकौन्तु सभारभ्य गडकीमभिगम्थ वै । योजनानि चतुर्विशद्वयायामः परिकीर्तितः ॥
गङ्गाप्रवाहमारभ्य यावद्वैमवतं वनम् विस्तारः षेडश प्रोक्तो देशस्य कुलनंदन ॥
मिथिला नाम नागरी तत्रास्ते लोकविश्रुता।। (बृहदविष्णुपुराण, मिथिलामात्म्य, अध्याय १४, श्लोक ४२-४४)
जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या, यत्रास्ते सात्रिधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिङ्गम्।
मीमांसान्यावेदाध्ययनपटुतरैः पण्डितैर्मण्डिता या, भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती स्वऽस्ति मे तीरभुक्तिः॥
(श्रीशंकर मिश्र, (१४४०-१५३० ई.) कृत, दृष्टव्य विद्याकरसहस्रक, म.म उमेश मिश्र सम्पादित १६४२ ई. प्रयागविश्वविद्यालय प्रकाशित)
गंङ्गा वहथि जनिक दक्षिणदिशी पूर्व कौशिकीधारा। पश्चिम वहथि गण्डकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा।
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा बागमती कृतसारा। मध्य बथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा॥
(कवीश्व चन्दा झा)।

उपयुक्त प्रमाणों के आधार पर कोशी से गण्डकी (हरिहरक्षेत्रस्थ शालग्रामी या नारायणी) तक, पूर्व से पश्चिम तक २४ गोजन (९६ कोश) लम्बा एवं गङ्गाप्रवाह से हिमालय वन (दक्षिण से उत्तर) तक १६ यांजन (६४ कोश) चौड़ा मिथिला अथवा तीरभुक्ति कहा गया है। इस आधार पर वर्तमान समय में उत्तर से दक्षिण तक क्रमशः नेपाल के तराई क्षेत्र (दक्षिणीभाग) से मुद्देर तक तथा पश्चिम से पूर्व तक क्रमशः चम्पारण-वैशाली से पूर्णियाँ-भागलपुर तक का क्षेत्र तिरहुत अथवा मिथिलाक्षेत्र है। १८१५-१७ ई. में सुगौली सन्धि के समय विविध राजनीतिक स्थितिवश उक्त तराई क्षेत्र नेपाल के अधीन हो गया। किन्तु आचार-विचार, सभ्यता-संस्कृति की दृष्टि से आज भी सर्वथा साम्य है। वेद, शतपथब्राहाण, उपनिषद्, रामायण, भागवत, गीता, पुराण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों एवं विविध भाषा के मानक (ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि) ग्रन्थों में मिथिला का महत्त्वपूर्ण वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल से ही यह नगरी विद्या, उपासना एवम् आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में विश्वविख्यात रही है। यहाँ देवरात, मिथि, निमि, जनक, विशाल, गार्गी, मैत्रेयी, याज्ञवल्क्य, अष्टावक्र, वाल्मीकि, गौतम, कपिल, कणाद, मण्डन-भारती, अयाची, वाचस्पति, उदयन, कालिदास, विद्योत्तमा, श्रीधर, रामाप्त, वीस्वर, विद्यापत, महात्मा बुद्ध, भगवान् महावीर, महामहोपाध्याय रुथर, तान्त्रिकशिरोमणि मदन उपाध्याय, भक्तशिरोमणि बाबासाहेवराम, सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोस्वामी परमहंस, नव्यन्यायप्रवर्तक गङ्गशोपाध्याय, महामहोपाध्याय, गोकुलनाथ, महार्घ्य मुमुदन ओझा, देवीकान्त ठाकुर, गोविन्द ठाकुर, महामहोपाध्याय परमेश्वर इव, दैवज्ञरल गेनानाल चौधरी, महानहोपाध्याय जयदेव मिश्र, महामहोपाध्याय डॉ. सर गङ्गानाथ झा, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र बच्चा झा, महामहोपाध्याय बालकृष्ण मिश्र, महामहोपाध्याय हर्षनाथ झा, आचार्य जानकीवल्लभशास्त्री, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली, रामवृक्ष बेनीपुरी, भिखारी ठाकुर, फणीश्वरनाथ रेणु, वैद्यनाथ मित्र यात्री नागार्जुन, सुरेन्द्र झा सुमन आदि अनेक मनीषिगण हो चुके हैं जिनके कार्यकालापालोक से समस्त विश्व आलोकित हो रहा है। **सिमरियाधाम में क्षीरसामरमन्थन** से अमृतप्राप्ति (रुद्रयामलोक्ता मुतीकरणप्रयोग, ब्लोक ११-४२, १२३-१२८, वाल्मीकिरामायण, कालखण्ड सर्ग ४५, यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ४, श्लोक ४-३) वैकुण्ठांशनिर्मित मिथिला (तत्रैव, पटल ३, ब्लोक १५-१६) एवं मिथिलायात्रा महापुण्यप्रद तथा वास से मोक्ष (बृहद्विष्णुपुराण-मिथिलामाहात्म्य, अध्याय १३, ब्लोक १७, अध्याय १६ श्लोक १३८) सुप्रसिद्ध है।

सीतामढ़ी में दुर्भिक्षनिवारणार्थ सम्पन्न हलेष्टियज्ञ के पक्षात् सीरध्वज जनक द्वारा स्वर्णहलप्रवाहाबसर पर पुण्यारण्य (पुनौराधाम) में भूगर्भ से **आदिशक्ति जगज्जननी जानकी** का प्रादुर्भाव (यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल २१, ग्लोक ३६, वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड सर्ग ६६. ग्लोक १३-१४), **याज्ञवल्क्य** का ब्रह्मविद्योपदेश (श्रीमागवत, स्कन्ध १२. अध्याय ०६, ग्लोक ६१-७३ एवं बृहदारण्यकोपनिषद्), बलराम-श्रीकृष्ण की मिथिलायात्रा (हरिवंशपर्व, अध्याय ३९ लोक २३, २८, श्रीम गवत, स्कन्ध १०, अध्याय ८६, विष्णुपुराण, ०३१०५), कर्म की प्रधानता निरूपणावसर पर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **"कर्मणैव हि श्संसिद्धिमास्थिता जनकादयः"** (श्रीम गवदीता, अध्याय ०३, ब्लोक २०) जनकादि का उदाहरण के रूप में उल्लेख तथा पिता (श्रीव्यास) जी की आज्ञा से शुकदेवजी द्वारा मिथिला के अधिपति जनक से (श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण) स्कन्ध ०१, अध्याय (१४-१९) गार्हस्थ्य धर्मोपदेश एवम् आत्मज्ञान की प्राप्ति सर्वाविदित ही है। अतएव कहा गया है-

''नमस्ते मिथिले पुण्ये सीतारामपदाङ्कित्ते।''

हिमालय के सानिध्य एवं गङ्गादि, विविध नदिघ्यों के प्रवाह दोन के कारण यहाँ का वातावरण शुद्ध एवं भूमि कर्वराशक्ति सम्मत्र है। अतएव सम्पूर्ण क्षेत्र जीवनोपयोगी कन्द, मूल, बनस्पति, लता, गुल्म, फूल, कल,औषधि तथा शरद, हेमन्त एवं वैश्मिक धान्यादि विविध वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। विशेषतः हाजीपुर का केला, मुजफ्फरपुर का शाही लोथी, समस्तीपुर का विविध कृषि उत्पादन, चम्पारण का धान, पागलपुर का कतरनी धान का चूड़ा, दरभङ्गा का मालदह एवं सफल मिथिलाइल का पान, माँछ तथा मखान विख्यात है। यहाँ के लेग शालीन कर्मठता, सौम्यस्वरूप, आचार-विचार, प्रतिभा, मेधाविता एवम् उच्चविचार के लिए प्रसिद्ध है।यहाँ के मनोरंजन, हास्य, गीत, सङ्गीत, नृत्य, रामलीला, भजन, सङ्कीर्तन, कथा-प्रवचन, लोरिक, दीनाभदी, विहुला, राजा सल्हेश, सामाचकेवा, कठपुतली एवं जट-जटिन आदि सुप्रसिद्ध है। पाहा

जट-जटिन आदि सुप्रसिद्ध है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र शक्तिपीठको नाम से विख्यात है। आदिशक्ति माही के योगाग्निदग्ध शरीर के विभित्रवयवात से जब इस धराधाम पर ५१ शक्तिपीठ बन गए तो जहाँ उनका तीन बार (आङ्किरस विप्र के बंदवती कन्या के रूप में (बामलसारीद्धार उन्क्तमिथिलामाहात्म्य चतुर्थपटल, स्लोक ०४-११), शाल्मलीवन-सिमरियाधाम में श्रीरसागर के तमहालक्ष्मी के रूप में रुद्रयामलीलामृती करणाप्रयोगग्रस्योक्त सिमरियाग्भर्पण, ब्लोक ३२) तथा सीरध्वज जनक के यहाँ धरणीग से आविर्भूतानकी के रूप में (यामल सारोद्धार तन्त्रोक्त मिथिलामाहात्य, प्रथमपटल, ब्लोक ३६) साक्षात् प्राकट्य हो उस धाम के सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता ही क्या है? यहाँ हरिहरनाथ, सोमेश्वरनाथ, गरीबनाथ, उग्रनाथ (उगना), कपिलेश्वर सिंहंबर, कुशेखर, कल्याधा अवर लेकर दिदेवर शीरेकन, त्रिपुरसुन्दरी, चण्डी, कात्यायनी, छिन्नमस्तिका रमेधयामा, काली, कङ्काली, दुर्गा, उग्रतारा जयमङ्गला, बगला, वनदुर्गा, भुवनेधरी, राजराजेश्वरी, अहत्यागौतमस्थान, गिरिजास्थान (फतहर), जानकीस्थान, जनकपुरधाम आदि शिवशक्तिक्षेत्र सतत् प्रेरणास्रोतस्त्वेन विद्यमान है। यह विश्व में एकमात्र क्षेत्र है जिसमें वैवाहिक सम्बन्ध हेतु अधिकारमूलक जानकारी के लिए पीप्रबन्ध को व्यवस्था है। यहाँ को मिथिलाचित्रकला सर्वत्र विख्यात है। यह भूमि (चम्पारण) महात्मा गाँधी एवं (मुजफ्फरपुर) जयप्रकाशनारायण की कर्मभूमि रही है। इस तरह हर क्षेत्र में इसका अपना महत्त्वपूर्ण अवदान अतिप्राचीनकाल से ही रहा है। उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में अन्य विधाओं के साथ-साथ पति के क्षेत्र में भी तोरभुक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ अनेक ग्रन्धकार, टीकाकार एवं सम्पादक हुए हैं जिनकी कृति न्यौतिष जगत् में सदैव शिरोमणि की तरह समादृत है। इनमें सिद्धान्तशेखरकार श्रीपति एवं तष्ट्टीकाकार बबुआजी (श्रीकृष्ण) मिश्र, कृत्पचिन्तामणिकार चण्डे

बर, सिद्धान्तसुधाकार महामहोपाध्याय परमानन्द ठाकुर, ग्रहणमालाकार महामहोपाध्याय हेमाङ्गद ठाकुर, रत्लशतककरा जीवेश्वर दैवत, अतदर्पणकार महामहोपाध्याय माधव सिद्धान्तसेतु रचयिता एवं सिद्धान्तशिरोमणि प्रभाटीकाकार, मुरलीधरताकुर, सिद्धान्ततत्या विवेकटीकाकार गङ्गाधरमिश्र, गोलप्रकाशकार नीलाम्बर, भावकुघ्तुहलादि ग्रन्धकार जीवनाथ देवज्ञ, व्यवहारसत्कार भानुनाथ चापीय त्रिकोणमिति-गोलीयरेखागणितटीकाकार चन्द्रशेखर शा. सामीपत्रिकोणमिति टीकाकार महावीर पाण्डेय, ज्योतिषरत्नाकरकार देवकीकदर सिंह मोखतार, आर्यभटीयग्रन्धटीकाकार बलदेव मिश्र, माकन्दोपपत्तिकार गोकुलनाथ शताधिकान्ताविद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा, सिद्धान्ततत्वा विर्वकादिग्रन्ध सम्पादक महामहोपाध्याय मुरलीधर इस बहुमतक-सूर्यसिद्धान्तादिटोकार सीतराम झा, बृहत्संहितादिग्रन्थटीकाकार अच्युतानन्द झा, जातकक्रोड पन्धकारी कृष्णदत्त झा, टिप्पणीरिकरणकार बुद्धिनाय झा. सूर्यसिद्धान्त टीकाकार कपिलेश्वरचौधरी, कुण्डलीदर्पणारिग्रन्थकार अनुप मित्र एवं बीजगणितादिटीकाकार देवचान्द झा, आदि प्रमुख है। वर्तमान समय में भी उच्च कोटि के ग्रन्धकार, टीकाकार, सम्पादक अध्यापक एवं चिन्तक ज्योतिविंद यहाँ है।

सभी प्रकार के शास्त्रीय एवं व्यवहारिक कार्यों के लिये शुभमुहुर्त का ज्ञान अपेक्षित होता है। शुभमुहूर्त की जानकारी ज्यौतिषशास्त्र की गणवानुसार निर्मित पक्षाङ्क से ही होती है। तदनुसार विवाहाद सकल शास्त्रीय एवं वास्तुप्रभूति व्यावहारिक शुभकार्य सम्पत्र किये जाते हैं। तीरभुक्ति क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही पक्षाङ्ग निर्माण की परम्परा है मुद्रण व्यवस्था से पूर्व हस्तलिखित पक्षाङ्ग का प्रचलन था। तत्पश्चात् शनैः रानै मुद्रित काङ्ग का प्रचलन हुआ। मुद्रित पक्षाङ्गकारों में गोवर्द्धन दुमनी बालकृष्ण रूपनारायण लाकनाथ कण्टीर सहीधर उमानाथ उमाकाध-झारिखण्डी-महेन्द्रनारायण विद्यानाथ जगदीश अम्बिकानाथजगत्र-जमनारायण हरिनन्दनवासुदेव लक्ष्मीनारायण लषणलाल अभिराम रम निन्द-पुलकित-यशस्पति-कपिलेश्वर परमानन्द बलदेव ब्रजकिशोर-अध्याय-लक्ष्मीकान्त आदि ज्योतिर्विदों के नाम प्रमुख है।

सर्वमंगला पञ्चाङ्ग का पुष्प लोक सेवा हेतु सादर प्रस्तुत है। अन्य व्रतोपवासादि के साथ देनिकचर्या मंत्रारि दुर्लभ किंचन उपयोगी मंत्रों का लघुरूप परिराष्ट पृष्ठों पर अंकित हैं। सर्वान्ततः सुधी-माधक-सारस्वतः दैवज्ञों, शास्त्र चिंतकों, तीर्थ पुरोहितों, पंडितों से सादर निवेदन है कि इस पञ्चाङ्ग में टंकणजन्य त्रुटि अथवा विषयगत विभेद के संदर्भ में अपना स्पष्ट मंतव्य प्रदान करने की कृपा करेंगे। आपके द्वारा दी गयी सम्यक् सम्मति हमारे लिए उपहार के रूप में स्वीकार होगा। आपकी सम्पति ही हमारी धरोहर है।

पश्चाङ्गमस्तु जगतीतल पुण्यहेतोः, सिद्धाश्रमस्य महिमान्वित सर्वमंगला।
गंगा तरंग मिथिला महिमान्विता या, कुम्भ प्रभाव जननी किल शाल्मली तटा॥
जय माँ

गंगादशहरा
२६.०६.२०२६

नवेदकः
डॉ. घनश्याम झा
संपादक

परम पूज्य स्वामीजी के वचनामृत

१. ॐ स्वस्तिश्च नमः स्वाहा स्वधा त्वं दक्षिणा तथा। निरूपिताश्चतुर्वेदे षट् प्रशस्ताश्च कर्मिणाम्।।

ॐ, नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा एवं दक्षिणा चारों वेदों द्वारा इन छः स्वरूपों का निरूपण किया गया है।

२. पाठो होमश्चातिथीनां सेवनं देव-पूजनम्। पितृ श्राद्धं कुलाचारं तत्वज्ञानं सदाचरेत्।।

सनातन धर्मावलम्बियों को नित्य पाठ, हवन, अतिथियों की सेवा, देव-पूजन, पितृ-श्राद्ध, कुलाचार और तत्वज्ञान में संलग्न रहना चाहिए। जिससे वास्तविक सुख-शान्ति प्राप्त होती है।

३. सदाचारतः श्रीमान् सदायज्ञ परायणः। स्थापयेत् पञ्चतत्त्वानि गेहमध्ये प्रयत्नतः।।

४. एकाक्षरे तथा कूटे माला मुद्रादि वैदिके। गृहस्थाश्रमासाद्य तत्वज्ञानेषु योगतः।।

५. कुलपूजां विना देवि तत्वज्ञानं न जायते। तत्वज्ञानं विना देवि निर्वाणं नैव जायते।।

६. बीज और ध्यान युक्त नवाक्षर मंत्र सब मन्त्रों में श्रेष्ठ, सब कार्यों की सिद्धि करानेवाला है।

राजा सुरथ से महर्षि मेधा ने कहा था- तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।।

महाराज! आप उन्हीं भगवती परमेश्वरी की अराधना कीजिए।

वे आराधना से प्रसन्न होकर भोग, स्वर्ग और अपुनरावर्ती मोक्ष प्रदान करती हैं।

ऋग्वेद का स्वरूप- ''क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहा।''

श्री दुर्गासप्तशती में तीनों वेद के तीन ऋषि बतलाये गये हैं जिसके अङ्ग सहित पाठ करने से चारो पदार्थ की प्राप्ति होती है।

(क) प्रथम चरित्र के-ब्रह्म ऋषि हैं, महाकाली देवता हैं, अग्नि तत्व है, ऋग्वेद स्वरूप है।

(ख) मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि हैं, महालक्ष्मी देवता हैं ''ह्रीं'' बीज है, वायु तत्व है, यजुर्वेद स्वरूप है।

(ग) उत्तर चरित्र के शिव (रुद्र) ऋषि हैं, महासरस्वती देवता हैं ''ऐं'' बीज है, सूर्य तत्व हैं, सामवेद स्वरूप हैं। रहस्य को समझने वाला विशुद्ध ज्ञान को प्राप्त करता है। दिव्य चक्षु अर्थात तीसरी दृष्टि (ज्ञान) को प्राप्त करता है।

(घ) केवल सप्तश्लोकी दुर्गा या सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्र से भी दुर्गापाठ का फल प्राप्त हो जाता है। मनोनुकूल सफलता एवं चारो पदार्थ की प्राप्ति होती है।

सनातन धर्मावलम्बियों को शिखा, सूत्र, गोत्र, देवकर्म और पितर कर्म के साथ-साथ अतिथि सेवा भी अनिवार्य कहा गया है। कुलदेवी सभी प्रकार के सिद्धियों को देने वाली कही गयी है।

छन्दोगानां देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः-ॐ वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्म वर्म भूतिः प्रतिष्ठा।

वाजसनेयिनाम्-ॐ यज्ञोपवितं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवितं बलमस्तु तेजः।।

छन्दोगानाम्-ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि।

दूर्वाक्षतदानमन्त्रः ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

भारत के मानचित्र पर शास्त्रोक्त द्वादश राशिगत कुम्भ स्थलियाँ

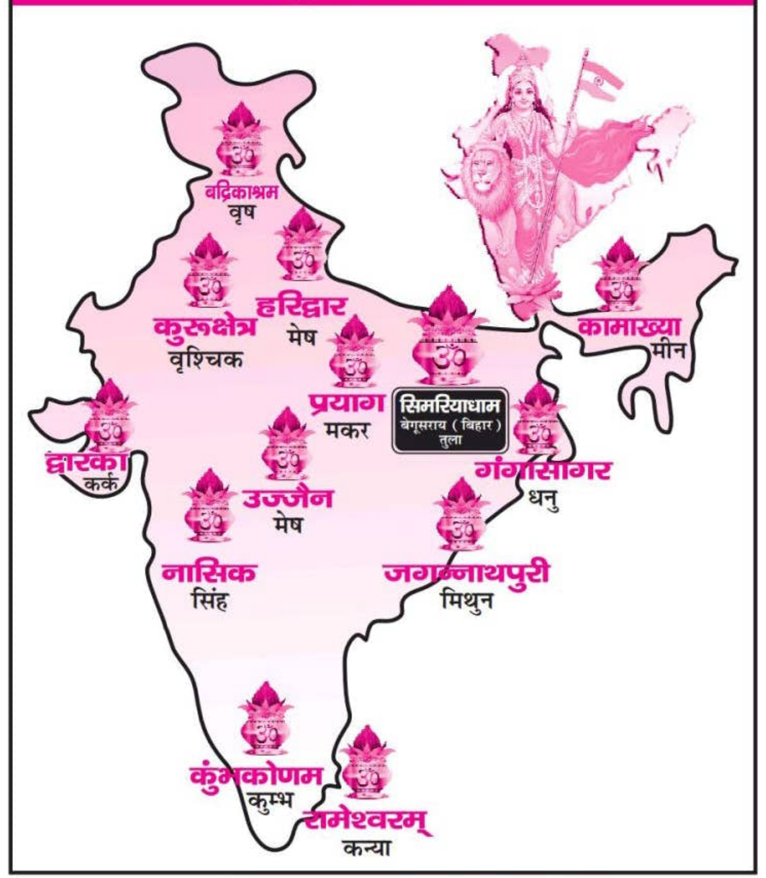

॥ द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।।
उज्जयिन्यां महाकालम् ॐकारममलेश्वरम् ।।१।।
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।।
सेतुबंधे तु रामेशं नागेशं दारूकावने ।२।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे।।
हिमालये तु केदारम् घुश्मेशं च शिवालये ।३।।
एतानि जयोतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ।४।।

संवत् २०८३ - २०८४ के प्रमुख व्रत, पर्व

मौनापंचमी	०३ अगस्त २०२६
मधुश्रावणी	१५ अगस्त २०२६
नागपंचमी	१७ अगस्त २०२६
शीतलापूजा	१६ अगस्त २०२६
संस्कृतदिवस	२८ अगस्त २०२६
रक्षाबन्धन	२८ अगस्त २०२६
याज्ञवल्क्यजयन्ती	२८ अगस्त २०२६
अगस्त्योदय	०१ सितम्बर २०२६
कृष्णाष्टमी	०४ सितम्बर २०२६
कुशोत्पाटन	११ सितम्बर २०२६
हरितालिका (तीज)	१४ सितम्बर २०२६
चौठचन्द्र (चौड़चण)	१४ सितम्बर २०२६
गणेशपूजा	१५ सितम्बर २०२६
ऋषिपंचमी	१६ सितम्बर २०२६
विश्वकर्मापूजा	१७ सितम्बर २०२६
राधाष्टमी	१६ सितम्बर २०२६
इन्द्रपूजारम्भ	२३ सितम्बर २०२६
हरिवासरव्रत	२३ सितम्बर २०२६
अनन्तपूजा	२५ सितम्बर २०२६
अगस्त्यार्घदान	२६ सितम्बर २०२६
पितृपक्षारम्भ	२७ सितम्बर २०२६
जितिया	०३ अक्टूबर २०२६
मातृनवमी	०४ अक्टूबर २०२६

पितृपक्षान्त	१० अक्टूबर २०२६
कलशस्थापन	११ अक्टूबर २०२६
बिल्वाभिमन्त्रण	१६ अक्टूबर २०२६
पत्रिकाप्रवेश	१७ अक्टूबर २०२६
निशापूजा	१८ अक्टूबर २०२६
महाष्टमीव्रत	१८ अक्टूबर २०२६
सिमरिया कल्पवास	१८ अक्टूबर २०२६ से १७ नवम्बर २०२६
महानवमीव्रत	२० अक्टूबर २०२६
विजयादशमी	२१ अक्टूबर २०२६
कोजागरा	२५ अक्टूबर २०२६
धन्वन्तरिजयन्ती	०६ नवम्बर २०२६
हनुमानजयन्ती	०७ नवम्बर २०२६
दीपावली	०८ नवम्बर २०२६
कालीपूजा	०८ नवम्बर २०२६
सोमवत्यमा	०६ नवम्बर २०२६
अन्नकूट	०६ नवम्बर २०२६
गोवर्द्धनपूजा	०६ नवम्बर २०२६
कालिदासजयन्ती	१० नवम्बर २०२६
भातृद्वितीया (भैया दूज)	११ नवम्बर २०२६
चित्रगुप्तपूजा	११ नवम्बर २०२६
प्रतिहारषष्ठी सायं अर्घ	१५ नवम्बर २०२६
प्रतिहारषष्ठी प्रातः अर्घ	१६ नवम्बर २०२६
जगद्धात्रीपूजारम्भ	१६ नवम्बर २०२६

सामापूजारम्भ	१६ नवम्बर २०२६
अक्षयनवमी	१८ नवम्बर २०२६
अहिल्याजयन्ती	१८ नवम्बर २०२६
देवोत्थान एकादशी	२० नवम्बर २०२६
तुलसीविवाह	२१ नवम्बर २०२६
विद्यापतिपर्व	२२ नवम्बर २०२६
रविव्रतारम्भ	२२ नवम्बर २०२६
कार्त्तिकी पूर्णिमा	२४ नवम्बर २०२६
कार्त्तिकेयपूजा	२४ नवम्बर २०२६
सोनपुरमेला	२४ नवम्बर २०२६
सामाविसर्जन	२४ नवम्बर २०२६
नवान्नपार्वण	२६ एवं २६ नवम्बर २०२६
वीडपंचमी	२६ नवम्बर २०२६
कालभैरवाष्टमी	०१ दिसम्बर २०२६
कामेश्वरसिंहजयन्ती	०१ दिसम्बर २०२६
विवाहपंचमी	१४ दिसम्बर २०२६
गीताजयन्ती	२० दिसम्बर २०२६
दशतारकारम्भ	०५ जनवरी २०२७
गुरुगोविन्दसिंहजयंती	१५ जनवरी २०२७
मकरसक्रांति	१५ जनवरी २०२७
प्रयाग कल्पवास	१५ जनवरी से १३ फरवरी २०२७
दशतारकान्त	१५ जनवरी २०२७

नरकनिवारण चतुर्दशी	०४ फरवरी २०२७
मौनी अमावास्या	०६ फरवरी २०२७
शिशिरनवरात्रारम्भ	०७ फरवरी २०२७
सरस्वती पूजा	११ फरवरी २०२७
अचलासप्तमी	१३ फरवरी २०२७
माघी पूर्णिमा	२० फरवरी २०२७
रविदासजयन्ती	२० फरवरी २०२७
महाशिवरात्रि	०६ मार्च २०२७
सोमवत्यमा	०८ मार्च २०२७
होलिकादाह	२१ मार्च २०२७
होली	२२ मार्च २०२७
सप्ताडोरारम्भ	२३ मार्च २०२७
महामहावारुणीयोग	०३ अप्रील २०२७
वारुणीयोग	०४ अप्रील २०२७
वसन्तनवरात्रारम्भ	०७ अप्रील २०२७
सूर्यषष्ठीव्रत	१२ अप्रील २०२७
हरद्वार कल्पवास	१४ अप्रील से १५ मई २०२७
मेषसङ्क्रान्ति	१४ अप्रील २०२७
रामनवमी	१५ अप्रील २०२७
जूडिशीतल	१५ अप्रील २०२७
महावीरजयन्ती	१८ अप्रील २०२७
कुँवरसिंहजयन्ती	२३ अप्रील २०२७

शिवाजीजयन्ती	०७ मई २०२७
रविव्रतविसर्ग	०६ मई २०२७
सप्ताडोरविसर्ग	०६ मई २०२७
अक्षयतृतीया	०६ मई २०२७
परशुरामजयन्ती	०६ मई २०२७
शङ्कराचार्यजयन्ती	११ मई २०२७
जाह्नवीसप्तमी	१२ मई २०२७
जानकीनवमीव्रत	१४ मई २०२७
वैशाखपूर्णिमा	२० मई २०२७
बुद्धजयन्ती	२० मई २०२७
अगस्त्यास्त	०१ जून २०२७
वटसावित्रीव्रत	०४ जून २०२७
महाराणाप्रतापजयन्ती	०७ जून २०२७
पञ्चाग्निव्रत	०७ जून २०२७
विन्ध्यवासिनीपूजा	१० जून २०२७
गङ्गादशहरा	१३ जून २०२७
रामेश्वरदर्शन	१३ जून २०२७
वैवस्वतमन्वादि	१८ जून २०२७
कबीरजयन्ती	१८ जून २०२७
ग्रीष्मनवरात्रारम्भ	०५ जुलाई २०२७
जगन्नाथरथयात्रा	०५ जुलाई २०२७
हरिशयन एकादशी	१४ जुलाई २०२७
चातुर्मास्यव्रतारम्भ	१४ जुलाई २०२७
गुरुपूर्णिमा	१८ जुलाई २०२७

मुहूर्त सूची

१. **सौराठससौला सभा** - दिनांक ०१-०७-२०२७ से ६-०७-२०२७ ई. तक

२. **उपयनयनदिन** - फरवरी ६ (छन्दोग), ११, १६ (छन्दोग), १७। मार्च-१७ (क्षत्रियवैश्य), १८। अप्रील-११। मई-१०, जून-७, ६, १३, १४। जुलाई-६ (छन्दोग), ८।

३. **विवाहदिन** - नवम्बर-२२, २५, २६, ३०। दिसम्बर-४, ६, ६, १०, ११, १४। जनवरी-१८, २४, २८, २६, ३१। फरवरी-७, १०, ११, १५, २१, २२, २४, २५, २८। मार्च-१, ३, ४, १०, ११। अप्रील-१६, २१, २३, २५, २८, २६। मई-२, ३, ७, ६, १३, १७, २०, २१, २३, २४, २६, २७, ३०, ३१। जून-२, ४, ६, १०, १३, १४, १८, २३, २४। जुलाई-१, २, ७, ८, ६

४. **द्विरागमनदिन**- नवम्बर-२२, २५, २६, २६। दिसम्बर-६, १०, ११, १३, १४। फरवरी-१५, १७, १८, १६, २२, २४, २५। मार्च-१०, ११। अप्रील-१८, १६, २१, २३, २५, २६। मई-६, १०, १२।

५. **मुण्डनदिन**- नवम्बर-२६। दिसम्बर-१४। जनवरी-२०, २७। फरवरी-८, ११, १८, १६, २२, २५। मार्च-१०, ११। मई-१२, १७, २१। जून-७, १४, २१, २३, २४। जुलाई-५, १२।

६. **गृहारम्भ**- अक्टूबर-२४, २६, ३०। नवम्बर-२०, २१, २६, २८। जनवरी-२२। फरवरी-१६, २२, २५। अप्रील-२३। मई-१७, २०, २२। जून-१४, २१, २३, २४।

७. **गृहप्रवेश**- अक्टूबर-२४। नवम्बर-१४, १६, २०, २१। दिसम्बर-१४। जनवरी-१८, २०। फरवरी-१५, १७, १८, १६। मई-१०, १२, १७। जून-१४। जुलाई-६, १०

८. **देवादिप्रतिष्ठा**- जनवरी-२०, २२। फरवरी-८, ११, १८, १६। मार्च-१०, ११। अप्रील-१८। मई-६, १२, १७। जून-६, ७, १३, १४। जुलाई-५, ६।

पंचाग सम्बन्धी जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- डा. शिवेन्द्र झा, मो. ८७०९६३६६३९, पं. दिगम्बर शास्त्री मो. ९५७०६५८९१९
श्री दिनेश कुमार झा, मो. ७६३१८२१८४७ , पं. श्री सनातन कुमार झा-८७८९१३२०६६